

# सभ्यता की सूखती सरिता

जलपुरुष राजेन्द्र सिंह की विश्व जलयान कथा



# सभ्यता की सूरवती सरिता

जलपुरुष राजेन्द्र सिंह की  
विश्व जलयात्रा कथा





## नालन्दा प्रकाशन

प्रधान कार्यालय : 206, द्वितीय तल, विराट भवन, कमर्शियल कॉम्प्लेक्स,  
मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009, भारत

दूरभाष : 011-47027661

ईमेल : nalandaprakashan2023@gmail.com

वेबसाईट : www.nalandaprakashan.com

## सभ्यता की सूखती सरिता

लेखक : राजेन्द्र सिंह

## संकल्पना एवं सहयोग

राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' स्मृति न्यास, दिल्ली

ISBN : 978-81-936944-2-8

प्रथम संस्करण : 2023

मुद्रक : लकी प्रिंटर्स, दिल्ली

सहयोग : 300/- रुपये

## अनुक्रमणिका

पृ. सं.

— प्रस्तावना	— 5
— प्रकाशकीय	— 8
— प्राक्कथन	— 11
1. दुनिया का सबसे बड़ा तीर्थ : माँ गंगा	— 14
2. उद्गम से ही घात सहती विविधरूपा ब्रह्मपुत्र नदी	— 34
3. अपने अस्तित्व को बचाने के लिए संघर्षरत सरयू नदी	— 39
4. प्रदूषण, अतिक्रमण और जलशोषण के कारण मरणासन्न सिन्धु नदी	— 42
5. बेल्जियम, फ्रांस और नीदरलैंड को बाढ़ग्रस्त करती सेल्ड नदी	— 52
6. प्रदूषण मुक्ति की कथा सुनाती हडसन नदी	— 59
7. अवरिल—निर्मल और सदानीरा कनाडा की 'ओटेवा नदी'	— 67
8. सीरिया 'जलयुद्ध' की साक्षी है इफ्रीटिस नदी	— 76
9. विवादों में घिरी नील नदी अफ्रीका की जीवनरेखा है	— 86
10. जॉर्डन नदी का जल लूटकर इतराता इजरायल	— 91
11. विकास के विनाश की शिकार नाइजर नदी	— 98
12. दुनिया की पहली इंसानी दर्जा प्राप्त न्यूजीलैंड की वांगानुई नदी	— 104
13. मारकेश की जल संस्कृति को समृद्ध करती दारा नदी	— 108
14. अय्यरवाड़ी नदी : बांधों से बिगड़ती सेहत	— 113
15. बंधन में जलप्रवाह को तरसती टाइबर नदी	— 118
16. ऊर्जा उत्पादन के लिये प्राणघातक त्रासदी की शिकार चीन की यांगत्ज़ी नदी	— 124
17. बीमार चाओफ्राया नदी को सघन चिकित्सा की जरूरत है	— 131
18. दुनिया के लिये श्रेष्ठ उदाहरण है टेम्स नदी का स्वास्थ्य	— 135
19. नदियों को बचाने की सीख देती है फ्रांस की लोयर नदी	— 146
20. स्पेन की एब्रो नदी, नदी जैसा रूप दिखाती है	— 163
21. हान नदी का दक्षिण कोरिया में जल प्रवाह मौजूद है	— 168
22. सुखाड़—बाढ़ से ग्रस्त ऑरेंज नदी	— 175



## अनुक्रमणिका

पृ. सं.

---

23. अमेरिका के विकास ने किया ओवेन्स नदी का विनाश	— 181
24. फिलीपीन्स की पासिग नदी और प्रदूषण मुक्ति के तीन दशक	— 192
25. गंगा से अधिक प्रदूषित ब्रिस्बेन नदी का दिखावटी प्रचार अधिक है	— 200
26. स्विट्जरलैंड और नीदरलैंड को बनाती-संवारती राइन नदी	— 205
27. मैं जल हूँ	— 210

## प्रस्तावना

---

“सभ्यता की सूखती सरिता” दुनिया की नदियों की अनवरत यात्राओं से मिले जीवंत अनुभवों और अनुभूतियों पर आधारित मेरी दूसरी अत्यंत महत्वपूर्ण पुस्तक है, जो “जलपुरुष की जलयात्रा” के बाद प्रकाशित हो रही है, और यह पुस्तक भी दुनिया में लगातार बढ़ रहे जलसंकट की चुनौती का सामना करने के लिये किये जा रहे मेरे व्यावहारिक प्रयासों और क्रियाकलापों का यथातथ्य विवरण उपलब्ध कराती है। दुनिया भर की नदियों के साहचर्य में रहते-चलते हुए उनके अतीत और वर्तमान की स्थितियों को जैसा मैंने देखा और समझा है, उसे इस पुस्तक के माध्यम से आप लोगों के समक्ष रखने का यह एक विनम्र प्रयास है। मेरी नदी यात्राओं के दौरान जिन साथियों के उपयोगी अनुभवों ने मुझे समृद्ध किया, मैंने उन्हें भी अपने शब्दों में इस पुस्तक में रख लिया है, क्योंकि वे भी मेरी अनुभूतियों का हिस्सा बन चुके हैं। कुल मिलाकर यह मेरी ही नदी अनुभूति की पुस्तक है, जो दुनिया के आसन्न जलसंकट को समझने-समझाने और उसके समाधान की दिशा में मिलकर काम करने की प्रेरणा देने के उद्देश्य से लिखी गयी है।

यह पुस्तक मैंने अपनी टूटी-फूटी भाषा और बोली में तथा मेरे अपने अंदर की अनुभूति व समझ से लिखी है। मैं चाहता हूँ कि, यह पुस्तक आप के काम आए। आपके काम आने से नदियों के प्रति आपका प्रेम और सम्मान बढ़ेगा, जिससे आप भी नदियों के साथ जुड़ेंगे।

जब मैं यह पुस्तक लिख रहा था, तो सबसे पहले मुझे लगा कि, मुझे अपनी माँ गंगा के बारे में लिखना चाहिए। माँ गंगा की पिछले 30 सालों में मैंने तीन बार यात्रा की है। उस यात्रा के दौरान मुझे जो देखने-जानने को मिला, वह मैंने अपने तरीके से, अपनी अनुभूति से लिखने की कोशिश की है।

इसी तरह से ब्रह्मपुत्र नदी की यात्रा की थी, वह भी इस पुस्तक में है। सरयू नदी की यात्रा भी इस पुस्तक में है, इसमें उत्तराखंड के साथियों ने भी नदी के ऊपर के हिस्से में यात्रा की थी। मैं यहाँ पदयात्रा में भी शामिल हुआ था। जिन-जिन नदियों की यात्रा का अवसर मुझे मिला, उन्हीं का अनुभव मैंने लिखा है।

मैं, नालंदा प्रकाशन के अध्यक्ष श्री नीरज कुमार भाई, जो एक अच्छे प्रकाशक ही नहीं, बल्कि सामाजिक कार्यकर्ता, संस्कृतिकर्मी और मेरे अच्छे मित्र हैं, जिन्होंने इस पुस्तक को आकार देने में बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है, इसके लिए इनका धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ। इसे पुस्तक का रूप देने का मन मेरी पहली पुस्तक “जलपुरुष की जलयात्रा” से हुआ था। जिस प्रकार पिछली पुस्तक को नीरज कुमार जी ने बेहद कम समय में प्रकाशित किया था, उसी प्रकार इस बार भी उन्हें इस पुस्तक के लिये बहुत सीमित समय ही मिल पाया, क्योंकि न्यूयॉर्क की हडसन नदी का वर्णन होने के कारण इस पुस्तक का न्यूयॉर्क विश्व जल सम्मेलन में आना बेहद जरूरी था।

यह पुस्तक दुनिया के सभी महाद्वीपों की नदियों की कहानी कहती है। मुख्यतः यह पुस्तक भारत की गंगा नदी, ब्रह्मपुत्र नदी, सरयू नदी, सिन्धु नदी, फ्रांस की सेल्ड नदी और लोयर नदी, कनाडा की ओटेवा नदी, अमेरिका की ओवेन्स नदी, सीरिया-टर्की की इफ्रीटिस नदी, न्यूयॉर्क की हडसन नदी, दक्षिण अफ्रीका की नील नदी और ऑरेंज नदी, पश्चिम अफ्रीका की नाईजर नदी, जॉर्डन की जॉर्डन नदी, न्यूजीलैंड की वांगानुई नदी, मारकेश की दारा नदी, स्विट्जरलैंड की राइन नदी, म्यान्मार की अय्यरवाडी नदी, इटली की टाइबर नदी, चीन की यांग्त्जी नदी, थाइलैंड की चाओफ्राया नदी, फिलीपींस की पासिग नदी, ऑस्ट्रेलिया की ब्रिस्बेन नदी, स्पेन की एब्रो नदी, दक्षिण कोरिया की हान नदी, और लंदन की टेम्स नदी आदि विभिन्न देशों की नदियों की कहानी कहती है। यदि हमें इन नदियों को ठीक करना है तो पहले दुनिया की नदियों का दर्द जानना होगा। जब नदियों का दर्द जानेंगे तभी नदियों का ठीक से इलाज

कर सकेंगे। इसलिए एक तरफ यह पुस्तक नदियों का आनंद बताती है और दूसरी तरफ नदियों के दर्द को बयाँ करती है। यदि हम तरह ठीक से नदियों को जानने, समझने और उनके पुनर्जीवन का काम शुरू करें तो, इस पुस्तक से मदद मिल सकती है। यह पुस्तक गंगा मां के गंगत्व और ब्रह्मसत्त्व की कहानी को सुनाती है, उसके लिए प्रार्थना सुनाती है, अंत में कहती है कि, मैं ही जल हूँ। इसमें नीर का नारी के साथ, जीवन के प्रवाह का नदी के साथ का रिश्ता पुस्तक के अंतिम भाग में समझ आता है। जहाँ एक तरफ मां गंगा जी की गंगत्व कथा और प्रार्थना इसमें है, उसी के साथ-साथ जल में जीवन इस पुस्तक का सारांश बनता है। हम नदियों के दर्शन से समझ सकते हैं कि, नदियाँ हमारे जीवन के आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक आदि सभी जीवन प्रवाहों की जनक हैं। इसलिए मैं ही जल हूँ, मैं ही जीवन हूँ, मैं ही जननी हूँ, मैं जीवन का प्रवाह हूँ— इसकी कहानी इस पुस्तक से समझ में आती है। मैं दुनिया के सभी वर्ग के लोगों से अपेक्षा करता हूँ कि आप अपनी भाषा में इसे प्रसारित करें।

परंपरा से नदी हमारी माई है, वह कमाई करने के लिए नहीं है। बीमार माई की सेवा चिकित्सा बेटे-बेटियों का कर्तव्य है। अतः इस पुस्तक को पढ़कर माँ की चिकित्सा सेवा करने हेतु आप तैयार होवें, यही इस पुस्तक का उद्देश्य है। सभी देश और राज्यों के अपने मित्रों को भी अनुवाद करके इसे पढ़ा सकते हैं। कोई भी बिना अनुमति के इसके किसी भी अंश का जगभलाई हेतु उपयोग कर सकता है।

**राजेन्द्र सिंह**

अध्यक्ष, जलबिरादरी

(मैगसेसे पुरस्कार एवं जलक्षेत्र के

नोबेल स्टॉकहोम जल पुरस्कार से पुरस्कृत)

## प्रकाशकीय

---

जल ही जीवन का अमृत है। यह विभिन्न जीवों की उत्पत्ति, वृद्धि और विकास को बनाए रखता है। जल के बिना, पृथ्वी पर जीवन असंभव होता। यदि हम अपने जल संसाधनों का अनवरत शोषण जारी रखते हैं, तो जल्दी ही वह समय आएगा, जब हमें एक भयावह वैश्विक जलसंकट का सामना करना पड़ेगा और इसके परिणामस्वरूप हर तरफ जलयुद्ध ही जलयुद्ध होंगे। विडम्बना है कि आज आंखों के साथ-साथ हमारी सभ्यता की सरिता भी निरंतर सूखती जा रही है, और हम एक आसन्न बड़े खतरे की तरफ से अनजान बने हुए हैं।

जलपुरुष और विश्वप्रसिद्ध नदी पुनर्जीवन कार्यकर्ता डॉ. राजेंद्र सिंह ने सभ्यता के लिए जल की महत्ता को बखूबी समझा है और दुनिया भर की नदियों की अपनी यात्रा से प्राप्त जीवंत अनुभवों एवं अनुभूतियों के समायोजन से एक ऐसे अनुपम नदी दर्शन को जन्म दिया है, जिसे व्यवहार में उतारने से न केवल वैश्विक जलसंकट का न्यायपूर्ण समाधान संभव है, बल्कि सामुदायिक सहभागिता द्वारा दुनिया की सभी नदियों को अविरल, निर्मल और सदानीरा भी बनाया जा सकता है। जल प्रबंधन और संरक्षण पर डॉ. राजेन्द्र सिंह के प्रयासों की अनगिनत उपलब्धियां इस तथ्य का अकाट्य प्रमाण प्रस्तुत करती हैं।

डॉ. राजेन्द्र सिंह अपनी जल संरक्षण गतिविधियों के लिए 2001 में मैगसेसे पुरस्कार और 2015 में स्टॉकहोम जल पुरस्कार से सम्मानित किये गये। उन्होंने जन-जन के लिए प्रेरणादायक और युगांतर स्थापित करने वाले अपने प्रयासों के लिए "वाटरमैन ऑफ इंडिया" की उपाधि प्राप्त की। वर्ष 2001 में जब डॉ. राजेन्द्र सिंह को अतिप्रतिष्ठित रेमन मैगसेसे पुरस्कार से सम्मानित किया गया था, तो उनके प्रशस्ति पत्र में यह उल्लेख किया गया था, कि उनके प्रयासों के कारण "अब, 4,500 कामकाजी जोहड़ अलवर और दस आस-पास के जिलों में

हैं। एक संरक्षित जलाशय और गाँव के जलाशयों के पुनरुद्धार प्रभाव से पोषित पाँच नदियाँ जो कभी सुप्त थीं, अब वहाँ सालों भर बहती हैं। खेती के लिए भूमि पांच गुना बढ़ गई है और कृषि आय बढ़ रही है। काम के लिए पुरुषों को अब घर से बाहर निकलने की जरूरत नहीं है और पानी के लिए आज महिलाओं को भी गाँव के कुएं से ज्यादा दूर नहीं जाना पड़ता है।”

सितंबर 2010 में डॉ. राजेंद्र सिंह ने गंगा नदी की पवित्रता और पारिस्थितिकी को बहाल करने के लिए “गंगा पंचायत” शुरू करने की योजना बनाई। यह अरवरी नदी की रक्षा के लिए उनके द्वारा तैयार किए गए जल संरक्षण कार्यक्रम से प्रेरित थी। 2 अक्टूबर को हरिद्वार में पहली गंगा पंचायत का गठन किया गया। राजेंद्र सिंह ने बौद्धिक ज्ञान और व्यावहारिकता के साथ ऐसी स्थितियों का सामना करने के लिए लोगों से “जल साक्षर” बनने का आग्रह किया।

राजेन्द्र सिंह के अनुसार जल साक्षरता में तीन प्रमुख चरण शामिल हैं। पहला चरण पानी को समझना है, जिसका अर्थ है कि ग्लेशियर से लेकर भूजल और जल चक्र, वनस्पति, जीवजन्तु और इन जलस्रोतों पर निर्भर सामाजिक-आर्थिक परिदृश्य तक सभी जलस्रोतों के बारे में सीखना। दूसरा चरण वर्षाजल संचयन और अपशिष्ट जल प्रबंधन सहित विभिन्न उपायों के माध्यम से जल संरक्षण का अभ्यास करना है। अंतिम चरण दूसरे लोगों को इसे समझाना और पानी बचाना है। इस प्रकार, राजेन्द्र सिंह जनसाधारण को सभी जल संरक्षण कार्यक्रमों का केंद्र बनाने की वकालत करते हैं। पानी के मुद्दों के बारे में जागरूकता बढ़ाना आज एक प्रमुख कार्यभार है।

राजेन्द्र सिंह की प्रस्तुत पुस्तक “सभ्यता की सूखती सरिता” बार-बार इस बात को रेखांकित करती है कि प्रकृति हमारी लालच को पूरा नहीं कर सकती। जल संकट का सामना कर रहे समुदायों को कॉरपोरेट द्वारा प्रस्तावित धन और तकनीकी समाधानों का विरोध करना चाहिए। इसके बजाय, उन्हें अपनी मदद स्वयं करने के तरीके खोजने चाहिए। कंपनियां हमेशा लाभ के बारे में चिंतित

रहती हैं, उन्हें हमारे साझा भविष्य की परवाह नहीं होती है। वे सामाजिक कॉर्पोरेट जिम्मेदारी के नाम का उपयोग तो करती हैं – लेकिन यह जीवन के लिए पर्याप्त नहीं है। यह एक बेहतर साझा भविष्य के लिए पर्याप्त नहीं है। वे बहुत अच्छे शब्दजाल का प्रयोग कर रही हैं। लेकिन वे केवल मिल रही हैं, खा रही हैं और हमें धोखा दे रही हैं। कागज पर संयुक्त राष्ट्रसंघ ने घोषित किया है कि पानी एक मानव अधिकार है। लेकिन मानव अधिकार के रूप में पानी नदी अधिकारों और प्रकृति अधिकारों के बाद ही संभव है। नदी के स्वच्छ प्रवाह के बिना आप मानव अधिकार सुनिश्चित नहीं कर सकते। जलवायु परिवर्तन की हमारी समस्या वैश्विक अवश्य है, लेकिन इसका समाधान स्थानीय और पारंपरिक तरीके से ही किया जा सकता है। राजेन्द्र सिंह जल संरक्षण के स्थानीय और पारंपरिक तरीकों को अपनाने के पुरजोर पक्षधर हैं।

“जलपुरुष की जलयात्रा” के बाद डॉ. राजेन्द्र सिंह की विश्व जलयात्रा कथा शृंखला की नालंदा प्रकाशन द्वारा प्रकाशित यह दूसरी महत्वपूर्ण पुस्तक “सभ्यता की सूखती सरिता” भी विश्व के जलसंकट और उसके व्यावहारिक समाधानों को समझने-समझाने में समान रूप से उपयोगी होगी, इसका हमें पूरा विश्वास है। इस पुस्तक को सीमित समय में संभव बनाने में मेरे कई सहयोगियों ने अथक परिश्रम किया है, जिनमें रंगकर्मी और साहित्यसेवी श्री राजेश चंद्र, श्री पारस प्रताप सिंह और श्री कुणाल गोस्वामी का मैं आभारी हूँ। पुस्तक का शीर्षक सुझाने वाले साहित्यसेवी मित्र श्री पुरुषोत्तम नवीन जी को मैं धन्यवाद देता हूँ।

18 मार्च, 2023,  
दिल्ली, भारत



नीरज कुमार  
अध्यक्ष,

राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' स्मृति न्यास, दिल्ली।

## प्राक्कथन



दुनिया की सभी नदी घाटियों—नदियों का अपना जीव एवं वनस्पति जगत है। इनकी जैविक विविधता इन सबको एक अलग पहचान, प्रवाह एवं अलग तरह का प्राणतत्त्व देती है; जो कि, प्रकृति के करोड़ों वर्षों की सतत् विकास प्रक्रिया का परिणाम है। किन्तु विगत कुछ दशकों में लालची सरकारों, उद्योगों, समाज व संतों ने नदियों की आस्था और पर्यावरणीय परम्पराओं को तोड़कर विनाश का रास्ता पकड़ा है। हमारे लिए सबसे दुःखद पहलू यह है कि, हमारे विनाश को विकास के रूप में पेश किया जा रहा है। आज हमारा समाज इसी भ्रम में है कि, हमारा विकास हो रहा है। इस भ्रम ने सरकारों को बहुत बड़ा लाभ पहुंचाया है। हम ज्यादातर युवा, जवान भी अपनी गुमराही के रास्ते पर घूम रहे हैं। हमें मालूम नहीं है कि, हमारे रास्ते का अंत (मंजिल) क्या है? फिर भी हम दर—बदर चलते चले जा रहे हैं।

पहले हम नदियों के प्रवाह को अपनी सेहत और जीवन के प्रवाह के साथ प्रत्यक्ष रूप में जोड़कर देखते थे। हमें मालूम था कि, नदी का प्रवाह हमारा आर्थिक, सांस्कृतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक प्रवाह है। उसी प्रवाह के रक्षण हेतु जब हम गंगा जैसी नदी में स्नान करने के लिए कपड़े उतार कर प्रवेश करते थे, तब मन का संकल्प होता था कि मेरे तन की गंदगी गंगा जल में न मिले। यदि गंगाजल प्रदूषित होगा तो मेरा राष्ट्र भी दूषित एवं प्रदूषित हो जाएगा और राष्ट्र का स्वास्थ्य भी बिगड़ जायेगा।

राष्ट्र के संचालकों ने अब राष्ट्र के स्वास्थ्य को नदियों के स्वास्थ्य के साथ जोड़कर देखना छोड़ दिया है; इसलिए नदी सौंदर्यीकरण का काम हमारी



प्राथमिकता हो गई है। नदी की निर्मलता और अविरलता कहीं पीछे रह गई है। पहले राज व समाज अपनी माँ नदियों के सौंदर्यीकरण की चिंता न कर स्वास्थ्य की चिंता करता था। माँ स्वस्थ, समृद्ध, समाधानी एवं शांतिमय जीवन जिए, उसके जीवन का प्रवाह अंतिम दिन तक बना रहे, बस, यही चिन्ता रहती थी; पर आज दुनिया के समाज द्वारा अपनी नई पीढ़ियों और नागरिकों को अपनी माँ का केवल दिखावटी सौंदर्यीकरण करना पढ़ाया व सिखाया जा रहा है। इस कार्य हेतु दुनिया भर के बैंकों से कर्ज लेकर देश को आर्थिक कर्ज में दबाया जा रहा है। कर्ज लेकर घी पिलाने के लिए अब नदियों के विनाश की एक से एक बड़ी योजनाएं चालू हैं। इन योजनाओं को अब एकमुश्त कर दिया गया है।

नदी में सौंदर्यीकरण की इन एकमुश्त योजनाओं ने नदी की अविरलता व निर्मलता से लोगों का ध्यान हटाकर नदियों को गंदे नाले घोषित करने का काम बहुत तेजी से शुरू किया है। अब बड़ी-नदी घाटियां, गंदे नालों की सूची में दर्ज हो रही हैं। एक गंदे नाले को दूसरे गंदे नाले से जोड़ने के लिए भ्रष्टाचार एवं प्रदूषण को जोड़ने जैसा प्रत्यक्ष वातावरण दिखाई दे रहा है। फिर एक बार हुआ बिगाड़ दुबारा पहले जैसी स्थिति में नहीं लाया जा सकेगा, खासकर नदियों का बिगाड़ ठीक कर उन्हें पूर्वस्थिति में लाना असंभव जैसा होता है। विडम्बना है कि, आजकल हम उसी तरह के बिगाड़ को विकास कह रहे हैं। इस तथाकथित विकास ने नदियों के ज्ञान को विस्थापित एवं विकृत करके नदियों के विनाश की परिस्थितियाँ पैदा कर दी हैं।

दुनिया में समाज अपने विनाश को समय-समय पर सामाजिक क्रांति, परिवर्तन और सनातन विकास द्वारा पुनर्जनन के रास्ते पर पहले कई बार ला चुका है, लेकिन आज परिस्थितियां कुछ ज्यादा भयावह हैं। पहले पंचमहाभूतों पर उतना संकट नहीं था। अब से पहले की परिस्थिति में सामाजिक, राजनैतिक, सभ्यता और संस्कृति के संकट थे, जिन्हें भारतीय समाज ने ही खड़े होकर बदला था। आज नदियों के संकट के कारण जल, वायु, धरती, गगन आदि पर संकट दिखाई दे रहा है। जलवायु परिवर्तन के संकट के कारण हमारा वर्षाचक्र बदल

रहा है, फसलें बर्बाद हो रही हैं, नदियाँ सूख कर गंदे नाले बन रही हैं। यह सब कुछ सीधा जलवायु परिवर्तन का कारण बना है। नदियों के साथ हमारी लालची छेड़छाड़ इस संकट को और गहराती है। दुःख इस बात का है कि इस रास्ते पर आज भारत का समाज, राज और महाजन सभी लामबंद होकर युवा को मूल से हटा रहे हैं। ऐसी परिस्थिति में भी हमारी आशाओं की किरणें और आशाओं के बीज सूखे या मरे नहीं हैं, पर ज्यादा गहरे (अचेतन मन) दबे दिखाई देते हैं। इन्हें उकेरकर ऊपर लाना आज की जरूरत है। इस जरूरत को पूरा करने के लिए भारत के युवाओं को नदी घाटी तंत्र को समझाकर ज्ञानाधारित प्रबंधन में लगाना समय की अनिवार्यता है। इसी सापेक्ष में यह पुस्तिक दुनिया भर की नदियों के बारे में बताती है।

आप इसे पढ़ेंगे और नदियों को पुनर्जीवित करने हेतु कदम उठायेंगे, ऐसी आशा यह पुस्तिक रखती है। यह पुस्तिक दुनिया की नदियों के आँखों देखे अनुभवों एवं अनुभूतियों की दास्तान है। यह मेरे जैसे युवाओं को समझाने-सिखाने में बहुत सक्षम है। मैं इसे पढ़कर प्रभावित हुआ हूँ। आप भी इसे पढ़कर अपने देश की नदियों के हालात जान सकेंगे। जो मित्र हिन्दी नहीं समझ पाते, वे भी अनुवाद करके इसे जरूर पढ़ें।

**मौलिक सिसोदिया**

निदेशक- तरुण भारत संघ



## दुनिया का सबसे बड़ा तीर्थ : माँ गंगा

### गंगा प्रार्थना

“गंगे तू ही तू है”

‘तू ही तू’ है ‘गंगाजल’ जहान में ‘तू ही तू’ है।  
 भूमि, गगन, वायु, अग्नि का योग ‘तू ही तू’ है ॥  
 सकल सृष्टि का रंग बदलती, ‘तू ही तू’ है।  
 पंचतत्त्व से निर्मित जीवन ‘तू ही तू’ है ॥  
 गंगा, ऊँच—नीच का भेद मिटाती ‘तू ही तू’ है।  
 नीर—नारी—नदी से मिल दुनिया को एक बनाती, ‘तू ही तू’ है ॥  
 ‘तू ही तू’ जीवन, जीविका, जमीर बनाती।  
 तू ही बनाती, तू ही चलाती, तू ही मिटाती ॥  
 सदाचार, सादगी और समता तू लाती।  
 दसों दिशाओं में आती तेरी खुशबू है ॥  
 सकल विश्व की प्यास बुझाती ‘तू ही तू’।  
 जीव—जंतु, मानव, निसर्ग का प्यार बढ़ाती तू ॥  
 सदा, सनातन, नित्य ही नूतन, ‘तू ही तू’ ॥  
 निर्माता तू, पालक तू ही और पोषक भी तू।  
 सकल विश्व है एक और एक ही तो तू है ॥  
 ‘तू ही तू’ है ‘जल’ जहान में ‘तू ही तू’ है।  
 हे गंगा, ‘तू ही तू’ है, ‘तू ही तू’ है, ‘तू ही तू’ है ॥



हे गंगे माँ, शंकर के गायन से, विष्णु पर पिघलकर आप बूंद बनीं। ब्रह्मा ने उस बूंद को कमंडल में समेट कर कहा कि, आप गंगा हो। आप मेरे कमंडल में आयीं, इसलिए आपके भीतर ब्रह्म के सर्जन की क्षमता हो गई, आपके अंदर विष्णु के पालन की और शिव के संहार की क्षमताएँ

हैं। इसलिए आप इस ब्रह्मांड की ब्रह्मा, विष्णु और महेश हैं।

आप सभी को संगीत की तरह प्यार करेंगी, इसलिए आप हिमालय की हरियाली हैं और मानसरोवर को भरने वाली पवित्र जलधारा हैं। आप भारत भूमि को आबाद करके पंचतत्त्वों की सेवा करते हुए समुद्र में मिल जाती हैं। चट्टानों से टकराकर, गंगोत्री में फिसलकर, गहरा कुंड बना देती हैं। कुंड से निकल कर हिमालय की वादियों में होती हुई, मैदान में आकर चलती हो। समुद्र के किनारे पहुँचकर रेंगने लगती हो। आपका यही गुण प्रकृति के पोषण का गुण है। आप हिमालय की मिट्टी को गंगत्व (ब्रह्मसत्त्व) में बदलकर समुद्र तक ले जाती हो। समुद्र में जाने से पहले रास्ते में आप भारत की हजारों धाराओं को, जिनके अलग-अलग गुणधर्म व प्रवाह हैं, उन्हें समेटती हो। इसलिए आप भारतीय संस्कृति का आधार कहलाती हो।

गंगोत्री से चलकर आप आपना मायका मुखवा गाँव होते हुए, रास्ते की भैरूघाटी, लोहारी नागपाला, पाला मनेरी, मनेरी आदि स्थानों पर मशीनों की रोक-टोक का सामना करते हुए, चिम्मालो से होते हुए अब टिहरी की झील में रुकने लगी हो। टिहरी से धरासू के बीच 45 कि.मी भीलामना नदी पर 40 कि. मी. की झील बनाती हो। अब आगे जाते-जाते जल की विशिष्टता समाप्त होने लगती है। आज कल आप टिहरी के नीचे सामान्य जल में बहने लगती हो।

अलकनंदा जो कभी अलकापुरी के सभी यक्षों की राजधानी थी; जहाँ कालिदास

के मेघदूत की प्रेमिका भी रहती है, वह भारत की सीमा के माणा गाँव के ऊपर से आती है। आपकी छोटी बहिन मंदाकिनी, जो केदारघाटी भी कहलाती है, यह केदारनाथ के ऊपर से आती है। “देवप्रयाग” में भागीरथी से मिलकर तू गंगा बनती है। अपनी पवित्रता और हिमालय की हरियाली से ही आप भारत का गौरव बनती हैं। लेकिन आपकी इस हरियाली को हिमालय की नदियों में बनायी गई विद्युत परियोजना ने समाप्त कर दिया है। जैसे ही हरियाली समाप्त हुई है, वैसे ही आपकी पवित्रता नष्ट हुई। हिमालय की हरियाली और आपकी पवित्रता एक-दूसरे की पूरक हैं।

आजकल हिमालय के पंच प्रयागों में ही, हिमालय की मिट्टी के गुणधर्म ठहर गए हैं। आप अपने गुणधर्मों को गंगासागर तक ले जाने का काम सदियों से करती आई थीं। इस 21वीं सदी के दूसरे दशक में तेरी इस शक्ति को भारतीय राजकर्ताओं ने तुझसे छीन लिया है; लेकिन तूने अपना चलना नहीं छोड़ा। तुम आज भी भारत की माँ हो, लेकिन भारतीय सरकारों ने तुम्हारी माँ रहने की बजाए मैला ढोने की ड्यूटी लगाई है।

देवप्रयाग में गंगा बनकर आपका सौन्दर्य मानक शृंगार से भर गया है। आप पंचवेणी में व्यास धारा, रामधारा, नौगाँव धारा, नारद धारा में मिलकर उत्तरायण दिशा में मुड़कर ‘ओम’ की आकृति बनाती हो। इस कारण इस स्थान का नाम सूर्यकुंड रखा गया। गंगा जी अब आपका गंगत्व (बॉयोफाज) तो नष्ट हो गया है, जल तत्त्व ही बचा है। यह जल तत्त्व भी हरिद्वार से नीचे मलतत्त्व में ही बदल जाता है। एक जमाना था जब यहाँ पर आपके लिए राजा विक्रमादित्य ने अपने बड़े भाई भर्तृहरि की याद में घाट बनवाये थे। वह स्थान अब भारतीयों की आस्था का केन्द्र ‘हर की पौड़ी’ के नाम से प्रसिद्ध हो गया। यहाँ आज भी शंख-घड़ियाल जैसे सैंकड़ों स्वर व गंगा जी के स्वरूप के अनुसार बदलते रंग व दीप जल की धारा में भगीरथ की तरह अपने पुरखे सगर के वंशजों के मोक्ष की याद दिलाते हैं। अब हम जानते हैं कि, यहाँ से आपका ज्यादातर जल नहर में चला जाता है। यह नहर 1848 में निर्माण होना शुरू हुई और

1916 में आकर आपके जलप्रवाह का हर की पौड़ी पर आजादी से कुछ अंश प्रवाहित हो सके, ऐसा अंग्रेजों व भारतीयों के बीच समझौता हुआ था। आपको हिन्दुओं की आस्था की नदी मानकर आपसे बिना पूछे कोई छेड़-छाड़ न करने का फैसला अंग्रेजों ने किया था।

हरिद्वार से गंगा नजीमाबाद पहुँची, यहाँ से कोटद्वार का दर्शन होता है। इसी स्थान पर दुष्यंत और शकुंतला ने भरत को जन्म दिया था। यहीं से इस देश का नाम भारत पड़ा। यहाँ से नीचे के दोनों तरफ के किनारे तुम्हारी मिट्टी व जल, किसान की जीविका का सहारा बनने लगते हैं। यहाँ का किसान लालची होकर तुम्हें भूलता जाता है। जब तुम्हारे अंदर जल नहीं होता, तब भी तरबूज, ककड़ी न जाने कितने प्रकार का स्वाद तुम्हारे जल से ग्रहण करता है। पांडवों का लाक्षागृह, शुक का स्थान देवकालीन शुकताल आदि जाने कितने ही स्थानों पर तुम्हारा नवीन नामकरण होता रहता है। तुमने च्यवन जैसे ऋषि को च्यवनप्रास बनाने की प्रेरणा दी और धनवन्तरि को सवाल पूछने का अवसर दिया, जो आपसे पूछता है कि गंगे तुम्हारा आयुर्वेद कौन चलाएगा? तुम्हीं तो थी, जो हर्ष की महक, सत्ता की चहक और शंकराचार्य की महक स्मरण कराती थी। नूरजहाँ तुम्हारे संगीत से सुरमयी होती थी, तुम्हारे संगीत से आनंदित होकर तुम्हारे किनारे उसने सुन्दर शहर बसाया। इस पृथ्वी की धुरी बिदूर और तीर्थ ब्रह्मावर्त की राजधानी, जहाँ भारतीय संस्कृति संजोकर रखी गई थी। जहाँ पचासों महल थे, यहीं पर ऋषियों के संग देवताओं व राजाओं की बैठक होती थी। यहाँ भारत का राज-समाज और संत तीनों सदैव मिलते थे। अब वह स्थान तुम्हारे प्रवाह व विशिष्ट जल गुणधर्म को खोकर नष्ट हो रहा है। तुम्हें नष्ट करने में अंग्रेजों की बड़ी भूमिका रही है। उन्होंने सोने की चिड़िया भारत को लूटा।

कानपुर अब तुम्हारे अंदर क्रोमियम, मरकरी जैसे जहरीले द्रव्य डाल रहा है। इस जहर को तुम्हारे अंदर जाने से रोकने का वादा करके अभी तक कई प्रधानमंत्री बने हैं, लेकिन अभी तक गंदा जल जाना रुका नहीं है। पिछले

दो-तीन सालों में इसे रोकने के झूठे संकल्प सुनाये गये, लेकिन कानपुर आज भी पांडू नदी और कई नालों को गंगाजी में उड़ेल रहा है। मंत्रियों ने नालों के नाम लेकर कहा कि अब हमने कानपुर का गंदा पानी गंगा में जाने से रोक दिया है। लेकिन मैं इनके इन भाषणों के बाद कई बार वहाँ जाकर देख चुका हूँ, वहाँ का गंदा जल अभी भी गंगा को गंदा कर रहा है।

हे माँ गंगा अब “तू ही तू है” जो अपनी अविरलता-निर्मलता सुनिश्चित कराके प्राणों की रक्षा करेगी। हिमालय में बाँध तेरी अविरलता में बाधाएँ बने हैं और उद्योग मैदान में तेरी निर्मलता की बाधा हैं। यह दोनों ही विकास के मानक हैं। इन्हें बढ़ाकर सभी गंगानायक बेशर्मी से तेरे ज्ञान, संस्कार और व्यवहार का विस्थापन कर रहे हैं और तेरे जीवन में विकृति पैदा करके भारत के विनाश के बीज बो रहे हैं।

हे गंगे माँ, तू कानपुर में पहुँचकर मैला ढोने वाली मालगाड़ी बन जाती है। तुझे सरकार ने यहाँ फिर से माँ बनाने के लिए अब तक हजारों करोड़ रुपये खर्च किये हैं, लाखों-करोड़ों रुपये तेरी सफाई के नाम पर खर्च हो रहे हैं, लेकिन तू मैले का बोझ ज्यादा ही झेल रही है। कोविड-19 से भी कोई सीख लेने को तैयार नहीं है। कोविड-19 में लॉकडाउन के दौरान तेरे स्वास्थ्य का सुधार स्वयं ही दिखने लगा था, कोई समझदार राजा होता तो अपने लॉकडाउन के इस परिणाम से सीख लेकर तेरे नाम पर हो रहे लाखों-करोड़ों के खर्च को रोककर तुझमें गंदे नाले मिलने पर रोक लगाता; लेकिन वह नहीं हुआ। अब और ज्यादा गंदे नाले डाल रहे हैं। ऐसा लगता है कि भारत में तेरी पवित्रता रखने वालों का राज नहीं है, बल्कि तुझमें प्रदूषण बढ़ाने वाले उद्योगपतियों का राज है।

तू कब कानपुर में निर्मल होगी? इसकी आशा बची नहीं है। अब ऐसा लगता है कि तुझे ‘नमामि गंगे’ बनाकर निर्मलता के नाम पर लाखों-करोड़ों खर्च होते रहेंगे, लेकिन प्रदूषण बढ़ता ही जायेगा। जब तक तेरी अविरलता पर विचार नहीं किया जायेगा, तब तक तेरा निर्मल बनना संभव नहीं है। आज तुझे राष्ट्रीय

नदी घोषित करने वाली भारत सरकार में “अजगर करे न चाकरी, पंछी करे न काम” की प्रवृत्ति दिखायी पड़ती है। जिन्हें कुछ नहीं करना होता उन्हें हडबड़ी रहती है।

हे गंगे! अब आप चलते-चलते इलाहाबाद पहुँच गयी। आप अपनी पवित्रता की शक्ति से, अपनी गठरी उठाकर जहाँ चाहती हैं, वहाँ पहुँच जाती हैं। यहाँ तुझे हर्षित करने के लिए हर वर्ष माघ मेला, और प्रत्येक 144 वर्षों में महाकुंभ तेरे किनारे होता है। कहा जाता है कि, भारतीय लोक तुझे सम्मानित करने के लिए तेरे किनारे इकट्ठा होता है, लेकिन वह अपने पाप धोने के लालच के कारण तेरे किनारे आता है, यह तू भी जानती है। पर फिर भी तू उनका स्वागत ही करती है। तूने भगीरथ से यह बात कही थी कि “मैं इस कारण भी पृथ्वी पर नहीं जाऊँगी कि लोग मुझमें अपने पाप धोयेंगे। फिर उस पाप को धोने मैं कहाँ जाऊँगी?”

भगीरथ—“माता! जिन्होंने लोक-परलोक, धन-सम्पत्ति और स्त्री-पुत्र की कामना से मुक्ति ले ली है, जो संसार से ऊपर होकर अपने आप में शांत हैं, जो ब्रह्मनिष्ठ और लोकों को पवित्र करने वाले परोपकारी सज्जन हैं, वे आपके द्वारा ग्रहण किये गये पाप को अपने अंग स्पर्श व श्रम निष्ठा से नष्ट कर देंगे।” अभी वर्तमान में ऐसे ही स्वामी सानंद व स्वामी शिवानंद जी हैं।

सम्भवतः इसीलिए गंगा रक्षा सिद्धांतों ने ऐसे परोपकारी सज्जनों को ही गंगा स्नान का हक दिया। गंगा नहाने का मतलब ही है—सम्पूर्णता। जीवन में सम्पूर्णता का भाव जगाये बगैर गंगा स्नान का कोई मतलब नहीं। जो अपूर्ण हैं... लक्ष्य से भी और विचार से भी, उन्हें गंगा स्नान का कोई अधिकार नहीं है, इसीलिए किसी अच्छे काम के सम्पन्न होने पर हमारे समाज ने कहा था — हम तो गंगा नहा लिये।

अब इलाहाबाद में तेरी रेत निकालकर तुझमें जहर घोलते हैं। यह जहर केवल



तुझे ही बीमार करता है, ऐसा नहीं है! यह जहर डालने वालों को भी बीमार करता है। ज्यादातर यह जहर कानपुर से गंगा जी और दिल्ली से यमुना जी लेकर आती है। इलाहाबाद में दोनों का जहर एक-दूसरे से मिल जाता है। यहाँ से चलकर आप फतेहपुर होते हुए काशी में पहुँच जाती हैं। काशी में असी और वरुणा दोनों अपना जहर तेरी देह में डालती हैं।

आज भी कुछ लोग प्रतिदिन तेरे तटों की सफाई करते हैं, जैसे कि केथी में गुरुदास गोस्वामी रोज दो घंटे सफाई करते हैं। यह कार्य ये वर्षों से कर रहे हैं। जब गंगा थोड़ी और आगे बढ़ी तो, गोमती बेहाल होकर तुझमें आकर मिल गयी है। गाजीपुर-बक्सर के बीच करमनाशा आकर मिल गई। करमनाशा के बारे में कहते हैं कि, इसका जल छूने से पुण्य का नाश हो जाता है। बक्सर में विश्वामित्र ने जब दूसरी सृष्टि रची तब इन्द्र स्थापित हुए। करमनाशा के दूसरी पार बौद्ध धर्म था। बिहार में गंगा तट पर बक्सर अकेला तीर्थ है। वैसे तो बनारस और मगध दोनों एक जैसे हैं। गंगा के दूसरी पार मगहर है। आमी नदी के किनारे सब गंगा ही है। मगहर कबीर के साथ जुड़ा है और बिहार बौद्ध धर्म के साथ जुड़ा है, इसलिए गंगा स्नान के पुण्य को लेकर दोनों जगहों पर गंगा में जुड़ने वाली दूसरी नदियों के साथ कुछ न कुछ गलत धारणाएँ जोड़ ली गई हैं। गंगा जी नरभसा पहुँचकर, पंडों के मोक्ष, सिंचाई के जल व उद्योगों के प्रदूषण से मुक्ति पा जाती हैं। वाराणसी से भागलपुर तक गंगा का ढाल बहुत विनम्र है। एक कोस अर्थात् तीन किलोमीटर में केवल 10 इंच की ढाल है। जब राजा भगीरथ के पुरखों की आत्मा को मोक्ष हेतु (यहाँ-जहाँ यह शब्द प्रचलित हुआ, वहाँ-वहाँ) मोक्ष का बाजार पहुँचा, तो बोधगया से बौद्ध धर्म उखड़ गया।

हे गंगे, 'तू ही तू है' अब तेरे किनारे बहुत कुछ बना, पला, आगे बढ़ा, साथ के साथ उस सबको तूने टिकाकर रखा है। आशा है कि आगे भी टिकाकर रखेगी। इसीलिए तुझमें ब्रह्मा-विष्णु-महेश का वास माना जाता है। तू ही तू है, तू ही तू है, तू ही तू है। यह बात केवल पौराणिक ही नहीं, वैज्ञानिक और

आध्यात्मिक सत्य भी सिद्ध हुई है। तेरे किनारे आनंद की बूंद बनने वाले ब्रह्म के रास्ते पकड़ते हैं। तेरे आनंद की बूंद को सहेजने वाले विष्णु बनकर पालक बनते हैं। तेरे क्रोध का शिकार बनने वाले शंकर—संहारक बन जाते हैं।

हे गंगे! तेरे तट पर पत्थर बनी मलाहिन हाथ जोड़कर यह गीत गाती है—

**ऊंची रे अटरिया, तट धुने मलहिनिया आरे माई हो गंगा जी,  
मोर केवटा के बचड़ह, आरे माई हो गंगा जी।**

जब वह पास आयी तो पता चला कि वह पागल हो गई। दंबग लोगों ने केवट के पेशे पर कब्जा कर लिया है और उसका पति बाहर चला गया; दूसरी शादी कर ली है। भिखारी ठाकुर ने विदेशिया को अपना स्वर बनाया। उन्हें मालूम था कि दर्दर मुनि के वंशज अपना गाँव छोड़कर जा रहे हैं।

हे गंगे! आप हरिद्वार से चलकर भागलपुर तक मैदानी इलाके में चली आती हो। जैसे हरिद्वार हिमालय के चार धामों का द्वार है, वैसे ही भागलपुर समुद्र का द्वार है। यहीं पर वह विन्ध्याचल पर्वत है, जिससे सागर का मंथन हुआ था। जहाँ से देवता अमृत लेकर भागे थे। काशी को उसी द्वार पर बसना था; जहाँ कोसी और गंगा का संगम है। यहीं कहल गाँव में अष्टावक्र ने जनक को हरा कर, अपने पिता कोहल को कारागार से छोड़ाया था। यही पर अष्टावक्र गीता का जन्म हुआ। इस पार विश्वामित्र, उस पार वशिष्ठ आकर बैठ गए थे। अकेले बिहार में सूर्य के नौ केन्द्र बने हैं, जबकि पूरे भारत में 108 केन्द्र हैं। सूर्यपुत्र कर्ण अंगदेश का राजा था। बगल में तक्षशिला का केन्द्र था। यहाँ सूरज की संस्कृति, पूर्व की संस्कृति बन गई थी। सब कुछ यहीं था। फिर भी बगल में मापी हुई तो महज नौ गज जमीन कम पड़ गई थी। इसीलिए काशी बनारस में जाकर बसी थी। सभी ने कहा छल हुआ, किससे कहें, ज्ञानी रावण के हाथों में तो शिव साक्षी बनकर खड़े थे। कोशी तो गुस्से से हद पार कर चुकी थी। ऊपर बारिश और नीचे कोशी। कोशी गंगा जी में ऐसे स्थान पर

मिलती है, जहाँ गंगा जी का ढाल न के बराबर होता है। इसलिए कोशी हर दो-तीन साल में अपना भाग बदलती है, इसी प्रकार कोशी को गंगा में मिलने के बाद, गंगा जी में भी यही हाल हो जाता है। कोशी के बाद गंगा जी का तल भी तेजी से ऊपर उठता जाता है। गंगा बीच-बीच में डेल्टा बनाने लगती है।

साहबगंज पहुँचते ही गंगा के बेटे तुझमें क्रशर से विन्ध्य पर्वत को तोड़कर मिट्टी बहाने लगते हैं। क्रशरों से बारिश के दिनों में मिट्टी गंगा का तल ऊपर कर देती है; जिससे जल ठीक बह नहीं पाता और परिणाम बाढ़ के रूप में दिखता है। तेरी बाढ़ पहले कहर लाती है और बाद में बहार बन जाती है, क्योंकि तेरी मिट्टी और पानी से गंगा के किनारे वाले लोगों की रोजी-रोटी चलती है। आगे चलकर फरक्का में गंगा संस्कृति को नष्ट करके नयी सभ्यता को जन्म दे दिया गया है।

फरक्का में हिमालय की रेती भारत-नेपाल से आकर एक नया हिमालय बनाती है। फरक्का बाँध का डिजाइन अवैज्ञानिक है। इसलिए गंगा जी तू नीचे की तरफ, भारत से मिट्टी का कटाव करके बांग्लादेश में डालती रहती है। यहाँ तेरे किनारे खड़े होकर देखा तो मेरे मुँह से अचानक एक आह निकली— गंगा तू ही तू है, तेरा क्रोध भारत पर ही क्यों है? भारत की मिट्टी को काटकर बांग्लादेश को दे रही है। उसे ही बढ़ा रही है। हम तो “वसुधैव कुटुम्बकम्” मानने वाले हैं। फिर भी धरती माता का कटना व नई जगह पर जमना अच्छा नहीं लगता। हे गंगे, अब तू अपना क्रोध कम कर और भारतमाता की भूमि का कटाव मत कर। मैं नहीं जानता हूँ कि, यह कटाव तेरा प्राकृतिक स्वरूप है, या मानव निर्मित।

बिहार गंगा जी का सबसे प्यारा बेटा है। यहाँ आकर तू अपना सभी कुछ लुटा देती है। तू भर देती है, धरती का पेट लबालब भर जाती है। जलमग्न बन जाती है, बिहार की भूमि। तेरे जल की अति और कमी दोनों बिहार की आपदा ही हैं। बिहार में इसीलिए तेरे स्नान को मोक्ष मानने वाले सबसे कम ही

हैं। हे गंगे तेरा जल अमृत है। तेरी विशिष्टताओं ने ही तुझे दुनिया का सबसे बड़ा तीर्थ बनाया है। इसलिए पूरा भारत तेरे विविध प्रकार के गीत गाता और प्रार्थनाएँ अर्पित करता है।

हिमालय से निकली गंगा में अब हल्दीया बंदरगाह पर समुद्र में रेत भरने लगी है। ज्वार की लहरें वापस समुद्र में जाकर मिलने लगी हैं। तेरी एक धारा थोड़ी दूर चल कर औरंगाबाद के पास पहुँची, तो तेरा नाम पद्मा हो गया। लेकिन माँ गंगे, तेरा सफर कभी खत्म नहीं होगा, समुद्र में भी तेरा सफर है, तुम दुखी-दीनों की स्मृति हो, तुझमें हजारों नदियाँ, जलधाराएँ गाड़-गदारे, नोले-नाले सब मिल जाते हैं और इस प्रकार तुम भारत की हजारों-हजार नदियों का एक संयुक्त परिवार हो।

हे माँ गंगे, तुम्हारे साथ गौमुख से गंगासागर तक यात्रा में तीन बार, 2002-2020 तक दो बार, गंगोत्री से कलकत्ता तक तेरे तटों पर गाड़ियों, मोटर बोटों के प्रदूषण से प्रदूषित होते, प्रत्यक्ष दर्शन करके मिश्रित मन से तुम्हें देखा, तुम मनेरी से टर्नल वाहिनी बनी, टेहरी में बाँध वाहिनी बनी, हरिद्वार, बिजनौर, नरौरा, कानपुर, फरक्का बहुत जगहों पर बाँधों से बंधी, तेरे पेट में खनन, शरीर पर सड़कें व नए-नए पुल बनने शुरू हुए। तुम भारत के 90 बड़े शहरों, 120 से अधिक कस्बों और हजारों गाँवों का मैला ढोने वाली मालगाड़ी बनी।

हिमालय के पंच प्रयागों का तत्व और वहीं के सभी नदियों का गंगत्व (बॉयोफॉज, ब्रह्मसत्त्व) तुम करोड़ों लोगों को पिलाती थी, फलस्वरूप हमारे 17 तरह के रोगाणुओं को नष्ट करके तुम हमें जिलाती थी। इस विरासत को पाकर मैं, अपनी जवानी में आनंदित था और अपने गाँव की गलियों में घूमते हुए गौरव से गाता था कि “मैं उस देश का वासी हूँ, जिस देश में गंगा बहती है”। यह पंक्ति हमारे सीने को फुला देती थी। कभी-कभी “गंगा तेरा पानी अमृत” गाकर, हे माँ गंगे तुझमें गोता लगाकर, स्नान करने का अनुपम आनंद उठाते थे और मन आत्मा को पवित्र करके घर लौट आते थे।

हे गंगे अब तेरा जल गन्ने की सिंचाई में जाता है और तू शहरों का गंदा जल लेकर बहती है। अब तुझमें स्नान करने का मन नहीं होता! मालूम नहीं क्यों? यह मेरा दुर्भाग्य है या तेरा या मेरे देश का पर ऐसा लगता है कि, हमारा विनाशकाल है, उसी से हमारी बुद्धि विपरीत हो गयी है। तभी तो हम अपनी पवित्र माई को कमाई का धंधा बना रहे हैं। हमारे जीवन की जटिलताओं ने तुझे जकड़ा है।

मालूम नहीं माँ गंगे! लेकिन कुछ सवाल 'क्यों' के रूप में पूछ रहा हूँ—

- गं अव्ययं गमयति इति गंगा.... अर्थात् जो स्वर्ग को ले जाये, वह गंगा है। ऐसा क्यों कहा गया?
- स्तोत्र सामस्मि जाह्वी.....श्री कृष्ण ने कहा—नदियों में मैं गंगा हूँ। क्यों?
- आज भी मृत्यु के समय व्यक्ति के मुख में गंगाजल डालने का विधान मान्य बना हुआ है। क्यों?
- अस्थियों को गंगा में प्रवाहित करने की लोकप्रथा है। क्यों?
- कूटनीति और राजनीति के महान विशेषज्ञ चाणक्य ने कहा—'जब संकट की घड़ी हो, तो गंगा की पूजा की जाये। क्यों?
- दुनिया में एक से एक सुन्दर, साफ और विशाल नदियाँ हैं। नील, वोल्गा, टेम्स और ओटावा..... लेकिन किसी के साथ भी दुनिया का इतना गहरा और आत्मीय रिश्ता नहीं है, जितना कि भारत की नदी गंगा के साथ। क्यों?
- गंगा का पानी महीनों और सालों तक रखने के बाद भी एकदम ताजा, कीटाणुरहित और दुर्गन्धमुक्त रहता है। इसे अमृत कहा जाता है.... यानि ऐसा जल जो कभी मृत न हो। क्यों?
- क्यों कहा गया कि, गंगा के समान कोई तीर्थ नहीं? गंगा के किनारे 350 करोड़ छोटे-बड़े तीर्थों की परिकल्पना है। क्यों?
- जिन्होंने महाभारत जीता, उन पाण्डुपुत्रों को भी जब जीवन में निर्वाण बोध हुआ, तो उन्होंने भी गंगा मूल के हिमालय क्षेत्र में ही अपना भविष्य देखा। क्यों?

- हिन्दू गंगा पर अपना दावा जताते हैं। गंगा को कुछ लोग सिर्फ हिन्दुओं की आस्था का केन्द्र मानते हैं। बावजूद इसके बादशाह अकबर ने गंगाजल को अमृत कहा। सुल्तान मुहम्मद तुगलक और औरंगजेब ने गंगाजल को अतिविशिष्ट माना तथा खास मानकर ही अपने इस्तेमाल में लिया। क्यों?
- पूर्वी उत्तर प्रदेश के एक लोकगीत में क्यों कहा गया— अल्लाह मोरे अई हैं, मुहम्मद मोरे अई हैं। आगे गंगा थामली, जमुना हिलोरे लेयं। बीच मा खड़ी बीवी फातिमा, उम्मत बलैया लेय...दूल्हा बने रसूल।।
- 644 ई. में प्रसिद्ध चीनी यात्री ह्वेनसाँग ने शुभारम्भ हेतु पाटलिपुत्र में गंगा और उसके रानीघाट को ही क्यों चुना?
- सम्राट अशोक ने गंगा किनारे ही बोधिवृक्ष की शाखा अपनी पुत्री संघमित्रा को सौंपी और संघमित्रा को गंगा के प्रवाह मार्ग से ही ताम्रलिप्त नामक बंगाल की एक जगह से होते हुए श्रीलंका के लिए भेजा। क्यों?
- महात्मा बुद्ध ने भविष्यवाणी की थी कि गंगा का किनारा पाटलिपुत्र एक दिन आर्य भारत के व्यापार और आर्थिक कार्यकलाप का प्रमुख केन्द्र बनेगा। यही पाटलिपुत्र एक दिन बौद्ध और जैन धर्मों के विकास का भी केन्द्र बना। क्यों?
- वाल्मीकि और तुलसीदास यमुना की गोदी में जन्मे; फिर भी क्रमशः रामायण और रामचरितमानस की रचना गंगा की गोदी में ही बैठकर क्यों की? बिटूर में गंगा की सहायक तमसा और गंगा के मध्य स्थान पर वाल्मीकि आश्रम में रामायण लिखा गया और बनारस के अस्सी घाट पर रामचरितमानस।
- महर्षि व्यास ने गंगा किनारे हिमालय के शांत वनों में बैठकर ही पुराणों की रचना की। आदिगुरु शंकराचार्य ने गंगा किनारे ही 'गंगाष्टक' रचा। रामानुज, वल्लभाचार्य, रामानंद, चैतन्य महाप्रभु... सभी ने गंगा की महिमा के गीत गाये। क्यों?
- संत कबीर के लहरतारा गांव को भला कौन भूल सकता है! कबीर जन्मे भी गंगा के किनारे और कबीरा की तान भी यहीं से पूरी दुनिया में गूंजी। संत रैदास ने तो गंगा किनारे बैठकर ही कहा—'मन चंगा, तो कठौती में गंगा।' क्यों?

- जगन्नाथ की 'गंगालहरी' यहीं अमर हुई। 15वीं शताब्दी में दक्षिण भारत के विद्वान कुमार गुरुपाद ने शैव सिद्धांत की रचना इसी गंगा के केदार घाट पर बैठकर ही क्यों की?
- कर्नाटक संगीत के संस्थापक मुत्तुस्वामी दीक्षित ने 'राग झंझूटी' की रचना के लिए इसी गंगातट को क्यों चुना?
- इसी गंगातट पर कभी मगध के महामंत्री कौटिल्य ने अर्थशास्त्र लिखा और चाणक्य की कूटनीति ने ख्याति पाई। सोचिए! कि महाकवि कालिदास की कोई रचना गंगा और हिमालय के बिना पूरी क्यों नहीं होती?
- महान साहित्यकार प्रेमचन्द की सर्वश्रेष्ठ रचनाएँ उनके गंगा प्रवास के दौरान ही जन्मीं। क्यों?
- आर्यसमाज के प्रणेता महर्षि दयानंद सरस्वती ने अपने चिंतन प्रवास का मुख्य स्थान नरोरा में गंगा के राजघाट को ही क्यों चुना?
- गंगा का बनारस बहुत प्राचीन शहर है। छोटी-छोटी सँकरी गलियों, टूटी-फूटी पुरानी इमारतों और अव्यवस्थित बसावट वाली नगरी होने के बावजूद चाहे कोई धर्म हो, कोई बड़ा आंदोलन हो या कोई बड़ा आध्यात्मिक पुरुष ....सभी का वाराणसी आना उनके जीवन में निर्णायक साबित हुआ। क्यों?
- सोचिए! कि उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ जरूर है, लेकिन उसकी आध्यात्मिक और शैक्षिक शक्ति का केन्द्र आज भी गंगा किनारे बसे नगर इलाहाबाद और वाराणसी क्यों?
- पटना साहिब को आज भी गंगा और सिक्ख गुरुओं के रिश्तों का खास गवाह क्यों माना जाता है?
- भगवान बुद्ध और महावीर जैसे महान ज्ञानी युगपुरुषों को भी विद्यालाभ के लिए गंगा किनारे वाराणसी ही क्यों आना पड़ा?
- आचार्य वाग्भट्ट ने गंगा के किनारे एक हकीम से आयुर्विज्ञान की शिक्षा पाई और 12 शाखाओं का विकास किया। प्रसिद्ध बांग्ला रचनाकार गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर ताउम्र बंगाल में रहे, लेकिन उनकी रचनाएँ भी बनारस की गलियों से अछूती नहीं रहीं। क्यों?

- गंगा किनारे के चार विश्वविद्यालय... तक्षशिला, नालंदा, काशी और इलाहाबाद को जितनी ख्याति प्राप्त हुई, अपवाद छोड़ दें तो उसका दशांश भी किसी और भारतीय विश्वविद्यालय को आज तक हासिल क्यों नहीं हुआ? प्रयाग में आनंदभवन के सामने आज भी वाल्मीकि शिष्य भारद्वाज के आश्रम के अवशेष हैं, जो कभी एक बड़ा विश्वविद्यालय था।
- गंगा तो सिर्फ उत्तर भारत की जीवनदायनी धारा है, फिर मद्रास के दक्षिण में महाबलीपुरम के मूर्तिकारों ने अपनी कल्पना को साकार करने के लिए गंगा को एक मूर्तिरूप देने की इतनी ललक क्यों महसूस की?
- पण्डित नेहरू ने कभी गंगास्नान कर पुण्य कमाने की लालसा नहीं की। मृत शरीर की अस्थियां गंगा में प्रवाहित करने का उनके लिए कोई धार्मिक महत्त्व नहीं था। वह निरीश्वरवादी थे। बावजूद इसके अपनी वसीयत में उन्होंने अपनी अस्थियों को गंगा में प्रवाहित करने की बात क्यों लिखी?
- पण्डित नेहरू ने चिट्ठी चाहे एडवर्ड थॉमसन को लिखी हो या नैनी जेल से बेटा इंदिरा को, वह गंगा के बारे में लिखना नहीं भूले। क्यों?
- आजादी के बाद भारत विभाजन का कष्ट समेटने महात्मा गांधी हुगली के नामकरण वाली गंगा के सागर संगम क्षेत्र पर स्थित नोआखाली में ही क्यों गये?
- गौ, गीता और गायत्री के अतिरिक्त जिस चौथे आधार को मानव मुक्ति का द्वार माना गया, वह एकमात्र गंगा ही है। क्यों?
- सिर्फ गंगा के किनारे ही हर बरस माघ मेला जोड़ने की परम्परा बनी। क्यों?
- ख्यातिनाम शहनाईवादक स्व. उस्ताद बिस्मिल्लाह ख़ाँ ने क्यों कहा था—“ गंगा और संगीत एक—दूसरे के पूरक हैं?”
- यदि कभी हरिद्वार ही स्वर्ग का द्वार था और हिमालय क्षेत्र उत्तराखंड की ही स्वर्ग के रूप में ख्याति थी, तो और भी कई नदियाँ इसी उत्तराखंड से उतर—उतरकर भारतखण्ड में प्रवाहित होती हैं। फिर गंगा को ही सुरसरि.. क्यों कहा गया?
- गंगा के साथ ही आकाश से उतारकर सगर पुत्रों को पुनर्जीवित करने के



भगीरथ प्रयास का किस्सा क्यों जुड़ा? क्यों नहीं और हिमनदियों को स्वर्ग से उतारकर धरती पर लाने के किस्सों को ख्याति मिली? क्या शेष स्वर्ग धाराएँ बिना प्रयास ही पृथ्वी पर उतर आईं?

- क्यों नहीं कोई और धारा सभी युगों में इतनी पूज्य और महिमायुक्त हुई? क्यों नहीं किसी और नदी का जल अक्षुण्ण है? क्यों नहीं कोई और भारतीय नदी दुनिया में भारत की राष्ट्रीय अस्मिता की पहचान मानी गई?
- क्यों नहीं किसी और एक भी नदी के तट पर भारतीय धर्म, साहित्य, रचना, ज्ञान और पुरुषार्थ का ऐसा समग्र इतिहास मिलता?

हे गंगे, तेरे पक्ष में बहुत जवाबों के बावजूद, अब तर्क देने की जरूरत नहीं है कि, गंगा एक राष्ट्रीय नदी प्रतीक के रूप में मान्य हो। हमारी माँ गंगा के विषय में बहुत लोगों ने कहा है, लेकिन सर एडमंड हिलेरी, जिन्होंने एवरेस्ट पर पहली बार चढ़ाई में विजय पायी थी, उनकी मोटरबोट लाख कोशिशों के बावजूद अलकनंदा की धारा में नंद प्रयाग से आगे नहीं बढ़ पाई, तो उन्होंने यही कहा कि “सचमुच गंगा सिर्फ नदी नहीं है, गंगा भारतीय संस्कृति की महाधारा है।” दुनिया में जितनी भी नदियाँ हैं, उनके किनारे सभ्यताएँ जन्मीं, लेकिन गंगा के किनारे तो एक भरी-पूरी संस्कृति ने जन्म लिया है।

हजारों वर्ष बाद गंगा के किनारे आज भी भारतीय संस्कृति के केन्द्र बने हुए हैं। गंगा भारतीय आस्था की एक राष्ट्रीय प्रतीक है। तभी तो आदिगुरु शंकराचार्य ने कहा कि, उन्हें गंगा की मछली, गंगा का कछुआ, गंगा का एक गरीब इंसान मतलब कुछ भी बन कर रहना मंजूर है। गंगा जी पर दुनिया भर के जल विशेषज्ञों डॉ. एफ. कोहिमान, विख्यात फ्रांसीसी डॉ. डी. हरेल, प्रसिद्ध अमेरिकी लेखक मार्कट वेवन, बर्लिन और भारत के डॉ. के.एल. राव तथा दुनिया के मेडिकल साइंस के ख्यातिनाम वैज्ञानिकों ने महत्त्वपूर्ण शोध किये और सभी ने पाया कि गंगा में दूसरी नदियों की अपेक्षा गंगत्व (जीवाणुभक्ष) की मात्रा बहुत अधिक है।

दुनिया की सबसे साफ नदी 'टेम्स' का रखा हुआ जल दूषित हो जाता है, जबकि गंगाजल पूरी तरह ताजा मिलता है, इसीलिए सिर्फ गंगा दूलोक व भूलोक की साक्षी है और इसलिए राज ,समाज और संत सब मिलकर माँ गंगा के सम्मान व संरक्षण का काम करते थे।

गंगा, मूल में दुनिया का अद्वितीय वानस्पतिक संघटन है। इसकी ऊंचाई के ढलानों पर ऐसा अद्भुत पारिस्थितिकीय तंत्र विकसित हुआ है, जिसमें दुनिया के लगभग सभी पादप और भौगोलिक तत्त्वों का समावेश है। गंगा के प्रवाह में सिप्रीनिड समूह के अनूठे जीव-जन्तु भी हैं। ...हजार-दो हजार नहीं, बल्कि जीव-जन्तुओं की जाति-प्रजाति की दृष्टि से भी गंगा का प्रवाह निस्संदेह दुनिया में सबसे समृद्ध प्रवाहों में से एक है। गंगा को सूर्य की रोशनी भी समृद्ध करती है ,तो उत्तराखंड की हवाएँ भी, वनस्पति भी और उत्तराखंड से लेकर भरतखंड तक की भूमि का स्पर्श भी। इसलिए गंगा ब्रह्मपुत्री भी है, सूर्यपुत्री भी और हिमपुत्री भी।

अब आप समझ सकते हैं कि, महात्मा गांधी गंगा किनारे, इलाहाबाद में पहुँचकर मुँह धोते वक्त एक लोटा पानी बिखर जाने से क्यों चिंतित हुए थे। जब पं. नेहरू ने उन्हें आश्वस्त करने की कोशिश की- 'यहाँ तो गंगा बहती है। यहाँ एक लोटे पानी की चिंता क्यों? इस पर गांधी जी ने कहा कि गंगा अकेले नेहरू या गांधी की नहीं, गंगा के दोनों किनारों पर बसे 30 करोड़ लोगों की है। क्यों? दरअसल यह सोच का प्रश्न है.. एक लोटे पानी का नहीं? इसी सोच ने गंगा को गंगा बनाए रखा। गंगा इसीलिए सिर्फ एक नदी नहीं, कुछ और बनी रही, क्योंकि गंगा के किनारे ऐसी सोच बसती थी।

ऐसी माँ गंगा के मिट जाने की कल्पना मात्र से हृदय कांप उठता है।... लेकिन सच तो यही है, जो एक दादा ने पोती से कहा कि अंधाधुंध कचरा डालने के बाद गंगा कब तक अमृतमयी बनी रह सकती है? एक न एक दिन तो इसे मैला ढोने वाली मालगाड़ी में तब्दील होना ही है...हो रही है। गंगा अब न अमृतमयी

है! न तारनहार!! अब तो गंगा बीमारी देने और प्राण लेने वाली बन गई है। जब किसी नदी के तट और जल को इतना गंदा कर दिया जाये कि वहाँ जीवन—मृत्यु संस्कारों के कर्मकाण्ड में रुकावट पैदा होने लगे; नदी का गंदा जल देखकर स्नान की इच्छा मर जाये...नदी का जल आचमन करने योग्य भी न रहे, तो वह नदी एक तरह से मरी हुई ही होती है। क्या यही हमारी गंगा है? क्या हमारे ऋषि—मुनियों ने ऐसी ही गंगा को अपनी आस्था का केन्द्र बनाया था? क्या उन्होंने हमें ऐसी ही गंगा सौंपी थी? क्या ऐसे ही जल वाली नदी को हम 'गंगा' कहते हैं। जिस नदी का जल मर गया हो, क्या उसकी संतानों को उस नदी को अपनी माँ कहने का हक बनता है? नहीं!... बिल्कुल नहीं!! हम झूठ बोलते हैं? हमने गंगा को कभी हृदय से अपनी माँ माना ही नहीं। सोचिए! क्यों?

प्रत्येक क्यों का जबाब है —अब "बेटे—बेटियों ने बीमार माँ की चिंता छोड़ दी है। अब माँ गंगा केवल स्नान से पाप धोने वाली ही है। इसलिए अब हमारी माँ अपने हाल पर कोमा में है। सरकार इसकी चिकित्सा नहीं कर रही, बल्कि "माई से कमाई" का कानून बना रही है। कानून बनाने वाले बोल रहे हैं कि माई का इलाज हो रहा है और वह अब ठीक हो रही है।

सरकारी तंत्र भी गंगा को धार्मिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक सभी कुछ बोलते हैं। 'गंगा तू ही तू है'! इसी सम्मान के चलते गंगा की चिकित्सा करने वाले विभाग का नाम भी 'नमामि गंगे' रखा है। उनको समझना होगा कि नाम बदलने से बीमारी ठीक नहीं होगी, गंगे की बीमारी तो रक्त—प्रवाह की है और सरकार घाट बनवाकर, सुन्दर दिखाने के नाम पर, जवड़ा बनाने में अच्छा खासा पैसा खर्च कर रही है। फिर कमाई में खतरा भी कम है, इसलिए घाट ज्यादा बन रहे हैं। आगे भी ऐसे ही कामों को स्वीकृति देने वाला कानून बनाने के लिए प्रारूप तैयार किया है।

रक्त—प्रवाह ठीक करना बहुत आसान है— उसमें बस पैसे का खेल नहीं है।

सरकार का पैसा किसी की जेब में नहीं जा सकेगा, बस यही बाधा है। नये बांध और खनन को रोकने से ही रक्त-प्रवाह ठीक हो जायेगा। लेकिन इस काम से ठेकेदारों की आय नहीं होगी, कमाने की स्वार्थसिद्धि नहीं होगी। इसलिए माई से कमाई का रास्ता बंद होता है। यही तेरी अविरलता में बाधा है। तुझे ही अब अपनी अविरलता के लिए अपना पुराना रूप दिखाना होगा। हमें विश्वास है कि 'तू ही तू है'। अपना स्वास्थ्य स्वयं ठीक करोगी। आजादी से अविरल बनकर सभी को तारोगी। 'तू ही तू है! अब तू ही तू है!! तू ही तू है।

मैं सोचता हूँ कि, यदि गंगा के पक्ष में खड़े 'क्यों' इतने ही मजबूत हैं, गंगा ... गंगा है क्योंकि, के तर्क इतने ही प्रमाणिक हैं, तो फिर गंगा इतनी हीन-मलिन और मृत कैसे हो गई? भारत में नदियों के प्रति जैसी श्रद्धा है और 'माँ' जैसा सम्बोधन मिला है, वह दुनिया की दूसरी नदियों को नहीं मिला, लेकिन क्या बात है कि आज भी भारत की नदियाँ भारत के लिए राष्ट्रीय बेचैनी का विषय नहीं बन सकी हैं? जबकि टेम्स, राई और डेन्यूब जैसी घोर प्रदूषण वाली तीन प्रमुख यूरोपीय नदियाँ कभी यूरोप में राष्ट्रीय स्तर पर चिंता का विषय बनीं। सरकारों ने पहल की और आज ये तीनों ही यूरोप की स्वच्छ नदियाँ हैं। आखिरकार नदियों के प्रति उपेक्षा और उदासीनता के वर्तमान भारतीय परिदृश्य के लिए जिम्मेदार कौन है? क्या हम खुद? भारत सरकार? नदियों के प्रवाह का नियंत्रण भारत सरकार ही करती है। प्रथम जिम्मेदार वही है। दूसरे संत और तीसरा समाज है।

समाज, व्यवहारतः आज कुंभ का अभिप्राय भी भूल गया है, इसलिए गंगा बेबस हुई है। आज हम भारतीय अपनी एक भी नदी की शुद्धता का दावा करने योग्य नहीं रहे। कहीं भूजल का शोषण, कहीं औद्योगिक कचरा... नगरीय मल का प्रदूषण और कहीं सिंचाई के नाम पर हमारी नदियों को लूटा जा रहा है। गंगा में मल प्रदूषण की जिम्मेदार मलशोधन संयंत्रों की अक्षमता भी है। वानस्पतिक ह्रास के कारण गंगा में प्राकृतिक झरनों का जल कम हुआ है; गाद बढ़ी है। यह क्यों हुआ? ग्लेशियर और वर्षाजल में कमी के कारण गंगा में पानी कम

हुआ है। दुनिया के ग्लेशियर बहुत तेजी के साथ सिकुड़ रहे हैं। ये ग्लेशियर बहुत तेजी के साथ अपना आकार खो रहे हैं, जिसका प्रमुख कारण हमारी अप्राकृतिक जीवनशैली ही है।

टिहरी बाँध में बाँधकर गंगाजल को मृत बनाने का प्रयास पहले ही क्या कम था, जो कि अब अकेले उत्तराखंड में बहुत सारी छोटी-बड़ी विद्युत परियोजनाओं को मंजूर किया गया है? उत्तराखंड अपनी नदियों की कीमत पर ऊर्जाखंड बनाने के सपने देख रहा है। जबकि हम जानते हैं कि प्रकृति हमारे लालच को पूरा करने के लिए नहीं है। हमें उससे सिर्फ अपनी जरूरत भर लेने का ही अधिकार है। हम प्रकृति से जितना और जैसा लेते हैं, उसे उतना और वैसा ही शुद्ध तथा नैसर्गिक बनाकर देना हमारा दायित्व है। इस दायित्व को हमारा समाज और सरकार दोनों ही भूल गए हैं।

हे गंगे तेरे बायें सीने पर नरोरा से बलिया तक 1100 किलोमीटर लम्बा और 24-25 फीट ऊँचा गंगा एक्सप्रेस वे बनाने की तैयारी कर ली गई है। दुर्भाग्य है कि हम एक बार तटबंधों में बंधी कोशी के बार-बार उफनने की घटनाओं से भी, चाहे 'राज हो या समाज,' सबक लेने को तैयार नहीं हैं। एक ओर तो हम जयघोष करेंगे...गायेंगे—'हर हर गंगे!जय जय गंगे!! और दूसरी ओर भूल जायेंगे कि, गंगा के प्रति गंगा की संतानों का दायित्व क्या है। जिस संत-समाज को नदी और पानी की पहरेदारी सौंपी थी, वह अपने उत्तरदायित्व से चूक गया है। व्यवहार और सिद्धांत का यह अंतर खत्म किए बगैर गंगा अब बचने वाली नहीं, इसी ने गंगा को मृतप्राय बनाया है।

गंगे तू ही तू है, जिसने बार-बार अनेक बार कष्ट झेले हैं, फिर भी तू मानव जाति का कल्याण करने में चूकती नहीं है। आज भी तूने भारतीय आस्था, पकड़कर मजबूती से रखी हुई है, इसलिए भारत पूरी दुनिया में आज भी गंगा, यमुना की संस्कृति का समृद्ध राष्ट्र बना हुआ है।

हे गंगे 'तू ही तू है', तू ही तू है, तू ही तू है। हम सदैव प्रार्थना करते हैं। हर-हर गंगे! जय-जय गंगे। लेकिन तूने हमारे जीवन, जीविका हेतु अपना सभी कुछ दे दिया है। इसलिए तेरी प्रार्थना करते हैं। तेरे जमीर के लिए इंसान और राज को कुछ करने की जरूरत होती है, तो भूल जाते हैं। तब तो जमीर वाले स्वामी सानंद, स्वामी निगमानंद, स्वामी गोकुलानंद पद्मावती, आत्मबोधानंद और स्वामी शिवानंद सरस्वती ही आगे आते हैं।

गंगे माई के नाम पर हजारों संगठन, संस्थाएँ, व्यक्ति अपनी कमाई में ही जुटे हैं। घर-परिवार छोड़ कर तुझे अपना परिवार बनाने और मानने वालों की संख्या दिन-प्रतिदिन घटती ही जा रही है।

तुझमें प्रेम, विश्वास, आस्था, श्रद्धा, इष्ट और भक्तिभाव है। इसी से तुम पूरी दुनिया का तीर्थ हो। सभी धर्मों के लोगों में आपके प्रति तीर्थभाव है। तू गंगे विश्वतीर्थ है। बनी रहेगी। विनाशकाल में विपरीत बुद्धि बनी है। तू तेरी शक्ति से बची रहेगी। सनातन बनकर बहती ही रहेगी। सनातन, अविरल, निर्मल बनकर बहेगी गंगे तू ही तू है।



## उद्गम से ही घात सहती विविधरूपा ब्रह्मपुत्र नदी

मेरे अरुणाचल के साथियों ने ब्रह्मपुत्र नदी यात्रा का आयोजन किया था। इसमें रविन्द्रनाथ, हेम भाई, गुवाहाटी के स्मिथ, सर्वोदयी भाई—बहिनों का प्रत्यक्ष योगदान और बहुत से साथियों का साथ रहा था। सांपो नदी तिब्बत से चलकर भारत पहुँचते ही डीह बन जाती है। अरुणाचल की डीह आसाम में आकर ब्रह्मपुत्र बन जाती है। ब्रह्मपुत्र के बाएं—दाएं बहने वाली नदियों में मुख्यतः दिबांग नदी, लोहित नदी, धनसिरी नदी, कामेंग नदी, मानस नदी, बेकी नदी, रैडक नदी, जलंधा नदी, तीस्ता नदी और सुबनसिरी नदी उल्लेखनीय हैं।

भारत के गुवाहाटी डिब्रूगढ़ मार्ग पर ही मुख्य नगर इसके किनारे है। भागीरथ ग्लेशियर तिब्बत के हिमालय की 5210 मी. (17090 फीट) ऊँचाई से आरम्भ होकर बंगाल की खाड़ी, बांग्लादेश के गंगा डेल्टा में जाकर समुद्र में मिल जाती है। तिब्बत से 2800 किमी यात्रा करके यह बांग्लादेश पहुँचती है। ब्रह्मपुत्र, गंगा व मेघना तीनों नदियाँ एक पंजे की तरह तीन भिन्न रंगों की जलघाटी बनकर समुद्र में विलीन होती हैं।

इस नदी का उद्गम तिब्बत में कैलाश पर्वत के निकट जिमा यॉन्गजॉन्ग झील है। आरंभ में यह तिब्बत के पठारी इलाके में, यार्लुंग सांगपो नाम से, लगभग 4000 मीटर की औसत ऊँचाई पर, 1700 किलोमीटर तक पूर्व की ओर बहती है, जिसके बाद नामचा बार्वा पर्वत के पास दक्षिण—पश्चिम की दिशा में मुड़कर भारत के अरुणाचल प्रदेश में प्रवेश करती है, जहां इसे सियांग कहते हैं।

ऊँचाई को तेजी से छोड़ यह मैदानों में दाखिल होती है, जहाँ इसे दिहांग नाम से जाना जाता है। असम में नदी काफी चौड़ी हो जाती है। कहीं-कहीं तो इसकी चौड़ाई 10 किलोमीटर तक है। डिब्रूगढ तथा लखिमपुर जिले के बीच नदी दो शाखाओं में विभक्त हो जाती है। असम में ही नदी की दोनों शाखाएँ मिल कर मजुली द्वीप बनाती है, जो दुनिया का सबसे बड़ा नदी-द्वीप है। असम में नदी को प्रायः ब्रह्मपुत्र नाम से ही पुकारते हैं, पर बोड़ो लोग इसे भुल्लम-बुथुर भी कहते हैं, जिसका अर्थ है— कल-कल की आवाज निकालना।

इसके बाद यह बांग्लादेश में प्रवेश करती है, जहाँ इसकी धारा कई भागों में बँट जाती है। एक शाखा गंगा की एक शाखा के साथ मिल कर मेघना बनाती है। सभी धाराएँ बंगाल की खाड़ी में गिरती है।

## सिंचाई और बाढ़ नियंत्रण

1954 के बाद बाढ़ नियंत्रण योजनाएँ और तटबंधों के निर्माण प्रारम्भ किए गए थे, बांग्लादेश में यमुना नदी के पश्चिम में दक्षिण तक बना ब्रह्मपुत्र तटबंध, बाढ़ को नियंत्रित करने में सहायक सिद्ध होता है। यहाँ की तिस्ता बराज परियोजना, सिंचाई और बाढ़, दोनों की सुरक्षा योजना है। ब्रह्मपुत्र या असम घाटी से बहुत थोड़ी विद्युत पैदा की जाती है, जबकि उसकी अनुमानित क्षमता काफी है। अकेले भारत में ही यह लगभग 12,000 मेगावाट है। असम में कुछ जलविद्युत केन्द्र बनाए गए हैं, जिनमें से सबसे उल्लेखनीय 'कोपली हाइडल प्रोजेक्ट' है और अन्य प्रोजेक्ट का निर्माण कार्य जारी है।

## नौ-संचालन और परिवहन

तिब्बत में लाकृत्जू (ल्हात्से दज़ोंग) के पास नदी लगभग 644 किलोमीटर के एक नौकायन योग्य जलमार्ग से मिलती है। इसमें चर्मावृत नौकाएँ (पशु-चर्म और बाँस से बनी नौकाएँ) और बड़ी नौकाएँ समुद्रतल से 3,962 मीटर की



ऊँचाई पर यात्रा करती हैं। त्सांगपो पर कई स्थानों पर झूलते पुल बनाए गए हैं।

असम और बांग्लादेश के भारी यातायात वाले क्षेत्रों में बहने के कारण ब्रह्मपुत्र सिंचाई से ज़्यादा अंतःस्थलीय नौ-संचालन के लिए महत्त्वपूर्ण है। नदी ने पश्चिम बंगाल और असम के बीच पुराने समय से एक जलमार्ग बना रखा है। यद्यपि यदा-कदा राजनीतिक विवादों के कारण बांग्लादेश जाने वाला यातायात अस्त-व्यस्त हुआ है। ब्रह्मपुत्र बंगाल के मैदान और असम से समुद्र से 1,126 किलोमीटर की दूरी पर स्थित डिब्रूगढ़ तक नौकायन योग्य है। सभी प्रकार के स्थानीय जलयानों के साथ ही यंत्रचालित लान्च और स्टीमर भारी भरकम कच्चा माल, इमारती लकड़ी और कच्चे तेल को ढोते हुए आसानी से नदी मार्ग में ऊपर और नीचे चलते हैं।

1962 में असम में गुवाहाटी के पास सड़क और रेल, दोनों के लिए साराईघाट पुल बनने तक ब्रह्मपुत्र नदी मैदानों में अपने पूरे मार्ग पर बिना पुल के थी। 1987 में तेज़पुर के निकट एक दूसरा कालिया भोमौरा सड़क पुल आरम्भ हुआ। ब्रह्मपुत्र को पार करने का सबसे महत्त्वपूर्ण और बांग्लादेश में तो एकमात्र साधन नौकाएँ ही हैं। सादिया, डिब्रूगढ़, जोरहाट, तेज़पुर, गुवाहाटी, गोवालपारा और धुबुरी असम में मुख्य शहर और नदी पार करने के स्थान हैं। बांग्लादेश में महत्त्वपूर्ण स्थान हैं, कुरीग्राम, राहुमारी, चिलमारी, बहादुराबाद घाट, फूलचरी, सरीशाबाड़ी, जगन्नाथगंज घाट, नागरबाड़ी, सीरागंज और गोउंडो घाट। अन्तिम रेल बिन्दु बहादुराबाद घाट, फूलचरी, जगन्नाथगंज घाट, सिराजगंज और गोवालंडो घाट पर स्थित हैं।

ब्रह्मपुत्र का ऊपरी मार्ग 18वीं शताब्दी में ही खोज लिया गया था। हालाँकि 19वीं शताब्दी तक यह लगभग अज्ञात ही था। असम में 1886 में भारतीय सर्वेक्षक किंथूप (1884 में प्रतिवेदित) और जे.एफ. नीडैम की खोज ने त्सांगपो नदी को ब्रह्मपुत्र के ऊपरी मार्ग के रूप में स्थापित किया। 20वीं शताब्दी के

प्रथम चतुर्थांश में कई ब्रिटिश अभियानों ने त्सांगपो की धारा के प्रतिकूल जाकर तिब्बत में जिह-का-त्से तक नदी के पहाड़ी दर्रों की खोज की।

जैसा इस नदी का नाम पुल्लिंग है, वैसा ही इसका सम्पूर्ण चरित्र है। विशालकाय होकर यह बाढ़ में डुबाती और सुखाड़ में रेत में दबाती और चलाते हुए थकाती है। तिब्बत में इसका उद्गम मनोहारी है। अरुणाचल और असम बाढ़ का डरावना दृश्य प्रस्तुत करता है। यह नदी विविधरूपा है। इसके उद्गम पर ही तिब्बत क्षेत्र में चीन ने इस पर धान की खेती शुरू कर दी है। चीन द्वारा सांपो नदी पर बन रहे भयानक बांध हाईड्रोजन बम की तरह उपयोग किये जा सकते हैं।

भारत ने कभी अपने पड़ोसी देश की नदियों पर इस प्रकार के घातक कार्य नहीं किये हैं। अन्तर्राष्ट्रीय समझौतों की पालना की है। अन्तर्राष्ट्रीय नदी कानून को माना है। हमने अपने पड़ोसी देशों को कानून मनवाने की बाध्यता पैदा नहीं की है। क्या यह हमारी कमजोरी है? या छोटा भाई मानकर उसकी गलतियों को नजर अंदाज किया है? मुझे दोनों सवालों का जवाब ढूँढना है। हमारी सरकार ब्रह्मपुत्र नदी के विषय में मौन क्यों है? बोलती तो जवाब मिल जाता।

ब्रह्मपुत्र पर पड़ोसी की घात हमारे भविष्य हेतु खतरा है। इसे एक घातक प्रयास मानकर इसका समाधान खोजना जरूरी है। बांग्लादेशी तो नदी जोड़ के विरुद्ध काम शुरू होने से पहले ही देश-दुनिया में चिल्लाने लगे। इन्होंने अन्तर्राष्ट्रीय जल सम्मेलनों में भारत की बहुत निंदा करने का प्रयास किया था। मैंने स्वयं इन्हें दर्जनों बार जवाब दिया है। यह जो “प्रस्तावित नदी जोड़” है, हम भारतीय ही इसको रोकने हेतु सक्रिय हैं। यह हमारे देश के लिए घातक है, बांग्लादेश के लिए उतनी घातक नहीं है।

बांग्लादेशी हमें सुनकर शांत हो जाते हैं। चीन के “साम्यवादी दुष्कर्म” का हमारी सरकार ही समाधान ढूँढ सकती है। हमारी सरकार को चीन के गलत

कामों का रोकना चाहिए तथा अच्छे काम कोई हों तो प्रशंसा भी जरूर करनी चाहिए। हमारे अपने पड़ोसियों के प्रति हमारे रिश्तों का अच्छा होना जरूरी है। इससे ब्रह्मपुत्र संकटमुक्त होगी। हम सभी संकटमुक्त और स्वस्थ होंगे। ब्रह्मपुत्र चीन से अधिक भारत की नदी है। इसका अधिक अच्छा—बुरा असर भारत पर ही पड़ता है। इससे भारत को अधिक सचेत रहने की जरूरत है।



## अपने अस्तित्व को बचाने के लिए संघर्षरत सरयू नदी

सरयू नदी के इतिहास में देखें तो रामायण की कथा में सरयू नदी अयोध्या से होकर बहती है, जिसे दशरथ की राजधानी और राम की जन्मभूमि माना जाता है। वाल्मीकि रामायण के कई प्रसंगों में इस नदी का उल्लेख आया है। उदाहरण के लिये, विश्वामित्र ऋषि के साथ शिक्षा के लिये जाते हुए श्रीराम द्वारा इसी नदी द्वारा अयोध्या से इसके गंगा के संगम तक नाव से यात्रा करते हुए जाने का वर्णन रामायण के बालकाण्ड में मिलता है। कालिदास के महाकाव्य 'रघुवंशम्' में भी इस नदी का उल्लेख है। बाद के काल में रामचरितमानस में तुलसीदास ने भी इस नदी का गुणगान किया है।

वर्तमान में सरयू नदी तंत्र की नदियों का काफी जल सिंचाई परियोजनाओं द्वारा नहरों के लिये फीडर पम्पों और बाँधों के माध्यम से निकाला जाता है। उदाहरण के लिये शारदा नहर परियोजना भारत की सबसे बड़ी सिंचाई परियोजनाओं में से एक है। अतः इस नदी का जल प्राकृतिक अपवाह से काफी कम हो चुका है और यह नदी भी अपने प्राकृतिक जलजीवों के लिये सुरक्षित नहीं रह गयी है। शिशुमार या स्थानीय भाषा में सूँस इस नदी के सर्वाधिक प्रभावित जंतु हैं जिनकी आबादी समाप्ति के खतरे से जूझ रही है।

सरयू नदी पर उत्तराखण्ड में टनकपुर के पास बाँध बनाकर शारदा नहर निकाली गई है। यह भारत की सर्वाधिक बड़ी नहर प्रणालियों में से एक है। अन्य कई स्थानों पर फीडर पम्प द्वारा नहरें निकाली गयी हैं, जिन्हें शारदा सहायक के

नाम से जाना जाता है। दोहरी घाट, बिल्थरा रोड, तथा राजेसुल्तानपुर आदि स्थानों से अनेक सरयू नहर परियोजनाओं के माध्यम से भारी मात्रा में इसके जल का दोहन हो जाता है और प्रवाह निरन्तर कम होने से जलचर असुरक्षित हो जाते हैं। मछलियाँ, कौवे, बगुले, हंस, कछुए तथा शिशुमार (सूँस) आदि प्रजातियां अब पूर्णतः विलुप्त होती जा रही हैं।

सरयू नदी हिमालय से निकलकर उत्तरी भारत के गंगा मैदान में बहती है। यह भारत की प्राचीन नदियों में से एक है, जो बलिया और छपरा के बीच में गंगा में मिल जाती है। इसकी कुल लम्बाई 350 किलोमीटर है। सरयू नदी जब उत्तराखंड में बहती है, वहाँ इसे काली नदी के नाम से भी जाना जाता है। मैदान में उतरने के पश्चात् इसमें करनाली या घाघरा नदी आकर मिलती है और इसका नाम सरयू हो जाता है। उत्तर प्रदेश के पश्चिमी क्षेत्रों में इसे शारदा भी कहा जाता है। यह काफी दूरी तक भारत (उत्तराखण्ड राज्य) और नेपाल के बीच सीमा बनाती है। शारदा नाम से उत्तर प्रदेश के पीलीभीत, लखीमपुर, सीतापुर, फैजाबाद, मऊ में पहुँचकर यह गंगा जी में मिल जाती है।

यह एक वैदिककालीन नदी है, जिसका उल्लेख ऋग्वेद में मिलता है। इस संदर्भ में यह वितर्क किया जाता है कि ऋग्वेद में इंद्र द्वारा दो आर्यों के वध की कथा में जिस नदी के तट पर इस घटना के होने का वर्णन है, वह यही नदी है। इसकी सहायक राप्ती नदी का भी अरिकावती नाम से उल्लेख मिलता है।

सरयू नदी की प्रमुख सहायक नदी राप्ती है, जो इसमें उत्तर प्रदेश के देवरिया जिले के बरहज नामक स्थान पर मिलती है। राप्ती की अन्य सहायक नदियाँ आमी, जाह्वी इत्यादि हैं, जिनका जल अंततः सरयू में जाता है।

ज्यादातर ब्रिटिश मानचित्रकार इसे पूरे मार्गपर्यंत घाघरा या गोगरा के नाम से प्रदर्शित करते रहे हैं, किन्तु परम्परा में और स्थानीय लोगों द्वारा इसे सरयू (या सरजू) कहा जाता है। इसके अन्य नाम देविका, रामप्रिया इत्यादि हैं।

वर्तमान में यह नदी अपने अस्तित्व को बचाने के लिए संघर्ष कर रही है। इसमें लगातार छेड़खानी की जा रही है। अवैध उत्खनन, नदियों में अपशिष्ट साम्रगी का विर्सजन, शवों का दहन किया जा रहा है। इस कारण इसमें औषधीय व शोधक गुणों का निरंतर ह्रास होता जा रहा है। अब इसकी विशिष्टता शेष नहीं बची है। प्रदूषण ने इसे मार दिया है। इस नदी की भूमि का अतिक्रमण, प्रदूषण तथा जल शोषण हुआ है।

संस्कृतिक और आध्यात्मिक महत्त्व की यह नदी अब निष्प्राण है। एक काल में गंगा के समान ही इसकी विशिष्टता का सम्मान था। इसे पुनर्जीवित करने का भी कोई प्रयास नहीं हुआ है। इसके किनारे पर भारत की विरासत आज भी मौजूद है। इस नदी को अयोध्या में राम जन्मभूमि का किनारा मिला था। अयोध्या को नई साँस्कृतिक राजधानी बनाने की बात और काम जरूर चालू है, पर नदी को पुनर्जीवित करने का प्रयास नहीं है।



## प्रदूषण, अतिक्रमण और जलशोषण के कारण मरणासन्न सिन्धु नदी

सिन्धु और उसकी सहायक नदियों पर 800 से अधिक ज्ञात सिन्धु घाटी स्थलों में से केवल 90-96 की खोज की गई है। अब सतलुज, हड़प्पाकाल में सिन्धु की एक सहायक नदी, घग्गर-हकरा नदी में बह गई, जिसके जलक्षेत्र में सिन्धु की तुलना में अधिक हड़प्पा स्थल थे। यह नदी भारतीय सभ्यता और संस्कृति का केन्द्र रही थी। बाद के दिनों में इसी नदी के नाम के प्रथमाक्षर 'स' को 'ह' बोलने से हिन्दू शब्द उच्चरित हुआ है। बहुत से विद्वानों का मानना है कि, हिन्दू धर्म भी सिन्धु नदी के किनारे से ही आरम्भ हुआ था।

**अ-1** पाकिस्तान ने इसे अपनी राष्ट्रीय नदी घोषित की है। भारत की यह अन्तर्राष्ट्रीय नदी है। इससे पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, जम्मू-कश्मीर का पोषण होता है। सबसे पहले भारत को अनाज में स्वावलम्बी बनाने वाला भाखड़ा बांध इसी की सहायक नदियों पर बना था।

**अ-2** भारत की घघर नदी भी इसी की सहायक है, जो आज भी इस नदी को प्रवाहमान बनाये हुए है। पाकिस्तान के साथ हुए इस नदी के समझौतों का भारत आज भी ईमानदारी से पालन कर रहा है। भारतीय लोग भी इस नदी का पाकिस्तान के लोगों से अधिक सम्मान करते हैं।

सिन्धु घाटी सभ्यता (3300-1700 ई.पू.) विश्व की प्राचीन नदी घाटी सभ्यताओं में से एक प्रमुख सभ्यता थी। ऋग्वेद में कई नदियों का वर्णन किया गया है,

जिनमें से एक का नाम "सिन्धु" है। ऋग्वैदिक "सिन्धु" को ही वर्तमान सिन्धु नदी माना जाता है। यह अपने पाठ में 176 बार, बहुवचन में 94 बार, और सबसे अधिक बार "नदी" के सामान्य अर्थ में उपयोग किया जाता है। ऋग्वेद में, विशेष रूप से बाद के भजनों में, इस शब्द का अर्थ विशेष रूप से सिन्धु नदी को संदर्भित करने के लिए संकीर्ण है, उदाहरण के लिए:— नारदादि सूक्त के भजन में उल्लिखित नदियों की सूची में। ऋग्वैदिक भजन में ब्रह्मपुत्र को छोड़कर, सभी नदियों को स्त्रीलिंग में वर्णित किया गया है।

सिन्धु घाटी सभ्यता के प्रमुख शहर, जैसे हड़प्पा और मोहन जोदड़ो, लगभग 3300 वर्ष ईसापूर्व के हैं, जो प्राचीन विश्व की कुछ सबसे बड़ी मानव बस्तियों का प्रतिनिधित्व करते हैं। सिन्धु घाटी सभ्यता पूर्वोत्तर अफगानिस्तान से लेकर पाकिस्तान और उत्तर-पश्चिम भारत तक फैली हुई है, जो ऊपरी सतलुज पर झेलम नदी के पूर्व से रोपड़ तक जाती है। तटीय बस्तियाँ पाकिस्तान, ईरान की सीमा से लगाकर आधुनिक गुजरात और भारत में कच्छ तक फैली हुई हैं।

उत्तरी अफगानिस्तान में शॉर्टुघई में अमु दरिया पर सिन्धु स्थल है, और हिण्डन नदी पर सिन्धु स्थल आलमगीरपुर दिल्ली से केवल 28 किमी (17 मील) की दूरी पर स्थित है। आज तक, 1052 से अधिक शहर और बस्तियाँ पाई गई हैं, जो मुख्य रूप से घग्गर-हकरा नदी और इसकी सहायक नदियों के सामान्य क्षेत्र में हैं। बस्तियों में हड़प्पा और मोहन जोदड़ो के प्रमुख शहरी केंद्रों के साथ-साथ लोथल, धोलावीरा, गनेरीवाला और राखीगढ़ी आदि शामिल थे।

सिन्धु नदी एशिया की सबसे लंबी नदियों में से एक है। यह पाकिस्तान, भारत (जम्मू और कश्मीर) और चीन (पश्चिमी तिब्बत) के माध्यम से बहती है। सिन्धु नदी का उद्गम स्थल, तिब्बत के मानसरोवर के निकट सिन-का-बाब नामक जलधारा को माना जाता है।

नदी की लंबाई प्रायः 3610 किलोमीटर है। यहाँ से यह नदी तिब्बत और कश्मीर



के बीच बहती है। नंगा पर्वत के उत्तरी भाग से घूम कर यह दक्षिण पश्चिम में पाकिस्तान के बीच से गुजरती है और फिर जाकर अरब सागर में मिलती है। इस नदी का ज्यादातर अंश पाकिस्तान में प्रवाहित होता है। यह पाकिस्तान की सबसे लंबी और राष्ट्रीय नदी है।

सिन्धु की पांच उपनदियाँ हैं। इनके नाम हैं: वितस्ता, चन्द्रभागा, इरावती, विपासा एवं शतद्रु। इनमें शतद्रु सबसे बड़ी उपनदी है। सतलुज/शतद्रु नदी पर बने भाखड़ा-नांगल बांध के द्वारा सिंचाई एवं विद्युत परियोजना को बहुत सहायता मिली है। इसकी वजह से पंजाब (भारत) एवं हिमाचल प्रदेश में खेती ने वहाँ का चेहरा ही बदल दिया है। वितस्ता (झेलम) नदी के किनारे ही जम्मू व कश्मीर की राजधानी श्रीनगर स्थित है।

सिन्धु नदी उत्तरी भारत की तीन बड़ी नदियों में से एक है। इसका उद्गम बृहद् हिमालय में कैलाश से 62.5 मील उत्तर में संगेखबब के स्रोतों में है। अपने उद्गम से निकलकर तिब्बती पठार की चौड़ी घाटी में से होकर, कश्मीर की सीमा को पार कर, दक्षिण पश्चिम में पाकिस्तान के रेगिस्तान और सिंचित भू-भाग में बहती हुई, यह कराँची के दक्षिण में अरब सागर में गिरती है।

पाकिस्तान में इसकी लंबाई लगभग 2000 मील है। बलित्तस्तान में खाइताशो ग्राम के समीप यह जास्कार श्रेणी को पार करती हुई 10,000 फुट से अधिक गहरे महाखड्ड में, जो संसार के बड़े खड्डों में से एक है, बहती है। जहाँ यह गिलगित नदी से मिलती है, वहाँ पर यह वक्र बनाती हुई दक्षिण पश्चिम की ओर झुक जाती है। अटक में यह मैदान में पहुँचकर काबुल नदी से मिलती है। सिन्धु नदी पहले अपने वर्तमान मुहाने से 70 मील पूर्व में स्थित कच्छ के रन में विलीन हो जाती थी, पर रन के भर जाने से नदी का मुहाना अब पश्चिम की ओर खिसक गया है।

भारत की झेलम, चिनाव, रावी, व्यास एवं सतलुज सिन्धु नदी की प्रमुख सहायक

नदियाँ हैं। इनके अतिरिक्त पाकिस्तान में गिलगिट, काबुल, स्वात, कुर्रम, टोची, गोमल, संगर आदि इसकी अन्य सहायक नदियाँ हैं। मार्च में हिम के पिघलने के कारण इसमें अचानक भयंकर बाढ़ आ जाती है। बरसात में मानसून के कारण जल का स्तर ऊँचा रहता है। पर सितंबर में जलस्तर नीचा हो जाता है और जाड़े भर नीचा ही रहता है। सतलुज एवं सिन्धु के संगम के पास सिन्धु का जल बड़े पैमाने पर सिंचाई के लिए प्रयुक्त होता है।

सन 1932 में सक्कर में सिन्धु नदी पर लॉयड बाँध बना है, जिसके द्वारा 50 लाख एकड़ भूमि की सिंचाई की जाती है। जहाँ भी सिन्धु नदी का जल सिंचाई के लिए उपलब्ध है, वहाँ गेहूँ की खेती प्रमुख है। कपास एवं अन्य अनाजों की भी खेती होती है तथा ढोरों के लिए चरागाह हैं। हैदराबाद (सिंध) के आगे नदी 300 वर्गमील का डेल्टा बनाती है। गाद और नदी के मार्ग परिवर्तन करने के कारण नदी में नौ-संचालन खतरनाक है।

## पाकिस्तान में पर्यावरण संकट

पाकिस्तान में विस्थापन दर तेज़ी से बढ़ रही है। उन्हें यूरोप में भी ठीक से पुनर्वास का अवसर प्राप्त नहीं हो पा रहा है। मुझे बहुत से विस्थापित पाकिस्तानियों ने कहा कि, अब हमें शरणार्थी घोषित कराने में ही तीन चार साल लग जाते हैं, जब तक शरणार्थी घोषित नहीं हो जाते, तब तक विधिवत् सेवा करने का अवसर नहीं मिलता। 5-6 अलग देशों के पाकिस्तानियों ने कहा कि, जब हम पाकिस्तानी कहते हैं, तो बोल-चाल की भाषा में यूरोपवासी जलवायु परिवर्तन शरणार्थी कह कर बुलाते हैं। यदि हम अपने को भारतीय बोलते हैं, तभी आर्थिक शरणार्थी कहते हैं। देखने में भारतीयों और पाकिस्तानियों में बड़ा अंतर नहीं है। यह अंतर तो हमारे कागज़ देखने पर ही पता चलता है, इसलिए जहाँ हमें कागज़ नहीं दिखाने होते, वहाँ हम बोल-चाल में स्वयं को भारतीय कहना पसंद करते हैं।

सिन्धु क्षेत्र का विस्थापन गंगा जी से कई गुणा अधिक है। अभी यूरोप में उन्हें भी आर्थिक शरणार्थी ही बोला जाता है। अफ्रीकियों की तरह इन्हें जलवायु परिवर्तन शरणार्थी नहीं कहा जाता है। यह सिन्धु का ही प्रभाव है।

पाकिस्तान भारत का पड़ोसी देश है। लेकिन यहाँ कुदरत की हिफाज़त करने की चिंता भारत जैसी दिखाई नहीं देती। इस देश में भी कमोबेश चीन जैसी स्थिति नजर आती है। आजादी के बाद यहाँ भी भौतिक व आर्थिक विकास तो नजर आता है, जिसके कारण प्रकृति (कुदरत) में बिगाड़ बहुत तेज़ी से नजर आ रहा है। मैंने अपनी यात्राओं के दौरान इस देश में जलवायु परिवर्तन का बहुत बिगाड़ देखा है।

पाकिस्तान की राजधानी इस्लामाबाद को छोड़कर, सभी भू-पारिस्थितिकी, जलवायु, मौसमीय परिवर्तन की कहानियाँ, यहाँ के पर्यावरणविदों से सिन्धु नदी यात्रा के दौरान बहुत सुनी हैं। मैं उनकी बातें सुनकर फिर स्वयं उन्हीं स्थानों पर देखने गया। मैंने पाकिस्तान का थार मरुस्थल भी देखा और अन्य कई स्थानों पर भी गया। भारत की पर्यावरण आस्था को भले ही भारत के विकास के लालच ने लील लिया हो, लेकिन पाकिस्तान की वैसी प्राकृतिक आस्था, जो पुराने जमाने में रही होगी, उसका अब पाकिस्तान में सिन्धु नदी क्षेत्र में दर्शन नहीं होता। हमें प्रकृति के बेहिसाब शोषण का नजारा पाकिस्तान के अवैज्ञानिक खनन व उद्योग में स्पष्ट नजर आता है। यहाँ प्राकृतिक पर्यावरण की चिंता करने वाले चंद लोग ही मौजूद हैं, परन्तु इनकी कोई सुनवाई नहीं है।

यहाँ सिन्धु एवं अन्य नदियों के हालात भारत से भी ज्यादा भयंकर प्रदूषणकारी हैं। अब नई प्रौद्योगिकी ने सिन्धु क्षेत्र के भू-जल के भंडारों को शोषित कर लिया है। खेती में यहाँ का रुझान कम है। उद्योग प्रदूषणकारी हैं और वातावरण के कार्बन को शोषित करके, मिट्टी में जमा करने वाले जंगल घट गए हैं। खेती की हरियाली भी घट गई है। परिणामस्वरूप यहाँ भी अब बेमौसम के बाढ़-सुखाड़ का चलन बढ़ गया है।

यहाँ के लोगों का मानना है कि कुदरत की हिफाजत, पैगम्बर का अजीज काम है। लेकिन यह व्यवहार पाकिस्तान में प्रत्यक्ष रूप से दृष्टिगोचर नहीं हो रहा है। इसलिए पाकिस्तान का पर्यावरण संकट अब लोगों को विस्थापित होने के लिए मजबूर कर रहा है। ये सबसे ज्यादा स्वीडन जाना पसंद करते हैं। वहाँ जितने भी पाकिस्तानी हैं, वे सब भारतीय होटलों में सेवा व भोजन बनाने का काम कर रहे हैं। अफ्रीका के पुनर्वास शिविरों व स्वीडन के पुनर्वास शिविरों में विस्थापित पाकिस्तानी मुझे बहुत मिल जाते हैं। फ्रांस, नीदरलैंड भी इनके प्रिय देश हैं, लेकिन अभी तक मेरी यात्राओं के दौरान मुझे सबसे ज्यादा विस्थापित पाकिस्तानी स्वीडन, फ्रांस, यू. के. और नीदरलैंड में ही मिले हैं। वहाँ ये कम खर्च करके, अपना जीवन अच्छे से बिता रहे हैं।

पाकिस्तान की राजधानी ऊपर से देखने में हरी-भरी लगती है, और वहाँ से निकलें तो नंगे कटे उजड़े पहाड़ दिखते हैं। पेशावर रोड पर मरग लाहिल, जो कुछ दिन पहले तक हरे-भरे जंगलों से घिरी थी, की पहाड़ियों के पुराने चित्रों के पोस्टर पांचवीं अन्तर्राष्ट्रीय कान्फ्रेंस के सब विदेशियों को दिये गये। इस पहाड़ी का भी अरावली पर्वतमालाओं जैसा समृद्ध इतिहास था।

आज यहाँ बेशुमार खनन किया जा रहा है। पूरे के पूरे पहाड़ गायब होते जा रहे हैं। यहाँ की कुछ संस्थाएँ एसडीपीआई मरगलाहिल्स, नेशनलपार्क सोसायटी, आईयूसीएन शिरगत माध तथा पत्रकारों ने इन पहाड़ियों को बचाने की बहुत कोशिश की थी। लेकिन यहाँ की खदानें आज भी चालू हैं। यह पूरा क्षेत्र वन क्षेत्र के रूप में घोषित है, फिर भी खदानों का काम चलते रहना समझ में नहीं आता।

इस क्षेत्र की खदानों ने केवल पहाड़ियों को बर्बाद नहीं किया, बल्कि नीचे की तरफ खेती की जमीन में गहरा कटाव व जमाव शुरू होने से यहाँ पैदावार भी घटने लगी है। यहाँ भी कुओं का जलस्तर नीचे जा रहा है। बहुत से कुएँ पूरी तरह से सूख गये हैं। मेरे लिए ऑक्सफेम ने पाकिस्तान में जनसभा आयोजित

की थी। इसमें चूलिस्तान (पाकिस्तान का रेगिस्तान) और थार से कुछ किसान तथा सरकार के इंजीनियर यहाँ आये थे। इन्होंने वहाँ के पानी का जो संकट बताया, वह बहुत ही खतरनाक है। इस क्षेत्र में पानी की कमी के कारण लोग लाचार—बेकार—बीमार, और बेघर हो रहे हैं। सरकार केवल कुछ पीने के पानी की व्यवस्था करने में जुटी है। पाकिस्तान में राहत कमिश्नर कह रहे थे कि, यहाँ अकाल राहत का काम केवल सत्ता को राहत पहुँचाने के लिए ही होता है। मैं सरकारी आदमी हूँ, इसलिए अधिक नहीं बोल सकता।

नूमान नकवी, प्रसिद्ध पर्यावरणविद् बोले कि हमारे यहाँ गरीब की भलाई के नाम पर हम केवल उसे दबाते हैं। यहाँ उसकी जरूरत का अहसास किसी को नहीं है। उसे कोई हक नहीं देना चाहता। हमारे पड़ोसी भारत देश की तरह यहाँ बोलने, नेता चुनने, कुछ करने, करवाने के लिए सत्ता पर दबाव बनाने का हक नहीं है। कम से कम वैसा भी हमारे देश में हो जाये तो हम तरक्की कर सकते हैं। अन्यथा हम, हमारे खेत, पहाड़, पानी, जंगल सब कुछ लुटते रहेंगे। एक दिन सब याद कर के पछतायेंगे।

शहमस उल मुल्क उस समय पाकिस्तान में स्थित पंजाब राज्य के सिंचाई और ऊर्जा मंत्री थे। उन्होंने कहा कि, हमने पानी का बहुत काम किया है, लेकिन बढ़ती जनसंख्या के कारण सब तरह की समस्याएँ बढ़ रही हैं। जनता को जो चाहिए वह सब हम कर रहे हैं। ये मंत्री जी दोनों सम्मेलनों में बराबर बने रहे। ये बस सरकार की उपलब्धियाँ बताते रहे। इन्हीं के सामने सांघी संगठन के मुस्ताक भाई इन्हीं की सब कमियाँ बताने की कोशिश करते रहे। इंडसट्रीटी का इन्होंने बहुत बार जिक्र किया। नदियों के पानी के निजीकरण की चिन्ता यहाँ बहुत उभरी थी। कई साथियों ने कहा कि, ये मंत्री ही जल का निजीकरण करने वाले हैं।

आरोप—प्रत्यारोप तो बहुत से लोग पाकिस्तान में मूक होकर, छुपकर लगाते हैं, लेकिन यहाँ पर्यावरण की बरबादी रोकने का वास्तविक प्रयास दिखाई नहीं

देता। पर्यावरण के यहाँ होने वाले दुष्प्रभाव हमें भी प्रभावित करेंगे। हमारे देश के प्रतिनिधियों ने अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं का शोधकर्मी की तरह ही प्रस्तुतीकरण किया।

मैंने देखा कि हमारे देश की अधिकतर महिलाएँ इस कार्यशाला में गई थीं। ये महिलाएँ सबलीकरण या सती प्रथा की बातें ही कर रही थीं। यह कार्यशाला एशिया में टिकाऊ विकास को लेकर थी, लेकिन टिकाऊ विकास की चर्चा बहुत कम हो रही थी। सुखाड़-बाढ़ पर चर्चा ज्यादा चल रही थी। इससे बचने के उपाय बहुत बताये गये।

पाकिस्तान की एक कार्यकर्ता ने बैठक में कहा कि "अभी सरकारों के मसले छोड़कर कुछ समाज के मसलों पर चर्चा करना शुरू करें। चूलिस्तान और राजस्थान एक जैसे प्रदेश हैं। हम अपनी भूमि पर पानी बचाने का काम कर रहे हैं। आप भी ऐसा ही काम शुरू करें। कुछ लोगों ने शुरू करने की हामी भरी। मुल्तान में हमारे जैसा काम खालिद हुसैन और जुवैदा ने शुरू करने का वादा किया। चूलिस्तान में नदी महल दर कुछ काम शुरू करने की तैयारी में जुटेंगे। संयुक्त राष्ट्रसंघ के विकास कार्य के सहायक प्रतिनिधि मोहम्मद जफर इकबाल ने भी जल संरक्षण व जल चेतना का कार्यक्रम चलाने का वादा किया। मरगला हिल्स को बचाने व उसमें जंगल को बढ़ाने की कोई बात ही करने को तैयार नहीं था, क्योंकि यहाँ चल रही खदानें सत्ताधारियों की हैं। इनके बारे में तो अब पता ही नहीं होता। आन्दोलनकारी भी शान्त हो रहे हैं। इन पहाड़ियों पर कुछ नहीं बचा है। फिर भी अफगानिस्तान से आई टुम्बा (मांसाहारी भेड़) इन्हें रौंद रही हैं। अब यहाँ की भेड़-बकरियों के साथ-साथ अफगानिस्तान की भेड़-बकरियाँ अधिक दिखाई देती हैं।

मैं, अभी तक अपने यहाँ हिमालय, अरावली, विन्ध्य की खदानों को देखकर और प्रकृति के साथ हो रहे शोषण को देखकर दुःखी होता रहता था। अरावली का खनन तो बंद ही करा दिया है। यह भारत में ही करना संभव है। पाकिस्तान

के पहाड़ों का नंगापन देखकर तो आँसू आ गये। दुःख तब हुआ जब यहाँ के नामी पर्यावरणविद् भी कुछ नहीं कर पाने के कारण लाचार और बेबस दिखाई दिए। इस विषय पर बात शुरू होते ही वे दूर हटने लगे। यह सब देखकर अपने देश के उच्चतम न्यायालय का गौरव बढ़ाने का अवसर मिला। हमारे न्यायालय ने सचमुच पहाड़ों को बचाने हेतु बहुत ही अच्छे निर्णय लिये हैं। पाकिस्तान में यह भी संभव नहीं है। यहाँ की सरकार—सेना के एजेंडे में पर्यावरण नहीं दिखता। सोने का अंडा पाने की होड़ में यहाँ मुर्गी का पेट जल्दी ही चीरा जा रहा है। कोई समझाने वाला भी नजर नहीं आता है। यहाँ जनसामान्य अलग है और सियासत बिलकुल अलग है।

लोग भले हैं, लेकिन सत्ता और सेना का दबाव अधिक है। सोचने वाला कुछ भी करने को मजबूर है। यहाँ जल, जंगल, जंगली जीव बचाने की कोई मजबूत आवाज खड़ी होगी, तभी पाकिस्तान का पर्यावरण बचेगा और तभी हम सबका साझा भविष्य सुधरेगा। हम भी पाकिस्तान की घटनाओं को अपने भविष्य के साथ जुड़ा मानें। जैसे पहाड़ का कटाव नीचे की जमीन पर जमाव करके उसे बरबाद करता है या हवा के साथ आने वाली धूल किसी की आंख को बरबाद कर देती है, वैसे ही हमारा साझा परिवेश और पर्यावरण हमारा भी नुकसान करता है। हमें जागरूकता व समझदारी से इसे सुधारना चाहिए।

पाकिस्तान में अब इमरान के साथ आशा जगी थी, लेकिन ये भी सेना के सामने नतमस्तक दिखते हैं। ये इमरान और सेना एक ही दिखाई देते हैं। इमरान कुदरत से प्यार करते दिखते हैं; किन्तु प्यार है या नहीं पता नहीं। हमें कुदरत के प्रति प्यार और सम्मान पाकिस्तान में जगाना कठिन लगता है।

सिन्धु नदी पर संकट है। अतिक्रमण—प्रदूषण—जल का अनैतिक अन्यायपूर्ण शोषण है। इस नदी संकट से बचाने हेतु लोग कब तैयार होंगे, मालूम नहीं। इस नदी के हालात गंगा जी से भी बदतर हैं। पाकिस्तान ने इस नदी को राष्ट्रीय नदी केवल घोषित किया है। यह देश अपने राष्ट्रीय पशु—पक्षियों,

राष्ट्रीय ध्वज और राष्ट्रीय गान की तरह राष्ट्रीय नदी का सम्मान करता है। इसे सम्पूर्ण संरक्षित करने वाला कोई कानून भी इस देश ने अपनी राष्ट्रीय नदी के लिए नहीं बनाया है। इसलिए यह बाढ़-सुखाड़ और प्रदूषण का शिकार बनकर मर रही है।





## बेल्जियम, फ्रांस और नीदरलैंड को बाढ़ग्रस्त करती सेल्ड नदी

यह नदी फ्रांस से शुरू होकर बेल्जियम होते हुए नीदरलैंड में जाकर समुद्र में मिल जाती है। यह 500 कि.मी. की दूरी बेल्जियम में तय करती है और कुल 60 कि.मी. की दूरी नीदरलैंड में। फ्रांस के गोई शहर से शुरू होकर नोर्ड राज्य के कंवेरी, डेनियन, बलेंसिन होते हुए 150 कि.मी. लम्बी यात्रा पूरी करके बेल्जियम में हेन्नोट राज्य टोरनई और वेस्ट फिन्डर्स के एवलिन तथा ईस्ट फिन्डर्स ओडंड गेंट, डेनमोरोड टेम्स तथा उसके बाद एंट्राप राज्य के एंट्राप शहर से नीदरलैंड के बेलहार्स और टेरेंजिम होते हुए बेलिनसिन समुद्र में मिल जाती है। इस नदी की यात्रा 18 अप्रैल 2016 को गेंट शहर से शुरू हुई। गेंट से टिजार्म, डेल्डो ड्रम से एंट्रोट तक, 18, 19 व 20 तारीख को काट्रिक तथा ग्रॉट जेनिंग डील और रूपल की, 21 मार्च 2016 को फिर दुबारा से सेल्ड नदी में हो रहे सिगमा प्लान द्वारा सम्पादित विकास कार्यों को वहाँ के सरकारी अधिकारियों के साथ हमने देखा और समझा।

यहाँ का गेंट शहर पहले गाय और मछली-मांस का व्यापार केन्द्र था। यहाँ के सामाजिक आंदोलन के स्टेच्यू चौराहे पर मुझे सबसे पहले ले जाया गया और फिर याकूब ने मुझे शहर दिखाया। शाम को ऐलिन व मिनी जैन मिलने आये थे। 29 मार्च को गेंट में सेल्ड नदी पर दो पब्लिक बैठकों को संबोधित किया। यहाँ हरबरी भकरीस (सुरक्षित) में भाषण दिया। उसके बाद नदी पर नाव यात्रा की। यहाँ के सामुदायिक केन्द्र में भी गया। रूमिंग होकर मैंने एक बड़े सम्मेलन को संबोधित किया।

इस शहर में वाटर वॉक के बाद जॉर्डन क्षेत्र की जनता को गेंट शहर में संबोधित किया। मैंने जलवायु अनुकूलन, उन्मूलन के प्रत्यक्ष अनुभवों को बाँटा। इन्होंने मेरी प्रस्तुति को देख कर बहुत सवाल पूछे। यहाँ यह खुशी की बात थी कि, मेरी यात्रा के वक्त जयपुर के दो ढोल-नगाड़े बजाने वाले सत्ताक व मेहबूबा की टीम को मेरी यात्रा की अगुवाई की जिम्मेदारी दी थी। यह यात्रा सुबह शुरू होकर शाम तक सिटी सेंटर पहुँची। यहाँ पर शहरवासियों ने मेरा सम्मान किया और मेरे भाषण के बाद यात्रा का समापन हुआ। सभी ने बड़ी संख्या में हिंदुस्तानी होटल 'हिमालय' में मेरे सम्मान में रात्रिभोज की व्यवस्था की थी। इसमें सभी वाटर वॉक आयोजक शामिल हुए थे। यात्रा में शामिल शहर के लोग भी आये थे।

कोरत्ररिक में वाटर वार संग्रहालय में जाकर प्रदर्शनी देखी और वहाँ पर इकट्ठे हुए लोगों के बीच भाषण दिया। गेंट से कोरत्ररिक ट्रेन से गया। बेल्जियम के सेलेवेले शहर पहुँचा। यह बहुत ही सुन्दर जगह है। इसके बाद बरलारा, कालकन, हेमसवेर्ज के रचित में वाटर वार प्रदर्शनी देखी। यहाँ की समस्या भी देखी और समाधान भी सुझाये। यह सब दिखाने के बाद इन्होंने मेरा भाषण और प्रस्तुति करवाई। ऐलिना ने मेरे भाषण का अनुवाद, विश्लेषण और बाद में प्रशंसा की। मुझे जल संरक्षण का काम सिखाने वाले माँगू मीणा की कहानी और दो दिन में जल संरक्षण की पी.एच.डी. पूरी कराने की कहानी सुनते हुए लोगों ने बार-बार तालियाँ बजाईं।

जॉर्डन यूजन होते हुए वापस गेंट डेन्डर मोड तक पहुँचे। गेंट से मेला वेटररिन, वेलचीन और बेल्जियम होते हुए, डेपर्न तक पहुँचे। फिर कार से सेल्ड नदी के दूसरी तरफ कोरत्ररिक पहुँचकर, वहाँ से प्रातः 7 बजे डेन्डर मोड पहुँचे। फिर डोमनी ने हमें नाव से नदी पार कराई और उसके साथ ही मेलीवेटारिन होते हुए हमने वेलचीन, डेण्डर्म तक पदयात्रा की। यहाँ से कार में बैठकर कोरत्ररिक की यात्रा करके यात्रा का समापन हुआ।

इस यात्रा में तीन बातें साफ—साफ समझ में आयीं कि, बेल्जियम सरकार ने 1975 से सिगमाप्लेन के तहत इसे बार—बार बाँधने की कोशिश की, लेकिन बाँध नहीं पाये। अब इन्होंने अपना प्लान बदला है और नदी की जमीन को नदी के लिए छोड़ना शुरू किया है। इन्होंने शुरू में मुझे दिखाया कि इस नदी को आजादी से बहने के लिए इसे बार—बार बाँधना बंद कर दिया है। नदी की आजादी के लिए अब पिछले नौ वर्षों से योजनाबद्ध ढंग से सेल्ड नदी का काम बेल्जियम सरकार ने शुरू किया है। इस नदी की बेल्जियम जैसी समस्या फ्रांस व नीदरलैंड में नहीं है। फ्रांस में इस नदी को बांधने की कोशिश नहीं हुई, इसलिए दोनों तरफ फ्रांस की जमीन पर हरियाली—लहराती फसलें दिखाई देती हैं।

विश्व जल दिवस पर यूरोपीय यूनियन ने ब्रसल्स में मुझे बतौर मुख्य अतिथि बुलाया था। हम जल्दी ही ब्रसल्स में हवाई अड्डे पर हुए ब्लास्ट की आवाज सुनकर उसके सामने से निकल गए थे। इस ब्लास्ट के होने के बाद हम जल्दी से यूरोपियन हेडक्वाटर के मुख्यालय पहुँच गए। तब तक अलर्ट हो गया और सभी वाहन रुक गए। अन्य देशों के मेहमान वहाँ पहुँच चुके थे। इसमें बेल्जियम के जल संसाधन मंत्री को भी आना था, लेकिन वे नहीं आ पाये। फिर भी यूरोपियन यूनियन ने जल दिवस मनाने का कार्यक्रम आयोजित किया। कार्यक्रम में भाषण के दौरान मैंने कहा कि, ये बम ब्लास्ट तीसरे जल विश्वयुद्ध की आहट है, क्योंकि अफ्रीका और मध्य एशिया के देश लाचार, बेकार और बे—पानी होकर दुनिया भर में भटक रहे हैं और दुनिया को भयभीत करके उन्हें भी भटकाने की कोशिश कर रहे हैं। इसलिए बम ब्लास्ट जैसी हिंसक घटनाएँ आज पूरी दुनिया में हो रही हैं। यह बम ब्लास्ट आई. एस. आई. के कमांडर अब्दुलसलाम ने किया था। यह घटना भयभीत करने के लिए हो रही है। इनसे भयभीत हुए बिना संवाद करने की जरूरत है। ऐसे संकटों का समाधान केवल बातचीत से ही संभव है, अन्यथा बिना बातचीत के तो ये बढ़ते ही जायेंगे। मैंने भाषण के अंत में कहा कि, हमने राजस्थान के करौली जिले में गिरोह बनाकर, हथियारों के बल पर लूटपाट करने वालों को जल संरक्षण का काम सिखाया

है। उन्होंने तरुण भारत संघ के प्रत्यक्ष कार्यों को देखकर अपने आप इस काम के साथ जुड़ने की पेशकश की थी। तरुण भारत संघ ने उनके लिए अवसर सृजित किए और वे काम में जुट गए। यह काम कठिन था, पर असम्भव नहीं था। इसीलिए मैं स्वयं इस कार्य के संचालन में जुटा रहा। हमें चमन सिंह आदि साथियों के सहयोग से इस काम में सफलता मिली थी।

23 मार्च 2016— अब बम ब्लास्ट के कारण ब्रसल्स, बेल्जियम में सब कुछ बंद हो गया। स्कूल और चर्च भी ज्यादातर बंद कर दिए गए थे; लेकिन कैथोलिक चर्च के द्वारा संचालित एक स्कूल और चर्च हमारे लिए खुले थे। होस्टल के बच्चों को बुलाकर उनके साथ बातचीत हुई। प्राकृतिक संसाधनों के अतिक्रमण, प्रदूषण और शोषण से त्रस्त लोग अब ज्यादातर हिंसा पर उतारू हैं। ऐसा तभी होता है, जब प्रकृति को लूटने वाले अपनी लालच पूर्ति के लिए लूटते रहते हैं और कुछ लोग वंचित रह जाते हैं। वंचितों का नेतृत्व फिर प्रकृति को लूटने वालों के साधनों पर हमला करके उन्हें मारता है या उनके जीवन में बाधाएँ पैदा करता है। कल अब्दुलसलाम ने इस विस्फोट को करना स्वयं स्वीकार किया था।

विद्यार्थियों व शिक्षकों ने पूछा तो मैंने कहा कि हिंसा करने वालों की जिन्दगी में भी हिंसा की पीड़ा बढ़ेगी ही। हिंसा सभी के लिए पीड़ा बढ़ाती है। जब जीवन में हिंसा करने का भाव पैदा होता है तो उससे सबकी पीड़ा बढ़ती है। शिकारी भी हिंसा का शिकार बन जाता है। हिंसा प्रायः वे लोग करते हैं, जो सत्य से डरते हैं। वे दूसरों को भी अपनी लालचपूर्ति हेतु डराना चाहते हैं। सत्य को भगवान मानने वाले महात्मा गांधी जीवन भर अहिंसामय सत्याग्रह ही करते रहे। वह इसी रास्ते पर चलकर भारत को आजाद करा सके थे।

अगले दिन प्रातः भाषण के बाद मैंने टीनी अटिलन के साथ वाटर वार टैंक में अपना अनुभव प्रस्तुत किया। वहाँ लगभग 750 लोग एक बड़े हॉल में इकट्ठे हुए थे। भाषण के बाद बेल्जियम और ब्रसल्स के साथियों के साथ बैठकर

विश्व जल शांति यात्रा कार्यक्रम सुनिश्चित किया; जिसमें यूरोप की बाढ़ मुक्ति और अफ्रीका के इथोपिया, सोमालिया में रुचि दिखाई और अपने परिचय का उल्लेख किया। मिनी जैन ने भी इस विषय में आगे बढ़कर काम करने की रुचि दिखाई, फिलिप तो इस विषय में पूरी रुचि लेकर प्लान लिखने में जुट गए। कुछ साथियों ने इस जैसे कार्य हेतु साधनों की व्यवस्था की चिंता की और साधन जुटाने में जुट गये।

बेल्जियम छोटा देश है; लेकिन यहाँ के लोगों में अच्छी समझ और समर्पण का भाव दिखाई देता है। मैं यहाँ पर स्वैच्छिक संस्थाओं तथा विश्वविद्यालय का मेहमान था। दोनों ने ही बहुत मेहमाननवाजी करके मेरे हर मिनट का अच्छा उपयोग किया। पहले दिन इन्होंने गेंट शहर दिखाया, दूसरे दिन यात्रा कराई। तीसरे दिन सिगमा और चौथे दिन ब्रसल्स में विश्व जल दिवस पर मेरा भाषण था।

प्रातः 25 को नाश्ते के बाद लील हेतु प्रस्थान किया। रात्रि में बेलमूनडू की अध्यक्षता में मुझे गेंट से क्रोजिक कैम्पस से प्रोफेसर ने रिसीव करके स्टेशन छोड़ा। रास्ते में अच्छे खेत और फ्रांस के बहुत बड़े ग्रामीण मॉल देखे। यहाँ पीने का पानी सस्ता है, जबकि बेल्जियम में पानी महँगा मिलता है, पर वहाँ खाने की वस्तुएँ सस्ती मिलती हैं। फ्रांस के गाँव का बाजार बेल्जियम से सस्ता है। बेल्जियम के दो प्रोफेसर मुझे छोड़ने आये। एक इन्टरनेशनल सेन्टर की अध्यक्ष तथा दूसरे सिखेज इंजीनियरिंग के अध्यक्ष हैं।

चूँकि ब्रसल्स ऐयरपोर्ट बंद था, इसलिए मैं सेल्ड नदी के किनारे-किनारे एक बार फिर पेरिस तक गया और पेरिस से अपनी फ्लाइट लेकर भारत पहुँचा। यह यात्रा मेरे लिए सीखने-सिखाने वाली रही है। मैंने यह यात्रा करते हुए जो समूह बनाये, उनकी सक्रियता उत्साहवर्धक रही है। इनके मन में जलवायु शरणार्थियों के प्रति द्वेष नहीं दिखाई दिया।

शरणार्थियों का सहयोग करने की प्रबल इच्छा दिखाई दी। मैंने इन्हें शरणार्थियों की राहत के लिए उन्हें तैयार किया। गैंट, बेल्जियम, फ्रांस, नीदरलैंड की नदी "सैल्ड" की मैंने पूरी पदयात्रा की। यहाँ के लोगों का, जल व नदी के विषय में दृष्टि और दर्शन समझकर इन देशों में आने वाले जलवायु परिवर्तन शरणार्थियों के साथ मिलकर, उनके पुनर्वास से ज्यादा इनके उजाड़ के कारणों को समझा। ये अपनी जमीन पर दुबारा लौटकर जाने को तैयार नहीं हैं। यह सुनकर मैंने ये जहाँ पर शरणार्थी बनकर आये हैं, वहाँ कैसे रहें? क्या नहीं करें? क्या करें? आदि विषयों पर इन्हें सुना, समझाया और इनका पुनर्वास करके आगे बढ़ाया। इन्होंने जलवायु परिवर्तन शरणार्थियों के पुनर्वास में योगदान करना शुरू किया।

ये तीनों देश भी अपनी नदियों की बाढ़ से आतंकित हैं। उससे बचने के जो प्रयास ये कर रहे हैं, उसमें इनकी केवल इंजीनियरिंग और तकनीक ही अधिक दिखाई देती है। नदी को आजादी देकर उसके पर्यावरणीय प्रवाह का दर्शन तथा नदी को अधिकार दिलाने की बात उसमें नहीं दिखाई दे रही है। इसलिए बाढ़ मुक्ति के इनके उपाय सफल नहीं हो रहे हैं। तकनीक और इंजीनियरिंग सभी पर नियंत्रण करने का तरीका पढ़ाकर ही सबको तैयार करती है। इसलिए ये बाढ़ पर भी नियंत्रण ही करने के उपाय खोज रहे हैं।

ये इंजीनियर नियंत्रण की इंजीनियरिंग के अलावा दूसरी पर्यावरणीय या प्राकृतिक विधि को जल्दी स्वीकार नहीं करते। इस दिशा में बात करने वालों को ये सरकार से दूर रखने में जुट जाते हैं। मेरे साथ ऐसा ही हुआ है। मैंने इंजीनियर का क्रोध भी सहन किया है। इस यात्रा के पहले मैं ऐसा भारत में ही देखता था। इस यात्रा में जो देखा वही कम-अधिक पूरी दुनिया में है। अफ्रीका और मध्य एशिया में ज्यादा है। यूरोप के देशों में भी मुझे इसी का शिकार बनना पड़ा। मैं भी अपनी बातचीत को प्यार से समझाता था। प्रत्यक्ष काम के अनुभवों ने सफलता दिलायी।

प्रकृति का नियंत्रण कभी भी अच्छा नहीं होता। नियंत्रण करने से बहुत बड़ा

विनाश हो जाता है। बाढ़ नियंत्रण से सैलड नदी का विनाश इन तीनों देशों ने देखा है। इन्होंने मुझे भी अपना विनाश दिखाया। मैंने कहा कि, नियंत्रण का दबाव जब टूट जाता है, तब उस पर पुनः कब्जा करना या सहवरण करना असंभव बन जाता है। यूरोप में सभी देशों को, नदियों को बाँधने की आदत पड़ गई है। यू. के. ने अपनी नदी को सबसे पहले बाँधा था, फिर सभी बाँधने लगे। इस यात्रा में मैंने कई लोगों को बताया कि, नदी को आजादी देकर, बाढ़ से बचें या बाढ़ का सहवरण करें। सहवरण मारता या विनाश नहीं करता है। नियंत्रण के स्थान पर सहवरण से समृद्धि और शांति कायम होती है। यह बात मैं विस्तार से इन तीनों देशों को समझाने में सफल हुआ। मैंने प्रिंस चार्ल्स के साथ यू.के. और यूरोप के अन्य देशों के साथ अपने देश की बाढ़ के अनुभव भी इन्हें बताये, समझाये और सिखाये हैं। “तैरने वाला समाज बाढ़ से कैसे बचता है?” उसका प्रस्तुतिकरण किया। भारत के बिहार, बंगाल, उड़ीसा आदि राज्य बाढ़ से कैसे बचते हैं? वे बाढ़ के साथ ही जीते और मरते हैं। उन्हें बाढ़ के साथ आनंद से जीवन जीने हेतु प्राकृतिक प्रेम की जरूरत समझायी।

सैलड नदी की यात्रा में यहाँ के कृषि, शिक्षा, इंजीनियरिंग, पर्यावरण से संबंधित विश्वविद्यालयों एवं तकनीकी संस्थानों का मुझे बहुत साथ मिला। मेरे प्यार ने उनके अंदर विश्वास पैदा कर दिया था। इसलिए ये मुझे सुनकर भविष्य में बाढ़ सहवरण की परियोजनाओं पर काम करेंगे, ऐसा मुझे लगा है। मैंने अपनी यात्रा के बाद इनका व्यवहार बदलते देखा और नियंत्रण के स्थान पर प्रकृतिमय प्रेम के पोषण को निखरते देखकर मैं भी आनंदित हुआ।



## प्रदूषण मुक्ति की कथा सुनाती हडसन नदी

कनाडा सीमा से जुड़ा अमेरिका के कारुन्टियों, रेडइंडियन का अपना गहरा जंगल है, जो पहले रेड इंडियन का पर्यावास था। वैरमाउंट पहाड़ियों के जंगलों में यहाँ एक हजार एकड़ में फैली इंडियन लेक नामक एक बड़ी झील है। इस झील से ही हडसन नदी शुरू होती है। यह नदी जंगलों एवं शहरों की यात्रा करके न्यूयार्क पहुँचती है। यहाँ यह समुद्र में मिलकर न्यूयार्क का सीधा हाथ बन जाती है।

इस नदी की यात्रा मुझे मोड़बालों की टीम ने ही कराई थी। इस यात्रा में कई वैश्विक युवाओं की टीम मेरे साथ थी। लेकिन इस नदी को जानने की विधि सिखाने वाले प्रौढ़ साथी भी साथ थे। इस यात्रा में नदी को समझने और समझाने की प्रक्रिया की जाती है। मैंने इस नदी को पहली बार, इंडियन लेक से नदी चेतना यात्रा करते हुए एलवेनी, मासाचुविस्ट, कोबक्टीकट होते हुए हडसन यात्रा के दौरान जाना था। मैंने जाना कि, नदी और मानव जीवन, स्वास्थ्य, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक, मानवीय व नदी प्रवाह के रिश्तों को संभालते, बनाते और चलाते हैं। इन रिश्तों को जो समझता है, वही नदी रिश्तों को समझकर उसके स्वास्थ्य को अपने स्वास्थ्य के साथ जोड़कर देखता है।

अमेरिका के एक साहित्यकार—कलाकार पॉलगैले ने हडसन नदी के बिगड़ते



स्वास्थ्य को समझकर, जनता को समझाने हेतु साहित्य नाटक बनाया और वह लोगों को दिखाया। उससे मिले सम्मान और सहायता से 'रिवर कीपर' नामक संस्थान बनाया। इसी संस्थान से नदी को जानने-समझने हेतु युवाओं को प्रशिक्षित किया। नदी को उद्योग और शहर कैसे बीमार करते हैं, यह सब समझाया व लोगों में नदी रक्षण हेतु रुचि पैदा की।

नदी रक्षण में रुचि लेने वाले लोगों की एक टीम बनाई जो जानने की कोशिश करेगी कि, नदी प्रदूषित कैसे होती है? इसमें घरेलू गंदगी कैसे कम करें? उद्योग, सुगर फैक्टरी, शराब, उद्योग नदी को कैसे प्रदूषित कर रहे हैं? सभी टीमों को अलग-अलग जिम्मेदारी दे दी गई। शराब उद्योगों के जल निकासी से क्या-क्या प्रदूषणकारी तत्व आ रहे हैं उनका सैम्पल लेने हेतु नावों पर यात्रा करके प्रशिक्षणार्थी एवं अनुभवी शिक्षक मिलकर जाते थे। सैम्पल लेकर सबसे पहले न्यायालय, फिर मीडिया और समाज तक प्रदूषण करने वाली जानकारी भेजी जाती थी। समाज को जब यह जानकारी मिलती थी, तो उनका प्रदूषण के विरुद्ध क्रोध बढ़ता था। ये समाज के लोग मिलकर अमेरिका, न्यूयार्क राज्य व नगरपालिका से संबंधितों पर इस प्रदूषण को रोकने हेतु जन दबाव बनाते हैं।

सरकार पर नैतिक दबाव से यहाँ के सीनेटर संबंधित सभी जनप्रतिनिधि अपने दायित्व को समझकर समाज के साथ खड़े हुए हैं। एक तरफ प्रदूषण रोकने वाली अनुभव एवं समयसिद्ध विधि काम में ली गई; जिससे प्रदूषण मुक्ति का उपचार आरंभ हुआ, दूसरी तरफ अच्छे कानून कायदे भी बनने लगे। समाज तैयार होकर जब कानून कायदे बनवाता है, तभी उनकी पालना भी करता है। यही हुआ हडसन नदी के साथ, हडसन नदी को स्वस्थ बनाने का काम एक संवेदनशील कलाकार-साहित्यकार-पत्रकार ने आरंभ किया था। समाज ने उस काम को अपना काम मान लिया था। समाज जब उठ खड़ा हुआ तो समाज के चुने हुए प्रतिनिधि भी अपना मुँह दिखाने आने लगे। इन पर समाज ने अच्छा कानून बनवाने हेतु दबाव बनाया; जिससे हडसन नदी को स्वस्थ बनाने वाला कानून बन गया। कानून लागू होकर, उसी के अनुरूप काम होने लगा। अब

हडसन नदी स्वस्थ है। इसके किनारे का समाज भी स्वस्थ बन गया है।

हडसन नदी संयुक्त राज्य अमरीका के न्यूयॉर्क प्रांत के पूर्वी हिस्से में बहने वाली एक नदी है। अपने दक्षिणी छोर से यह नदी न्यूयार्क और न्यू जर्सी प्रांतों की सीमा बाँधती है। इस नदी का नाम इसको खोजने वाले हेनरी हडसन के नाम पर पड़ा है। हेनरी हडसन एक अंग्रेज़ थे, जिन्होंने नीदरलैंड से शुरू किये समुद्री सफर के तहत इस नदी को खोज निकाला था।

यह नदी मुख्य रूप से पूर्व से उत्तर से दक्षिण की ओर बहती है। एडिरॉडैंक पर्वत कोविच इंडियन लेक का उद्गम है। हडसन वैली तक ऊपरी न्यूयॉर्क खाड़ी के बीच न्यूयॉर्क शहर तथा जर्सी सिटी के बीच यह अंततः नालियों में चली जाती है। अटलांटिक महासागर पर न्यूयॉर्क हार्बर नदी राज्यों के बीच यह एक राजनीतिक सीमा के रूप में कार्य करती है। न्यू जर्सी और इसके दक्षिणी छोर पर न्यूयॉर्क है। उत्तर की ओर, यह कई काऊंटियों के बीच स्थानीय सीमाओं को चिह्नित करती है। न्यूयॉर्क काऊंटियों की नदी का निचला आधा भाग है। ज्वार का मुहाना गहरे पानी के शरीर से, जिसमें यह बहता है, हडसन पर कब्जा कर लेता है। ज्वार का पानी हडसन के प्रवाह को उत्तर की ओर से शहर के रूप में प्रभावित करता है।

यह नदी हेनरी हडसन के नाम पर है। एक नौकायन डच ईस्ट इंडिया कंपनी के लिए सेवा देने वाले एक अंग्रेज़, जिसने 1609 में इसकी खोज की और इसके बाद कनाडा में भी नदी का हडसन नाम ही है। यह एक इतालवी खोजकर्ता द्वारा सबसे पहले देखा गया था। जियोवन्नी दा वेर्राज़ानो ऊपरी यूरोपीयन खाड़ी में प्रवेश करने वाले पहले यूरोपीय बन गए, लेकिन उन्होंने नदी को एक मुहाना माना। न्यू नीदरलैंड कॉलोनी की बस्तियाँ हडसन के चारों ओर फैली हुई थीं और अमेरिकी इंटीरियर के प्रवेशद्वार के रूप में इसके सामरिक महत्त्व के कारण नदी और उपनिवेश के नियंत्रण के लिए अंग्रेज़ और डच के बीच प्रतिस्पर्धा हुई थी।

अठारहवीं शताब्दी के दौरान, इस नदी घाटी के निवासी वाशिंगटन इरविंग थे, जो पहले अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रशंसित अमेरिकी लेखक हैं। उन्नीसवीं सदी में इस क्षेत्र को प्रेरित किया हडसन रिवर स्कूल की परिदृश्य चित्रकला ने, जो एक अमेरिकी देहाती शैली थी। एरी नहर, 1825 में काम पूरा होने पर, 19वीं सदी की शुरुआत में संयुक्त राज्य अमेरिका के लिए एक महत्वपूर्ण परिवहन धमनी बन गयी थी।

हडसन यहाँ से फिर दक्षिण में बहती है, और बीवर ब्रुक तथा झील हैरिस के आउटलेट में ले जाती है। हडसन एसेक्स और हैमिल्टन काउंटियों के बीच की सीमा बनाती है। इसके पड़ाव में उत्तर की ओर, हडसन की तरह श्रून नदी वॉरेन काउंटी में बहती है और अंदर ले जाती है। आगे दक्षिण में नदी वॉरेन और साराटोगा काउंटी के बीच की सीमा बनाती है। नदी फिर अंदर ले जाती है। सिंकदगा नदी से ग्रेट सिंकदगा झील। इसके तुरंत बाद, नदी एडिरोंडैक पार्क को छोड़ती है, नीचे बहती है।

दक्षिण में यह फोर्ट एडवर्ड नदी के अपने संगम तक पहुँचती है। मॉन्ट्रियल और बाकी का पूर्वी कनाडा हडसन के माध्यम से चम्पलेन नहर से होकर दूसरे शहरों के बीच नाव यातायात प्रदान करता है। यह सेंट लॉरेंस सीवेज, इसके अलावा बैटन किल नदी और मछली क्रीक के पास दक्षिण हडसन से पानी लेता है।

## लोअर हडसन नदी

संघीय बाँध के दक्षिण में, हडसन नदी काफी चौड़ी होने लगती है। हडसन वैली नदी में प्रवेश करती है, अब यह पश्चिमी तट के साथ बह रही है। इसके पूर्वी तट Rensselaer अंतरराज्यीय नदी के इस बिंदु पर हडसन को अल्बानी में पार करता है।

यह ग्रीन और कोलंबिया काउंटियों के बीच की सीमा बनाती है। इसके बाद यह शो डैक क्रीक के साथ अपने संगम को पूरा करती है, इस बिंदु पर

नदी काफी चौड़ी होती है। यहाँ से बहने के बाद हडसन नदी उल्स्टर और कोलंबिया काउंटियों, उल्स्टर, डचस काउंटियों के बीच की सीमा बनाती है। रोगाणु, किन्टाल, डेलावेयर और हडसन नहर इस बिंदु पर नदी से मिलती हैं।

हडसन के सबसे गहरे हिस्से को 202 फीट (62 मीटर) पर चिह्नित करता है, इसके तुरंत बाद, नदी प्रवेश करती है। नदी यहाँ से नीचे बहने से पहले बेयर माउंटेन ब्रिज, वेस्टचेस्टर और रॉकलैंड काउंटियों को जोड़ती है। ये सभी काउंटियों में रेड इंडियन को जोड़ने वाली नदी है। इसका उद्गम इंडियन लेक से हुआ है। मैं इस नदी के उद्गम स्थल पर नदी सहभागी प्रशिक्षण देने के लिए पूरा एक सप्ताह रुका था।

हैवरस्ट्रॉबे नदी हडसन हाइलैंड्स को छोड़कर इसमें प्रवेश करती है। इस नदी का सबसे चौड़ा बिंदु 3.5 मील (5.6 किमी) चौड़ा है। टप्पन ज़ी ब्रिज इस नदी को वहन करता है।

बर्गन काउंटी नदी के पश्चिमी किनारे पर बड़ी चट्टानें हैं। यहाँ इसे चट्टानी नदी के रूप में भी जाना जाता है। बर्गन हिल में उनके निचले सिरे पर हडसन काउंटी, आगे इसके दक्षिण में नदी का पूर्वी तट बन जाता है। हडसन संगम के दक्षिण स्प्युटेन ड्यूयुविल क्रीक नदी का पूर्वी तट बन जाता है। इसे कभी-कभी मैनहट्टन नदी भी कहा जाता है।

## **भूगोल और वाटरशेड**

निचला हडसन वास्तव में एक ज्वारीय मुहाना है, जहाँ दो उच्च ज्वार और दो निम्न ज्वार हैं।

हडसन नदी 315 मील (507 किमी) लंबी है, फेडरल बांध के दक्षिण में 30 फीट (9.1 मीटर) की गहराई के साथ, नदी के शिपिंग मार्ग पर कुछ भाग लगभग 160 फीट गहरे हैं, जो हडसन का सबसे गहरा हिस्सा है, जिसे "वल्ड्स एंड"

के रूप में जाना जाता है। हडसन और उसकी सहायक नदियाँ, विशेष रूप से मोहॉक नदी, 13,000 वर्ग मील (34,000 किमी) के क्षेत्र में बहती है।

## भूगर्भशास्त्र

हडसन को भू-वैज्ञानिक शब्दों में डूबती हुई नदी कहा जाता है। हडसन कैनियन मछली पकड़ने का समृद्ध क्षेत्र है जो इसके किनारे तक फैला हुआ है। महाद्वीपीय शेल्फ ग्लेशियर और बढ़ते समुद्र के स्तर के परिणामस्वरूप, नदी का निचला आधा हिस्सा ज्वार का मुहाना है, जो हडसन पर कब्जा कर लेता है। अनुमान है कि 26,000 और 13,300 साल पहले इस क्षेत्र का निर्माण हुआ था।

हिमयुग के अंत में लगभग 6,000 साल पहले द नैरो का निर्माण हुआ था। इससे पहले, स्टेटन द्वीप और लम्बा द्वीप जुड़े हुए थे, ये हडसन नदी को नैरो के माध्यम से खाली होने से रोक रहे थे। उस समय, हडसन नदी वर्तमान उत्तरी जर्सी के पूर्वी हिस्से के साथ-साथ एक और पश्चिमी कोर्स के माध्यम से अटलांटिक महासागर में खाली हो गई।

हडसन नदी की खोज करने वाला यूरोपीय रियो सैन एन्टोनियो था। 'मारिट्स' शब्द वाणिज्यिक शिपिंग ट्रैफिक के बीच रेडियो संचार में प्रयुक्त होता है। विशेष रूप से नीचे 'टप्पन जी' शब्द का उपयोग नदी के दक्षिणी भाग में सुविधाओं के नाम पर भी किया जाता है। ऐसा माना जाता है कि मानचित्र में हडसन नदी के नाम का पहला नक्शा, मानचित्रकार जॉन कारविथम द्वारा 1740 में बनाया गया था।

## इतिहास

हडसन नदी के आसपास के क्षेत्र में यूरोपीय लोगों के आने से पहले स्वदेशी लोगों की बसाहट थी। लेनेप, वॉपिंगर तथा महकान आदिवासी रेड इंडियन हैं, जो इस नदी के किनारे रहते थे।

यहाँ एक बड़ी बस्ती हडसन नदी के मुहाने पर स्थित थी, जिसे नवांश कहा जाता था। विगवाम नाम के बड़े परिवार होते थे। इनके घर सौ फीट लंबे भी हो सकते हैं। संबद्ध गाँवों में, उन्होंने मक्का, फलियाँ और स्ववैश उगाए। उन्होंने अन्य प्रकार के पौधों के खाद्य पदार्थों के साथ-साथ हिकॉरी नट्स और कई अन्य जंगली फल और कंदों को भी उगाया।

अल्गोनक्विंस कृषि कार्य के अलावा हडसन नदी में मछली भी पकड़ते हैं, वे मीठे पानी की विभिन्न प्रजातियों पर ध्यान केंद्रित करते हैं। धारीदार घास, अमेरिकी ईल, स्टर्जन हिलसा तथा एक प्रकार की मोटी मछली भी इस नदी में है। नदी तल पर सीप के बिस्तर भी आम थे, जो पोषण का एक अतिरिक्त स्रोत प्रदान करते थे। भू-स्थलीय शिकार में टर्की, हिरण, भालू और अन्य जानवर शामिल थे।

### **अन्वेषण और उपनिवेशीकरण**

कहा जाता है कि जॉन कैबोट ने 1497 में अपनी यात्रा के दौरान महाद्वीपीय उत्तरी अमेरिका की खोज महाद्वीप के तट के साथ की थी।

अंगेजों द्वारा हडसन में अपने जहाज को नदी में बहाने का फैसला किया गया, जिसे बाद में उसके नाम पर ही रखा गया।

डचों ने बाद में इस क्षेत्र में उपनिवेश स्थापित करना शुरू किया। न्यू नीदरलैंड सहित तीन प्रमुख फर-ट्रेडिंग चौकियों— न्यू एम्स्टर्डम, विल्टवाइक, तथा फोर्ट ऑरेंज न्यू एम्स्टर्डम की स्थापना हडसन नदी के मुहाने पर की गई थी। इसे ही आज न्यूयॉर्क नाम से जाना जाता है। विल्टवेक की स्थापना हडसन नदी के लगभग आधे हिस्से में की गई थी और बाद में यह किंगस्टन बन गया था। फोर्ट ऑरेंज की स्थापना विल्टवेक नदी के उत्तर में हुई थी और बाद में इसे अल्बानी के नाम से जाना जाने लगा। डच वेस्ट इंडिया कंपनी ने कॉलोनी में अपने उद्यम स्थापित करने की अनुमति देने से पहले लगभग बीस साल तक

इस क्षेत्र पर अपने एकाधिकार का संचालन किया।

ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के तहत, हडसन घाटी एक कृषि केंद्र बन गया। नदी के पूर्व में मैनर्स विकसित किए गए थे, और पश्चिम की ओर कई छोटे और स्वतंत्र खेत थे। 1754 में, यूनियन की अल्बानी योजना बनायी गई थी। अल्बानी सिटी हॉल हडसन नदी पर स्थित है। इस योजना ने उपनिवेशों को इरोक्वाइस के साथ संधि की अनुमति दी और इसके लिए एक रूपरेखा प्रदान करके ही महाद्वीपीय कांग्रेस गठित की थी। दुनिया में हडसन को पुनर्जीवित करने वाले कलाकार पॉलगैले की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका है। इन्हें हडसन रिवरकीपर के नाम से जाना जाता है। आज इस दुनिया को बहुत से पॉलगैले जैसे कार्यकर्ता चाहिए।

दुनिया की नदियों पर लालची विकास तथा 5जी जीवन में अस्थाई सुख—सुविधा जुटाने वाले बाजारू जीवन ने आज दुनिया की नदियों को मार दिया है। पॉलगैले जैसे कार्यकर्ता बनकर या प्रो. जी.डी. अग्रवाल जैसे वैज्ञानिक, ऋषि और संत बनकर सभी नदियों को पुनर्जीवित करने हेतु जन चेतना से नदी संगठन बनाकर, नदी पुनर्जीवन हेतु छोटी—छोटी नदियों पर रचना—निर्माण करके उन्हें शुद्ध सदानीरा बनाने की आवश्यकता है। गंगा जैसी बड़ी नदियों की अविरलता—निर्मलता हेतु प्रो. जी.डी. अग्रवाल, स्वामी शिवानंद, स्वामी निगमानंद, साध्वी पद्मावती, ब्रह्मचारी आत्मबोधानंद की तरह माँ गंगा को अपना जीवन समर्पित करने जैसा सतत् सत्याग्रह करें, तभी दुनिया की नदियाँ अविरल—निर्मल बनकर बहने हेतु तैयार होंगी। हडसन नदी के पुनर्जीवन में पॉलगैले के योगदान की सीख देकर लोगों को नदी पुनर्जीवन हेतु प्रेरित किया जा सकता है।



## अविरल-निर्मल और सदानीरा कनाडा की 'ओटेवा नदी'

ओटेवा नदी पर बढ़ते विकास और नये बसते-बढ़ते शहरों की आबादी ने इसे मार दिया था। कनाडा ने 19वीं शताब्दी में इस नदी की हत्या कर दी थी। मैं इस नदी की हत्या के बाद इसका पुनर्जीवन देखने और समझने हेतु 21वीं शताब्दी के आरंभ में गया था। मेरे कनेडियन नये मित्रों ने ही मुझे इस नदी को दिखाया। मैंने इसके उद्गम से संगम तक की 40 दिन की यात्रा की और सहभागी प्रशिक्षण किया था। यह मेरे जीवन की भारत से बाहर पहली नदी यात्रा थी। अभी तक मैंने अपने देश में 12 छोटी-छोटी नदियों को पुनर्जीवित करने हेतु 1200 गाँवों के समुदायों को नदी पुनर्जीवन के कार्यों में जोड़ दिया था। 11,800 से अधिक जल संरचनाओं का निर्माण हो चुका था। इससे इन्होंने 2.5 लाख कुओं के पुनर्भरण का कार्य किया था। सत्तर लाख लोग लाचार-बेकार-बीमार होकर उजड़कर, अपने गाँव को छोड़कर शहर जा चुके थे। जैसे ही इनके जोहड़ बने, तो कुओं में पानी आ गया। तब ये लोग धीरे-धीरे वापस अपने गाँव में आकर खेती करके पुनर्वासित हो गये थे। नदी पुनर्जीवन के अपने अनुभव बाँटने हेतु ही मुझे ओटेवा नदी यात्रा करायी गयी थी।

पूर्वी दुनिया का अनुभव पश्चिमी-उत्तरी दुनिया के साथ बाँटने हेतु मेरी कनाडा और संयुक्त राष्ट्र अमेरिका की दो नदियों-ओटेवा (कनाडा) और हडसन (अमेरिका) की यात्रा में मैंने भी बहुत कुछ सीखा। हडसन नदी यात्रा और स्टॉकहोम नदी यात्रा ने ही मुझे प्रो. जी. डी. अग्रवाल के साथ गंगा पुनर्जीवन



संघर्ष में संघर्षशील बनाया था।

कनाडा की 80 वर्षीय युवा मेरी गहरी मित्र मोडबालो, जल निजीकरण के विरुद्ध बोलने वाली बहुत ही क्रांतिकारी बहिन है। इन्होंने ही मुझे एक माह के लिए कनाडा बुलाया था। मेरे साथ मूल भारतीय वैक्यानायडु जो कि आन्ध्र से कनाडा जाकर मोडबालो के सहायक व कार्यकारी साथी के रूप में काम करता था; उसने मुझे पूरा कनाडा घुमाया—दिखाया और ओटेवा नदी की परिक्रमा कराई थी।

मैंने ओटेवा के आरंभ से अंत तक की यात्रा करके देखा कि यह नदी लेकर तेन्कामिन्ग रेड इंडियन के जंगलों से शुरू होकर व लेडी इरविन झील से पोषित होकर, दूसरी झील ताबनगामी, नेपासिंग से उत्तर की ओटेवा नदी की खाड़ी को जोड़ देती है। यह नदी त्रिभुजाकार है। इसका दूसरा उद्गम ग्रान्ड लेकर विक्टोरिया सबसे ऊपर है। इसके दो तरफ बहुत सी लेक (झील) हैं। उत्तर की मुख्यधारा सुनार्ड, रेश डेकोलेस, रेश डोजोइज, रेश चरवोकन्गा, दक्षिण में गेट नीयू बड़ी सहायक नद बासकतोन्ग झील से तेज गहरी धारा बनकर फिर गाटिनियू ओटोवा शहर के पास आकर ओटेवा नदी में मिलती है। ओटेवा नदी आगे गहरी और बड़ी बनकर, सेन्ट लोवरेन्स नदी में मोन्टेरियल शहर के पास मिलती है। यहाँ से अब ओटेवा भी सेन्ट लावरैन्स नदी में मिलने के बाद सेन्ट लावरैन्स नदी के नाम से जानी जाती है। ओटेवा नदी का सम्पूर्ण भूगोल और इतिहास जानना भी जरूरी है।

यह नदी 19वीं सदी में औद्योगीकरण के कारण प्रदूषित होना शुरू हुई थी। यह कनाडा में संसद के पास ही बहती थी। इसकी बदबू से संसद में गंभीर बहस हुई। अंत में प्रदूषित करने वाले उद्योगों को बंद करके नदी किनारे से हटाने का फैसला किया गया। फैसले के साथ ही सभी उद्योगों को नदी किनारे से हटाकर उनका दूर पुनर्वास कर दिया गया। जो नदी मैला ढोने वाली मालगाड़ी बनी हुई थी, वह नदी 10 वर्षों में पहले जैसी बनकर बहने लगी थी।

मुझे जब यह नदी दिखायी गयी, तो इसके पहले के सच्चे तिथिवार चित्र दिखाये गये। इस नदी का तिथिवार चित्र परिवर्तन बहुत अच्छे से दिखाया—समझाया गया था। यह देख—समझकर मेरे मन में माँ गंगा जी की बीमारी का चित्र उभरने लगा था। गंगा की समस्या तो ओटेवा नदी से बहुत कम थी। कानपुर—कन्नौज के बीच ही तब सबसे अधिक प्रदूषण था। उसे रोकना आसान था, लेकिन वही आसान काम नहीं हो पाया। गंगा दिन—ब—दिन बीमार होकर मरती चली गई। आज भी माँ गंगा अपने अंतिम श्वांसों के साथ जी रही है।

गंगा ने भारत के सभी राजनैतिक दलों की सरकार बनवाई; लेकिन किसी ने भी माँ गंगा का सच्चा बेटा बनकर इलाज नहीं कराया। जो अपने आपको गंगा का बेटा कहते थे, उन्होंने ही गंगा को सबसे बड़ा धोखा दिया। इस प्रकार का धोखा ओटेवा नदी को नहीं मिला, इसीलिए वह नदी स्वस्थ होकर अपने पर्यावरणीय प्रवाह के साथ बहती है।

मैंने देखा कि, अब इस नदी में गंदे जल का कोई भी नाला सीधा जाकर नहीं मिलता; केवल वर्षाजल के नाले ही मिलते हैं। उपचारित जल को उद्योगों में पुनः उपयोग कर लिया जाता है। शहर के स्वेज जल को उपचारित करके पेड़—पौधों के लिए हरियाली बढ़ाने हेतु उपयोग करते हैं। जहाँ जैसा जल उपयोग करना चाहिए, वैसा ही करते हैं।

नदी को स्वस्थ रखने हेतु उसके वर्षाजल का संरक्षण करना जरूरी है। साथ ही गंदा जल उसमें नहीं मिलने देना, गंदगी और शुद्धता को अलग—अलग रखना ही नदी के स्वास्थ्य को ठीक रखने के काम हैं। नदी को वैसा ही शुद्ध जल मिले, जैसा प्रकृति देती है। वैसा ही जल नदी में है जैसा बरसता है। जैसी नदी बहती है, वैसा ही वहाँ का जीवन चलता और बहता है। यही व्यवहार और संस्कार कनाडा ने अपनी ओटेवा नदी के साथ किया तो वह नदी स्वस्थ होकर बहने लगी।

कनाडा की ओटेवा नदी को स्वस्थ बनाने में केवल इंजीनियरिंग और तकनीक ही काम में नहीं ली गई है; उसको स्वस्थ बनाने हेतु सामाजिक, राजनैतिक प्रतिबद्धता और संकल्प भी पूरा किया; तभी नदी आज स्वस्थ होकर बहती दिखाई दे रही है। यही राजनैतिक और सामाजिक प्रतिबद्धता भारत में भी होती तो हमारी गंगा भी आज वैसी ही बनकर बहती दिखाई दे रही होती। भारतीयों की गंगा को भी पहले जैसी प्राकृतिक-पर्यावरणीय प्रवाहमान बनाने की सीख लेना है।

जब मैंने अपनी आँखों से देखा और यहाँ का भूगोल और इस नदी का इतिहास समझा तो समझ आया कि यह ओटेवा नदी कनाडाई प्रांतों में ओंटारियो तथा क्यूबेक में स्थित है। इसका नाम एल्गोनक्विन शब्द 'ट्रेड' के सम्मान में रखा गया था, क्योंकि उस समय पूर्वी कनाडा का प्रमुख व्यापार मार्ग यही नदी थी। अपनी अधिकांश लंबाई के लिए, यह इन दो प्रांतों के बीच की सीमा को परिभाषित और निर्धारित करती है। सेंट लॉरेंस नदी इसकी एक प्रमुख सहायक नदी है। क्यूबेक की यह सबसे लंबी नदी है।

लेक टिम्समिंग नदी के दक्षिण-पूर्व में ओटावा तथा डेस आउटौइस पर उत्तर में इस नदी का उद्गम होता है। यह लॉरेंटियन पर्वत के केंद्रीय और पश्चिम भाग में बहती है। यहाँ से इसके मार्ग का उपयोग ओंटारियो के साथ इंटरप्रोविन्सियल बॉर्डर को परिभाषित करने के लिए किया गया है। नदी कुछ स्थानों पर लगभग 460 फीट की गहराई तक पहुँचती है। जहाँ यह खत्म होने को होती है, वहाँ इसे चौड़ियारे झरना और आगे ले जाता है। इस नदी को ओटेवा ही कहते हैं। बहुत से झरने व छोटी नदियाँ इसमें मॉन्ट्रियल से पहले मिलकर ओटेवा नदी को निर्मित करती हैं।

ओटेवा नदी नालियों में जाती है। दो पहाड़ों की झील और सेंट लॉरेंस नदी पर मॉन्ट्रियल में मिलती है। नदी 1,271 किलोमीटर (790 मील) लंबी है; इसमें 146,300 वर्ग किलोमीटर (56,500 वर्ग मील) के क्षेत्र में, क्यूबिक में 65 प्रतिशत

और ओंटारियो के बाकी हिस्सों में 1,950 क्यूबिक मीटर प्रति सेकंड (69,000 घन फीट/सेकंड) के साथ जल निर्वहन होता है।

इस नदी का वार्षिक औसत जलप्रपात मापा जाता है। Carillon बांध, दो पहाड़ों की झील के पास, यह औसत 1,939 घन मीटर प्रति सेकंड (68,500 घन फीट/सेकंड) है, जिसका औसत वार्षिक चरम 749 से 5,351 घन मीटर प्रति सेकंड (26,500 से 189,000 घन फीट/सेकंड) है। 1964 के रिकॉर्ड के अनुसार ऐतिहासिक स्तर पर 2010 में 467 क्यूबिक मीटर प्रति सेकंड (16,500 क्यू फीट/सेकंड) और 2017 में 9,094 क्यूबिक मीटर प्रति सेकंड (321,200 क्यू फीट/सेकंड) का उच्च स्तर है।

यह नदी हजारों वर्षों में निर्मित पर्णपाती और शंकुधारी वन के बड़े क्षेत्रों से होकर बहती है। पेड़ों ने हिमयुग के बाद ओटेवा घाटी को याद किया था। आम तौर पर, शंकुधारी वन और ब्लूबेरी दलदल ग्लेशियरों को पीछे छोड़ते हुए या मिट्टी के सब्सट्रेटा वाले गीले क्षेत्रों में पुराने रेत के मैदानों पर पाए जाते हैं। बर्च, मेपल, बीच, ओक और लाख के वर्चस्व वाले पर्णपाती वन, बेहतर मिट्टी के साथ आमतौर पर ला वेरेन्ड्री पार्क के साथ सीमा के आसपास अधिकतर मेसिक क्षेत्रों में होते हैं।

जंगल कभी-कभी प्राकृतिक आग से प्रभावित होते थे, जो ज्यादातर बिजली से शुरू होती थी, जिसके कारण पाइन और ओक द्वारा प्रजनन में वृद्धि हुई, साथ ही साथ अग्नि बैरन और उनसे जुड़ी प्रजातियां भी हुईं। पाइन के विशाल क्षेत्रों का शुरुआत में लकड़हारा लोगों द्वारा दोहन किया गया था; बाद की पीढ़ियों ने हेमलॉक चमड़े के उपयोग को कम के लिए, अधिकांश जंगलों को संरक्षित किया। लॉगिंग और प्रारंभिक निपटान के साथ संबद्ध विशाल जंगली आग, न केवल जंगलों को नष्ट कर देती थी, बल्कि मिट्टी के कटाव का कारण भी बनती थी। नतीजतन, लगभग सभी वन मानव अशांति को अलग-अलग रूप में दिखाते हैं। पुराने जंगल के कानून असामान्य हैं और इसलिए उन्हें संरक्षण

के लिए काफी महत्वपूर्ण माना जाता है।

ओटेवा नदी में आर्द्रभूमि के बड़े क्षेत्र हैं। कुछ अन्य जैविक रूप से महत्वपूर्ण आर्द्रभूमि क्षेत्रों में शामिल हैं। वेस्टमथ सैंड ड्यून/वेटलैंड कॉम्प्लेक्स, मिसिसिपी स्नी, ब्रेकेनरिज नेचर रिजर्व, शिरलिस बे, ओटेवा बीच (एंज़्यू हैडन पार्क, पेट्री द्वीप, बतख द्वीप) और ग्रीन्स क्रीक रेत टिब्बा/आर्द्रभूमि परिसर इसके अपेक्षाकृत प्राचीन रेत के टीलों के तौर पर महत्वपूर्ण हैं, जिनमें से कुछ ओटेवा नदी और उससे जुड़े कई दुर्लभ पौधों के साथ सुरक्षित बने हुए हैं।

शिरलिस बे में ओटेवा जैविक रूप से विविधतापूर्ण तटरेखा बनाती है, साथ ही नदी के किनारे सबसे बड़े चांदी के मेपल दलदल में से एक है। सभी आर्द्रभूमि की तरह, ये जलस्तर में मौसमी उतार-चढ़ाव पर निर्भर करते हैं। उच्च जलस्तर वाला चांदी मेपल दलदल बनाने और बनाए रखने में मदद करते हैं; जबकि कम पानी की अवधि कई दुर्लभ आर्द्रभूमि पौधों को उभरती रेत और मिट्टी के फलैटों पर बढ़ने देती है।

इन पांच प्रमुख आर्द्रभूमि में वनस्पति के विभिन्न प्रकार हैं। इनमें से एक दलदल है, ज्यादातर चाँदी के मेपल हैं। वनस्पति के चार प्रकार हैं, उनमें प्रमुख पौधों की प्रजातियों को नाम दिया गया है: सिरपस, एलोचारिस, स्पार्गनियम तथा टाईप। किसी विशेष स्थान में वनस्पति का कौन सा प्रकार होता है, यह सबस्ट्रेटा प्रकार, पानी की गहराई, बर्फ—खुरदरापन और प्रजनन क्षमता जैसे कारकों पर निर्भर करता है।

अंतर्देशीय, और ज्यादातर नदी के दक्षिण में स्थित पुराने नदी चैनल, बर्फ की उम्र के अंत तक वापस आते हैं और अब वहाँ बहता पानी नहीं है। कभी-कभी एक अलग वेटलैंड प्रकार, पीट बोग से भरा होता है। उदाहरणों में मेर ब्ल्यू और अल्फ्रेड बोग शामिल हैं। इन्होंने किचिसुपी नदी के जलक्षेत्र में रहने वाले अल्गुनकिन लोगों के जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यह किचिसुपी नदी

कहलाती है, जिसका अर्थ है "महान नदी"। इसे एनीसिनबेमोविन, एलगॉनक्विन भाषा में कहते हैं। अलगॉनक्विन ने खुद को नदी पर अपनी स्थिति के संदर्भ में परिभाषित किया, खुद को ओमहमीविनी के रूप में संदर्भित करते हुए। यद्यपि अल्गुनक्विन फर्स्ट नेशन का अधिकांश भाग क्यूबेक में रहता है, लेकिन पूरी ओटेवा घाटी अल्गॉनक्विन का पारंपरिक क्षेत्र है। वर्तमान समझौता बसाहट के दबावों के परिणामस्वरूप किए गए अनुकूलन का एक परिणाम है।

कुछ शुरुआती यूरोपीय खोजकर्ताओं ने संभवतः ओटेवा नदी को ऊपरी सेंट लॉरेंस नदी की तुलना में अधिक महत्त्वपूर्ण माना। कनाडा मॉन्ट्रियल में संगम के नीचे ओटेवा नदी और सेंट लॉरेंस नदी की सीमा के रूप में ग्रेट लेक्स बाद में स्पष्ट हो गया और ओटेवा नदी को एक सहायक नदी के रूप में माना जाने लगा। इसे विभिन्न नामों से जाना जाता था— ग्रांड नदी, "महान नदी" या एल्गनक्विंस की भव्य नदी। कभी ओटावा, किन्नोचेरपिरिनी या कीनौच के केवल एक बैंड में, कभी आबाद हुई ओटेवा घाटी थी। इसी आधार पर बाद में इसे ओटेवा कहने लगे।

1615 में, शमूएल डी चमपैन तथा अल्गॉनक्विन गाइडों द्वारा सहायता प्राप्त करने वाले पहले यूरोपीय थे, जिन्होंने ओटेवा नदी की यात्रा की और ग्रेट लेक्स के लिए फ्रेंच नदियों के साथ पश्चिम में जलमार्ग का अनुसरण किया। दो शताब्दियों के लिए, इस मार्ग का उपयोग किया गया था। फ्रेंच फर व्यापारी, Voyageurs तथा Coureurs des bois ने कनाडा के इंटीरियर के लिए यात्रा की थी। नदी ने इन यात्रियों के लिए गंभीर खतरा पैदा कर दिया था। 1800 में, खोजकर्ता डैनियल हार्मन ने ओटेवा के इस खंड के साथ खतरनाक जल में डूबने वाले यात्रियों की मौतों को चिह्नित करते हुए 14 क्रॉस की सूचना दी।

नदी के किनारे मुख्य व्यापारिक पोस्ट थे: लछिन, फोर्ट कूलॉन्ज, लाक देस एलुमेट्स, और मटवा हाउस, जहां पश्चिम से चलने वाले डोंगी नदी को छोड़ देते हैं। फोर्ट टेमिसमिंगु एबिटि नदी और जेम्स ब लेक टिमिस्किमिंग से एक

बंदरगाह उत्तर की ओर चला गया । 19वीं शताब्दी की शुरुआत में, ओटेवा नदी और उसकी सहायक नदियों का उपयोग बड़े जंगलों तक पहुंचने के लिए किया गया था। सफ़ेद पाइन लकड़ी का व्यापार विकसित था और बड़े लॉग के राफ्ट नीचे नदी में तैरते थे। सर्दियों में लकड़ी के शिविरों के लिए मानव शक्ति प्रदान करने के लिए नदी के किनारे छोटे-छोटे कृषि आधारित समुदायों का विकास हुआ।

1812 के युद्ध में ओटेवा नदी को सामरिक महत्व प्राप्त हुआ, इसी समय कैरीलन कैनल पूरा किया गया था। इसके साथ रिदेउ नहर, कैरिलन नहर का निर्माण एक वैकल्पिक सैन्य आपूर्ति मार्ग प्रदान करने के लिए हुआ था। किन्टाल तथा झील ओंटारियो के साथ इस मार्ग का सेंट लॉरेंस नदी में विद्युत उत्पादन हेतु उपयोग किया गया था।

एक लुगदी और कागज मिल और कई पनबिजली बांधों का निर्माण इस नदी पर किया गया है। 1950 में बांध पर रेपिड्स-डेस-जोकिम्सको बनाया गया था, इसके पीछे होल्डन झील का निर्माण किया गया था। रैपिड्स और पोर्ट्स को जलमग्न कर दिया गया था। इन हाइड्रो बांधों का तटरेखा और आर्द्रभूमि पारिस्थितिक तंत्र पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा है। माना जाता है कि ये बांध ही जैवविविधता नष्ट करने और लोगों को भगाने के लिए भी जिम्मेदार हैं। अमेरिकी ईल, जो कभी इस नदी में प्रचुर मात्रा में पाई जाने वाली प्रजाति थीं, अब लुप्तप्राय हैं। आर्थिक मार्ग के रूप में, इस नदी का महत्व 20वीं शताब्दी में रेलमार्गों और राजमार्गों द्वारा ग्रहण किया गया था। यह अब लॉग ड्राइविंग के लिए उपयोग नहीं किया जाता है। हालांकि, इस नदी के जल का अभी भी बड़े पैमाने पर मनोरंजक नौका विहार के लिए उपयोग किया जाता है। 20,000 नाविक प्रतिवर्ष कारिलन नहर में नौकायन पर जाते हैं।

ओटेवा जो कनाडा की व्यापारिक, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक नदी भी है, वह अब केवल पर्यटन और आर्थिक लाभ कमाने के लिए ही काम आती है।

ओटेवा नदी में मैंने स्वयं लोगों को मछली पकड़ते हुए देखा है। सामुदायिक लोगों ने मुझे भी मछली पकड़ने को कहा था। यहाँ के लोग इस नदी के विषय में गौरव—सम्मान और विश्वास से बताते हुए बहुत प्रसन्नचित्त दिखायी देते हैं। नदी को पुनर्जीवित करने हेतु सरकार ने अच्छा काम किया। समाज ने सरकार के काम में योगदान दिया। अच्छे काम करने हेतु निगरानी भी रखी है। इसलिए अब यह नदी शुद्ध सदानीरा बनकर बहती है। हमारी गंगा जी भी एक दिन ऐसी बनकर बहेगी।

अब हमें ओटेवा से सीख लेनी चाहिए।





## सीरिया 'जलयुद्ध' की साक्षी है इफ्रीटिस नदी

इफ्रीटिस नदी पश्चिम एशिया की सबसे लम्बी नदी है। इफ्रीटिस टर्की से आरंभ होकर सीरिया होते हुए इराक, शत अलअरब में जाकर के समुद्र में मिलती है। 2880 कि.मी. लम्बी यह नदी भारत की गंगा से 350 कि.मी. अधिक लम्बी है। इसका क्षेत्रफल 5 लाख वर्ग कि.मी. है। मेसोपोटामिया सभ्यता से सम्बद्ध होने के कारण, यह एक ऐतिहासिक महत्त्व की नदी भी है। मैंने इफ्रीटिस नदी के टर्की स्थित स्रोत से यात्रा शुरू की। वहाँ मैंने देखा कि, टर्की ने इफ्रीटिस नदी पर अतातुर्क नाम का एक बहुत बड़ा बाँध बनाया है। इस बाँध ने इफ्रीटिस के पानी को पूरी तरह बाँध रखा था। अतातुर्क बाँध के आगे इफ्रीटिस नदी, एक तरह से खत्म ही दिखाई दी।

मुझे बताया गया कि, सीरिया की बहुत बड़ी आबादी को अपनी खेती, मछली और रोजमर्रा की जरूरत के पानी के लिये, सदियों से इसी नदी का सहारा रहा है। मैंने खेत देखे और लोगों से बातचीत की तो पता चला कि नदी क्यों बँधी। नदी किनारे के सीरियाई भू-भाग की खेती भी उजड़ी और लोग भी। हजार—दो हजार नहीं, लाखों की आबादी उजड़ी। उजड़ने वाले लेबनान गए; फिर ग्रीस और यहाँ से टर्की गए। टर्की से होते हुए जर्मनी, यू.के., स्वीडन, नीदरलैंड, ऑस्ट्रिया, बेल्जियम और यूरोप के देशों तक पहुँचे। अकेले जर्मनी में पहुँचे विस्थापितों की संख्या करीब साढ़े 12 लाख है, फ्रांस और यू. के. में पाँच—पाँच लाख, स्वीडन में चार लाख तो बेल्जियम में ढाई लाख के करीब विस्थापित लोग आये हैं। ऑस्ट्रिया में पहुँचने वालों की संख्या भी लाखों में

है और यूरोप के 20 देशों में तो एक बहुत बड़ी आबादी पहुँची है। एक देश से उजड़कर दूसरे देश में बसने वालों की तादाद पूरी दुनिया में तेजी से बढ़ रही है।

गौर करने की बात है कि, विस्थापित आबादी सबसे ज्यादा यूरोप के नगरों में ही पहुँची है। इससे नगरों में बेचैनी बढ़ी है। मैंने जब पता किया कि, विस्थापितों के एक स्थान से दूसरे स्थान पर भटकने के क्या कारण हैं, तो पता चला कि स्थानीय नागरिकों से तालमेल न बैठ पाना अथवा भूख मिटाने का इन्तजाम न हो पाना तो कारण था ही; रिफ्यूजी का दर्जा मिलने में होने वाली देरी और मुश्किल भी इसका एक प्रमुख कारण थी।

मैं खुद यहाँ के चार विस्थापित परिवारों को लगातार ट्रैक कर रहा हूँ। खलील, अलाह, अहमद और यामीन। खलील और यामीन – फिलहाल, यूके डालटिंगटॉन में हैं। अलाह और अहमद – यूके के ट्रस्कट्रन में हैं। इन चारों के परिवारों को तीन साल बाद रिफ्यूजी घोषित किया गया था।

खलील – सीरिया के रास्ते अही बियर कस्बे से आया है। खलील के विस्थापन से पूर्व, उसके कस्बे की आबादी एक लाख से ज्यादा थी; अब वहाँ 7000 ही बचे हैं। खलील के साथ-साथ इसके सात भाई और तीन बहनों को भी उजड़ना पड़ा। सारा परिवार बिखर गया। आइमान– जर्मनी में, कासिम, सलीम और सेमल– लेबनान में, जलाल– नार्वे में तो खलील और यामीन– यूके में हैं। 65 वर्ष की बहिन इवा – सीरिया में पड़ी है। 54 साल की फातिमा और 44 साल की इमान तथा इनके परिवार लेबनान में हैं।

इस परिवार को सामने रखकर आप कल्पना कीजिए कि उजड़ने का दर्द कितना बड़ा और अपूर्णनीय हो सकता है। क्या कोई मदद... कितना ही बड़ा मुआवजा इस दर्द की भरपाई कर सकता है? नहीं। पहली बार जब मैं खलील से मिला तो उसके परिवार के भटकने की कहानी सुनकर और उनके

रहन—सहन के हालात देखकर मेरी खुद की आँखें नम हो गईं। खलील ने बताया कि अपने कस्बे से उजड़कर जब लेबनान पहुँचा तो कैसे वहाँ उसकी पत्नी इका, दो बेटे और एक बेटी.. सभी बीमार पड़ गए थे; कैसे उनका मरने जैसा हाल हो गया था। लोग, उससे और उसके परिवार से नफरत करते थे। इसलिये उसे लेबनान छोड़ना पड़ा।

2017 में रिफ्यूजी घोषित होने के बाद से खलील और उसका परिवार यू.के. डालटिंगटॉन में है। पता चला कि सुसी और सेक नामक दम्पति ने यहाँ इनकी बहुत सेवा की है। अब वह वहाँ सुमाखर कॉलेज में सब्जियाँ बेचने—उगाने का काम करता है। चार दिन पहले मिला, तो गले मिलकर खुशी से नाचने लगा। अहमद — यामीन का बेटा है। यामीन, सीरिया की राजधानी का रहने वाला है। वहाँ से उजड़ने के बाद अब यूके डालटिंगटॉन में है। वहीं पर नौवीं कक्षा में पढ़ता है।

अलाह — दोराह का रहने वाला है। अलाह को 2014 में ही घर छोड़ना पड़ा। पहले वह लेबनान गया; फिर करीब डेढ़ साल तुर्की में रहा। मल्टी बेस अपरलैंड में रहने के बाद अलाह करीब पाँच महीने तक डोम्सडोनिया में रहा। फिर फ्रांस के कैलेट शहर के जंगल में तीन दिन रहने के बाद अब वह टस्कॉन में है। यामीन भी टस्कॉन में है। मैं आपको किस—किस के उजाड़ की कहानी बताऊँ? उजड़ने वाले परिवारों से मिलिए तो एहसास होता है कि पानी, भगवान का दिया कितना महत्वपूर्ण उपहार है! हमारी हवस और नासमझ करतूतों के कारण हमने पानी को उजाड़ और युद्ध का औजार बना दिया है। पानी, प्रकृति की अनोखी नियामत है। कोई इसे अपना निजी कैसे बता सकता है? अन्याय होगा तो तनाव और अशान्ति होगी ही।

गौर करने की बात है कि, इफ्रीटिस के प्रवाह में सीरिया का योगदान 11.3 प्रतिशत और इराक का शून्य है, जबकि पानी की कमी वाले देश होने के कारण सीरिया, इफ्रीटिस के पानी में 22 प्रतिशत और इराक 43 प्रतिशत हिस्सेदारी

चाहता है। गौर करने की बात यह भी है कि सीरिया और इराक में पानी की कमी का कारण तो आखिरकार टर्की द्वारा इफ्रीटिस और टिग्रिस पर बनाये बांध ही हैं, किंतु टर्की इस तथ्य की उपेक्षा करता है। वह सीरिया और इराक की माँग को अनुचित बताकर उसे हमेशा अस्वीकार करता रहा है।

सीरिया में जब तक इफ्रीटिस नदी का प्रवाह कायम था, सीरिया में रेगिस्तान के फैलाव की गति उतनी नहीं थी। इफ्रीटिस के सूखने के बाद रेत उड़कर सीरिया के खेतों पर बैठनी ही थी, सो बैठी। नतीजा, तेजी से फैलते रेगिस्तान के रूप में सामने आया। सीरिया—इराक का पानी रोकते वक्त, टर्की ने यह नहीं सोचा होगा कि यह आफत पलटकर उसके माथे भी आयेगी। रेगिस्तान के फैलाव ने खुद संयुक्त राष्ट्रसंघ को इतना चिंतित किया कि उसने रेगिस्तान रोकने की उच्चस्तरीय मशविरा बैठक को टर्की के अंकारा शहर में ही आयोजित किया।

दरअसल, टर्की यह समझने में असमर्थ रहा कि, जब तक लोगों को अपनी धरती और राष्ट्र से प्रेम रहता है, संकट चाहे जलवायु परिवर्तन का हो, आजीविका का हो अथवा आतंकवाद का हो, वह ज्यादा समय टिक नहीं सकता। कोई दूसरा—तीसरा बाहर से आकर किसी देश में आतंक पैदा नहीं कर सकता। आतंक, सदैव राष्ट्रप्रेम की कमी के कारण ही पैर फैला पाता है।

आतंकवाद से दुष्प्रभावित सभी क्षेत्रों में यही हुआ है, इराक में और टर्की में भी। इफ्रीटिस नदी के तीनों देशों में सत्ता ने जिस तरह प्रकृति और इंसान को नियंत्रित करने की कोशिश की, उसका दुष्परिणाम तो आना ही था। वह प्रकृति और मानव के विद्रोह के रूप में सामने आया।

यदि हम इफ्रीटिस में 17.3 अरब क्यूबिक मीटर जल की उपलब्धता के आँकड़े देखें, तो संबंधित तीन देशों की माँग की पूर्ति संभव नहीं दिखती। इस माँग—आपूर्ति के असंतुलन से तीनों देशों के भीतर तनाव बढ़ना ही था, सो

बढ़ा। दूसरी ओर सीरिया विस्थापितों द्वारा वाया टर्की, जर्मनी, फ्रांस, स्वीडन जाने की प्रक्रिया ने पूरे रास्ते को खटास से भर दिया। टर्की और इराक के लोगों द्वारा सीरिया के विस्थापितों के घरों और ज़मीनों पर कब्जे की हवस ने पूरा माहौल ही तनाव और हिंसा से भर दिया। इस हवस ने हिंसा को टर्की में भी पैर पसारने का मौका दिया। जिन्हें उजाड़ा था, वे ही सिर पर आकर बैठ गये।

टर्की के महानिदेशक प्रो. सांघी ने एक सभा में कहा – “हम तो रिफ्यूजी होस्ट कन्ट्री हैं, बजट का बहुत बड़ा हिस्सा तो शरणार्थियों की खातिर खर्च हो जाता है।”

अब कोई टर्की से पूछे कि सीरिया और इराक में शरणार्थी किसने पैदा किए? टर्की द्वारा इफ्रीटिस और टिग्रिस पर बाँधों ने ही तो। टर्की ने ही तो यह आत्मघाती शुरुआत की थी।

मैंने ‘डेमोक्रेटिक’ अखबार में सोफिया की रिपोर्ट पढ़ी। उसमें लिखा था कि 15 जुलाई, 2016 को टर्की सैनिकों ने हेलीकॉप्टर और फाइटर जेट विमानों से हमले किये। अंकारा और इस्तानबुल की अपनी गलियों में ही टैंक उतार दिये। पार्लियामेंट की इमारत पर बम फेंका। इस कार्रवाई में 2000 लोग घायल हुए और 300 लोगों की मौत हुई। स्थानीय संगठन, हिज़मत के सूफी संस्थापक गिलान ने इसे राष्ट्र के इस्लामीकरण की कार्रवाई के तौर पर देखा।

यह मुद्दा असलियत में पानी का था, राइटिस्ट चालों ने उसे सांप्रदायिक बना दिया। इसी का नतीजा है कि टर्की आज खुद भी एक अस्थिर देश है। आप देखिए कि शिया-सुन्नी तनाव की आंच सिर्फ इफ्रीटिस के देशों तक सीमित नहीं रही, यह जर्मनी भी पहुँची। जनता ने विरोध किया तो चांसलर को बदलना पड़ा। जर्मनी के हनोवर में पिछले दो साल में चार बार तनाव हुआ। मुझे भी रिफ्यूजी लोगों से मिलने में बहुत दिक्कत हुई।

हमें बार-बार यह याद करने की ज़रूरत है कि, दुनिया में फ़ैली इस अशांति की जड़ में कहीं न कहीं पानी है। अब आप फिलिस्तीन को ही ले लीजिए; फिलिस्तीन, पानी की कमी वाला देश है। फिलिस्तीन के पश्चिमी तटों पर एक व्यक्ति को एक दिन में मात्र 70 लीटर पानी ही उपलब्ध है, जो कि विश्व स्वास्थ्य संगठन के हिसाब से काफी कम है।

(एक व्यक्ति को प्रति दिन कितना पानी चाहिए? इसके आकलन के अलग-अलग आधार होते हैं। आप गाँव में रहते हैं या शहर में? आपका शहर सीवेज पाइप वाला है या बिना सीवेज पाइप वाला? यदि आप बिना सीवेज पाइप वाले छोटे शहर के बाशिंदे हैं, तो भारत में आपका काम 70 लीटर प्रतिव्यक्ति प्रतिदिन में भी चल सकता है। सीवेज वाले शहरों में न्यूनतम ज़रूरत 135 से 150 लीटर प्रतिव्यक्ति प्रतिदिन की उपलब्धता होनी चाहिए। भारत सरकार का ऐसा कायदा है। आप किसी महानगर में कार और किचन गार्डन और बाथ टैंक के साथ रहते हैं, तो यह ज़रूरत और भी अधिक हो सकती है।)

सरकार और समाज के बीच पुल बने, तो प्रेरणा को जमीन पर उतारने में सफलता मिल सकती है। लेकिन मुझे तो वहाँ ऐसे उत्साही पानी कार्यकर्ताओं का भी अभाव ही दिखाई दिया। जॉर्डन चाहे, तो इजराइल के पानी प्रबन्धन से सीख ले सकता है। किन्तु दो देशों के बीच विश्वास का अभाव यहाँ भी आड़े आता है।

इजराइल की होशियारी देखिए कि, जहाँ पराये पानी को हथियाने के मामले में वह दादागिरी से काम ले रहा है, वहीं अपने पानी के उपयोग के मामले में बेहद समझदारी से।

इजराइल, जल संरक्षण तकनीकों के बारे में अपने नागरिकों को लगातार शिक्षित करता रहता है। विविध भूगोल तथा विविध आर्थिक परिस्थितियों के कारण भारत जैसे देश के लिये यह भले ही दुष्कर हो, लेकिन इजराइल ने पानी

के केन्द्रित और वास्तविक मूल्य आधारित प्रबन्धन को अपनाया है। इजराइल सरकार ने वहाँ जल नियंत्रकों की नियुक्ति की है।

इजराइल ने खारे पानी को मीठा बनाने की तकनीक को बड़े पैमाने पर अपनाया है। हालांकि यह बेहद महँगी तकनीक है; फिर भी इजराइल ने इसे अपनाया है तो इसके पीछे एक कारण है। इजराइल जानता है कि, उसके पास पानी का अपना एकमात्र बड़ा जलस्रोत, गलिली सागर (अन्य नाम: किनरेट लेक) है। उसके पास कोई अन्य स्थानीय विकल्प नहीं है। इजराइल की एक-तिहाई जलापूर्ति, गलिली सागर से ही होती है। खारे पानी को मीठा बनाने की तकनीक के मामले में इजराइली संयंत्रों की खूबी यह है कि वे इतनी उम्दा ऊर्जा क्षमता व दक्षता के साथ संचालित किये जाते हैं कि खारे पानी को मीठा बनाने की इजराइली लागत, दुनिया के किसी भी दूसरे देश की तुलना में कम पड़ती है।

गौर करने की बात है कि इजराइल में घरेलू जरूरत के पानी की माँग में से 60 प्रतिशत की पूर्ति, इस प्रक्रिया से मिले मीठे पानी से ही हो जाती है। जॉर्डन नदी पर रोके पानी को वह पूरी तरह पेयजल की माँग पूरी करने के लिये सुरक्षित कर लेता है। फिलिस्तीन के पश्चिमी घाट के जलस्रोतों का इस्तेमाल वह कर ही रहा है।

इजराइल ने अपने देश में एक बार उपयोग किये जा चुके, कुल पानी में से 80 प्रतिशत को पुनः शुद्ध करने तथा पुनरुपयोग की क्षमता हासिल कर ली है। इजराइल अपने समस्त सीवेज वाटर का उपचार करता है। वह ऐसे कुल उपचारित सीवेज जल में से 85 प्रतिशत का उपयोग खेती-बागवानी में करता है; 10 प्रतिशत का इस्तेमाल नदी प्रवाह को बनाए रखने व जंगलों की आग बुझाने के लिये करता है और 05 प्रतिशत पानी को समुद्र में छोड़ देता है। इजराइल में उपचारित जल का कृषि में उपयोग इसलिये भी व्यावहारिक हो पाया है, क्योंकि इजराइल में 270 किबुत्ज हैं।

इफ्रीटिस नदी का क्षेत्रफल 5 लाख वर्ग कि.मी. है, जबकि गंगा का क्षेत्रफल इससे 2 गुना है, जो 10 लाख 80 हजार वर्ग कि. मी. में फैला है। गंगा नदी पर टिहरी बाँध है और दो बैराज फरक्का और नरोरा बने हैं। इसके मुकाबले इफ्रीटिस नदी पर कुल 12 बाँध बने हैं। हायड्रो पावर जनरेशन स्टेशन की संख्या सैकड़ों से अधिक है। गंगा तीन देशों नेपाल, भारत और बांग्लादेश में बहती है। इफ्रीटिस भी टर्की से आरम्भ होकर सीरिया होते हुए, इराक में जाकर समुद्र में मिल जाती है। भारत की जनता ने गंगा को और उसकी अविरलता को बचाने के लिए 3 निर्माणाधीन बाँधों को 20 अगस्त 2009 को रद्द करवा दिया था, जबकि इफ्रीटिस नदी पर अभी भी बाँध बनते ही जा रहे हैं। इफ्रीटिस नदी पर बाँधों के कारण सीरिया और इराक बड़े रेगिस्तान बन गये हैं। यह नया रेगिस्तान सीरिया, इराक और टर्की के लिये भी बहुत भारी आफत होता जा रहा है।

गंगा दुनिया की सबसे अच्छी, पवित्रतम नदी थी। उसको वैसा ही बनाकर, आने वाली पीढ़ी को देने के भाव से गंगाजी के ऊपरी हिस्से में 150 कि.मी. लंबाई तक हिमालय को संवेदनशील क्षेत्र घोषित कर दिया गया है, जिससे कि, गंगा मैया उत्तरांचल में अपनी पवित्रता के साथ प्रवाहित हो सके और गंगा जी की अविरलता व निर्मलता बनी रहे। इसी भाव से गंगा के ऊपरी भाग 150 कि.मी. हिमालयी क्षेत्र को संवेदनशील घोषित करके उस पर गंगाजी के विरुद्ध होने वाले विकास कार्यों को रुकवा दिया गया, जिससे हमारी गंगा की अविरलता और निर्मलता बराबर बनी रहेगी। भारत अपनी आने वाली पीढ़ी को दुनिया की सबसे अच्छी नदी गंगाजी देने का गौरव प्राप्त कर सकेगा।

जब तक यह नदी आज़ादी से बहती थी, तब तक इस नदी क्षेत्र में गंगा, यमुना के क्षेत्र की तरह समृद्ध खेती होती थी। रेगिस्तान का प्रभाव भी उतना अधिक नहीं था। इफ्रीटिस नदी को बाँधने के बाद उसकी रेत हवा में उड़कर सीरिया की खेती वाली जमीन पर जाकर बैठने लगी। उस रेत ने सीरिया में रेगिस्तान की वृद्धि दर तेज कर दी और सीरिया के खेती करने वाले किसान लाचार,



बेकार और बीमार होकर अपने देश में उजड़ने लगे। इन्हें टर्की के रास्ते ही जर्मनी, फ्रांस, स्वीडन जाना पड़ा। इसलिए इन तीनों देशों के परस्पर संबंध बिगड़ने लगे और पानी की वास्तविक लड़ाई को शिया सुन्नी की लड़ाई में बदल दिया गया। यह जीवन जीने की लड़ाई है।

जलवायु परिवर्तन और जीविकोपार्जन की सबसे बड़ी भूमिका अपनी धरती की हरियाली और अपने राष्ट्रप्रेम की होती है। जब तक लोगों में अपनी धरती से और अपने राष्ट्र से प्रेम का सम्बन्ध प्रबल होता है, तब तक कोई दूसरा बाहर से आकर आतंक पैदा नहीं कर सकता। आतंक सदैव राष्ट्रप्रेम की कमी से जन्मता है। सभी आतंकवादी क्षेत्रों में अभी तक ऐसा ही हुआ है। इराक और टर्की में भी यही हुआ। लेकिन इसका मूल तो वहाँ का पानी और पानी पर निर्भर जीविका तथा जीवन को चलाने वाले रोजगार की कमी है। यह कमी पैदा करने का काम हमारे विकास के लिये ऊर्जा और पानी पर केन्द्रीय नियंत्रण से पैदा हुआ है। इसको रोकने का एकमात्र उपाय सामुदायिक विकेन्द्रित प्राकृतिक संसाधनों का प्रबन्धन है। प्राकृतिक विकास करने से खतरनाक राक्षस पैदा नहीं होते। सामुदायिक विकेन्द्रित प्राकृतिक संसाधनों से धरती की नमी बढ़ती है, हरियाली आती है और जैव विविधता बढ़ती है। स्नेह समरसता और जैव विविधता से जीवन में समृद्धि आती है, बढ़ती है। जलवायु परिवर्तन के तनाव कम होते हैं। अनुकूलन प्रक्रिया तेज़ होती है। बड़े बांधों के कारण नियंत्रण बढ़ता है और धरती की हरियाली और पानी पर चन्द बड़े लोगों के कब्जे होते हैं। जैव विविधता का संकट पैदा होता है और लोगों के लिए तीर्थ यात्रा जैसे सुख और आनन्द देने वाले क्षेत्र या तो पानी में डूब जाते हैं या नदियों में ऊपर से उड़कर आने वाली रेत में दब जाते हैं, जो वीरान रेगिस्तान का रूप ले लेते हैं। यह टर्की, सीरिया और इराक की इफ्रीटिस नदी का आँखों देखा हाल है, इफ्रीटिस की हत्या हो गई है, लेकिन गंगा जी अभी इस तरह के विकृत विनाश से बची हुई है। इसमें विकास का प्रदूषण है और भूजल का शोषण है।

अभी भी गंगा यमुना की संस्कृति और सभ्यता का मूल शेष बचा होने के कारण

लोगों को अपनी धरती छोड़कर रोजी, रोटी की तलाश में यूरोप जाने की जरूरत नहीं है। अब लोग अपनी स्वेच्छा से यूरोप जा रहे हैं; किसी के दबाव या मजबूरी के कारण नहीं।

गंगा में यदि इफ्रीटिस नदी की तरह छेड़छाड़ करके बाँध या बैराज बनाने का काम किया जायेगा तो ठीक वैसा ही होगा, जैसा इफ्रीटिस नदी घाटी के तीनों देशों में हुआ है— मारकाट व देशों पर नियंत्रण तथा अपने राष्ट्रप्रेम से लोगों को तोड़कर बाहर भगाना। यह सब भले ही राज्यसत्ता की कमियों के कारण होता है, लेकिन भुगतना वहाँ की जनता को ही पड़ता है। जनता का बलिदान होता है और जनता के जीवन में यह कष्ट मैंने नंगी आँखों से देखा है।

गंगा के बेसिन में 520 मिलियन लोग बिना लड़ाई किये शांति से रहते हैं। इफ्रीटिस नदी में कुल 20 मिलियन लोग रहते हैं; जिनके बीच जल का युद्ध हर दिन नये-नये रूप में सामने आता है। इसे शांति में बदलने का एकमात्र तरीका है, इफ्रीटिस नदी के तीनों देश अपने वर्षाजल का सामुदायिक विकेंद्रित जल प्रबन्धन करके नदी को बहने की आजादी दें। जिस प्रकार गंगा पर बन रहे तीन बांधों को रद्द करके भारत के प्रधानमंत्री ने पूरी दुनिया को गंगा की अविरलता के नाम पर नदियों की आजादी का सन्देश दिया था; उसी प्रकार इफ्रीटिस नदी में भी अब आगे बड़े बान्ध नहीं बनें। वर्तमान बाँधों पर नदी को प्राकृतिक प्रवाह देने की व्यवस्था तकनीकी और इंजीनियरिंग तौर पर की जा सकती है। इसलिए हम सबको अब भारत की गंगा नदी से मानवता, शांति, सद्भावना और शक्तिभाव का सम्मान करने का सन्देश मिले। मैंने इस बढ़ते मरुस्थल को रोकने की तैयारी में अपने 30 वर्षों के प्रत्यक्ष जलवायु परिवर्तन-अनुकूलन-उन्मूलन के प्रत्यक्ष अनुभव को स्पष्ट रूप से दिखाने वाली प्रस्तुति भी की थी। मुझे अलग-अलग सत्रों में अपनी बातें रखने का अवसर प्राप्त हुआ।



## विवादों में घिरी नील नदी अफ्रीका की जीवन रेखा है

नील नदी विश्व की सबसे लम्बी नदी है, जो अफ्रीका की सबसे बड़ी झील विक्टोरिया से निकलकर विस्तृत सहारा मरुस्थल के पूर्वी भाग को पार करती हुई उत्तर में भूमध्यसागर में मिल जाती है। नील नदी की लंबाई लगभग 6,695 किलोमीटर (4,160 मील) है। यह भूमध्यरेखा के निकट भारी वर्षा वाले क्षेत्रों से निकलकर, दक्षिण से उत्तर क्रमशः युगाण्डा, इथियोपिया, सूडान, इजिप्त, टर्की एवं मिस्र से होकर बहते हुए काफी लंबी घाटी बनाती है, जिसके दोनों ओर की भूमि पतली पट्टी के रूप में शस्यश्यामला दिखती है। यह पट्टी संसार का सबसे बड़ा मरुघान है।

नील नदी की दो प्रमुख सहायक नदियाँ— व्हाइट नील और ब्लू नील हैं। व्हाइट नील नदी का उद्गम मध्य अफ्रीका के 'महान अफ्रीकी झील' (African Great Lakes) क्षेत्र से होता है, जबकि ब्लू नील का उद्गम इथियोपिया की 'लेक टाना' से होता है।

नील नदी का बेसिन काफी विशाल है और इसमें तंजानिया, बुरुंडी, रवांडा, कांगो और केन्या आदि देश शामिल हैं। नील नदी की घाटी एक सँकरी पट्टी—सी है, जिसके अधिकांश भाग की चौड़ाई 16 किलोमीटर से अधिक नहीं है, कहीं—कहीं तो इसकी चौड़ाई 200 मीटर से भी कम है। इसकी कई सहायक नदियाँ हैं, जिनमें श्वेत नील एवं नीली नील मुख्य हैं। यह अपने मुहाने पर 160 किलोमीटर लम्बा तथा 240 किलोमीटर चौड़ा विशाल डेल्टा बनाती है।

घाटी की सामान्य ढाल दक्षिण से उत्तर की ओर है। मिस्र की प्राचीन सभ्यता का विकास इसी नदी की घाटी में हुआ है। इसी नदी पर मिस्र देश का प्रसिद्ध अस्वान बाँध बनाया गया है।

नील नदी की घाटी का दक्षिणी भाग भूमध्यरेखा के समीप स्थित है, अतः वहाँ भूमध्यरेखीय जलवायु पायी जाती है। यहाँ वर्ष भर उँचा तापमान रहता है तथा वर्षा भी वर्ष भर होती है। वार्षिक वर्षा का औसत 212 से. मी. है। उच्च तापक्रम तथा अधिक वर्षा के कारण यहाँ भूमध्यरेखीय सदाबहार वन पाये जाते हैं। नील नदी के मध्यवर्ती भाग में सवाना तुल्य जलवायु पायी जाती है, जो उष्ण परन्तु कुछ विषम है एवं वर्षा की मात्रा अपेक्षाकृत कम है। इस प्रदेश में सवाना नामक उष्ण कटिबन्धीय घास का मैदान पाया जाता है। यहाँ पाये जाने वाले गोंद देने वाले पेड़ों के कारण सूडान विश्व का सबसे बड़ा गोंद उत्पादक देश है। उत्तरी भाग में वर्षा के अभाव में खजूर, कँटीली झाड़ियाँ एवं बबूल आदि मरुस्थलीय वृक्ष मिलते हैं। उत्तर के डेल्टा क्षेत्र में भूमध्यसागरीय जलवायु पायी जाती है, जहाँ वर्षा मुख्यतः जाड़े में होती है।

नील नदी एक दशक से चल रहे जटिल विवाद को लेकर केंद्र में है, इस विवाद में कई देश शामिल हैं, जो नदी के जल पर निर्भर हैं। इस विवाद का प्रमुख कारण इथियोपिया द्वारा 145 मीटर लंबे (475 फुट लंबा) पनबिजली प्रोजेक्ट ग्रैंड रेनेसां डैम का निर्माण शुरू किया जाना है।

बाँध के चलते इथियोपिया नील नदी के जल पर नियंत्रण कर सकता है। यह मिस्र के लिये चिंता का विषय है, क्योंकि मिस्र नील नदी के अनुप्रवाह क्षेत्र में स्थित है। ब्लू नील, नील नदी की एक सहायक नदी है और यह पानी की मात्रा का दो-तिहाई भाग तथा अधिकांश गाद को वहन करती है। इस विवाद में सबसे आगे इथियोपिया, मिस्र और सूडान हैं, क्योंकि इथियोपिया का मानना है कि, बाँध निर्माण से लगभग 6,000 मेगावाट विद्युत उत्पन्न किया जा सकेगा। इथियोपिया की 65% आबादी वर्तमान में विद्युत की कमी का सामना कर रही

है। इस बाँध निर्माण से देश के विनिर्माण उद्योग को मदद मिलेगी तथा पड़ोसी देशों को विद्युत की आपूर्ति किये जाने से राजस्व में वृद्धि की संभावना है।

केन्या, सूडान, इरिट्रिया और दक्षिण सूडान जैसे पड़ोसी देश भी विद्युत की कमी से प्रभावित हैं और यदि इथियोपिया उन्हें विद्युत बेचने का फैसला करता है, तो वे भी जलविद्युत परियोजना से लाभान्वित हो सकते हैं। यह मिस्त्र के लिये भी चिंता का विषय है, क्योंकि मिस्त्र नील नदी के अनुप्रवाह क्षेत्र में स्थित है। मिस्त्र का मानना है कि, नदी पर इथियोपिया का नियंत्रण होने से उसकी सीमाओं के भीतर जलस्तर कम हो सकता है। मिस्त्र पेयजल और सिंचाई की आपूर्ति के लिये आवश्यक पानी के लगभग 97% हेतु नील नदी पर निर्भर है। यह बाँध मिस्त्र के आम नागरिकों की खाद्य और जल सुरक्षा तथा आजीविका को खतरे में डाल सकता है।

इसमें सूडान भी इस बात से चिंतित है कि, यदि इथियोपिया इस नदी पर नियंत्रण करता है तो यह सूडान के जलस्तर को प्रभावित करेगा। बाँध से उत्पन्न बिजली से सूडान को लाभ होने की संभावना है। नदी का विनियमित प्रवाह सूडान को अगस्त और सितंबर माह में आने वाली गंभीर बाढ़ से बचाएगा। इस प्रकार इसने बाँध के संयुक्त प्रबंधन का प्रस्ताव दिया है।

25 से 28 अप्रैल 2017 तक केयरो में नोयल नदी का सम्मेलन आयोजित हुआ था, जिसमें मैं शामिल हुआ था। इस सम्मेलन की शुरुआत में नोयल नदी के बारे में जानकारी दी गई और उसके समाधान के लिए केवल आधुनिक तकनीक से समाधान सुझाये जा रहे थे। हम जानते हैं कि किसी भी नदी की समस्या का समाधान केवल तकनीक व इंजीनियरिंग से संभव नहीं है। उस प्रस्तुति से मैं खुश नहीं था, लेकिन बहुत ध्यान से सुना।

27 अप्रैल को इस नदी से संबंधित सभी देश— मिश्र, इजिप्ट व अन्य 6 देशों के सरकारी अधिकारी थे। यह नदी इथोपिया से आरंभ होती है। दूसरे देशों

के लोग इसमें गंदा पानी नहीं मिलाते, इसलिए इजिप्ट पहुँचते हुए भी इसका जल साफ़ रहता है। मैं प्रतिदिन नायल नदी के अलग-अलग क्षेत्रों में जाता था। इसकी सेहत दूसरी नदियों के मुकाबले बहुत खराब नहीं थी। परंतु इस नदी के जल बँटवारे पर बहुत विवाद है। उन सभी विवादों पर यहाँ चर्चा हुई। सरस्टेनेबिल डवलपमेंट की बैठक में मेरा ही बीज-भाषण हुआ। उसमें टर्की ने बहुत सवाल उठाये। खासकर 6 बड़े बाँधों के विषय पर लम्बी चर्चा हुई। मैं उस नदी के 6 देशों में गया था। यह अफ्रीका के लिए जीवनरेखा है, लेकिन आपसी विवादों में फंसी है।

यहाँ के संग्रहालय में यहाँ की संस्कृति-समृद्धि में नदी की भूमिका मुझे अच्छे से समझ आयी। नदियों के किनारे ही सभ्यताएँ और संस्कृति समृद्ध बनती है। मुझे इजिप्ट के लोगों ने इस नदी बेसिन की यात्रा कराई। विवाद की जड़ भी समझायी। मैंने समाधान पर बातचीत की, लेकिन इथियोपिया अपना आर्थिक लाभ छोड़ने वाला नहीं है। पाँच दिन के लम्बे संवाद में आगे बातचीत के रास्ते बने।

25 से 28 तक आयोजित इस बैठक में मेरे अनुभवों को सुनने व समझने के लिए मुझे बुलाया गया था। मैं जानता था कि, सुनने वाले लोग इंजीनियरिंग, तकनीक के विशेषज्ञ व प्रशासनिक बड़े अधिकारी थे। फिर भी तरुण भारत के काम में खासकर कम वर्षा के बावजूद नदियों में जल बहने लगा— इस विषय में उनकी आश्चर्यजनक रुचि थी। इसलिए मैंने भी इन अनुभवों पर अधिक समय माँग कर बात रखी। उसके बाद मैंने सभी को भारत में अपना काम दिखाने के लिए सादर आमंत्रित किया। वे सब बहुत प्रसन्न हुए और मुझसे समय माँगने लगे। मैं स्वयं सभी से मिला। सभी की नदी पुनर्जीवन कार्य देखने-समझने में खास रुचि दिखाई दी।

इस सम्मेलन में मैंने पहले पूरे दो दिन इस नदी को जगह-जगह देखने-समझने में लगाये थे। फिर संवाद को आगे बढ़ाने में अपनी भूमिका निभाई। आर्थिक

लाभ की जटिलताओं, गणनाओं को अभियांत्रिकी व प्रौद्योगिकी से हल करना चाहते हैं। इन्हें ऊपर-नीचे किया जा सकता है। लेकिन कदाचित यह रास्ता स्थायी समाधान नहीं बनाता है। इन गणनाओं की मदद से बातचीत आगे बढ़ती है। संवाद शुरू होता है। संवाद से समाधान की आशा जगती है। इसके जटिल विवाद के समाधान की आशा जगाने में सफलता मिली।



## जॉर्डन नदी का जल लूटकर इतराता इजरायल

जॉर्डन नदी पश्चिम एशिया की 251 किलोमीटर (156 मील) लंबी नदी है। जॉर्डन नदी जॉर्डन, फिलिस्तीनी वेस्ट बैंक, इजरायल और दक्षिण-पश्चिमी सीरिया के बीच सीमा के साथ-साथ चलती है। ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण यह नदी मृत सागर में सागर-संगम करती है। निवर्तमान समय में यह इज़राइल की पूर्वी सीमा का निर्माण करती है। ईसाई परम्परा के अनुसार जॉन बैपटिस्ट ने इसी नदी में ईसा की बपतिस्मा की थी। हेशमाइट किंगडम ऑफ़ जॉर्डन का नाम इसी नदी के नाम पर पड़ा है। इसकी सहायक नदियाँ—बनियास नदी, दान नदी, यरमौक नदी, ज़रक नदी, हसबनी या स्निर नदी व इयोन स्ट्रीम हैं।

जॉर्डन नदी के पास अपने स्रोतों से गलील सागर तक एक ऊपरी सतह है, और गलील सागर के दक्षिण में एक निचली सतह मृत सागर तक है। हुला घाटी, जो कि ऊपरी जॉर्डन घाटी के विपरीत है, गैलीलो का सागर जिसके माध्यम से नदी गुजरती है, से एक अलग इकाई है; और जॉर्डन घाटी उसकी निचली सतह पर है।

जॉर्डन नदी की ऊपरी सतह पर (हस्बानी नदी, बनियास नदी, दान नदी, और इयोन स्ट्रीम मिलती हैं), नदी 75 किलोमीटर (47 मील) की लंबाई में तेजी की रफ्तार से गिरती है, जो एक बड़े और दलदली भाग हुला झील में जाती है, जिससे समुद्र का स्तर थोड़ा ऊपर हो जाता है। डेगनिया डैम जॉर्डन झील के भीतर ले जाने वाले गाद का अधिकांश भाग जमा करता है, जिसे वह फिर से



अपने दक्षिणी सिरे के पास छोड़ देता है। तब नदी समुद्र तल से लगभग 210 मीटर नीचे स्थित होती है। अंतिम 120 किलोमीटर (75 मील)—लंबा खंड है, जिसे आमतौर पर "जॉर्डन घाटी" कहा जाता है, जिसमें ढाल कम है, ताकि नदी तल में प्रवेश करने से पहले मृत सागर, ए टर्मिनल झील बिना किसी आउटलेट के समुद्र तल से लगभग 422 मीटर नीचे आ जाती है।

लोअर जॉर्डन के सबसे उत्तरी हिस्से के बारे में पर्यावरणविदों का कहना है कि सीवेज और खारे पानी को नदी में प्रवाहित करने की प्रथा ने वहाँ का पारिस्थितिकी तंत्र लगभग नष्ट कर दिया है। अब यह बहुत प्रदूषित हो गई है। पर्यावरणविदों के अनुसार, जॉर्डन को बचाने में दशकों लग सकते हैं। 2007 में, FoEME ने जॉर्डन नदी को दुनिया के 100 सबसे लुप्तप्राय पारिस्थितिक स्थलों में से एक के रूप में नामित किया, जो कि इजरायल और पड़ोसी अरब राज्यों के बीच सहयोग की कमी के कारण था।

गैलीलो सागर के उत्तर में इसका खंड इस्त्राइल की सीमाओं के भीतर है और इसकी पश्चिमी सीमा बनाता है गोलान हाइट्स। झील के दक्षिण में, यह जॉर्डन के राज्य (पूर्व में), और इज़राइल (पश्चिम में) के बीच की सीमा बनाता है।

आधुनिक समय में, पानी 70% से 90% लगभग मानव उद्देश्यों के लिए उपयोग किया जाता है और प्रवाह बहुत कम हो गया है। इस वजह से और उच्च वाष्पीकरण दर के कारण तालाबों के माध्यम से लवण का औद्योगिक निष्कर्षण होने से मृत सागर तेजी से सिकुड़ रहा है।

19वीं शताब्दी में जॉर्डन नदी और मृत सागर की खोज मुख्य रूप से नाव द्वारा की गई थी। क्रिस्टोफर कोस्टिगन 1835 द्वारा में, थॉमस हॉवर्ड मोलेंनक्वाम द्वारा 1847 में, विलियम फ्रांसिस लिंच द्वारा 1848 में, और जॉन मैकग्रेगर द्वारा 1869 में। डब्ल्यू एफ लिंच की 1849 की किताब का एक पूरा पाठ जॉर्डन नदी और मृत सागर के लिए संयुक्त राज्य अमेरिका के अभियान का वर्णन करता है।

एक समय जॉर्डन नदी की प्रवाह दर 1.3 बिलियन क्यूबिक मीटर प्रतिवर्ष थी; 2010 तक, मृत सागर में प्रतिवर्ष सिर्फ 20 से 30 मिलियन क्यूबिक मीटर प्रवाह हो गया है।

21वीं सदी के पहले दशक तक, जॉर्डन नदी का पानी इजरायल के लिए सबसे बड़ा जल संसाधन था। हाल ही में, अलवणीकृत समुद्र के पानी ने इस भूमिका को संभाल लिया है। इजराइल का राष्ट्रीय जल वाहक 1964 में पूरा हुआ, इस दौरान लंबे समय तक सूखे की स्थिति से निपटने के लिए, गलील के सागर से इजरायली तटीय मैदान तक पानी पहुँचाया गया। जॉर्डन नदी के जल पर इजराइल ने बहुत पहले से ही अपना कब्जा कर रखा है। इसलिए जॉर्डन अभी तक जल के उस संकट से उबरा नहीं है। फिलिस्तीनियों की हालत तो बहुत खराब है। वहाँ में बहुत सारे फिलिस्तीनियों व जॉर्डन के साथियों से मिला।

इजराइल और जॉर्डन के बीच पानी का विवाद बहुत पुराना है। यह विवाद, जॉर्डन नदी के रेपेरियन राइट से जुड़ा है। अब आप देखिए कि लेबनान, सीरिया, जॉर्डन, इजराइल और कुछ हिस्सा जो फिलिस्तीन का है, कायदे से जॉर्डन नदी के पानी के उपयोग में इन सभी की हकदारी है। ताजे जल निकासी तंत्र की बात करें तो खासकर इजराइल, जॉर्डन और फिलिस्तीन के लिये जॉर्डन नदी का विशेष महत्त्व है। लेकिन वस्तुस्थिति यह है कि जॉर्डन के पानी पर सबसे बड़ा कब्जा, इजरायल का है। इजरायल ने फिलिस्तीन के राष्ट्रीय प्राधिकरण को पानी देने से साफ-साफ मना कर रखा है।

दरअसल, लोग भूल जाते हैं कि दुनिया के 195 देशों में से करीब-करीब 150 देश ऐसे हैं, जिनके बारे में यह नहीं कहा जा सकता कि वहाँ पानी का कोई संकट नहीं है। आप जड़ में जाएँगे तो पाएँगे कि पानी के संकट के कारण आई अस्थिरता ही आगे चलकर अन्य, सामाजिक, आर्थिक और सामरिक समस्याओं के रूप में उभरी है। आप नजर घुमाकर अपने ही देश में देख लीजिए। बांग्लादेश के हमारे पर्यावरण मित्र, फरक्का बाँध को लेकर अक्सर सवाल करते

हैं। हम चीन द्वारा ब्रह्मपुत्र नदी की हरकतों पर सवाल उठाते हैं। नेपाल से आने वाली नदियों में बाँधों से अचानक छोड़े गये पानी के कारण तबाही पर चर्चा होती ही है। पाकिस्तान और हमारे बीच विवाद का एक मुद्दा पानी भी है।

26 अगस्त से 30 अगस्त 2015 तक जार्डन के राष्ट्रपति और मुझे एक ही साथ स्टोकहोम में रहने का अवसर मिला था। तब मैंने भी इस जॉर्डन नदी विवाद के विषय में विस्तार से बातचीत की थी। इन्होंने कहा था कि, समझौता तो अच्छा है; लेकिन क्रियान्वित होने में अड़चन है। उनकी आशंका सच निकली और समझौता आज तक क्रियान्वित नहीं हुआ।

इजरायल ने 156 मील लम्बी जॉर्डन नदी पर एक बाँध बना रखा है। यह बाँध, जॉर्डन देश की ओर बहकर जाने वाले पानी को रोक देता है। इजरायल यह सब इसके बावजूद करता है, जबकि जॉर्डन और उसके बीच पानी को लेकर 26 फरवरी, 2015 को हस्ताक्षरित एक औपचारिक द्विपक्षीय समझौता अभी अस्तित्व में है। इस समझौते के तहत पाइपलाइन के जरिए लाल सागर को मृत सागर से जोड़ने तथा एक्युबा गल्फ में खारे पानी को मीठा बनाने के एक संयंत्र को लेकर सहमति भी शामिल है। ताजा पानी मुहैया कराने तथा तेजी से सिकुड़ते मृत सागर की दृष्टि से इस समझौते का महत्त्व है। आलोचना करने वालों का कहना है कि ऐसा कोई समझौता तब तक प्रभावी नहीं हो सकता, जब तक कि इजरायल द्वारा की जा रही पानी की चोरी रुक न जाये। इजरायल द्वारा की जा रही पानी की इस चोरी ने जॉर्डन की खेती और उद्योग.. दोनों को नुकसान पहुँचाया है। जॉर्डन के पास घरेलू उपयोग के लिये भी कोई अफरात पानी नहीं है। यहाँ भी वही हुआ, जॉर्डन में भी लोगों ने पहले पानी के लिये संघर्ष किया और फिर अपना देश छोड़कर स्वीडन, फ्रांस, जर्मनी, नीदरलैंड और बेल्जियम चले गए।

हालाँकि, जॉर्डन के लोग यह भी महसूस करते हैं कि, समझौते के बावजूद, जल संकट बरकरार रहने वाला है। वे मानते हैं कि इसका पहला कारण, जॉर्डन

में भी गर्मी तथा मौसमी बदलाव की बढ़ती प्रवृत्ति है। इसकी वजह से जॉर्डन में भूमि कटाव और गाद में बढ़ोत्तरी हुई है। दूसरा वे मानते हैं कि यदि वे प्रदूषित पानी को साफ कर सकें, तो उनके पास उपयोगी पानी की उपलब्धता बढ़ सकती है। किन्तु उनके पास इसका तकनीकी अभाव है। साधन भी नहीं हैं। राष्ट्रपति साधन जुटाने, कर्ज लेने स्टॉकहोम गये थे। स्टॉकहोम इनके जल संकट समाधान में सहयोग कर रहा है।

वर्षाजल का उचित संचयन और प्रबन्धन वहाँ कारगर हो सकता है किन्तु जॉर्डन के इंजीनियर, छोटी परियोजनाओं में रुचि नहीं लेते। उनकी ज्यादा रुचि, नदी घाटी आधारित बड़ी बाँध परियोजनाओं में रहती है। लोग आगे आँ तो यह हो सकता है। किन्तु खुद के पानी प्रबन्धन के लिये उनमें प्रेरणा का अभाव है। जॉर्डन में पानी पर सरकार का अधिकार है। लोगों के बीच पानी प्रबन्धन की स्वस्फूर्त प्रेरणा के अभाव के पीछे एक कारण यह भी दिखता है।

सरकार और समाज के बीच पुल बने, तो प्रेरणा को जमीन पर उतारने में सफलता मिल सकती है। लेकिन मुझे तो वहाँ ऐसे उत्साही पानी कार्यकर्ताओं का भी अभाव ही दिखाई दिया। जॉर्डन चाहे, तो इजरायल के पानी प्रबन्धन से सीख ले सकता है। किन्तु दो देशों के बीच विश्वास का अभाव यहाँ भी आड़े आता है।

इजरायल की होशियारी देखिए कि, जहाँ पराये पानी को हथियाने के मामले में वह दादागिरी से काम ले रहा है, वहीं अपने पानी के उपयोग के मामले में बेहद समझदारी से काम कर रहा है। इसने अपनी जलउपयोग दक्षता बहुत बढ़ाई है। जल संरक्षण और प्रबंधन दोनों ही तरह के काम किये हैं।

इजरायल, जल संरक्षण तकनीकों के बारे में अपने नागरिकों को लगातार शिक्षित करता रहता है। विविध भौगोलिक तथा आर्थिक परिस्थितियों के कारण भारत जैसे देश के लिये यह भले ही अनुचित हो, लेकिन इजरायल ने पानी

के केन्द्रित और वास्तविक मूल्य आधारित प्रबन्धन को अपनाया है। इजरायल सरकार ने वहाँ जल नियंत्रकों की नियुक्ति की है। इजरायल में जल पर रक्षा विभाग का नियंत्रण है। सेना ही जल सुरक्षा संभालती है।

इजरायल ने खारे पानी को मीठा बनाने की तकनीक को बड़े पैमाने पर अपनाया है। हालांकि यह बेहद महंगी तकनीक है; फिर भी इजरायल ने इसे अपनाया है तो इसके पीछे एक कारण है। इजरायल जानता है कि उसके पास पानी का अपना एकमात्र बड़ा जलस्रोत, गलिली सागर (अन्य नाम: किनरेट लेक) है। उसके पास कोई अन्य स्थानीय विकल्प नहीं है। इजरायल की एक-तिहाई जलापूर्ति, गलिली सागर से ही होती है। खारे पानी को मीठा बनाने की तकनीक के मामले में इजरायली संयंत्रों की खूबी यह है कि वे इतनी उम्दा ऊर्जा क्षमता व दक्षता के साथ संचालित किये जाते हैं कि खारे पानी को मीठा बनाने की इजरायली लागत, दुनिया के किसी भी दूसरे देश की तुलना में कम पड़ती है।

गौर करने की बात है कि इजरायल में घरेलू जरूरत के पानी की माँग में से 60 प्रतिशत की पूर्ति, इस प्रक्रिया से मिले मीठे पानी से ही हो जाती है। जॉर्डन नदी पर रोके पानी को वह पूरी तरह पेयजल की माँग पूरी करने के लिये सुरक्षित कर लेता है। फिलिस्तीन के पश्चिमी घाट के जलस्रोतों का इस्तेमाल वह कर ही रहा है।

इजरायल ने अपनी जलापूर्ति नीली, हरी, लाल रंग की तीन पाइपलाइनों द्वारा की है। यहाँ की राजधानी के शहर हों या गाँव हों सभी जल उपयोग में अनुशासित और दक्ष हैं। यहाँ नीली पाइप का जल 'ए' श्रेणी का होता है, जो बहुपेयजल के काम आता है, रसोई आदि घरेलू कामों में उपयोग किया जाता है। हरा जल 'बी' श्रेणी में आता है जिसका उपयोग खेती में किया जाता है। 'सी' श्रेणी का जल लाल पाइप में होता है, जिसे उद्योगों में पुनः उपयोग किया जाता है। अखरोट आदि बड़े पेड़ों में भी इसका उपयोग करते हैं।

इजरायल ने अपने आपको सुधार लिया, लेकिन अपने पड़ोसी देशों को बिल्कुल बिगाड़ दिया है। इसीलिए जल के लिए अच्छे काम करने वाले इजरायल को जॉर्डन नदी का लुटेरा बोला जाता है।

156 मील लंबी जॉर्डन नदी के प्रवाह पर इजरायल बांध बनाकर नियंत्रण करता है। इस कारण जॉर्डन देश में पानी की कमी है। इसलिए जॉर्डन बारिश के पानी का प्रबंधन करने में भी असमर्थ है। मुझे लगता है कि, यहाँ सामुदायिक विकेन्द्रित जल प्रबंधन की आवश्यकता है। यहाँ लोगों को जल के प्रति जागरूक करने की जरूरत है। इस देश को व्यापक जल नीति बनाने के साथ-साथ देश के लोगों को साथ लेकर रचनात्मक कार्य करने की जरूरत है।



## विकास के विनाश की शिकार नाइजर नदी

नाइजर नदी पश्चिम अफ्रीका की प्रमुख नदी है। नील और कांगो नदी के बाद यह अफ्रीका की तीसरी सबसे लंबी नदी है। नाइजर नदी सिएरा लियोन में स्थित लोमा पर्वत के पहाड़ी क्षेत्र से निकलकर समुद्र से विमुख होकर दक्षिणी सहारा मरुस्थल में 2,600 मील बहने के पश्चात दक्षिण की ओर मुड़कर गिन्नी की खाड़ी में गिरती है। इस नदी की पुरानी धारा के चिह्न मरुस्थल में बहुत दूर उत्तर तक मिलते हैं। नाइजर की सबसे महत्वपूर्ण सहायक नदी 'बेन्यू', इसके मुहाने से 250 मील ऊपर मिलती है।

समुद्र में मिलने से पहले नाइजर कई धाराओं में बँटकर 1,400 वर्ग मील क्षेत्र में डेल्टा बनाती है। डेल्टा में, जो समुद्र के किनारे 120 मील लंबा है, धान, गन्ना तथा कपास की अच्छी उपज होती है। नाइजर में 5,84,000 वर्ग मील क्षेत्र का जल आता है। यद्यपि इसकी धारा में अनगिनत चट्टानें तथा झरने पड़ते हैं, तथापि इसका मध्य भाग छोटी नौकाओं के परिवहन को काम देता है। इस नदी में मछलियाँ, मगर तथा दरियाई घोड़े अधिक मिलते हैं।

नाइजर नदी अपेक्षाकृत एक "सीधी" नदी है, जिसमें नील नदी के तलछट का केवल दसवां हिस्सा है, क्योंकि नाइजर के हेडवाटर प्राचीन चट्टानों में स्थित हैं, जो थोड़ी गाद प्रदान करते हैं। नील नदी की तरह, नाइजर में हर साल बाढ़ आती है; यह दौर सितंबर में शुरू होता है, नवंबर में चरम पर होता है और मई तक समाप्त हो जाता है। नदी की एक असामान्य विशेषता इनर नाइजर डेल्टा

है, जो वहाँ बनती है, जहाँ इसकी ढाल अचानक कम हो जाती है।

नदी के अपने संभावित प्रवाह का लगभग दो-तिहाई भाग सेगौ और टिम्बकटू के बीच इनर डेल्टा में रिसाव और वाष्पीकृत हो जाता है। बानी नदी का सारा पानी, जो मोप्ती में डेल्टा में बहता है, इस 'नुकसान' की भरपाई नहीं करता है। औसत 'नुकसान' का अनुमान 31 घनमीटर/वार्षिक है, लेकिन विभिन्न वर्षों के बीच यह काफी भिन्न होता है। नदी तब विभिन्न सहायक नदियों से जुड़ जाती है, लेकिन वाष्पीकरण के लिए अधिक पानी भी खो देती है। योला में मापे गये नाइजीरिया में प्रवेश करने वाले पानी की मात्रा का अनुमान 1980 के दशक से पहले 25 घनमीटर/वार्षिक और 1980 के दशक के दौरान 13.5 घनमीटर/वार्षिक था। सबसे महत्त्वपूर्ण सहायक नदी बेन्यू नदी है, जो नाइजीरिया के लोकोजा में नाइजर के साथ विलीन हो जाती है। नाइजीरिया में सहायक नदियों की कुल मात्रा नाइजीरिया में प्रवाह की तुलना में छह गुना अधिक है। 1980 के दशक से पहले नदी के मुहाने के पास एक प्रवाह 177.0 किमी/वार्षिक और 1980 के दशक के दौरान 147.3 घनमीटर/वार्षिक था।

नाइजर नदी बेसिन के देश —नाइजीरिया, माली आदि अब सभी विकासशील बनने की चाह में आगे बढ़ रहे हैं। नाइजीरिया संघीय गणराज्य पश्चिम अफ्रीका का एक देश है। इसकी सीमाएँ पश्चिम में बेनीन, पूर्व में चाड, उत्तर में कैमरून और दक्षिण में गुयाना की खाड़ी से लगती है। इस देश की राजधानी अबुजा है, जो इस देश का बड़ा शहर है। इस देश का कुल क्षेत्रफल 923768 वर्ग किमी है और 2016 की जनगणना के अनुसार जनसंख्या 185989640 है। नाइजीरिया के दक्षिण पूर्व में पहाड़ हैं, जबकि उत्तर में मुख्य रूप से मैदानी इलाके हैं। नाइजीरिया का वातावरण भी भिन्न होता है, लेकिन भूमध्यरेखा के निकट स्थानों के कारण केन्द्र और दक्षिण उष्णकटिबंधीय है, जबकि उत्तर शुष्क है।

इस देश की मुख्य चाड झील नाइजीरिया के बोर्नो प्रांत में स्थित है। योजनापूर्वक बनाई गई यह झील न केवल इस प्रांत की आवश्यकता की पूर्ति



करती है, बल्कि नाइजीरिया के तीन पड़ोसी देशों—नाइजर, कैमरून और चाड की आवश्यकताओं को भी पूरा करती है।

नाइजीरिया के प्राचीन इतिहास को देखने पर पता चलता है कि, यहाँ सभ्यता की शुरुआत ईसा पूर्व 9000 में हुई थी। 1885 ईस्वी में अंग्रेजों ने नाइजीरिया पर प्रभाव के एक क्षेत्र का दावा किया और 1886 में रॉयल नाइजर कंपनी की स्थापना हुई। 1963 ईस्वी में नाइजीरिया ने खुद को एक संघीय गणराज्य घोषित किया और नया संविधान तैयार किया, लेकिन 1960 में सरकार अस्थिर थी, इसके प्रधानमंत्री की हत्या के बाद गृहयुद्ध शुरू हुआ। गृहयुद्ध के बाद नाइजीरिया ने आर्थिक विकास पर ध्यान केन्द्रित किया और 1977 में सरकारी अस्थिरता के कई वर्षों बाद, देश ने एक नया संविधान बनाया।

आधिकारिक तौर पर माली गणराज्य पश्चिमी अफ्रीका में स्थित एक स्थल-रुद्ध देश है। अफ्रीका के सातवें सबसे बड़े देश माली की सीमा उत्तर में अल्जीरिया, पूर्व में नाइजर, दक्षिण में बुर्किना फ़ासो और कोड द आइवोर, दक्षिण-पश्चिम में गिनी और पश्चिम में सेनेगल और मारितुआना से मिलती है। 12,40,000 वर्ग कि.मी. से कुछ बड़े इस देश की जनसंख्या करीबन 1,30,00,000 है। इसकी राजधानी बमाका है।

आठ क्षेत्रों में बँटे माली की उत्तरी सीमा सहारा के मध्य तक जाती है, वहीं देश का दक्षिणी क्षेत्र, जहाँ अधिकांश आबादी निवास करती है, की विशेषता नाइजर और सेनेगल नदी है। देश की अर्थव्यवस्था खेती और मत्स्यपालन पर निर्भर है। माली के कुछ प्राकृतिक संसाधनों में सोना, यूरेनियम और नमक शामिल हैं। माली दुनिया के सबसे निर्धनतम देशों में शुमार किया जाता है।

आज का माली कभी ट्रॉस-सहारा व्यापार पर नियंत्रण रखने वाले तीन साम्राज्यों, घाना साम्राज्य, माली साम्राज्य (जिससे माली नाम लिया गया है) और सोनघाई साम्राज्य का एक हिस्सा था। 1800 के अंत में यह फ्रांसीसी

नियंत्रण में आ गया और फ्रांसीसी सूडान का एक हिस्सा बन गया। 1959 में माली से सेनेगल से माली संघ के नाम से यह स्वतंत्र हो गया। एक साल बाद माली संघ स्वतंत्र राष्ट्र माली बन गया। एकदलीय शासन के लंबे दौर के बाद 1991 में हुए तख्तापलट के बाद गणतंत्र और बहु-दलीय राज्य के रूप में नए संविधान और सत्ता का गठन किया गया। देश की तकरीबन आधी आबादी अंतर्राष्ट्रीय गरीबी रेखा, 1.25 अमेरिकी डालर प्रतिदिन से कम आमदनी पर गुजर-बसर करती है।

देश में उष्णकटिबंधीय सवाना वाला जलवायु क्षेत्र है। देश के अधिकांश भाग में बहुत कम वर्षा होती है। यहाँ सूखा पड़ना एक आम बात है। मई के अंत से या जून के शुरुआत में वर्षा शुरू हो जाती है, जो अक्टूबर के अंत तक या नवम्बर की शुरुआत तक रहती है।

नाइजर नदी बेसिन में पानी आंशिक रूप से बांधों के माध्यम से नियंत्रित होता है। माली में संकरानी नदी पर सेलिगुए बांध मुख्य रूप से जल विद्युत के लिए उपयोग किया जाता है, लेकिन सिंचाई की भी अनुमति देता है। दो डायवर्जन बांध, एक बामाको के ठीक नीचे सोतुबा में, और एक मरकला में, सेगौ के ठीक नीचे की ओर, लगभग 54,000 हैक्टेयर में सिंचाई के लिए उपयोग किया जाता है। नाइजीरिया में कांजी बांध, शिरोरो बांध, जुंगरू बांध और जेबा बांध का उपयोग जल विद्युत उत्पन्न करने के लिए किया जाता है। सिंचाई के लिए पानी की कमी बढ़ने के कारण नाइजर नदी के जल संसाधन दबाव में हैं। नाइजर बेसिन के देशों में बिजली की पुरानी कमी को दूर करने के लिए जलविद्युत उत्पादन के लिए बांधों का निर्माण चल रहा है या परिकल्पित है। एफएओ ने नाइजर नदी बेसिन में 2.8 मिलियन हैक्टेयर में सभी देशों की सिंचाई क्षमता का अनुमान लगाया है। 1980 के दशक के अंत में केवल 0.93 हैक्टेयर क्षेत्र सिंचाई के अधीन था। नाइजीरिया में सिंचाई क्षमता का अनुमान 1.68 मिलियन हैक्टेयर, माली में 0.56 मिलियन हैक्टेयर था, और वास्तविक सिंचित क्षेत्र 0.67 मिलियन और 0.19 मिलियन हैक्टेयर था।

नाइजर नदी भी लालची विकास, जल विद्युत की मार से मरेगी। इसके बेसिन के सभी देश अपने को विकासशील कहते हैं। विकासशील की परिभाषा है, विस्थापन करने की सम्पूर्ण तैयारी। देश में बिगाड़, सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक विषमता, हिंसक प्राकृतिक मानवीयवृत्ति का निर्माण करके भौतिक, आर्थिक ढाँचे को विस्तार देना। यह ढाँचा देश के प्राकृतिक और मानवीय स्वास्थ्य को बिगाड़कर बाढ़-सुखाड़ जैसा विनाश बढ़ाता है।

विकासशील का लक्षण- प्राकृतिक और मानवता का शोषण तेज होना है। जिस देश में प्राकृतिक दोहन के स्थान पर शोषण होने लगता है, तो वह विकासशील कहलाने लगता है।

शोषण में प्रदूषण और अतिक्रमण शामिल होता ही है। जिस देश की नदियाँ जितनी अधिक शोषित, समाज और सत्ता द्वारा अतिक्रमित होने लगे अर्थात् ये तीनों कार्य जितनी तेजी से होने लगें, वह देश उतना ही तेज विकास की गति वाले विकासशील देशों की श्रेणी में गिना जाता है। अस्पताल में जाकर इलाज कराना, अधिक दवाइयाँ खरीदना जीडीपी को बढ़ाता है। जीडीपी बढ़ाने वाले देश विकासशील देशों की श्रेणी में आ जाते हैं। जिस देश की नदी जितनी ज्यादा गंदी होती है, वह उतना ही अधिक विकासशील बनता है। वह ज्यादा बीमार होकर इलाज पर ज्यादा खर्च करने लगता है।

नाइजर नदी बेसिन के सभी देश विकासशील बनकर एक-दूसरे से आगे निकलना चाहते हैं। ये सभी आर्थिक विकासशील बनने की प्रतियोगिता में सफल बनने में जुटे हैं। इनकी सफलता का परिणाम ही विस्थापन है। मुझे नाइजर नदी बेसिन के देशों से उजड़कर आने वाले लोग बड़ी संख्या में स्वीडन के स्टॉकहोम, फ्रांस के पेरिस, जर्मनी के हनोवर, हमवर्ग, यू.के. के लंदन, वियाना, डेनमार्क आदि देशों में मिले हैं। इन देशों में ये होटल, टैक्सी ड्राइवर के काम में तथा शरणार्थी शिविरों में मिले हैं।

जलवायु शरणार्थी की श्रेणी में नाइजर नदी बेसिन के देश भी पहुँच रहे हैं। विकासशीलता का अंत जलवायु परिवर्तन का शरणार्थी बनकर विस्थापित होना है। इस नाइजर नदी के बेसिन के देश अब जलवायु परिवर्तन शरणार्थी बनने लगे हैं। नदी सूखने से भूजल भंडार पुनर्भरण होना समाप्त हो जाता है। खेती, उद्योगों में जल की कमी से बेराजगारी बढ़ती है। फिर इंसान भूखा मरता, विस्थापित हो जाता है। ऐसी स्थिति में विस्थापित इंसान जलवायु शरणार्थी बनता है।

शरणार्थी कई प्रकार के होते हैं, कोई युद्ध से विस्थापित होता है, कोई आर्थिक लालच से विस्थापित होता है। वह अभी भारत में है। आज ज्यादातर लोग प्राकृतिक आपदाओं से विस्थापित हो रहे हैं। ये प्राकृतिक आपदाएँ आधुनिक विकासजनित हैं। विकासजनित आपदाओं को जलवायु परिवर्तन आपदा कहते हैं। अब ये आपदाएँ विकासशील और विकेन्द्रित कहलाने वाले देशों में घटित हो रही हैं। नाइजर नदी भी इसी विकासजनित विस्थापन, विकृति और विनाश का शिकार बन रही है।



## दुनिया की पहली इंसानी दर्जा प्राप्त न्यूजीलैंड की वांगानुई नदी

न्यूजीलैंड उच्चतम न्यायालय में पिछले 170 वर्षों से अपनी नदी वांगानुई को इन्सानी दर्जा दिलाने हेतु माओरी आदिवासी कानूनी लड़ाई लड़ते रहे और आखिर जीत गए। दुनिया का यह एकमात्र देश है, जहाँ नदी अधिकार के लिए इतनी लम्बी लड़ाई चली। 2017 में यहाँ की नदी को इन्सानी दर्जा मिल गया है। दूसरी तरफ यहाँ हम अपनी तथाकथित माँ गंगा जी को यह दर्जा नहीं दिला सके। तरुण भारत संघ के उपाध्यक्ष स्व. जी.डी. जी ने गंगा माँ “माई है, कमाई नहीं” कहकर इसे बचाने हेतु 111 दिन तक आमरण अनशन करके अपने प्राणों का बलिदान कर दिया। फिर भी सरकार ने उन्हें नहीं सुना। यह नदी जीत की पूरी दुनिया में पहली घटना है।

मैं, माओरी आदिवासियों के हजारों लोगों से मिला। इनका नाच, गान, गीत सभी कुछ सुना। इनके घर में रहा, भोजन भी इनका खाया। इनकी जीवन पद्धति प्राकृतिक है। अपनी वृत्ति और प्रकृति को बचाने के लिए सतत् संघर्षशील, प्रकृति को अधिकार दिलाने के लिए लड़ने वाली माओरी जनजाति आज पूरी दुनिया में अपनी नदी को इंसानी दर्जा दिलाने में सफल होने वाली पहली जनजाति है।

ये नदी का केवल सम्मान ही नहीं, इसके साथ सद्व्यवहार भी करते हैं। ये नदी में अपना मलमूत्र और गंदगी नहीं जाने देते। सरकार ने जब इनके व्यवहार और दर्शन का सम्मान नहीं किया, तो उसके विरुद्ध इन्होंने सत्याग्रह किया।

यह सत्याग्रह माँग क्रियान्वित कराने तक चलता रहा। भारतीयों में भी स्वामी सानंद, स्वामी निगमानंद, साध्वी पद्मावती और ब्रह्मचारी आत्मबोधानंद जैसे कुछ नाम लिए जा सकते हैं; जो गंगा जी को इंसानी देवी माँ की तरह मानते हैं। स्वामी शिवानंद जी माँ गंगा को अपनी और राष्ट्र की माँ मानते हैं, उन्होंने भी सत्याग्रह किया।

वांगानुई नदी न्यूजीलैंड के उत्तरी द्वीप में एक प्रमुख नदी है। यह देश की तीसरी सबसे लंबी नदी है, और इस क्षेत्र के माओरी लोगों के लिए इसके महत्त्व के कारण इसे विशेष दर्जा प्राप्त है। मार्च 2017 में यह दुनिया का दूसरा (ते उरेवेरा के बाद) प्राकृतिक संसाधन बन गया, जिसे कानूनी व्यक्ति के अधिकारों, कर्तव्यों और देनदारियों के साथ अपनी कानूनी पहचान दी गई। वांगानुई संधि समझौते ने न्यूजीलैंड के इतिहास में सबसे लंबे समय तक चलने वाले मुकदमे का अंत कर दिया।

290 किलोमीटर (180 मील) की लंबाई के साथ, वांगानुई देश की तीसरी सबसे लंबी नदी है। नदी के ऊपरी भाग के दोनों ओर की अधिकांश भूमि वांगानुई राष्ट्रीय उद्यान का हिस्सा है, हालांकि नदी स्वयं उद्यान का हिस्सा नहीं है।

यह नदी रोटोएरा झील के करीब, केंद्रीय पठार के तीन सक्रिय ज्वालामुखियों में से एक, माउंट टोंगारिरो के उत्तरी ढलान पर उभरती है। यह तौमारुनुई में दक्षिण-पश्चिम की ओर मुड़ने से पहले उत्तर-पश्चिम की ओर बहती है। यहाँ से यह दक्षिण-पूर्व की ओर मुड़ने से पहले किंग कंट्री के ऊबड़-खाबड़, झाड़ीदार पहाड़ी देश से होकर गुजरती है और वांगानुई के तट पर पहुंचने से पहले पिपिरीकी और यरुशलम की छोटी बस्तियों से होकर बहती है। यह देश की सबसे लंबी नौगम्य नदियों में से भी एक है।

1843 के वांगानुई भूकंप में नदी घाटी बदल गई। 1970 के दशक में माउंट रुआपेहु से एक मामूली विस्फोट ने रुआपेहु क्रैटर झील (तांगीवाई आपदा का

एक ही मूल कारण) से कुछ सामग्री को गिरा दिया। यह जहरीला पानी वांगानुई नदी में प्रवेश कर गया और इसका प्रभाव नीचे की ओर की अधिकांश मछलियों को मारने का था। विषाक्तता के बाद, 8.2 किलोग्राम (18 पाउंड) जितना बड़ा और 2.3 किलोग्राम (5.1 पाउंड) जितना बड़ा ट्राउट नदी के किनारे मृत हो गया। सहायक नदी वाकापापा नदी में भी मछलियों का नुकसान हुआ था।

मेरी न्यूजीलैंड की एक साथी लिन मर्फी है, जो एक प्राकृतिक और आध्यात्मिक महिला होकर मानवता और प्राकृतिक-प्रेम-सम्मान जागृत करने में अपनी त्वरा और तीव्रता से लगी है। वह कहती है कि वांगानुई नदी का बहता जल अपना पथ स्वयं देखता है। हरी-भरी धरती जंगली जीवों से भरी धरती हो। मैं नया जीव-जगत् बनता देखना चाहती हूँ। हमारा अन्तरसंबंध जीव-जगत् के साथ है। यह अन्तरसंबंध ऐसा हो, जिसमें जाति, धर्म बचता है। हमारी नदी का प्रवाह ही हमारे जीवन को प्रवाहमान बनाता है। नदी हमारी सभी कुछ है। वह हमारा शारीरिक और आत्मिक पोषण करती है।

दुनिया को कैसे जोड़ा जाए? विशेषज्ञ, पेयर एक्सन की यह रिसोर्स शेयरिंग मुझे चिन्तित कर रही है। एलाईन्स में हम चर्चा कर रहे हैं और दुनिया में लोग और नदी मर रहे हैं। उन्हें बचाने की चर्चा करनी चाहिए। यही जीव हैं, यही हमारे सबसे बड़े तीर्थ हैं। 10 वर्ष से लव-सैक्सुअल्टी, में मैं और मेरा पार्टनर साथ हैं। मेरा हृदय कंपन कर रहा है। क्या ठीक है, और क्या गलत है? केवल हमें विश्वास करना है। हमें अपने हृदय से तप करके काम करना है, उसी से विश्वास बनता है। संकटग्रस्त क्षेत्र से आये हैं, मैं रिफिट्रिकेशन क्षेत्र से आयी हूँ। मैं तो बहुत कोशिश कर रही हूँ कि शांति कायम हो, मगर सरकार नहीं सुनती है, समाज भी नहीं सुनता। हमारी नदी को इंसानी दर्जा मिल गया। सरकार नदी के साथ इंसानों जैसा व्यवहार कब करेगी? सरकार बोलती है, परंतु सरकार के कान और दिमाग उसकी आवाज नहीं सुनते हैं।

दुनिया को दिखाने हेतु हमारी न्यायपालिका और सरकार ने बहुत अच्छे

काम किये हैं। कम से कम दो नदियों को इंसानी दर्जा मिल गया है। अन्य सरकारें तो भौतिक विज्ञान और प्रौद्योगिकी, अभियांत्रिकी के सामने आध्यात्मिक प्राकृतिक विज्ञान को कुछ मानती ही नहीं हैं। इसीलिए दुनिया की नदियाँ मैला ढोने वाली मालगाड़ी बनकर बीमार होकर मर जाती हैं। हमारी न्यायपालिका ने वांगानुई नदी को बचाने हेतु कानून व्यवस्था दे दी है।

न्यूजीलैंड प्रशांत महासागर में आस्ट्रेलिया के पास स्थित एक देश है। यह कई द्वीपों से बना एक खूबसूरत देश है। इसका कुल क्षेत्रफल 268,021 वर्ग किलोमीटर है। इस देश की यह वांगानुई नदी भी दुनिया की नदियों में सबसे ज्यादा स्वस्थ है। यह सदानीरा बनकर बहती रहे यही कामना है।





## मारकेश की जल संस्कृति को समृद्ध करती दारा नदी

दारहा या दारा नदी मोरक्को की सबसे लंबी नदी है, जिसकी लंबाई 1,100 किलोमीटर है। यह दादस नदी और इमिनी नदी के संगम से बनती है। यह उच्च एटलस पहाड़ों से शुरू होती है, शुरू में दक्षिण-पूर्व से टैगौनाइट तक, और टैगौनाइट से ज्यादातर पश्चिम की ओर से अटलांटिक महासागर में अपने मुहाने तक जाती है। 1971 में, मंसूर एडदाबी बांध का निर्माण क्षेत्रीय राजधानी ऑउरज़ाज़ेट की सेवा के लिए और दारा के प्रवाह को विनियमित करने के लिए किया गया था। टैगौनाइट के बाद वर्ष के अधिकांश भाग में दारा का भाग सूख जाता है।

दारहा के पानी का उपयोग नदी के किनारे ताड़ के पेड़ों और छोटे खेतों की सिंचाई के लिए किया जाता है। दारा के निवासियों को अरबी में ड्रा कहा जाता है, शिल्हा इद्रवियन में, सबसे प्रसिद्ध ड्राई (ड्रा का एकवचन) निस्संदेह सुल्तान मोहम्मद ऐश-शेख (1490-1557) है। द्रा क्षेत्र के बाहर इस नाम का प्रयोग ज्यादातर दारा के गहरे रंग के लोगों को संदर्भित करने के लिए किया जाता है, जो इसके निवासियों का सबसे बड़ा हिस्सा बनाते हैं।

20वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में, ड्रा के सबसे निचले तट ने मोरक्को के फ्रांसीसी संरक्षक और स्पेनिश शासन के तहत क्षेत्र के बीच की सीमा को चिह्नित किया। लगभग 225,000 लोग दारा की घाटी में रहते हैं, जिसका माप 23,000 वर्ग किलोमीटर (8,900 वर्ग मील) है। यह घाटी ज़गोरा प्रांत से मेल खाती है,

जिसे 1997 में सूस-मस्सा-ज़ा क्षेत्र में बनाया गया था। प्रांत में 23 गाँव और दो नगर हैं: ज़गोरा और अगदज़। ज़गोरा के पास, तामेग्रौटे का गाँव अपने ज़ाविया के लिए प्रसिद्ध है।

घाटी में फ़ेज़ौटा संरचनाएँ हैं, जो लोअर ऑर्डोविशियन से संबंधित बर्गस शेल-प्रकार की जल राशि हैं, जो आम कैम्ब्रियन लेगरस्टेटन और लेट ऑर्डोविशियन सूम शेल के बीच एक महत्वपूर्ण संरक्षण खिड़की को भरती हैं। जीवाश्म जीवों में कई जीव ऐसे थे, जिनके बारे में पहले माना जाता था कि, मध्य कैम्ब्रियन के बाद वे मर गए थे।

दारा की घाटी का इतिहास हजारों साल पीछे जाता है, और सबसे अधिक टैन-टैन के शुक्र की खोज से प्रमाणित होता है। इसके आसपास के कई रॉक कला नक्काशी या पेट्रोग्लिफ से भरे हैं और यहाँ स्थित मूर्ति संभवतः अब तक की सबसे पुरानी मानव मूर्ति है। यह तीन सौ हजार साल से भी अधिक पुरानी है। सहारा के प्रागैतिहास इतिहास के सभी मुख्य काल के शैल-उत्कीर्णन और शैल-पेंटिंग यहाँ मिले हैं। फ़ाउम चेन्ना (टिनज़ौलिन), ऐट औआज़िक (एस्गुइन टार्ना, ताज़रीन), और टियोरिरिन ई टिस्मिनिन (ज़गोरा) ज़ा क्षेत्र के सबसे प्रसिद्ध स्थलों में से हैं।

दारा घाटी मोरक्को की खजूर की टोकरी के रूप में प्रसिद्ध है। यहाँ इसकी 18 से अधिक किस्मों को उगाया जाता है। फलों के पेड़ और सब्जियाँ मुख्य फसलें हैं, लेकिन मेंहदी भी इस क्षेत्र का एक प्रसिद्ध उत्पाद है। कृषि बहुत श्रमप्रधान है, क्योंकि यह सीढ़ीदार खेतों पर होती है। छोटी नहरें नदी से पानी को खेतों तक पहुँचाती हैं। उत्तरी अफ्रीका (सिवा, कुफ़रा, ऑउरग्ला) में कुछ अन्य प्राचीन बर्बर ओसेस की तरह, दारा घाटी अपने कतरा, भूमिगत सिंचाई नहरों की एक परिष्कृत प्रणाली के लिए जानी जाती थी। इस नदी की मैंने दोबारा यात्रा की है। दोनों बार ही वैश्विक सम्मेलनों के बुलावे पर गया था। पहली बार 1997 में विश्व जल मंच में मोरक्को गया था, फिर 10 नवम्बर 2016

से 16 नवम्बर 2016 तक मोरक्को में रहा था। मोरक्को में कोप-22, कोप-21 के निर्णयों को क्रियान्वित करने के लिए पृथ्वी शिखर सम्मेलन आयोजित हुआ था, उसमें बतौर वक्ता गया था। कोप-22 पेरिस ऐग्रीमेंट कोप-21 और एस.डी. जी-15 को लागू करने के लिए सरकारें अपना-अपना प्लान लेकर आयी थीं। हमने उनके इस प्लान में अपनी भी भागीदारी ढूँढने की कोशिश की थी। नदी पुनर्जीवन आदि काम हुए होंगे, पर दिखाई नहीं दिए। हमारा ज्यादातर समय सामाजिक काम करने वाली स्वैच्छिक संस्थाओं के पंडालों में जल साक्षरता, जल नैतिकता और न्याय तथा नदी पुनर्जीवन की बातचीत करने में ही बीता। यहाँ के विश्वविद्यालयों के बुलावे पर भू-जल पुनर्भरण कार्यशाला में भी मैंने भारत के अपने अनुभव रखे। यहाँ प्रो. राजेन्द्र पोद्दार, ईथन आदि साथियों का एक सक्रिय दल मेरे साथ था। जूलिया ने तरुण भारत संघ के कामों की फिल्म कई जगहों पर दिखाई थी। प्रो. पोद्दार ने तरुण भारत संघ के इस अनुभव का कि खेती में अनुकूलन करके जलवायु को कैसे ठीक किया जा सकता है और जल संरक्षण से धरती का बुखार व मौसम के मिजाज को कैसे ठीक रखा जा सकता है, इसका प्रस्तुतिकरण किया। इसका अच्छा परिणाम यह हुआ कि, कोप-22 में जलवायु परिवर्तन, उन्मूलन व अनुकूलन हेतु जल व खेती दोनों ही विषय छाये रहे। यहाँ पर मारकेश जाते हुए रास्ते में एक बार और सहारा डेजर्ट देखा। यहाँ जल संकट है। यहाँ के युवाओं ने स्विट्जरलैंड की मदद से एक सेंटर शुरू किया है। उनका एक बड़ा कार्यक्रम यहाँ 22वां कोप (पृथ्वी शिखर सम्मेलन) हुआ था। स्विट्जरलैंड के राष्ट्राध्यक्ष ने हमारे यात्रा दल का स्वागत किया। अब वे मोरक्को के राष्ट्रदूत हैं। उन्होंने हमसे पूछा कि आपकी क्या अपेक्षाएँ हैं? हमने कहा कि अब दुनिया में जलवायु परिवर्तन के खतरे से बचने के लिए केवल जल, मिट्टी और हवा पर ही ध्यान देने की जरूरत है। हमारा भगवान ये ही हैं। इसी के साथ हमें रहना-जीना और मरना भी है। इसलिए पंचमहाभूतों का संरक्षण, प्रबंधन ही जरूरी है। इन्हीं पर हमारा ध्यान जाना जरूरी है। पंचमहाभूत स्वस्थ होंगे तो हम भी स्वस्थ होंगे।

फ्रांस के जल सेंटर और अफ्रीकन वाटर फोरम के साथियों के साथ एक बैठक

हुई, जिसमें जून में तंजानिया में जलवायु मंच आयोजित करना तय हुआ। आयोजक की जिम्मेदारी लेने वाले साथी मौजूद थे। हमने उन्हें बताया कि हम केन्या, थाइलैंड व दक्षिण अफ्रीका में इसी महीने जाकर, काम करने वाले लोगों से मिलकर सम्मेलन की तैयारी करेंगे। मारकेश के पास गाँव में एक शिविर में जाकर जल संरक्षण के बारे में सिखाया। यह मारकेश यात्रा बहुत सार्थक रही। यहाँ के गाँवों में मैंने कई युवा शिविरों का आयोजन मारकेश की संस्थाओं से मिलकर किये। इनमें ईथन और जूलिया मेरे साथ रहे। इन्होंने अनुवाद करने में मदद की। यहीं से हमारी अफ्रीका जल साक्षरता यात्रा सक्रिय एवं प्रभावशाली बनने लगी। यहाँ हम दुनिया भर के लोगों से मिले।

मोरक्को, उत्तरी अफ्रीका का एक देश है। मोरक्को भौगोलिक रूप से अटलांटिक महासागर और भूमध्यसागर के साथ उत्तरी अफ्रीका में स्थित है। यह एक समृद्ध दारा नदी संस्कृति और सभ्यता वाला देश है। यह अल्जीरिया और पश्चिमी सहारा से घिरा हुआ है। मोरक्को का वातावरण इसकी स्थलाकृति की तरह, स्थान के साथ भी भिन्न होता है। तट के साथ, भूमध्यसागरीय वातावरण गर्म, सूखे ग्रीष्म और हल्की सर्दियों के साथ भूमध्यसागरीय है। रिबात यहाँ की राजधानी है। दारा नदी से जुड़ा इस देश का बहुत लम्बा इतिहास है।

फोएनशियाई इस क्षेत्र को नियंत्रित करने वाले पहले व्यक्ति थे; लेकिन इसके बाद रोमन, विसिगोथ्स, वंडल और बीजान्टिन यूनानियों ने भी इसे नियंत्रित किया। 7वीं शताब्दी से 15वीं शताब्दी तक कई सभ्यताओं ने इसे नियंत्रित किया। 1904 में यूनाइटेड किंगडम ने आधिकारिक तौर पर फ्रांस के प्रभाव क्षेत्र के रूप में मोरक्को को मान्यता दी। 2 मार्च 1956 को देश ने अपनी स्वतंत्रता प्राप्त कर ली। मोरक्को की भाषा अरबी और बर्बर है। इसका कुल क्षेत्रफल 710850 वर्ग किलोमीटर है।

दारा नदी को शुद्ध-सदानीरा बनाये रखने के प्रयास यहाँ होते रहे हैं। यहाँ के बादशाह भी नदी को शुद्ध-सदानीरा बनाकर रखना चाहते हैं। जल प्रवाह

की कमी और शहरी प्रदूषण से मुक्ति अभी तक इस नदी को मिली नहीं है। इसमें जल है, बहता जल दिखता है। भारत की नदियों से तो बेहतर है। दारा ने मारकेश में जल संस्कृति बनाई है।



## अय्यरवाड़ी नदी: बांधों से बिगड़ती सेहत

म्यान्मार में तीन पर्वत शृंखलाएँ हैं—रखिने योमा, बागो योमा और शान पठार। यह शृंखला म्यान्मार को तीन नदी तंत्रों—अय्यरवाड़ी, सालवीन और सीतांग में बाँटती है। अय्यरवाड़ी इस देश की सबसे लंबी नदी है, जिसकी लम्बाई 2170 किलोमीटर है। मरतबन की खाड़ी में गिरने से पहले यह नदी म्यान्मार की सबसे उपजाऊ भूमि से होकर गुजरती है। यहाँ की अधिकतर जनसंख्या इसी नदी के किनारे निवास करती है; जो कि रखिन योमा और शान पठार के बीच स्थित है।

इरावदी या जिसे अय्यरवाड़ी भी लिखा जाता है, बर्मा से होकर उत्तर से दक्षिण की ओर बहने वाली नदी है। यह देश की सबसे बड़ी नदी और सबसे महत्वपूर्ण व्यावसायिक जलमार्ग है। नमाई और माली नदियों के संगम से उत्पन्न, यह अय्यरवाड़ी क्षेत्र में इरावदी डेल्टा के माध्यम से अंडमान सागर में खाली होने से पहले अपेक्षाकृत सीधे उत्तर—दक्षिण में बहती है। लगभग 404,200 वर्ग किलोमीटर (156,100 वर्ग मील) के इसके जल निकासी बेसिन में बर्मा का एक बड़ा हिस्सा शामिल है।

म्यान्मार का मानसून एशिया महाद्वीप क्षेत्र में स्थित है। यहाँ की जलवायु उष्णकटिबंधीय है। वार्षिक वर्षा यहाँ के तटीय क्षेत्रों में 5000 मिलीमीटर, डेल्टा भाग में लगभग 2500 मिली मीटर और मध्य म्यान्मार के शुष्क क्षेत्रों में 1000 मिलीमीटर होती है।

इस देश का इतिहास बहुत पुराना और जटिल है। इस क्षेत्र में बहुत से जातीय समूह निवास करते आये हैं, जिनमें से मान और प्यू संभवतः सबसे प्राचीन हैं। उन्नीसवीं शताब्दी में बर्मन (बामार) लोग चीन-तिब्बत सीमा से विस्थापित होकर यहाँ इरावदी नदी की घाटी में आ बसे। यहाँ पर आज के म्यान्मार पर शासन करने वाले बहुसंख्यक लोग हैं।

छठी शताब्दी की शुरुआत में, नदी का उपयोग व्यापार और परिवहन के लिए किया जाता था। सिंचाई नहरों का एक व्यापक नेटवर्क विकसित करने के बाद, और बर्मा को उपनिवेश बनाने के बाद नदी ब्रिटिश साम्राज्य के लिए महत्वपूर्ण हो गई। नदी आज भी उतनी ही महत्वपूर्ण है, जितनी बड़ी मात्रा में (निर्यात) माल और यातायात नदी द्वारा चलता है। चावल का उत्पादन इरावदी डेल्टा में होता है, जिसे नदी के पानी से सिंचित किया जाता है।

2007 में, म्यान्मार की सैन्य तानाशाही ने सात जलविद्युत बांधों के निर्माण के लिए एक समझौते पर हस्ताक्षर किए, जिसमें दोनों नदियों के संगम पर 3600 मेगावाट माइट्सोन बांध सहित, नमाई और माली नदियों में कुल 13,360 मेगावाट की उपज थी। पर्यावरण संगठनों ने नदी के जैव विविधता वाले पारिस्थितिक तंत्र पर पारिस्थितिक प्रभावों के बारे में चिंता जताई है। संभावित रूप से प्रभावित जानवरों में लुप्तप्राय इरावदी डॉल्फिन और गंभीर रूप से लुप्तप्राय गंगा शार्क शामिल हैं।

इरावदी नदी बेसिन में सभी प्रकार की मछलियों की प्रजातियों की कोई पूर्ण और सटीक सूची वर्तमान में मौजूद नहीं है, लेकिन 1996 में यह अनुमान लगाया गया था कि, लगभग 200 प्रजातियाँ हैं। 2008 में, यह अनुमान लगाया गया था कि, इरावदी ईकोरियोजन मछलियों की 119-195 प्रजातियों का घर है, जो दुनिया में और कहीं नहीं पाई जाती हैं (स्थानिक)। हाल के वर्षों में इरावदी नदी बेसिन से मछलियों की कई नई प्रजातियों का उल्लेख किया गया है (उदाहरण के लिए, 2016 में साइप्रिनिड डैनियो और 2017 में स्टोन लोच

मलिहकाया एलीगेरा) और यह संभावना है कि ये अघोषित प्रजातियाँ बनी रहें। नदी में सबसे प्रसिद्ध प्रजातियों में इरावदी डॉल्फ़िन (ओर्केला ब्रेविरोस्ट्रिस) है, जो एक उच्च और गोल माथे के साथ समुद्री डॉल्फ़िन की एक यूरीहलाइन प्रजाति है, जिसमें चोंच की कमी होती है।

माइट्सोन बांध के निर्माण ने अपने स्थान और आकार के कारण महत्वपूर्ण पारिस्थितिक और सामाजिक चिंताओं को जन्म दिया है। इरावदी माइट्सोन बांध बहुउद्देशीय जल उपयोग परियोजना अध्ययन के अनुसार जलाशय का अधिकतम जलस्तर 290 मीटर होगा। यह 47 गाँवों से समझौता करते हुए 766 वर्ग किमी के बाढ़ क्षेत्र का निर्माण करता है।

बाढ़ के अन्य परिणामों में कृषि भूमि का नुकसान एवं स्पाॅनिंग आवास का नुकसान भी शामिल है, क्योंकि मछली अब ऊपर की ओर तैर नहीं सकती है। काचिन विकास नेटवर्किंग समूह, (65) काचिन राज्य में नागरिकों, समाज समूहों और विकास संगठनों के एक नेटवर्क ने चेतावनी दी है कि इससे मछुआरों की आय का नुकसान होगा। वे रिपोर्ट करते हैं कि स्थानीय लोग भी बाढ़ क्षेत्र में सांस्कृतिक स्थलों की बाढ़ से चिंतित हैं। अन्य बड़ी बांध परियोजनाओं की तरह, माइट्सोन बांध निर्माण भी नदी की जलविज्ञानीय विशेषताओं को बदल देगा, उदाहरणस्वरूप— नदी के किनारों को नीचे की ओर समृद्ध करने से तलछट को रोकना, जहाँ यह आमतौर पर नदी के किनारे के खाद्य-उत्पादक मैदानों को समृद्ध करता है। यह म्यान्मार के प्रमुख चावल उत्पादक क्षेत्र इरावदी डेल्टा तक प्रजनन क्षमता को प्रभावित कर सकता है।

पारिस्थितिक सरोकार एक ऐसे क्षेत्र के जलमग्न होने पर ध्यान केंद्रित करते हैं, जो भारत-बर्मा और दक्षिण मध्य चीन के जैव विविधता हॉटस्पॉट की सीमा है। माली और नमाई नदी का संगम क्षेत्र मिजोरम-मणिपुर-काचिन वर्षावनों के अंतर्गत आता है, जिसे जैव विविधता क्षेत्रों के उत्कृष्ट उदाहरणों की डब्ल्यूडब्ल्यूएफ सूची में जोड़ा गया है।



Myitstone बांध का स्थान, एक रेखा से 100 किमी से भी कम दूरी पर स्थित है, जहाँ यूरेशियन और भारतीय टेक्टोनिक प्लेट्स मिलते हैं। क्षेत्र में भूकंप, जैसे कि 20 अगस्त 2008 को म्यांमार-चीन सीमा के पास आए 5.3 तीव्रता के भूकंप, (68) ने केडीएनजी बांध अनुसंधान परियोजना के समन्वयक नवालार को अपनी बांध परियोजनाओं पर पुनर्विचार करने के लिए प्रेरित किया।

ब्रिटिश शासन के दौरान बर्मा दक्षिण-पूर्व एशिया के सबसे धनी देशों में से था। यह विश्व का सबसे बड़ा चावल निर्यातक होने के साथ शाल (टीक) सहित कई तरह की लकड़ियों का भी बड़ा उत्पादक था। वहाँ के खदानों से टिन, चांदी, टंगस्टन, सीसा, तेल आदि प्रचुर मात्रा में निकाले जाते थे। द्वितीय विश्वयुद्ध में खदानों को जापानियों के कब्जे में जाने से रोकने के लिए अंग्रेजों ने भारी मात्रा में बमबारी कर उन्हें नष्ट कर दिया था। स्वतंत्रता के बाद दिशाहीन समाजवादी नीतियों ने जल्दी ही बर्मा की अर्थ-व्यवस्था को कमजोर कर दिया और सैनिक सत्ता के दमन और लूट ने बर्मा को आज दुनिया के सबसे गरीब देशों की कतार में ला खड़ा किया है। इसके बाद 30 मार्च 2011 को इसका नया संविधान निर्मित हुआ।

यहाँ ऊर्जा उद्योग से प्रदूषण में ज्यादा बढ़ोत्तरी हुई है। वर्ष 2010 का आंकड़ा है कि 70 फीसदी जंगल में से 48 फीसदी भाग ही बचा है। बाकी पेड़ काट दिए गये हैं। समुद्र का जलस्तर भी बढ़ रहा है। इस स्थिति में खाद्य पदार्थों की नई चुनौती आ गई है।

म्यान्मार की प्राकृतिक, भू-सांस्कृतिक, ऐतिहासिक मौसमीय, विशिष्टताओं के कारण वर्षाचक्र व तापक्रम सभी कुछ इस देश की समृद्धि हेतु पर्याप्त हैं। शासन की उथल-पुथल ने इस देश को दुनिया का सबसे गरीब देश बनाया। सत्ता, अर्थ, पद, प्रतिष्ठा का प्रबल लालच ही इस देश के लिए विस्थापन-विकृति और विनाशलीला बन गया। यहाँ का विनाश अप्रत्याशित नहीं है। ऐसा उन सभी राष्ट्रों में होता है, जहाँ सत्ता के लालचियों को सफलता मिलती है।

इस नदी के बेसिन के लोग इसे पूर्ण रूप में शोषित नहीं कर पाये हैं, इसलिए यह बची हुई है। बांधों से भी पूर्णरूपेण नदी की हत्या नहीं कर पाये हैं। इस नदी पर भी भारत की नदियों जैसे संकट हैं। अतिक्रमण, प्रदूषण, बांधों और खनन से बेसिन का शोषण हो रहा है। प्राकृतिक धारक क्षमता अधिक है। जनसंख्या का दबाव भी कम हो रहा है। शोषण करने वाली प्रौद्योगिकी और अभियांत्रिकी से उतना विनाश यहाँ नहीं हुआ है। मानवीय संवेदना और प्राकृतिक सद्भावना भी अभी इस देश में बची हुई है। इसीलिए लालची विकास इस नदी का भयानकतम विनाश नहीं कर पाया है। यह बच गई है।



## बंधन में जलप्रवाह को तरसती टाइबर नदी

टाइबर नदी इटली की 244 मील लंबी एक नदी है। यह ऐपेनाइंज पर्वत के पीव सैन स्टेफानो से 12 मील उत्तर समुद्रतल से 4,160 फुट की ऊँचाई से निकलती है। यह 'पो' नदी को छोड़कर इटली की सबसे बड़ी नदी है। इस नदी के जल में मिट्टी के कण अधिक मात्रा में पाये जाते हैं। अनेक विचित्र कंदराओं तथा दरों का निर्माण करती हुई, यह लगभग बोरगो एस० सेपोलक्रो और सिटा डी कास्टिलो से दक्षिण को बहती हुई पेरुजिया और टोडी के बीच से ऑर्ट को जाती है, जहाँ इससे नेरा नदी मिलती है।

सैबाइन पहाड़ी के निचले किनारे पर टाइबर नदी चौड़ी घाटी बनाती है। इसके अलावा यह रोम नगर में बहती हुई रोमन कैपैग्ना को पार करती है, और अंत में ऑस्ट्रिया और फिउमिसिनो में दो धाराओं में विभक्त होकर टिरीनिऐन सागर में गिरती है, जिसमें दूसरी धारा कृत्रिम है। टाइबर नदी की प्रमुख सहायक नदियाँ पैगलिया, नेरा, आन्यो या टेवेरॉन हैं।

टाइबर नदी नेरा के संगम के पश्चात् लगभग 104 मील तक नौपरिवहन के लिये उपयुक्त है, किन्तु तीव्र धारा के कारण रोम से ऊपर की ओर बहुत कम उपयुक्त है। टाइबर के अपवाह क्षेत्र का विस्तार 6,719 वर्ग मील है। यह पो नदी को छोड़कर इटली की सबसे बड़ी नदी है। इस नदी के जल में मिट्टी के कण अधिक मात्रा में होते हैं। मुहाने पर जल का औसत बहाव 230 घन मीटर प्रति सेकंड है। शुष्क ऋतु में इसका बहाव कम हो जाता है।

मैं 21 फरवरी 2017 से 24 फरवरी 2017 तक इटली व वेटिकन सिटी में टाइबर नदी के किनारे ही रुका था। यहाँ रोम में पूरी दुनिया के जलयोद्धाओं व मुझे भी पोप ने बुलाया था। साथ ही साथ वर्ल्ड वाटर काउंसिल (wwc) के बहुत से मेम्बर भी इसमें उपस्थित थे। हमने जब जल के निजीकरण को रोकने की बात कही तो यह बात सभी सदस्यों को स्वीकार नहीं थी, लेकिन जब पोप ने हम सब की बात सुनकर कहा कि, जल पर केवल मानव का ही अधिकार नहीं है, अपितु जीव-जन्तु व नदी का समान अधिकार है; तब पोप के भाषण पर किसी भी मेम्बर ने आपत्ति नहीं की। सभी ने सहमति से स्वीकार कर लिया। मुझे भी बहुत अच्छा लगा। जल तो नदी और मानवता का जीवन है। इस पर नदी, प्रकृति और मानवता का बराबर अधिकार है।

हम पोप के मेहमान थे और उन्होंने मुझे वेटिकन में रखा था। यह सम्मेलन पोप के संस्थान क्षेत्र में ही हो रहा था। इस सम्मेलन के आरंभ में दुनिया में शांति स्थापित करने के लिए जल पर मानव व प्रकृति का समान हक स्थापित करने की बातें हुईं। इस पर किसी ने कोई आपत्ति नहीं की। इन्हें केवल वर्ल्ड वाटर के निजीकरण व व्यापार पर आपत्ति थी। मैंने इस सम्मेलन में चौथी बार बोलते हुए कहा कि अब दुनिया को तीसरे विश्वयुद्ध से बचाने के लिए नदी जल साक्षरता हेतु दुनिया की सभी सरकारों, संस्थानों व संगठनों को लगने की जरूरत है। मैंने कहा कि, मैंने तो अपनी छोटी-सी हैसियत से जल नैतिकता, नदी को न्याय की साक्षरता का काम किया है। इन कार्यों को व्यापक रूप से दुनिया में करने के लिए पोप और आप जैसे प्रभावी विद्वान लोगों को एक साथ लगाने की जरूरत है।

इस सम्मेलन के समापन भाषण में पोप का भाषण बहुत अच्छा था। उन्होंने, जो हमने बोला था, उसको समेटकर अच्छा निष्कर्षात्मक भाषण दिया। उनके भाषण का मुख्य आधार जल के निजीकरण व व्यापारीकरण के विरोध में ही था। यह निजीकरण और बाजारीकरण ही प्राकृतिक और नदी प्रेम को कम करता है। जल सभी को जीवन देता है। यह प्रभु का मानव को दिया उपहार है। इसे

खरीदना—बेचना उचित नहीं है। इस पर संयुक्त राष्ट्रसंघ ने रोक लगाई है। जल को मानव अधिकार कहकर, जबकि यह केवल मानव अधिकार नहीं है। यह प्रभु का उपहार सभी के लिए समान है। जलरूपी प्राकृतिक उपहार नदी और मानवता दोनों को बराबर उपलब्ध रहना चाहिए।

इटली यूरोप महाद्वीप के दक्षिण में स्थित एक देश है, जिसकी मुख्यभूमि एक प्रायद्वीप है। इटली के उत्तर में आल्प्स पर्वतमाला है, जिसमें फ्रांस, स्विट्जरलैंड, ऑस्ट्रिया तथा स्लोवेनिया की सीमाएँ आकर लगती हैं। सिसली तथा सार्डिनिया, जो भूमध्यसागर के दो सबसे बड़े द्वीप हैं; इटली के अंग हैं। वेटिकन सिटी तथा सैन मरीनों इटली के अंतर्गत समाहित दो स्वतंत्र देश हैं। पो और टाइबर यही दो प्रमुख नदियाँ हैं। रोम टाइबर नदी पर स्थित है। इस देश का कुल क्षेत्रफल 301230 वर्ग किलोमीटर है। 2008 में इस देश की जनसंख्या 5 करोड़ 90 लाख थी। इसकी राजधानी रोम है। इस देश का इतिहास 2500 वर्ष पुराना है। देश में पूर्वकाल में राजतंत्र था, जिसका अंतिम राजघराना सेवाय था। जून, 1946 से देश एक जनतांत्रिक राज्य में परिवर्तित हो गया। इसे यूरोप का भारत कहा जाता है, परंतु टाइबर नदी को यहाँ गंगा की तरह नहीं देखा जाता।

पोप वेटिकन अब जल को मानवाधिकार मानते हैं। यह निजीकरण को तथा जल व्यापारीकरण को रोकने की प्रक्रिया है। पोप ने ही मुझे मिलने बुलवाया था। मैंने दो वर्ष पूर्व उन्हें— “जल और दुनिया” एक ही है, जल ही जलवायु है, जल ही जीवन है, जल के बिना मानवता और प्रकृति का बचना संभव नहीं है, इसे व्यापार की वस्तु मानना प्रकृति और मानवता दोनों के विरुद्ध ही है यह बताने का प्रयास किया था। ईसाइयत में भी जल को जीवन की वस्तु माना जाता है।

ईसाइ धर्म ने दुनिया में कहा कि, जल मानव के लिए है, इसका अनुशासित होकर उपयोग करें। इसके बिना बाढ़—सुखाड़ दोनों ही समस्याएँ बढ़ेंगी। इसलिए इसे ईसामसीह की देन मानकर सम्मानपूर्वक जल का प्रेम से उपयोग

करें। आज लोग उपयोग करने के स्थान पर उपभोग करने लगे हैं। अब यह बाजारू वस्तु बन गई है। बाजार से बाहर लाने की शुरुआत भी ईसाईयत से होगी तो दुनिया का शुभ होगा।

जल का बाजारीकरण व नदियों का निजीकरण मानव का हत्यारा विचार है। दुनिया बचानी है तो जल का सामुदायिकरण करके नदियों को बचाया जा सकता है। नदी का धर्म, मानव धर्म जैसा ही है। यदि नदी बचेगी तो ही धर्म और संस्कृति बचेगी। दुनिया पानी—प्राकृतिक प्यार से आगे बढ़ जायेगी। मेरे इस मन्तव्य के पत्र का पोप ने सम्मान किया। मुझे मिलने बुलाया। मैं मिलने गया। वे प्रकृति और मानवता का बराबर सम्मान करते हैं। उन्होंने मुझे निजी तौर पर प्यार से कहा कि आपकी मंशा का सम्मान करते हैं। हम आज भी जल को मानवाधिकार रूप में ही देख रहे हैं। वही संयुक्त राष्ट्रसंघ भी मानता है। दुनिया की जल जरूरत केवल मानव की नहीं है। पेड़—पौधे, जीव—जन्तु, नदी—समुद्र सभी की जरूरत का ध्यान नहीं रखा जायेगा तो जल व्यापार पूरी दुनिया के जलतंत्र को बाजारू बनाकर एकरूपता प्रदान करेगा। आज ब्रह्मांड एकरूपता से नहीं विविधता से समृद्ध बनेगा। दुनिया को एकरूपता देने का काम उद्योग—व्यापार के लाभ हेतु किया जाता है। लाभ जीवन की सुरक्षा को कमजोर बनाता है।

जब जीवन की सुरक्षा खत्म होती है, तभी शुभ नष्ट होता है। अर्थात् सभी की भलाई—सुरक्षा समाप्त होती है। यह सुरक्षा की कमी मानवीय और नदी संकट पैदा करती है। जब सभी जीव—जंतु, पेड़—पौधों की सुरक्षा नहीं रहती है, तभी पूरा ब्रह्मांड कंपमान बन जाता है। ब्रह्मांड की सेहत बिगाड़ने से पहले नदी की सेहत बिगाड़ेगी। प्राकृतिक सेहत बिगाड़ ही आज के ब्रह्मांड की एकरूपता है। सुधार या पुनर्जनन तो विविधता में होता है। पुनर्जनन ही सनातन है। एकरूपता से पुनर्जनन नहीं हो सकता है। पुनर्जनन तो विविधता से ही संभव है। आज हम एकरूपता करके सभी कुछ जब एक जैसा करना चाहते हैं, तो उसका केवल रूपांतरण किया जाता है। एक रूपांतरण अप्राकृतिक निर्जीव

होता है। प्राकृतिक और सजीव पुनर्जनन ही विविध होता है। एकरूपता केवल निर्जीवों में होती है। एकात्मता और एकरूपता से बचे बिना नदी और प्रकृति को बचाना संभव नहीं है।

1990 में जब वैश्वीकरण की एकरूपता का भूत दुनिया को चढ़ा था, तभी हमने इसके विरुद्ध 1991 में पेरिस फ्रांस में आवाज उठाई थी। तब जैवविविधता सामुदायिक विकेन्द्रित जल संरक्षण से बढ़ती है; इसके साथ हमने अरावली पर्वतमाला को बचाने की लड़ाई उच्चतम न्यायालय में लड़कर जीती थी, उसी के प्रकाश में हमने 9 मई 1992 को अरावली संरक्षण कानून बनवाया था। इन्हीं अनुभवों को बांटने हेतु पेरिस, रियोडिजर्नी, फ्रांस और बेल्जियम में मुझे बुलाया था। मैंने वहाँ जाकर जैव विविधता के विरुद्ध एकरूपता है, इस एकरूपता मुक्ति हेतु क्या करें ? मैंने इस अवसर पर भारतीय आस्था के अनुरूप पर्यावरण रक्षा के अनुभव बाँटे थे। भारत लौटकर ' भारतीय आस्था-पर्यावरण रक्षा ' नामक पुस्तक लिखी थी। उस काल तक भारत और विश्व में विविधता का सम्मान था। आज सभी जगह एकरूपता को सम्मान मिलता है। वैश्वीकरण, उदारीकरण, बाजारीकरण ने नदियों की हत्या की है। हमने जलसंरक्षण द्वारा जैवविविधता बचाकर 13 नदियाँ पुनर्जीवित कर दी हैं।

इटली की भूमि तीन तरफ (दक्षिण और सूर्यपारगमन की दोनों दिशाओं) से भूमध्यसागर द्वारा जलावृत है। यहाँ की जलवायु मुख्यतः भूमध्यसागरीय है, पर इसमें भी बहुत अधिक बदलाव पाया जाता है। आज पूरे इटली को आधुनिक किसानों के फलों, तरकारियों तथा अन्य फसलों से भर दिया गया है, केवल पहाड़ों पर ही जंगली पेड़ तथा झाड़ियाँ पाई जाती हैं। इटली में खनिज पदार्थ अपर्याप्त हैं, केवल पारा ही यहाँ से निर्यात किया जाता है। इटली ने जलवायु परिवर्तन के विनाशक रूप को पहचानने के बाद यहाँ जलवायु परिवर्तन की पढ़ाई को अनिवार्य कर दिया है।

वेटिकन यूरोप महाद्वीप में स्थित एक देश है। पृथ्वी पर सबसे छोटा, स्वतंत्र

राज्य है। इसका क्षेत्रफल केवल 44 हेक्टेयर है। यह इटली के शहर रोम के अंदर स्थित है। यह रोम नगर में आइबर नदी के किनारे, वैटिकन पहाड़ी पर स्थित है तथा ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक कारणों से प्रसिद्ध है। यहाँ की जनसंख्या बहुत कम है। यहाँ नदी शहर में बहती है तो नहर जैसी लगती है। यूरोप ने अपनी नदियों को बाँधने का प्रयास किया है। नदियों की आजादी खत्म की है। यहाँ नदियाँ जब आजादी से खुलकर बहती थीं, तब बहुत व्यापक जमीन पर थी। जमीन बचाने के लिए इन्हें बाँधना शुरू किया गया था। यूरोप में नदी के प्राकृतिक प्रवाह को अवरुद्ध कर उसको मानव नियंत्रित प्रवाह दिया गया है। टाइबर नदी के साथ भी ऐसा ही हुआ।

टाइबर नदी निर्मल तो है, परंतु अविरल नहीं है। इसमें शहरी-औद्योगिक प्रदूषण कम है। इसके बेसिन के जंगल व हरियाली घटने से मिट्टी के कण जल प्रवाह में बहुत अधिक हैं। यही इसमें बाढ़ का कारण भी बनता है।

इस नदी को भी पुनर्जीवित करने की जरूरत है। इसका पुनर्जीवन पाइप से नहीं प्राकृतिक तरीके से करने की जरूरत है। यूरोप सभी समस्याओं का समाधान अभियांत्रिकी-प्रौद्योगिकी में विखंडित करके ही देखता है। संवेदनशील समझदारीपूर्ण अभियांत्रिकी और प्रौद्योगिकी को अध्यात्मिक विज्ञान के साथ समग्रता से जोड़कर टाइबर को पुनर्जीवित करना चाहिए।





## ऊर्जा उत्पादन के लिये प्राणघातक त्रासदी की शिकार चीन की यांग्त्ज़ी नदी

यांग्त्ज़ी एशिया की सबसे लंबी नदी है, जो दुनिया की तीसरी सबसे लंबी और पूरी तरह से एक देश के भीतर बहने वाली सबसे लंबी नदी है। तांगुला पर्वत (तिब्बती पठार) में जरी पहाड़ी से इसका उद्गम है और पूर्वी चीन सागर में आम तौर पर पूर्वी दिशा में यह 6,300 किमी (3,900 मील) बहती है। यह दुनिया में डिस्चार्ज वॉल्यूम के हिसाब से छठी सबसे बड़ी नदी है। इसके जल निकासी बेसिन में चीन के भूमि क्षेत्र का पाँचवाँ हिस्सा शामिल है, और यह देश की लगभग एक तिहाई आबादी का घर है।

यांग्त्ज़ी ने चीन के इतिहास, संस्कृति और अर्थव्यवस्था में एक प्रमुख भूमिका निभाई है। हजारों वर्षों से, नदी का उपयोग पानी, सिंचाई, स्वच्छता, परिवहन, उद्योग, सीमा-चिह्न और युद्ध के लिए किया जाता रहा है। समृद्ध यांग्त्ज़ी नदी डेल्टा चीन के सकल घरेलू उत्पाद का 20% तक उत्पन्न करता है। यांग्त्ज़ी पर श्री गोरजेस डैम दुनिया का सबसे बड़ा हाइड्रो-इलेक्ट्रिक पावर स्टेशन है। 2014 के मध्य में, चीनी सरकार ने घोषणा की कि वह नदी के किनारे एक नया आर्थिक क्षेत्र बनाने के लिए रेलवे, सड़कों और हवाई अड्डों को शामिल करते हुए एक बहु-स्तरीय परिवहन नेटवर्क का निर्माण कर रही है।

यांग्त्ज़ी पारिस्थितिक तंत्र की एक विस्तृत शृंखला के माध्यम से बहती है और चीनी मगरमच्छ, संकीर्ण-छिद्रित फिनलेस पोरपोइज़ और यांग्त्ज़ी स्टर्जन सहित कई स्थानिक और खतरे वाली प्रजातियों का निवास स्थान है, लेकिन विलुप्त यांग्त्ज़ी नदी डॉल्फ़िन (या बाईजी) का घर भी था। हाल के वर्षों में, नदी को

औद्योगिक प्रदूषण, प्लास्टिक प्रदूषण, कृषि अपवाह, गाद, और आर्द्रभूमि तथा झीलों के नुकसान का सामना करना पड़ा है, जो मौसमी बाढ़ को बढ़ा देता है। नदी के कुछ हिस्से अब प्रकृति भंडार के रूप में संरक्षित हैं। पश्चिमी युन्नान में गहरे घाटियों के माध्यम से बहने वाली अपस्ट्रीम यांग्त्ज़ी का एक हिस्सा यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थल है, जो युन्नान संरक्षित क्षेत्रों की तीन समानांतर नदियों का हिस्सा है।

यह नदी तिब्बती पठार के पूर्वी भाग में कई सहायक नदियों से निकलती है, जिनमें से दो को आमतौर पर "स्रोत" कहा जाता है। परंपरागत रूप से, चीनी सरकार ने स्रोत को तांगगुला पर्वत में गेलडांडोंग पर्वत के पश्चिम में स्थित एक ग्लेशियर के आधार पर तुओतुओ सहायक नदी के रूप में मान्यता दी है। यह स्रोत  $33^{\circ}25'44''\text{N } 91^{\circ}10'57''\text{E}$  पर पाया जाता है, जबकि यह यांग्त्ज़ी का सबसे दूर का स्रोत नहीं है, यह समुद्र तल से 5,342 मीटर (17,526 फीट) ऊँचाई पर उच्चतम स्रोत है। यांग्त्ज़ी का असली स्रोत, जल विज्ञान की दृष्टि से समुद्र से सबसे लंबी नदी दूरी, गेलडांडोंग से लगभग 325 किमी (202 मील) दक्षिण-पूर्व में, बांध क्यू सहायक नदी के शीर्ष पर जरी हिल में है। यह स्रोत केवल 20वीं शताब्दी के अंत में खोजा गया था और  $32^{\circ}36'14''\text{N } 94^{\circ}30'44''\text{E}$  और 5,170 मीटर (16,960 फीट) समुद्र तल से ऊपर आर्द्रभूमि में स्थित है, जो जादोई काउंटी, युशु प्रान्त में चाडन टाउनशिप के दक्षिण-पूर्व में है। यांग्त्ज़ी के ऐतिहासिक आध्यात्मिक स्रोत के रूप में, जरी हिल स्रोत की खोज के बाद से गेलडांडोंग स्रोत को अभी भी यांग्त्ज़ी के स्रोत के रूप में जाना जाता है।

यांग्त्ज़ी के हेडवाटर लगभग 4,900 मीटर (16,100 फीट) की ऊँचाई पर स्थित हैं। समुद्र के स्तर पर अपने वंश में, नदी यिबिन, सिचुआन में 305 मीटर (1,001 फीट) की ऊँचाई तक गिरती है, नदी नौकाओं के लिए नेविगेशन के प्रमुख केन्द्र चोंगकिंग (चुंगकिंग) में 192 मीटर (630 फीट) तक। चोंगकिंग और यिचांग (आई-चांग) के बीच, 40 मीटर (130 फीट) की ऊँचाई और लगभग 320 किमी (200 मील) की दूरी पर, यह शानदार यांग्त्ज़ी गोरज से गुजरता है, जो अपनी

प्राकृतिक सुंदरता के लिए प्रसिद्ध है, लेकिन शिपिंग के लिए खतरनाक है।

चीन की पाँच मुख्य मीठे पानी की झीलों में से चार यांग्त्ज़ी नदी में अपना जल योगदान करती हैं। परंपरागत रूप से, यांग्त्ज़ी नदी का अपस्ट्रीम हिस्सा यिबिन से यिचांग तक के खंड को संदर्भित करता है; मध्य भाग यिचांग से हुकू काउंटी तक के खंड को संदर्भित करता है, जहां पोयांग झील नदी से मिलती है। इसका डाउनस्ट्रीम हिस्सा हुकू से शंघाई तक है।

2007 तक, यांग्त्ज़ी नदी पर दो बांध बनाए गए थे— श्री गोरजेस डैम और गेझौबा डैम। श्री गोरजेस डैम 22.5 मेगावाट पर स्थापित क्षमता के हिसाब से दुनिया का सबसे बड़ा पावर स्टेशन है। जिशा नदी के ऊपरी हिस्से पर कई बांध काम कर रहे हैं या बनाए जा रहे हैं। उनमें से, ज़िलुओडु बांध दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा बिजली स्टेशन है, और बैहेतन बांध, जिसे 2021 में चालू करने की योजना है, श्री गोरजेस बांध के बाद दूसरा सबसे बड़ा होगा।

यांग्त्ज़ी धातुकर्म, बिजली, रसायन, ऑटो, निर्माण सामग्री और मशीनरी, औद्योगिक बेल्ट और उच्च तकनीक विकास क्षेत्रों से घिरा हुआ है। यह नदी घाटी के आर्थिक विकास में तेजी से महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है और अंतर्देशीय प्रांतों के लिए और अंतर्राष्ट्रीय शिपिंग के लिए एक महत्वपूर्ण कड़ी बन गया है। यह नदी चीन के लिए एक प्रमुख परिवहन धमनी है, जो आंतरिक भाग को तट से जोड़ती है।

यह नदी दुनिया के सबसे व्यस्त जलमार्गों में से एक है। यातायात में कोयले के साथ-साथ निर्मित माल और यात्रियों जैसे थोक सामानों का परिवहन करने वाला वाणिज्यिक यातायात शामिल है। 2005 में इसका कार्गो परिवहन 795 मिलियन टन तक पहुँच गया। कई दिनों तक चलने वाले नदी परिभ्रमण, विशेष रूप से सुंदर श्री गोरजेस क्षेत्र के माध्यम से, लोकप्रिय हो रहे हैं, क्योंकि चीन में पर्यटन उद्योग बढ़ रहा है।

नदी के किनारे जलजमाव एक बड़ी समस्या है। चीन में बारिश का मौसम यांग्त्जी नदी के दक्षिण में मई और जून में और इसके उत्तर में जुलाई और अगस्त में होता है। विशाल नदी प्रणाली दक्षिणी और उत्तरी दोनों किनारों से पानी प्राप्त करती है, जिससे बाढ़ का मौसम मई से अगस्त तक बढ़ जाता है। इस बीच, अपेक्षाकृत घनी आबादी और नदी के किनारे समृद्ध शहर बाढ़ को और अधिक घातक और नुकसानदेह बनाते हैं। सबसे हाल की प्रमुख बाढ़ 1998 की यांग्त्जी नदी की बाढ़ थी, लेकिन अधिक विनाशकारी 1954 की यांग्त्जी नदी बाढ़ थी, जिसमें लगभग 30,000 लोग मारे गए थे।

चीन दुनिया के सबसे ज्यादा पानी पर कब्जा करने की योजना बनाकर काम कर रहा है। चीन ने हिमालय से निकलने वाली सभी नदियों का जल अपने अन्य संबंधित राज्यों में रोक लिया है। ब्रह्मपुत्र की तिब्बत से आने वाली सभी नदियों पर अंतर्राष्ट्रीय नदी कानून की अवहेलना करके बांध बना लिए। यांग्त्जी नदी भी हिमालय से निकलकर पूरी तिब्बत यात्रा करती है। यह सबसे बड़ी नदी चीन के हिमालय में जन्मी, चीन के समुद्र में ही मिलकर अपना जीवन पूरा करती है। यही देश की 20 प्रतिशत जी.डी.पी. बनाती है। इसकी पहचान डाल्फिन एवं मगरमच्छ ही हैं। यह कभी जैव विविधता में सबसे समृद्ध नदी थी। अब औद्योगिक शहरी प्रदूषण से यह नदी अपने स्वास्थ्य और समृद्धि को खो रही है। यांग्त्जी नदी में 700 उपनदियाँ हैं। 2011 में 416 प्रजातियों की मछलियाँ इस नदी में मौजूद थीं। इनमें से 312 मीठे जल की हैं, शेष खारे पानी वाली हैं। आजकल कुल 178 प्रजातियाँ हैं। हमारी हिल्सा मछली जैसी प्रजाति भी लुप्त हो रही है। विद्युत, रसायन खनन, आदि के कारण यह एक बड़ा तकनीकी एरिया है। यह जल यातायात का सबसे लम्बा मार्ग है। 795 मिलियन टन माल परिवहन 2005 में था। अभी तो और अधिक यातायात बढ़ गया होगा।

यह नदी साउथ चीन और जापान की सांस्कृतिक गतिविधियों का केन्द्र रही है। यह यहाँ की सरकार और समाज का गौरव है। यह नदी इन्हें सभी कुछ देती है। युद्ध कार्यशाला बूहान, जो कोरोना की जन्मस्थली है वहीं है। यह देश

के राज्यों में यालूंग, जियालिंग, हंस नदी के बाँयें व यूवान, जिवान के दक्षिण किनारे पर है। इस नदी को महान नदी इसलिए कहते हैं, क्योंकि यह एक तिहाई देश को हरा-भरा बनाकर रखती है।

तिब्बत से यूनान तक धूप-गर्मी है। तिब्बत की यूलान मौरेन नदी एक ग्लेशियर नदी है। यह भी इसमें आकर मिलती है। इस नदी का पोषण तो तिब्बत के छोटे-तालाब झील से होता है। जैसे ही यह पूर्वी भाग में जाती है, तो इसका सम्पूर्ण चरित्र बदल जाता है। यह 16 हजार फीट ऊँचे साऊथ वायरहल पर्वतमालाओं में दो से तीन किलोमीटर गहरी होकर बहती है। इसके गहरे मोड़ों के बाद यह दक्षिण-पूर्वी दिशा में कई सौ किलोमीटर तक बहुत तेजी से बहती है।

यांग्त्जी नदी जहाँ गहरी है, वहीं इसके समान्तर मैकोन और सालवैन नदी बहती है। इस नदी को यालोंग नदी सबसे ज्यादा पानी देती है। इसी को साथ लेकर हजार से 30 फीट नीचे तक आती है। यांग्त्जी समुद्र से 2600 किमी से 17000 फीट की ऊँचाई पर है। 10 फीट का ढलान प्रतिमील तथा 2 मीटर प्रति किमी का ढलान है। यह एक अद्भुत नदी है।

चीन अपनी नदियों के साथ जो कर रहा है, वह हम समझते हैं। यहाँ साउथ-नॉर्थ नदी के अनुभवों को जानने के लिए कुछ लोगों से बातचीत करके संघाई शहर में घूमा। इस शहर को देखकर लगा कि, यहाँ किसी को प्रकृति की चिंता नहीं है। साझे भविष्य को लेकर लोगों में चिन्तन दिखाई नहीं दिया। सिर्फ व सिर्फ पूँजी के लिए काम होता है। लाभ की विश्व प्रतियोगिता में सबसे आगे निकलकर विश्व का आर्थिक नेता बनना ही चीन का लक्ष्य है।

अब सब जगह साम्यवादी भी पूँजीवादी ही दिखाई देते हैं। समाजवाद अर्थात् साझी सुरक्षा, जिसे भारतीय भाषा में शुभ कहते हैं; पहले उसके लिए ही काम करते थे। पहले सभी की भलाई हेतु विचारते और काम करते थे, अब इनके

जीवन में साझी सुरक्षा की चिंता नहीं है। अब ये केवल लाभ प्रतियोगिता के जाल में फँसे हुए हैं। लाभ कमाने में चीन दुनिया में सबसे आगे निकलना चाहता है। अब चीन पूरी दुनिया के भू-जल भंडार खरीद रहा है। जमीन खरीद रहा है। यह भौतिक जगत् में रावण की तरह चीन को “सोने की लंका” बनाने के स्वप्न देख रहा है। कोरोना वायरस ने इसकी पोल खोल दी है। अब सारी दुनिया इसके रावणीय काम के लिए थू-थू कर रही है।

शंघाई एयरपोर्ट पर उतरते हुए लॉन व पार्कों में केवल सरसों के फूल दिखाई दिये। जब हमने यह पूछा कि यहाँ इसको ही क्यों पैदा करते हैं, तो कहा कि ये देखने में सुन्दर लगते हैं और इसके तेल का भी उपयोग करते हैं। यहाँ हर वस्तु के उत्पादन में हम केवल लाभ की ही गणना करते हैं। इसलिए यहाँ सभी काम केवल लाभ के लिए होते हैं। मैंने यह बात कई लोगों से सुनी। यहाँ का विकास दुनिया के दूसरे शहरों के विकास से थोड़ा अलग है। यहाँ के नदी-नालों में ऊपर से सफाई दिखती है! लेकिन वातावरण में साँस लेने में कठनाई हो रही थी। ये प्राकृतिक सौन्दर्य में भी केवल कमाई ही देखते हैं।

यहाँ के औद्योगिक क्षेत्रों में हरियाली दिखाई देती है। देखने में भोजन और पीने में पानी स्वादिष्ट ही लगा। यहाँ की महिलाएँ अंग्रेजी में बात करती हैं और पुरुषों की अपेक्षा थोड़ी ज्यादा घमंडी होती हैं, पर यहाँ के पुरुष अपेक्षाकृत विनम्र हैं। शंघाई के होटल में मैनेजर, कार्यकर्ताओं व शहर, बाजार व विकास में लगे इंजीनियरों के साथ बातचीत करने में ही समय बीता। यदि संक्षेप में कहूँ तो यहाँ प्रकृति के प्रति कोई आस्था या पर्यावरण के रक्षण का विचार दिखाई नहीं दिया।

दुनिया में जलवायु परिवर्तन संकट पैदा करने वाले स्वयं भी नहीं बचेंगे। इन्होंने कोविड-19 में भी दुनिया के अर्थतंत्र को बिगाड़ने वाली चाल चली है। इस देश की योजना पूरी दुनिया के जल पर कब्जा करने की है। इसी उद्देश्य को पूरा करने वाला विज्ञान, तकनीकी और इंजीनियरिंग (प्रौद्योगिकी और अभियांत्रिकी)

यहाँ पढ़ाई और सिखायी जाती है।

अफ्रीका और एशिया के जल संकट से जूझने वाले देशों में भी भूजल भंडार इन्होंने खरीद लिए हैं। इन्होंने अपनी नदियों, जो भारत में आती हैं, उन पर हाइड्रोजन बम्ब (बाँध) बना दिए हैं। ये सभी बांध और नदी का दूसरे देशों में तबाही पैदा करने हेतु उपयोग करेंगे। इन्होंने एशिया के सभी पड़ोसियों को भयभीत बनाने का काम किया है।

हिमालय, तिब्बत और चीन की भूमि पर इन्होंने नदियों को युद्ध के लिए उपयोगी बनाने का काम किया है। यह देश आर्थिक लाभ कमाने वाला ही देश है। जल से भी कमाई ही करना चाहता है। इसलिए सभी नदियों पर बांध बनाकर नदियों की हत्या कर रहा है।

जल्द ही चीन को भी यह समझ आये कि नदियों को पर्यावरण प्रवाह देना ही इनका जीवन बनाता है। भारत में गंगा अविरलता—निर्मलता दोनों को सरकार सैद्धांतिक रूप में स्वीकारती है। चीन नहीं स्वीकारता है। चीन तो नदी के प्रवाह को बाँध कर केवल ऊर्जा ही चाहता है। इसलिए यांग्त्जी नदी को मैं मारने की शुरुआत मानता हूँ, अभी तो वह जिन्दा है। क्योंकि चीन अपने लाभ हेतु इससे ऊर्जा बना रहा है, पर्यावरण प्रवाह की चिंता किये बिना। इसलिए इसका स्वास्थ्य बीमारी पैदा करने वाला ही है।

कोविड-19 भी इसी नदी के बेसिन में जन्मा है। मालूम नहीं इस विकास ने किस-किस वनस्पति और प्राणी जगत का विनाश किया है। जब प्राकृतिक प्रक्रिया बिगड़ती है, तभी तूफान, बाढ़—सुखाड़, कोविड जैसे वायरस प्रभावी हो जाते हैं। नदियों का स्वास्थ्य मानव स्वास्थ्य के साथ गहरा रिश्ता रखता है।



## बीमार चाओफ्राया नदी को सघन चिकित्सा की जरूरत है

चाओफ्राया, थाइलैंड की एक प्रमुख नदी है, इसके कम जलोढ़ मैदान देश का केंद्र बनाते हैं। यह बैंकॉक से होकर बहती है और फिर थाइलैंड की खाड़ी में गिरती है।

कई पुराने यूरोपीय मानचित्रों पर, नदी को मेनम या माई (थाई) नाम दिया गया है, जिसमें कि "नदी" के लिए केवल थाई शब्द है। जेम्स मैककार्थी, एफआरजीएस, जिन्होंने रॉयल सर्वे विभाग की स्थापना से पहले स्वयं देश के सरकारी सर्वेक्षणों के महानिदेशक के रूप में कार्य किया, ने अपने खाते में लिखा, "माई नाम एक सामान्य शब्द है, जो "माँ" और नाम "पानी" को दर्शाता है। चाओफ्राया का विश्लेषण यह दर्शाता है, कि यह सियाम राज्य की प्रमुख नदी है।

एच. वारिंगटन स्मिथ, जिन्होंने 1891 से 1896 तक सियाम में खान विभाग के निदेशक के रूप में कार्य किया, ने 1898 में पहली बार प्रकाशित अपनी पुस्तक में इसका उल्लेख "द मै नाम चाओफ्राया" के रूप में किया। थाइलैंड में अंग्रेजी भाषा के मीडिया में, चाओफ्राया नदी का नाम अक्सर राजाओं की नदी के रूप में अनूदित किया जाता है।

चाओफ्राया की यात्रा नाखोन सावन प्रांत में नखोन सावन (जिसे पाक नाम से भी कहा जाता है) में पिंग और नान नदियों के संगम पर शुरू होती है। इसके बाद यह मध्य मैदानों से बैंकॉक और थाइलैंड की खाड़ी तक 372 किलोमीटर



(231 मील) तक दक्षिण की ओर बहती है। चाई नट में, नदी का मुख्य मार्ग जो और चिन नामक नदियों में विभाजित हो जाता है, जो तब मुख्य नदी के समानांतर बहती है और थाइलैंड की खाड़ी में बैंकाक के पश्चिम में लगभग 35 किलोमीटर (22 मील) समुत सखोन में निकलती है। चैनत बांध के नीचे शुरू होने वाले निचले जलोढ़ मैदान में कई छोटी नहरें (ख्लोंग) हैं, जो मुख्य नदी से अलग हो जाती हैं। क्षेत्र के चावल के पौधों की सिंचाई के लिए ख्लोंग का उपयोग किया जाता है।

नदी के मोटे निर्देशांक 13 एन, 100 ई हैं। इस क्षेत्र में प्रतिवर्ष 1400 मिलीमीटर (55 इंच) से अधिक वर्षा के साथ एक आर्द्र मानसूनी जलवायु है। बैंकाक में तापमान 24 से 33 डिग्री सेल्सियस (75 से 91 डिग्री फारेनहाइट) तक होता है। चाओफ्राया नदी की प्रमुख सहायक नदियाँ पा सक नदी, साके क्रांग नदी, नान नदी (इसके प्रमुख संगम योम नदी के साथ), पिंग नदी (इसके प्रमुख संगम, वांग नदी के साथ), और चिन नदी हैं। चाओफ्राया की कोई भी सहायक नदी देश की सीमाओं से आगे नहीं बढ़ती है। नान और योम नदी नखोन सावन प्रांत के उत्तर में फिट्सानुलोक से चुमसेंग तक लगभग समानांतर बहती है। वांग नदी ताक प्रांत में सैम नगाओ जिले के पास पिंग नदी में प्रवेश करती है। चाओफ्राया नदी और उसकी सहायक नदियों का विस्तार, यानी, चाओफ्राया नदी प्रणाली, उस भूमि के साथ, जिस पर गिरती हुई बारिश पानी के इन निकायों में बहती है, चाओफ्राया वाटरशेड बनाती है। चाओफ्राया वाटरशेड थाइलैंड का सबसे बड़ा वाटरशेड है, जो देश की लगभग 35 प्रतिशत भूमि को कवर करता है, और 157,924 वर्ग किलोमीटर (60,975 वर्ग मील) के क्षेत्र को सूखा देता है।

थाइलैंड दक्षिण पूर्व एशिया में स्थित है। इसका प्राचीन नाम श्यामदेश या श्याम है। इसकी पूर्वी सीमा पर लाओस और कम्बोडिया, दक्षिणी सीमा पर मलेशिया और पश्चिम सीमा पर म्यान्मार है। इस देश के इतिहास में देखें तो सन् 1767 में बर्मा द्वारा अयुध्या के पतन के बाद थोम्बुरी राजधानी बनी। सन्

1782 में बैंकॉक में चक्री राजवंश की स्थापना हुई, उसी को इसका आरंभ माना जाता है। द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद अमेरिका में 1992 में सत्तापलट के बाद इसे नया संवैधानिक राजतंत्र घोषित कर दिया गया। इस देश का कुल क्षेत्रफल 513225 वर्ग किलोमीटर है। इस देश का मौसम उष्णकटिबंधीय गीला और शुष्क जलवायु से प्रभावित है। 'चाओफ्राया' नदी ने इस देश को दुनिया में प्रमुखता दिलाई है। नदी ने आस-पास के थाइलैंड के मध्यवर्ती मैदान को विस्तृत बनाया है।

थाइलैंड में मैं 28 नवम्बर 2016 से 2 दिसम्बर 2016 तक रहा था। बैंकॉक में कार्यक्रम के आयोजक श्री मुकुन्द बाबल ने विश्वशांति यात्रा दल का स्वागत किया। एशियन इंस्टीट्यूट ऑफ टीच, बैंकॉक में एशिया के सभी देशों के सरकारी व गैरसरकारी प्रतिनिधि इस कन्वेंशन में शामिल हुए थे। इसका शुभारंभ मेरी बातचीत से कराया गया था। यहाँ पर मैंने तरुण भारत संघ के अनुभव बताते हुए कहा कि, एशिया के सभी देशों में नदी के जल संरक्षण एवं प्रबंधन का ज्ञान अभी भी बचा हुआ है; लेकिन सरकारें उस ज्ञान का उपयोग नहीं कर रहीं। इसलिए पिछले 100 वर्षों में बाढ़-सुखाड़ बहुत तेजी से बढ़ा है। हमें इससे मुक्ति की जरूरत है।

नदियों के पुनर्जीवित होने से बाढ़-सुखाड़ और जलवायु परिवर्तन का अनुकूलन और उन्मूलन होगा। इस हेतु राज और समाज की सभी संस्थाओं की जिम्मेदारी और हकदारी को समझकर नदी पुनर्जीवन का काम करें तो एशिया में बढ़ती बाढ़ व सुखाड़ से मुक्ति पाई जा सकती है। इस भाषण के साथ हमने तरुण भारत संघ की प्रस्तुति की, जिसमें बाढ़ व सुखाड़ मुक्ति के साथ जलवायु अनुकूलन और उन्मूलन के भी अनुभव बताये। जलसंरक्षण से पहले पलायन उल्टा हुआ, शहरों के लोग वापस अपने गाँव आकर खेती करने लगे। इससे हरियाली बढ़ी, कार्बन डाईऑक्साइड का शोषण बढ़ा, तापक्रम घटा, सूक्ष्म बादलों का निर्माण हुआ। इन्होंने बड़े बादल बनाने शुरू किये, जिससे वर्षा भी नियमित हुई। नदी पुनर्जीवित होकर बहने लगी। अब यह शुद्ध सदानीरा है।

ऐसे ही थाइलैंड की चाओफ्राया पर काम की जरूरत है। इस भाषण के बाद संस्थान के निदेशक, सरकारी उच्चअधिकारियों ने चाओफ्राया नदी पुनर्जीवित करने की बातचीत की।

थाइलैंड के हवाई अड्डे पर उतरते ही भारतीय शास्त्रों में समुद्र मंथन के चित्रण से लेकर अनेक चित्र बैंकॉक हवाई अड्डे पर दृष्टिगत होने लगते हैं। वैसे तो यह राष्ट्र एशिया का ही हिस्सा है इसलिये मुझे लगा ही नहीं कि, मैं भारत से भिन्न दूसरे देश में हूँ। मुझे यहाँ हिन्दी में बात करने वाले बहुत से लोग मिल गए और तौर-तरीका भारतीय जैसा ही था। इस देश में अब दुनियाभर से पर्यटक बड़ी संख्या में जाते हैं। उनमें सबसे अधिक भारतीयों की संख्या होती है। समुद्र मंथन से लेकर बहुत सी बातें मेरे मन में चाओफ्राया नदी की आती रही। मैंने इन चित्रों में नदी संस्कृति और सभ्यता की भूमिका देखी।

थाई प्रदूषण नियंत्रण विभाग (पीसीडी) की रिपोर्ट है कि, थाइलैंड की ऊपरी खाड़ी में बहने वाली प्रमुख नदियों के पानी की गुणवत्ता पिछले एक दशक में गंभीर रूप से खराब हो गई है। विभाग ने पाया कि निचले चाओफ्राया में फॉस्फेट, फास्फोरस और नाइट्रोजन से बैक्टीरिया और पोषक तत्व प्रदूषण होता है। पोषक तत्व प्रदूषण के कारण शैवाल तेजी से बढ़ते हैं, पारिस्थितिक तंत्र की तुलना में वे पानी की गुणवत्ता को नुकसान पहुँचा सकते हैं, जलीय जानवरों के लिए खाद्य संसाधनों और समुद्री आवासों को भी नुकसान पहुँचा सकते हैं। यह ऑक्सीजन को भी कम करता है, जिसकी मछली को जीवित रहने के लिये आवश्यकता होती है। पीसीडी ने बैंकॉक के बंग खुन थियान जिले में चाओफ्राया के मुहाने पर पानी की गुणवत्ता को "बहुत खराब" का दर्जा दिया।

चाओफ्राया आज अतिक्रमण, प्रदूषण व जल शोषण का भयानक रूप में शिकार होकर बीमार और मरणासन्न है। इसको शीघ्र सघन चिकित्सा की आवश्यकता है।



## दुनिया के लिये श्रेष्ठ उदाहरण है टेम्स नदी का स्वास्थ्य



टेम्स नदी में 2013 में बाढ़ आयी थी, तभी गार्डियन लंदन ने प्रिंस चार्ल्स के कहने पर मुझे बुलाया था। टेम्स को बाढ़ मुक्त कैसे बनायें, इस पर एक सम्मेलन लंदन में आयोजित हुआ था। उसी में मुझे बतौर मुख्य वक्ता आमंत्रित किया गया था। इस

आमंत्रण के बाद मैंने बहुत विचार किया कि जाऊँ या नहीं, लेकिन मैं गया। उस सम्मेलन में पानी का व्यापार करने वाली कम्पनियाँ भी मौजूद थीं। बड़ी कम्पनियों के अधिकारी व सरकार के पर्यावरणीय अभिकरण के भी उच्चतम अधिकारी मौजूद थे। मैंने अपने भाषण में कहा कि, टेम्स की बाढ़ के पीछे कम्पनियों का हाथ है। बाढ़-सुखाड़ में कम्पनियों का अधिक पानी बिकता है। ये ही टेम्स नदी के बेसिन की पहाड़ियों को नंगी कराने के लिए जिम्मेदार हैं। टेम्स के उद्गम पर के जंगल कट गए हैं। हरियाली में वर्षा नियमित होती है। पहाड़ियाँ नंगी होने पर वर्षाचक्र बिगड़ कर अनियमित हो जाता है। जैसे ही पहाड़ियों में तेजी से वर्षा होती है, तब वर्षाजल इकट्ठा होकर पूरा नीचे आ जाता है। लंदन बाढ़ से डूबने लगता है।

लंदन में बाढ़ के समाधान के रूप में बाढ़ के जल को पाइप से लंदन के नीचे छोड़ने का सुझाव दे रहे थे। मैंने कहा “बाढ़ आ चुकी, आगे नहीं आये इस हेतु वर्षाजल के बहाव को धीमा करना है (फ्लो को स्लो करो)। इस बात और सुझाव पर किसी ने आपत्ति नहीं की। कम्पनियाँ बोलीं आगे बाढ़ नहीं आये

इस हेतु पाइप की वैकल्पिक व्यवस्था करना जरूरी है। तब प्रिंस चार्ल्स बोले कि टेम्स की बाढ़—मुक्ति हेतु राजेन्द्र का सुझाव पलो को स्लो करना कारगर होगा कि नहीं, कोई नहीं बोला तो सुमाखर कॉलेज के डॉ. फिलिप ने कहा कि लंदन को बाढ़ मुक्त करने हेतु पलो को स्लो करना समाधान है। यह सुनकर प्रिंस चार्ल्स के कहा कि इस दिशा में संबंधित विभाग काम का शुभारंभ करे। यह सम्मेलन मेरे लिए बहुत ही सीखने और सिखाने वाला सिद्ध हुआ। इस सम्मेलन के बाद फिर प्रिंस चार्ल्स ने मुझे बैठक के लिए बुलाया। मैं, मीनी जैन, डॉ. फिलिप उनसे मिले, तो उन्होंने कहा आप इसी दिशा में काम करें। इस काम के लिए तीन बार प्रिंस चार्ल्स ने हमारे साथ बैठक कराके, इस काम को कराया। उसके बाद इस क्षेत्र में फिर ऐसी बाढ़ अभी तक देखने को नहीं मिली है। जब राज—समाज और संत—चिकित्सक मिलकर नदी चिकित्सा करते हैं, तो नदी स्वस्थ बन जाती है। टेम्स स्वस्थ बनी है। इसके बेसिन के खनन ने इसमें कटाव व तलछट (गाद जमाव) बढ़ाया था। आजकल यह कुछ कम हुआ है, क्योंकि इसकी छोटी—छोटी जलधाराओं में सामुदायिक जल संरक्षण कार्य हुए।

इंग्लैंड पहुँचकर मैं वहाँ न्यू कासल पहुँचा। वहाँ पर विश्वविद्यालय के सिविल इंजीनियरिंग विभाग में भाषण देकर, वहाँ से प्रो. माईकल, स्वीनहोल के साथ लीडिंसफन समुद्र के बीच में प्राचीन चर्च को देखा। भारत के स्वतंत्रता दिवस 15 अगस्त के अवसर पर तिरंगा झण्डा फहराया।

अगले दिन फैनरिक, स्वीनहोल फॉर्म बैलफर्ड तक 15 मील पदयात्रा की। वहाँ पर आई बाढ़ को देखा। यहाँ के समुदाय ने सरकार के काम में अच्छा सहयोग किया है। बैरिक भी गया। यहाँ की टूइड नदी समुद्र में मिलती है। बैलफर्ड में बाढ़ से बचाव के लिए किये गये काम देखे। यहाँ के लोगों को सम्मानित किया। बैलफर्ड काउन्सलर—मेयर ने यात्रा दल का स्वागत किया। फिर डैम्सफोर्ड गये। ट्राइलैंड, बेमार, अबोन डी नदी का कैचमेंट देखा। डी नदी में पशुओं तथा खेती के प्रदूषण को रोकने का अच्छा काम किया गया है। भारत में गंगा के लिए भी ऐसा ही काम करने की जरूरत है।

अवयरडीन के जैम्स हर्टन इंस्टीट्यूट में “होल्लिंग वाटर कार्यशाला” आयोजित हुई। इस कार्यशाला में भारत, स्लोवाकिया, स्कॉटलैंड व यू.के. के अनुभव रखे गये। “विश्व जल शांतियात्रा” दुनिया में कैसे विस्तार से सहयोग कर पाये इसकी सम्भावनाएँ तलाशी गईं।

कैपरिन के साथ वालस्टन गये। यह सुन्दर गाँव है। यहाँ 67 परिवार बाढ़ग्रस्त हैं। यहाँ के लोग अपनी जल संरचनाओं पर सरकार को काम नहीं करने देते। हमने उनको समझाया कि जमीन तो बाद में भी आपकी ही रहेगी और तालाब बन जायेगा तो पानी भी आपका ही होगा। मेरी बात का उन पर बहुत असर हुआ। फिर एक कार्यशाला आयोजित हुई, जिसमें 16 महिला-पुरुषों ने भाग लिया। वहाँ के गाँवों में जाकर उन्हें बाढ़ मुक्ति के उपाय सुझाये। उन्हें बताया कि पानी के तेज प्लो को धीमे प्लो में बदलने से बाढ़ रुकेगी। यह बात वे लोग भी समझते हैं, लेकिन काम के लिए जमीन देने को कोई भी तैयार नहीं है। कार्यशाला के बाद जमीन की उपयोगिता बढ़ती देखकर उस पर स्वयं काम शुरू किया।

2015 में ODI लंदन में तरुण भारत संघ के अनुभवों को बाँटने के लिए ऐलन, रोजर, किविक और वाटर ऐंड की इन्टरनेशनल डायरेक्टर बारबरा के साथ पैनल संवाद में “दुनिया में बढ़ते पलायन से तीसरे विश्वयुद्ध का खतरा” और इससे बचने के लिए तरुण भारत संघ का अनुभव स्थानीय समुदायों को देते हुए जल नैतिकता और न्याय, सामुदायिक विकेंद्रित जल प्रबंधन को बढ़ावा देने की बातचीत हुई। इस लम्बे संवाद में ओ. डी. आई. ने लंदन और दुनिया के खास लोगों को प्रत्यक्ष जोड़ने की कोशिश की थी। इस कोशिश से पलायन पर एक नई बहस आरंभ हुई। इस बहस में जल की कमी के कारण लाचारी, बेकारी और बीमारी को समझा गया और अंत में मैंने सभी को विश्वास दिलाया कि दुनिया में जल साक्षरता के लिए एक बड़े जन आन्दोलन की तत्काल जरूरत है।



अगले दिन लंदन में फ्लो पार्टनरशिप के डायरेक्टर और फिलिप आदि के साथ कार्यक्रम आयोजित किये; जिनमें दुनिया के बढ़ते पलायन से भविष्य के खतरों की तरफ ध्यान आकर्षित किया गया। इस पूरी बहस का उद्देश्य था कोप-21, जलवायु परिवर्तन की बहस में जल को उचित

स्थान दिलाना। इसी विषय में प्रिंस चार्ल्स और यहाँ की इन्टरवाटरमेंट की एजेन्सी के साथ बातचीत की गई। ओ. डी. आई-21 के निदेशक कविक ने इस काम में अपनी विशेष रुचि दिखाई।

इंग्लैण्ड के ब्राइटन और ससेक्स विश्वविद्यालय में छात्रों व शिक्षकों को संबोधित किया। दोनों विश्वविद्यालयों के कार्यक्रमों का लक्ष्य 'अफ्रीका और एशिया के जल संकट व जलवायु परिवर्तन का यूरोप पर क्या प्रभाव होगा, इस पर अपना अनुभव रखना था। तरुण भारत संघ का काम सनातन विकास का काम है। इसने ग्रामीण अर्थतंत्र को मजबूत बनाने का, प्राकृतिक संसाधन जल, जंगल, जमीन, जंगलवासी को जोड़कर प्रबंधन सर्वद्वन्द्वन कार्य किया है। इसी से खेती को जलवायु अनुकूलन के रास्ते पर आगे बढ़ाया है। आज ऐसी ही क्रांति से जलवायु परिवर्तन को पुनर्जीवन की तरफ मोड़कर जलवायु परिवर्तन अनुकूलन और उन्मूलन सम्भव होगा। स्थायी विकास जिसे आज आधुनिक विकास की भाषा में बोला जाता है, उसे अब बदलकर प्राकृतिक पुनर्जीवन कहना ही उचित होगा। यह जलवायु परिवर्तन अनुकूलन से सम्भव है। मैंने पिछले 35 वर्षों से भारत में दस हजार आठ सौ वर्ग किलोमीटर भूमि पर जलवायु परिवर्तन अनुकूलन-उन्मूलन प्रक्रिया स्वयं चलाई है।

ससेक्स में भी तरुण भारत संघ के अनुभवों को प्रस्तुत किया। वहाँ भी मैंने यूरोप के शहरों पर बढ़ती जनसंख्या के दबाव के विषय में अपनी विश्व जलयात्रा के अनुभवों को प्रस्तुत किया और समाधान के लिए जल नैतिकता, न्याय साक्षरता

की जरूरत बताई। इन दोनों विश्वविद्यालयों में वहाँ के शिक्षकों व विद्यार्थियों से बातचीत हुई। यह यात्रा आनंददायक रही। दोनों विश्वविद्यालयों के विद्यार्थी बहुत उत्साहित हुए। उन्होंने भारत में आकर प्रत्यक्ष देखने-समझने में भी अपनी रुचि दिखाई थी। कई विद्यार्थी और शिक्षक वहाँ से भारत आये भी हैं। यहाँ देखकर बोले हाँ! आपने जो ब्राइटन में बोला था, उस पर हमें बिना देखे, वहाँ विश्वास नहीं हुआ था। सुनने से ज्यादा देखकर विश्वास पैदा हो गया है।

इंग्लैंड के नामी विश्वविद्यालय भी जलवायु परिवर्तन अनुकूलन, उन्मूलन समझने साथ आये, इन्होंने मेरे टेम्स के अनुभव और भारत के अनुभव सुने और समझे।

दुनिया की इंजीनियरिंग की संस्था “अरूप” ने हमें बुलाया था। उनके बुलाने पर लंदन में फिलिप व मिनी से मिला। पार्लियामेंट बोर्ड ऑफ हाउस में वहाँ के जल संसाधन मंत्री रिचर्ड, अरूप के चेयरमैन, फिलिप, मिनी और सारे पत्रकार व इंजीनियर मौजूद थे। यहाँ इंग्लैंड में बाढ़ से बचने के समाधानों पर चर्चा हुई थी। बड़े-बड़े इंजीनियर बता रहे थे कि बाढ़ के पानी को पकड़कर बड़े-बड़े पाइपों से लंदन से नीचे ले जाकर नदी में छोड़ना अच्छा होगा। मैंने कहा कि इस नदी के कैचमेंट एरिया में रिमझिम बारिश होती है। उसके फलो को स्लो करने की जरूरत है। मैंने हाउस में यह बात कहकर अपना अनुभव बताया। इस पर मंत्री और अरूप ने रुचि लेकर फिर आगे की कार्ययोजना बनाई। इन्होंने भारत में आकर हमारे काम का अध्ययन भी किया। बड़ी टीम इस कार्य में लगी।

फोक्स हॉल के गेस्ट हाउस में डेनियल, इथी, कोच आदि फ्रांस के साथियों से मिलकर **WWC** की अच्छी बातें हुई। जल के निजीकरण को कैसे रोकें, कम्पनियों से संसाधनों को कैसे बचाएँ, इनकी रणनीति बनाई। 20 जून को ‘समर वाटर स्कूल’ के शिविर का शुभारंभ किया। दुनिया में पलायन क्यों हो रहा है? इसका क्या प्रभाव है? आदि विषयों पर चर्चा हुई। पलायन कैसे खतरनाक है? इसे कैसे रोक सकते हैं? तरुण भारत संघ का अनुभव अपना



योगदान कैसे दे सकता है? इस पलायन को बढ़ाने में कम्पनियों का योगदान कैसा है? ये ऐसा क्यों कर रही हैं आदि पर विस्तार से चर्चा हुई।

यह पूरा अध्ययन व अनुभव भागीदारी टेम्स नदी पुनर्जीवन के लिए की गयी। तरुण भारत संघ के काम का प्रभाव क्या और कैसा है, यह इस बात से मालूम होता है कि यही अरूप संस्था टेम्स नदी की बाढ़ को रोकने की जिम्मेदारी पाइप से करना चाहती थी। हमारे काम में प्रिंस चार्ल्स की रुचि देखकर इन्होंने हमारे पूरे काम का भारत की नदियों पर क्या कैसे प्रभाव पड़ता है, इसका अध्ययन करने हेतु कई इंजीनियरों, वैज्ञानिकों को लगा दिया। उन्हें जब हमारी बात का सत्य समझ आया, तो उन्होंने अलवर, करौली की सेरनी, तेवर तथा अलवर की भगाणी नदी का अध्ययन करके बाढ़ रोकने की हमारी विधि को ही स्थायी विधि माना। उन्होंने कहा कि, इस काम से जलवायु परिवर्तन अनुकूलन और उन्मूलन भी होता है। टेम्स के काम में तरुण भारत संघ की बात अरूप कम्पनी ने उपयोगी मानकर उस दिशा में ही काम करना शुरू कर दिया है।

टेम्स का स्वास्थ्य अब ठीक लगता है। इसमें जल प्रवाह और निर्मलता दोनों ही हैं। अब इसकी भूमि अतिक्रमण मुक्त है। जल प्रवाह निर्मल है। जल का शोषण भी नहीं हो रहा है।

टेम्स नदी जिसे आइसिस नदी के दो रूप में वैकल्पिक भागों में जाना जाता है, एक नदी है जो लंदन सहित दक्षिणी इंग्लैंड से होकर बहती है। 215 मील (346 किमी) की, यह पूरी तरह से इंग्लैंड में सबसे लंबी नदी है और सेवर्न नदी के बाद यूनाइटेड किंगडम की दूसरी सबसे लंबी नदी है।

यह ऑक्सफोर्ड (जहाँ इसे आमतौर पर आइसिस कहा जाता है), रीडिंग, हेनले-ऑन-थेम्स और विंडसर से होकर बहती है। नदी के निचले हिस्से को टिडवे कहा जाता है, जो इसकी लंबी ज्वारीय पहुँच से टेडिंगटन लॉक तक पहुँचता है। यह ग्लूस्टरशायर में टेम्स हेड में उगता है, और टेम्स इस्ट्र्यूरी के

माध्यम से उत्तरी सागर में बहता है। टेम्स पूरे ग्रेटर लंदन को पानी देती है।

इसका ज्वारीय खंड, टेडिंगटन लॉक तक पहुँचता है, जिसमें इसका अधिकांश लंदन खंड शामिल है और इसमें 23 फीट (7 मीटर) की वृद्धि और गिरावट है। मुख्य भूमि ब्रिटेन के कुछ सबसे शुष्क भागों में से एक है और पीने के पानी के लिए इस पर निर्भर है। टेम्स का निर्वहन इसकी लंबाई और चौड़ाई को देखते हुए कम है, जबकि सेवर्न में एक छोटा जल निकासी बेसिन होने के बावजूद औसतन लगभग दोगुना बड़ा निर्वहन होता है। स्कॉटलैंड में, तार्ड, एक जल निकासी बेसिन, टेम्स के औसत निर्वहन से दोगुना से अधिक प्राप्त करता है जो कि 60% छोटा है।

इसमें 45 नेविगेशन लॉक हैं। इसके जलग्रहण क्षेत्र में दक्षिण-पूर्व का एक बड़ा हिस्सा और पश्चिमी इंग्लैंड का एक छोटा हिस्सा शामिल है। इस नदी में कम से कम 50 नामित सहायक नदियाँ मिलती हैं। नदी में 80 से अधिक द्वीप हैं। इसके पानी में मीठे पानी से लेकर लगभग समुद्री जल तक भिन्नता होने के कारण, टेम्स विभिन्न प्रकार के वन्यजीवों का पोषण करता है। इसके पास कई विशेष वैज्ञानिक रुचि के स्थल हैं, जिनमें से सबसे बड़ा उत्तरी केंट मार्श में है और 5,289 हेक्टेयर (20.4 वर्ग मील) को कवर करता है।

'थेम्स' नाम की पुरातनता के लिए अप्रत्यक्ष प्रमाण ऑक्सफोर्ड में पाए गए एक रोमन पॉटशर्ड द्वारा प्रदान किया गया है। ऐसा माना जाता है कि, तामेसुबुगस का नाम नदी के नाम से लिया गया था। रेवेना कॉस्मोग्राफी (700 ईस्वी) में टेमीज़ को एक जगह के रूप में संदर्भित किया गया था, न कि एक नदी के रूप में।

नदी का नाम अंग्रेजी वर्तनी के अनुसार आम तौर पर टेमीज़ था और ब्रिटोनिक रूप में टैमिसिस। मैग्नाकार्टा में 1210 से एक समान वर्तनी, "तामीसियाम" ("टैमिसिया" का अभियोगात्मक मामला, किंग्स्टन अपॉन टेम्सअर्ली हिस्ट्री) ही



पाई जाती है।

ऑक्सफोर्ड के माध्यम से टेम्स को कभी-कभी आइसिस कहा जाता है। ऐतिहासिक रूप से, और विशेष रूप से विक्टोरियन समय में, गजेटियर और कार्टोग्राफर ने जोर देकर कहा कि पूरी

नदी को अपने स्रोत से टेम्स पर डोरचेस्टर तक सही ढंग से आइसिस नाम दिया गया था और केवल इस बिंदु से, जहाँ नदी थामे से मिलती है वह "थेम-आइसिस" बन जाती है। (माना जाता है कि बाद में टेम्स को संक्षिप्त किया गया) इसे तथाकथित कहा जाना चाहिए। आयुध सर्वेक्षण के नक्शे अभी भी टेम्स को डोरचेस्टर के नीचे "टेम्स नदी या आइसिस" के रूप में निर्देशित करते हैं।

20वीं सदी की शुरुआत के बाद से ऑक्सफोर्ड के बाहर आम उपयोग में यह अंतर खो गया है, और कुछ इतिहासकारों का सुझाव है कि आइसिस नाम टेम्स के लैटिन नाम, टेम्स के एक काट-छाँट से ज्यादा कुछ नहीं है। ऐनी सेमुर डेमर द्वारा टैमेसिस और आइसिस नामक मूर्तियाँ हेनले-ऑन-थेम्स, ऑक्सफोर्डशायर के पुल पर पाई जा सकती हैं (मूल टेराकोटा और प्लास्टर मॉडल रॉयल अकादमी, लंदन में 1785 में प्रदर्शित किए गए थे। वे अब नदी में प्रदर्शित किये गये हैं )।

नदी की लंबाई के साथ-साथ नवपाषाणकाल के मानव निवास के प्रमाण मिलते हैं। ब्रिटिश संग्रहालय में एक सजाया हुआ कटोरा (3300-2700 ई.पू.) है, जो हेड्सोर, बर्किंगमशायर में नदी में पाया गया है। डोर्नी झील की खुदाई के दौरान काफी मात्रा में सामग्री की खोज की गई थी। नदी के किनारे कई कांस्य युग के स्थलों और कलाकृतियों की खोज की गई है, जिसमें लेक्लेड, कुकहम और सनबरी-ऑन-थेम्स की बस्तियाँ शामिल हैं।

इस परिदृश्य में इतने व्यापक परिवर्तन हुए हैं कि, बर्फ के आने से पहले मनुष्य की उपस्थिति का जो थोड़ा सा सबूत है, वह अनिवार्य रूप से पानी के द्वारा यहां परिवहन के संकेत दिखाता है और विशेष रूप से स्थानीय कुछ भी नहीं दिखाता है। इसी तरह, रोमनों के आगमन के बाद से भी कब्जे के बाद के साक्ष्य ब्रेंट के मूल किनारे के आसपास हो सकते हैं, लेकिन सदियों से गाद के नीचे दबे हुए हैं। व्यापारी नाविकों के लिए, टेम्स लंबे समय से सिर्फ "लंदन नदी" रहा है। लंदनवासी अक्सर इसे "नदी के दक्षिण" जैसे भावों में केवल "नदी" के रूप में संदर्भित करते हैं।

नदी तीन अनौपचारिक क्षेत्रों को अपना नाम देती है: टेम्स वैली, ऑक्सफोर्ड और वेस्ट लंदन के बीच नदी के आसपास इंग्लैंड का एक क्षेत्र; थेम्स गेटवे; और लंदन के पूर्व में ज्वारीय टेम्स के चारों ओर जलमार्ग सहित बहुत अधिक अतिव्यापी टेम्स इस्टचूरी। टेम्स वैली पुलिस एक औपचारिक निकाय है, जो तीन काउंटियों को कवर करते हुए नदी से अपना नाम लेती है। गैर-प्रशासनिक उपयोग में, नदी का नाम टेम्स वैली यूनिवर्सिटी, टेम्स वॉटर, टेम्स टेलीविज़न, प्रकाशन कंपनी टेम्स एंड हडसन, टेम्सलिक (मध्य लंदन से गुजरने वाली उत्तर-दक्षिण रेल सेवा) और साउथ टेम्स कॉलेज के नाम उपयोग किया जाता है। ऐतिहासिक संस्थाओं के नाम पर इसके उपयोग का एक उदाहरण टेम्स आयरनवर्क्स एंड शिपबिल्डिंग कंपनी है।



मेडवे जलग्रहण सहित टेम्स नदी बेसिन 16130 किमी. के क्षेत्र को कवर करता है। नदी के बेसिन में पूर्व और उत्तरी भागों में ग्रामीण और भारी शहरीकृत दोनों क्षेत्र शामिल हैं, जबकि जलग्रहण क्षेत्र के पश्चिमी भाग मुख्य रूप से ग्रामीण हैं। यह क्षेत्र यूनाइटेड किंगडम में सबसे शुष्क क्षेत्रों में से एक है। जल संसाधनों में एकवीफर्स से भूजल और टेम्स और उसकी सहायक नदियों से लिया

गया पानी शामिल है, इसका अधिकांश भाग बड़े किनारे वाले जलाशयों में संगृहीत है। टेम्स खुद लंदन के पीने के पानी का दो-तिहाई प्रदान करता है, जबकि भूजल कुल जलग्रहण क्षेत्र में लगभग 40 प्रतिशत सार्वजनिक जल आपूर्ति करता है। भूजल एक महत्वपूर्ण जलस्रोत है, खासकर सूखे के महीनों में; इसलिए इसकी गुणवत्ता और मात्रा को बनाए रखना अत्यंत महत्वपूर्ण है। विशेष रूप से अत्यधिक शहरीकृत क्षेत्रों में भूजल सतही प्रदूषण के प्रति संवेदनशील है।

टेम्स नदी ने मानव इतिहास में कई भूमिकाएँ निभाई हैं: एक आर्थिक संसाधन, एक समुद्री मार्ग, एक सीमा, एक ताजे पानी का स्रोत, भोजन का स्रोत और हाल ही में एक अवकाश सुविधा के रूप में। 1929 में, बैटरसी के एक बार के सांसद जॉन बर्न्स ने "द टेम्स इज लिक्विड हिस्ट्री" अभिव्यक्ति को गढ़कर मिसिसिपी के साथ टेम्स की अमेरिका की एक प्रतिकूल तुलना का जवाब दिया।

टेम्स जलग्रहण क्षेत्र के सभी कस्बों और गांवों से उपचारित सीवेज, सीवेज उपचार संयंत्रों के माध्यम से टेम्स में प्रवाहित होता है। इसमें स्विडन, ऑक्सफोर्ड, रीडिंग और विंडसर के सभी सीवेज शामिल हैं।

हालांकि, गीले मौसम के दौरान अनुपचारित सीवेज अभी भी अक्सर टेम्स में प्रवेश करता है। जब लंदन की सीवेज प्रणाली का निर्माण किया गया था, तब सीवरों को भारी तूफान के दौरान नदी के किनारे निर्वहन बिंदुओं के माध्यम से बहने के लिए डिजाइन किया गया था। मूल रूप से, यह साल में एक या दो बार होता है, हालांकि अब ओवरफ्लो सप्ताह में औसतन एक बार होता है। 2013 में, 55 लाख टन से अधिक कच्चा सीवेज ज्वारीय टेम्स में बहा दिया गया था। ये निर्वहन घटनाएँ मछली को मार देती हैं, नदी के किनारों पर कच्चा मल छोड़ देती हैं, और नदी के पानी की गुणवत्ता को कम कर देती हैं।

नदी में कच्चे सीवेज और वर्षाजल की रिहाई को कम करने के लिए, टेम्स

टिडवे योजना वर्तमान में 4.2 बिलियन पाउंड की लागत से निर्माणाधीन है। यह परियोजना ग्रेटर लंदन क्षेत्र से इसके अतिप्रवाह से पहले, इसे 25 किमी (15 मील) ज्वारीय टेम्स के नीचे सुरंग में डालने से पहले एकत्र करेगी, ताकि इसे बेकटन सीवेज ट्रीटमेंट वर्क्स में उपचारित किया जा सके। इस परियोजना की योजना ग्रेटर लंदन क्षेत्र में टेम्स में सीवेज डिस्चार्ज को 90% तक कम करने की है, ताकि नाटकीय रूप से पानी की गुणवत्ता में वृद्धि हो सके।

पारा (Hg) पर्यावरण की दृष्टि से स्थायी भारी धातु है, जो समुद्री जीवन और मनुष्यों के लिए विषाक्त हो सकती है। ब्रेंटफोर्ड और आइल ऑफ ग्रेन के बीच पूरे ज्वारीय नदी टेम्स में फैले 1 मीटर गहराई के साठ तलछट कोर का कुल एचजी के लिए विश्लेषण किया गया है। तलछट रिकॉर्ड इतिहास के माध्यम से एचजी प्रदूषण में स्पष्ट वृद्धि और गिरावट को दर्शाता है। टेम्स नदी में पारा की सांद्रता लंदन से बाहरी मुहाना तक नीचे की ओर कम हो जाती है, जिसमें कुल एचजी स्तर 0.01 से 12.07 मिलीग्राम/किलोग्राम के बीच होता है, जो कि 2.10 मिलीग्राम/किलोग्राम का औसत देता है। यह कई अन्य यूके और यूरोपीय नदी के मुहाने से अधिक है।

टेम्स मुहाना में तलछटी-होस्टेड एचजी प्रदूषण की सबसे बड़ी मात्रा मध्य लंदन क्षेत्र में वॉक्सहॉल ब्रिज और वूलविच के बीच होती है। अधिकांश तलछट कोर सतह के करीब एचजी सांद्रता में स्पष्ट कमी दिखाते हैं, जो प्रदूषणकारी गतिविधियों में समग्र कमी के साथ-साथ हाल के पर्यावरणीय वैधीकरण और नदी प्रबंधन (जैसे ओस्लो-पेरिस सम्मेलन) की बेहतर प्रभावशीलता के लिए जिम्मेदार हैं।



## नदियों को बचाने की सीख देती है फ्रांस की लोयर नदी

पेरिस शहर से बीचों-बीच बहने वाली सीन नदी है या नहर है यह देखकर मैं समझ ही नहीं पाया था। यह सवाल मेरे मन में फ्रांस यात्रा के दौरान दिमाग में आया था।

दिसम्बर 1991 में जीवन की पहली यूरोपीय देशों की यात्रा फ्रांस के पेरिस शहर से शुरू हुई थी। वहाँ के राष्ट्रपति श्री मित्राओ के बुलावे पर मैं फ्रांस यात्रा पर गया था। तब भारत के भी जल, जंगल, जमीन संरक्षण के काम में लगे पर्यावरण के बहुत से कार्यकर्ता, पत्रकार और वैज्ञानिक उसमें गए थे। मुझे 9 दिन वहाँ रहने का अवसर मिला था। तब पृथ्वी शिखर सम्मेलन 1992 रियो डी जेनेरियो, ब्राजील में आयोजित होना था, उसकी पूर्व तैयारी हेतु सम्मेलन में फ्रांस के राष्ट्रपति ने बुलाया था।

यह पेरिस में आयोजित हुआ था। मैं, दिनभर तो सम्मेलन में व्यस्त रहता था। सुबह-शाम यहाँ ट्रेन में बैठकर नदी देखने जाता था। शहर के संग्रहालयों आदि को देखता था। दिनभर घूमने पर भी थकान नहीं होती थी।

इस सम्मेलन में पहाड़, नदी, विकास का विनाश, जैव विविधता, जलसंकट, बढ़ता-बाढ़ सुखाड़, गरीबों को आवास, जंगलवासियों के जंगलों पर अधिकार आदि मुद्दे मुख्य थे।

रियो डी 1992 की घोषणा प्रकृति और मानवता के हित में रही। उत्तरी देश, दक्षिणी देशों का शोषण रोकें। उत्तर-दक्षिण, पूर्व-पश्चिम की लड़ाई और लूट खत्म हो। इस पेरिस के तैयारी सम्मेलन में जो अच्छी बात हुई उसमें जंगलवासी-जंगली जानवरों की आदिवासी संस्कृति का बहुत सम्मान किया गया तथा सामुदायिक निर्णय प्रक्रिया को कैसे राष्ट्रीय निर्णय प्रक्रिया में सम्मान दिलायें इस पर चर्चा हुई। यह सब सुनकर मेरा अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में जाने का रुझान बढ़ा था। बाद के दिनों में ऐसी बातें अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में बहुत कम सुनाई दी।

इसी सम्मेलन में आकर जानकारी हुई कि, नदी-पहाड़-समुद्र मानवीय जीवन के जरूरी अंग हैं। यह भी जानकारी मिली कि तालाब से एक नदी का जुड़ाव क्या होता है। भारतीय जल प्रबंधन में सामुदायिक समझदारी कैसे काम करती है? समाज, तालाब और नदी के रिश्तों को कैसे देखता और जानता है? आदि। यह बात 20 दिसम्बर 1991 को जब मैं, वापस लौट रहा था, तभी अनिल अग्रवाल ने अखबार में पढ़कर मुझे बताया, उन्होंने जोरों से कहा "राजेन्द्र, अरावली खनन बंद करने से सरिस्का के बाघ बच जायेंगे, हम सब की जीत होगी", फिर अखबार पढ़कर सुनाया था। उस काल में भारतीय भी अच्छे निर्णय और अच्छे कामों के विषय में सुनकर आनंदित होते थे। यही हमारी अरवरी नदी के पुनर्जीवन की शुरुआत थी। अरवरी का उद्गम पूरा खनन से प्रभावित था। खनन रुका, खनन में लगे लोग नदी पुनर्जनन के काम में लगे। हमारे साथी अरुण त्रिपाठी ने लिखा, खनन की बेरोजगारी नहीं, समझदारी, हकदारी व जिम्मेदारी बढ़ाने वाला व सबको बराबरी के मार्ग पर चलाने वाला जल संरक्षण का काम हो रहा है। 1991 में जब मैं फ्रांस के पेरिस शहर में बहने वाली 'सीन' और फ्रांस की सबसे बड़ी लोयर नदी को देखकर आया था; तब तक मैं नदी व नहर की परिभाषा का अंतर तक नहीं जानता था। पेरिस सम्मेलन में ही मैं यह आवाज सुनकर आया था कि, नहर नदियों को मार रही है।

'सीन नदी' एक सुन्दर नहर जैसी ही दिखाई देती है; जबकि तब भी एक नदी



ही 'लोयर नदी' दिखती थी। फिर तो मैंने इन्हें कई बार देखने का अवसर पाया; लेकिन मैंने इस नदी की सम्पूर्ण यात्रा वाहन द्वारा 27.11.2018 से 23.03.2019 तक दो हिस्सों में जाकर की थी। यहाँ के अभिलेखों, मानचित्रों में देख-समझकर यात्रा शुरू हुई, इस दौरान मैंने जो जाना, वह 'लोयर नदी' का वर्णन यहाँ कर रहा हूँ।

लोयर नदी फ्रांस की सबसे लंबी नदी है। 1,006 किलोमीटर (625 मील) की लंबाई के साथ, यह 117,054 वर्गकिमी (45,195 वर्ग मील) से निकलती है, जो फ्रांस की पांचवीं भूमि से अधिक है, जबकि इसका औसत निर्वहन रोम का केवल आधा है।

यह मॉंट गेरबियर डी जॉक के पास 1,350 मीटर (4,430 फीट) पर सेवेन्स में फ्रेंच मासिफ सेंट्रल के दक्षिण-पूर्वी क्वार्टर से निकलती है। यह उत्तर में नेवर से ऑरलियन्स तक, फिर पश्चिम में टूर्स और नैनटेस के माध्यम से बहती है, जब तक कि यह सेंट-नज़ायर में बिस्के (अटलांटिक महासागर) की खाड़ी तक नहीं पहुँच जाती। इसकी मुख्य सहायक नदियों में इसके दाहिने किनारे पर नीवेर, मेन और एर्ड्रे नदियाँ और बाएँ किनारे पर एलियर, चेर, इंद्रे, वियेन और सेवरे नान्टाइस नदियाँ शामिल हैं।

लोयर छह विभागों को अपना नाम देती है: लॉयर, हाउते-लॉयर, लॉयर-अटलांटिक, इंद्र-एट-लॉयर, मेन-एट-लॉयर, और साओन-एट-लॉयर। पेज़ डे ला लॉयर और सेंटर-वैल डी लॉयर क्षेत्रों में फ़ैली इसकी घाटी के निचले-मध्य स्वैथ को 2 दिसंबर, 2000 को यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थलों की सूची में जोड़ा गया था। इस नदी के किनारे वाइनयार्ड और शैटॉक्स पाए जाते हैं। यह खंड एक प्रमुख पर्यटक आकर्षण केन्द्र है।

लोयर नदी घाटी का मानव इतिहास पुरापाषाणकाल से शुरू होता है, इसके बाद आधुनिक मानव, नवपाषाणकाल (6,000 से 4,500 ईसा पूर्व) के बाद आता

है) और यूरोप में हाल के सभी पाषाण युग। फिर 1500 से 500 ईसा पूर्व के लौह युग की अवधि के दौरान स्थानीय जनजाति के लोग गल्स आए। उन्होंने लोयर को 600 ईसा पूर्व तक एक प्रमुख व्यापारिक मार्ग के रूप में, अपने व्यापार को जोड़ने के लिए पैक घोड़ों का उपयोग करते हुए, इस्तेमाल किया। जैसे कि आर्मेरिकन मासिफ की धातु, रोम पर ल्यों के माध्यम से फेनिशिया और प्राचीन ग्रीस के साथ किया था। 56 ईसा पूर्व में घाटी में तब गैलिक शासन समाप्त हो गया, जब जूलियस सीजर ने रोम के लिए आसन्न प्रांतों पर विजय प्राप्त की। ईसाई धर्म को इस घाटी में तीसरी शताब्दी ईस्वी से पेश किया गया था, मिशनरियों (कई बाद में संतों के रूप में मान्यता प्राप्त) के रूप में, उन्होंने अन्य जातियों को परिवर्तित किया। इस अवधि में, बसने वालों ने दाख की बारियां स्थापित कीं और मदिरा का उत्पादन शुरू किया।

लोयर घाटी को "फ्रांस का बगीचा" कहा गया है और इसमें एक हजार से अधिक शैटों हैं। इनमें से प्रत्येक में अलग-अलग स्थापत्य अलंकरण हैं, जिनमें विभिन्न प्रकार की विविधताएं शामिल हैं, प्रारंभिक मध्ययुगीन से लेकर पुनर्जागरणकाल के अंत तक। वे मूल रूप से दक्षिणी और उत्तरी फ्रांस के बीच रणनीतिक विभाजन में सदियों से सामंती गढ़ों के रूप में बनाए गए थे। इनमें से कई अब निजी स्वामित्व में हैं।

नदी का स्रोत पूर्वी मासिफ सेंट्रल में, मॉंट गेरबियर डी जॉक के दक्षिण की ओर झरनों में 44°50'38"N 4°13'12"E पर स्थित है। यह दक्षिणी सेवेन्स हाइलैंड्स के उत्तर-पूर्वी भाग में स्थित है, दक्षिण-पूर्वी फ्रांस के सेंट-ईउली के अर्देचे कम्पून में। यह मूल रूप से समुद्रतल से 1,418 मीटर (4,619 फीट) की ऊँचाई पर स्थित पानी का एक मात्र प्रवाह है। मॉंट गेरबियर डी जॉक के तहत एक जलभृत की उपस्थिति कई स्रोतों को जन्म देती है, उनमें से तीन को माउंट के तल पर स्थित नदी स्रोतों के रूप में हाइलाइट किया गया है। तीन धाराएं लोयर बनाने के लिए मदद करती हैं, जो माउंट के दक्षिण में घाटी में सेंट-ईउली गांव के माध्यम से ही नीचे उतरती है।

ऊपरी बेसिन में नदी एक सँकरी, कटी हुई घाटी से होकर बहती है, जो किनारों पर घाटियों और जंगलों द्वारा चिह्नित है और एक अलग कम आबादी वाली घाटी है। मध्यवर्ती खंड में, जलोढ़ मैदान चौड़ा हो जाता है और नदी कई चैनलों में विलीन हो जाती है। एलियर के संगम तक रोने और विची के निकट नदी क्षेत्र में नदी का प्रवाह विशेष रूप से अधिक है। लोयर घाटी में नदी के मध्य भाग में, 12वीं और 19वीं शताब्दी के बीच निर्मित कई बाँध मौजूद हैं, जो बाढ़ से बचाव के नाम पर निर्मित हुए थे। इस खंड में नदी अपेक्षाकृत सीधी है, ऑरलियन्स के पास के क्षेत्र को छोड़कर, और कई रेत किनारे और द्वीप मौजूद हैं। नदी के निचले मार्ग में आर्द्रभूमि और बाढ़ हैं, जो संरक्षण के लिए प्रमुख महत्व के हैं, यह देखते हुए कि, वे प्रवासी पक्षियों के लिए अद्वितीय आवास बनाते हैं।

फ्रांसीसी भाषा विशेषण लिगेरिएन लोयर के नाम से ही इस नदी का नामकरण हुआ है। उत्तरी फ्रांस की जलवायु को गर्म सर्दियों के साथ सबसे सुखद माना जाता है, और सामान्यतः, इसका तापमान शायद ही कभी 38 डिग्री सेल्सियस (100 डिग्री फारेनहाइट) से अधिक रहता हो। इसे समशीतोष्ण समुद्री जलवायु के रूप में पहचाना जाता है, और शुष्क मौसम की कमी और सर्दियों में भारी बारिश और बर्फबारी, विशेष रूप से ऊपरी धाराओं में, इसकी विशेषता है। प्रतिवर्ष धूप के घंटों की संख्या 1400 और 2200 के बीच बदलती रहती है और उत्तर-पश्चिम से दक्षिण-पूर्व की ओर बढ़ती जाती है।

लोयर को फ्रांस में अंतिम जंगली नदी के रूप में अपनी स्थिति को खोने के लगातार खतरे के साथ वर्णित किया गया है। इसका कारण इसकी विशाल लंबाई और व्यापक नेविगेशन की संभावना है, जो नदी संरक्षण के दायरे को गंभीर रूप से सीमित करता है। फेडरेशन, 1970 से आईयूसीएन का एक सदस्य, लोयर नदी प्रणाली को विकास से बचाने के अभियान में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका रहा है।

1986 में, फ्रांसीसी सरकार, लोयर-ब्रिटनी जल एजेंसी और EPALA ने बेसिन में बाढ़ की रोकथाम और जल भंडारण कार्यक्रम पर एक समझौता किया, जिसमें चार बड़े बांधों का निर्माण शामिल था, एक लॉयर पर और तीन एलियर और चेर पर। फ्रांसीसी सरकार ने ऊपरी लोयर पर सेरे डे ला फारे में एक बांध के निर्माण का प्रस्ताव रखा, जो एक पर्यावरणीय आपदा होती, क्योंकि इससे लगभग 20 किमी (12 मील) प्राचीन घाटियाँ जलमग्न हो जातीं। परिणामस्वरूप, डब्ल्यूडब्ल्यूएफ और अन्य गैरसरकारी संगठनों ने इसका विरोध करने के लिए 1988 में लॉयर विवांते (लिविंग लॉयर) नेटवर्क की स्थापना की और फ्रांस के पर्यावरण मंत्री के साथ एक प्रारंभिक बैठक की व्यवस्था की।

फ्रांस में आज भी लोकतंत्र दिखाई देता है। यहाँ की सरकार अपने लोक की बात सुनकर, इनके द्वारा बताये सत्य का सम्मान करके मान जाती है। फ्रांस की लोयर नदी की बांधों द्वारा होने वाली हत्या रुक गई। केवल इतना ही नहीं, इस नदी के कुछ हिस्सों को संरक्षित, सुरक्षित करके बचा भी लिया गया।

यही देश है जहाँ जल का निजीकरण दुनिया में सबसे पहले आरंभ हुआ था। अब ये पेरिस में जल का सामुदायिकरण कर रहे हैं। यहाँ के मेरे मित्र विश्व जलमंच के वैश्विक जल निजीकरण रुकवाने के षड्यंत्र को खत्म कराने हेतु आगे आ रहे हैं। यह होगा तभी दुनिया भर की नदियाँ बचेंगी।

फ्रांसीसी सरकार ने शुरू में संरक्षण संबंधी चिंताओं को खारिज कर दिया और 1989 में परियोजनाओं को हरी झंडी दे दी। इसने WWF और संरक्षण समूहों द्वारा सार्वजनिक प्रदर्शनों को बढ़ावा दिया। 1990 में, लॉयर विवांते ने फ्रांसीसी प्रधानमंत्री और सरकार के साथ सफलतापूर्वक मुलाकात की, क्योंकि सरकार ने मांग की कि, ईपीएएलए नदी के प्रबंधन के अपने दृष्टिकोण में बड़े सुधारों को शुरू करे। व्यापक पैरवी के कारण, इस प्रस्ताव और अन्य बांध प्रस्तावों को अंततः 1990 के दशक में अस्वीकार कर दिया गया था। तब से गॉर्ज जोन को यूरोपीय संघ पर्यावरण कानून के तहत 'नेचुरा 2000' साइट के रूप में संरक्षित

किया गया है।

फ्रांस की सीन नदी की पदयात्रा तो मेरे साथियों जैक लोड, इडिट, फिलिप, डेनियल व वेनियार मोल्ड ने पूरे गाजे-बाजे के साथ कराई थी। फ्रांस की नदियों की यात्रा का आनंद बहुत ही सुखद रहा है।

फ्रांस की लगभग सभी नदियों की यात्रा मुझे मेरे फ्रांसीसी मित्रों ने कराई है। पेरिस की सीन नदी का हिस्सा देखकर, यहाँ की संस्थाओं और सामुदायिक लोकतांत्रिक नेतृत्व करने वाले समूहों के साथ संवाद किया। यहाँ तरुण भारत संघ का प्रस्तुतिकरण मौलिक ने और मैंने मिलकर किया। इसे पेरिस विश्वविद्यालय में आयोजित किया गया।

मैंने अपने अनुभवों के अनुरूप व्यवस्था कराने पर बातचीत की। इस बैठक में भी हमारा भारतीय पक्ष जलवायु परिवर्तन पर चर्चित अन्य के प्रभाव से अलग था। हमने यहाँ भी एकमत होकर “जल ही जलवायु है और जलवायु ही जल है” इसी के चारों तरफ अनुभव बताये। इस सम्मेलन के बाद फ्रांस के पत्रकारों के साथ में, कनाडा की मूडवोलिय, स्लोवाकिया के मिखाल, फ्रांस के जॉन, ओलिन, ओरा फैमली के साथ पत्रकारों की एक टीम ने पेरिस समझौता के लिए दबाव बनाने की रणनीति पर बातचीत की। जैसी तैयारी हम कर रहे थे, वैसी ही तैयारी के लिए और कई मंचों पर भी संवाद चल रहा था। हमारी ज्यादातर बातचीत यहाँ की ‘मांसो नदी’ के किनारे हुई। इस अवसर पर हम अपने मूल विचार को ही आगे बढ़ाने में लगे हैं। हमने बताया है कि जल संकट पलायन बढ़ायेगा। दुनिया में लाचारी-बेकारी बीमारी बढ़ेगी तो जलवायु परिवर्तन का संकट भयानक बन जायेगा।

रात को पेरिस समाजकार्य सेंटर में पेरिस कोप-21 के विषय में अपनी अपेक्षाओं पर मैंने स्पष्टता से कहा कि पेरिस समझौते में अन्य बातों के साथ-साथ मुख्य बात यह है कि, अब जलवायु परिवर्तन के केन्द्र में जल को देखने की जरूरत

है। इसलिए सबसे पहली अपेक्षा यह है कि, कोप-21 क्लाइमेट चेंज में जल को मुख्य केन्द्र माने, जल का निजीकरण रोके और सबको जीने के लिए जल सुरक्षा की व्यवस्था हो। अब जल की कमी और कुप्रबंधन के कारण, जल की अधिकता और कमी दोनों ही इस दुनिया के लिए आपदा बन रहे हैं। इससे मुक्ति के लिए तुरंत प्रयास करने की जरूरत है।

SDG-6 & SDG-13 यह सभी राष्ट्रों के राष्ट्रीय प्लान में प्राथमिक स्थान पर आये। मौलिक ने भी जलवायु परिवर्तन के संकट का युवाओं की सेहत पर हो रहे दुष्प्रभावों को बहुत अच्छे तरीके से प्रस्तुत किया और कहा कि कोप-21 पेरिस सभी युवाओं के स्वास्थ्य व नदियों के रिश्तों को समझकर, उस दिशा में कुछ पुख्ता इंतजाम करे।

यहाँ पर दुनिया भर से आये 50-60 हजार लोग सडकों पर कोप-21 की घोषणाओं के विरुद्ध मार्च की तैयारी कर रहे थे। मैं भी उसी तैयारी में शामिल हुआ। मैं वहाँ बोल रहा था कि, “जल ही जलवायु है और जलवायु ही जल है (Water is Climate & Climate is water)”। मेरा यह नारा बहुत लोगों को पहले से ही पसंद था। हमने पहले ही इस नारे के साथ बहुत तैयारी की थी। हम 6 दिन लगातार मार्च में शामिल हुए; इसलिए कोप-21 में संयुक्त राष्ट्रसंघ ने मुझे अंदर जाने का पास नहीं दिया था। केवल संगठनों के पंडालों में ही जाने की छूट मिली थी। ऐसा मेरे साथ पहली बार हुआ था। मैं बहुत प्रसन्न था। फ्रांस की सरकार को आंदोलन में शामिल होने का समाचार था। हम निर्भय होकर आंदोलन में शामिल ही नहीं हुए, बल्कि अपनी माँग भी पूरी करा सके।

बुर्जे पेरिस के सिविल सोसाइटी जोन में नेल्सन मंडेला हॉल में एक बहुत बड़े सक्षम समूह के लिए मुख्य भाषण मेरा था। मेरा पूरा ध्यान अपने मुद्दे जलवायु में जल पर आन्दोलन ही रहा, इसीलिए सफलता मिली।

पंचमहाभूतों की पूजा करने वालों के ज्ञान, शक्ति, समृद्धि और शिक्षा से संतोष

करने वालों को ही सरस्वतीपूजक कहा जाता है। पूरी दुनिया में ये मूल आदिवासी अभी भी इसी तरह इन पंचमहाभूतों से अपना निर्माण मानते हैं। उन्हें ही पूजते हैं और उनकी रक्षा—सुरक्षा ही स्वयं अपने जीवन की रक्षा—सुरक्षा मानते हैं। ऐसे लोगों को अंधविश्वासी कहकर अमेरिका जैसे देशों ने उनको मार भगाया। इसलिए धीरे—धीरे उनकी संख्या एवं जगह दोनों ही घटती जा रही है। दूसरी तरफ प्रकृति का शोषण, अतिक्रमण व प्रदूषण करने वालों को प्रगतिशील व शिक्षित होने का सम्मान दिया। जो जितना अधिक प्राकृतिक संसाधनों का प्रदूषण व शोषण करता था, उसको उतना ही बड़ा उद्योगपति, पूँजीपति कहकर सभी प्रकार से सम्मान दिया गया। एक तरफ पंचमहाभूतों की रक्षा करने वाले प्रकृतिप्रेमी, सरस्वतीपूजक और दूसरी तरफ प्रकृति का शोषण, प्रदूषण करने वाले पूँजीपति लक्ष्मीपूजक, लेकिन सभी ने लक्ष्मीपूजक बनना स्वीकार कर लिया है।

कोप में जिन समझौतों पर हस्ताक्षर हुए, उनमें सभी में केवल लक्ष्मीपूजा के ही दर्शन होते हैं। पिछले 25 वर्षों में फ्रांस व दुनिया बदली है। दिसम्बर 1991 में फ्रांस के राष्ट्रपति मित्राओ ने दुनिया भर से मेरे जैसे ग्रामीण कार्यकर्ताओं की एक पूरी जमात लगभग 50 से 60 हजार लोगों को पेरिस में 10 दिन के लिए बुलाकर उन्हें सुना था। उसमें सबको बोलने और बात करने का मौका दिया गया था। भारत से ही 80 सामाजिक कार्यकर्ता यहाँ आये थे।

राजस्थान से ही हम 10 लोग इसमें भागीदार बने थे। हम सभी से ऐसे मिले जैसे वे हमें जानते हों। वह सम्मेलन तो केवल रियो डी जेनेरियो 1992 की तैयारी का सम्मेलन था। इस सम्मेलन में मेरे जैसे गाँव के लोगों की प्राकृतिक प्रेम की बातें ज्यादा जगह और समय ले रही थीं। पानी और प्रकृति को मानव के पूरे जीवन के साथ जोड़कर देख रही थीं। शहर की गैस और वायु आदि तथा उद्योगपतियों के अतिक्रमण, प्रदूषण और शोषण को रोकने की बातें ज्यादा प्रभावशाली नहीं थीं। तब जल के निजीकरण पर कोई चर्चा नहीं थी। उस चर्चा को रियो डी जेनेरियो में अधिकतर ने स्वीकार कर लिया था। उस समय

मानवता और प्रकृति का बराबर सम्मान किया था।

अब तो जल का निजीकरण रोकने की आवाज बहुत जोरों पर है। कोप-21, पेरिस सम्मेलन में दुनिया भर के राष्ट्र अध्यक्ष आये। इस सम्मेलन में सभी से अपेक्षाएँ थी। सभी ने जलवायु परिवर्तन के खतरे से बचने की अपनी प्रतिबद्धता प्रकट की। कोपनहैगन में सभी ने संकल्प लिया था कि, अब आगे कोई गलती नहीं होगी। सबने जलवायु परिवर्तन के खतरे से बचने की जिम्मेदारी अपने ऊपर ली थी। तब की कम्पनियों द्वारा विकसित देशों पर गरीबी और विकासशील देशों का सम्मान करके जोड़े रखने का अच्छा प्रयास दिखाई देता है। अब हालात सभी प्रकार बिगाड़ की तरफ हैं। इसमें लोकतांत्रिक सरकारों की अपेक्षा औद्योगिक, बाजारू ताकतें ज्यादा शक्तिशाली हैं। बाजार सुरक्षा की चिंता नहीं करता है, केवल लाभ का विचार ही रखता है।

अमेरिका व यूरोप में किसी ने भी अपनी जिम्मेदारी को नहीं समझा। चीन, ब्राजील, और भारत भी आगे बढ़कर अपनी जिम्मेदारी स्वीकार करके कुछ तथाकथित विकसित देशों को अच्छा सिखा सकते थे। इनके पास अपना सांस्कृतिक, आध्यात्मिक इतिहास है। जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभावों को रोकना 21वीं सदी का सबसे बड़ा आध्यात्मिक काम ही है। एस.डी.जी. 2030 सरस्टेनेबल डेवलपमेंट का अर्थ है, 2030 तक सबको जल, खाद्य, वायु, ऊर्जा व आवास सहज और सम्मानजनक तरीके से मिले। भारतीय दर्शन में मानव जीवन पंचमहाभूतों से बना मानते हैं। ये सुरक्षित रहेंगे, तभी 2030 तक सभी को जलवायु, खाद्य, ऊर्जा और आवास सहज और सम्मानजनक तरीके से मिलेंगे।

फ्रांस सम्मेलन, कोप-21 में जलवायु परिवर्तन अनुकूलन बढ़ाने वाले कामों की चर्चा नहीं हुई। अनुकूलन तो मिट्टी पानी के योग से ही संभव है। यह सम्मेलन केवल वायु-प्रदूषण की रोकथाम के लिए तकनीक और मशीन की ब्रिकी, खरीददारी का ही बाजार जैसा लग रहा है। 1991 में हुआ सम्मेलन इसके विपरीत था, उसमें हरियाली बढ़ाने पर जोर था। उस समय जल और



मिट्टी के स्वास्थ्य योग पर सबसे ज्यादा चर्चा हुई थी। उसी को बढ़ाने के निर्णय थे। इस बार तो फ्रांस में आपातकाल घोषित करके भी खरीद और ब्रिकी की बातें ही हो रही हैं। 1992 के कोप-3 में जीवों, प्रकृति का संरक्षण-पोषण ही चर्चा में थी।

कोप-21, पेरिस का उद्देश्य तो सबके लिए शुभ कार्य करने का संकल्प सम्मेलन में घोषित हुआ था। इसमें 2030 तक स्थायी विकास का लक्ष्य पूरा करने हेतु काम की बातचीत मिलकर तय करने के बजाय यह कुछ व्यवसायियों के लाभ की बात करने वाला सम्मेलन सिद्ध हो गया। यह लाभ केवल 1 प्रतिशत उद्योगपतियों तथा 4 प्रतिशत विशेषज्ञों, ठेकेदारों, बिचौलियों के लिए है। शेष 95 प्रतिशत के शुभ यानी सब प्रकार की साड़ी सुरक्षा अर्थात् पर्यावरण संरक्षण की चिंता नहीं दिखाई दी।

बदलाव केवल फ्रांस का ही नहीं हुआ है, पूरी दुनिया में बदलाव है। 25 वर्ष पहले भारत में भी किसानों, पानी और जवानी को प्राकृतिक संरक्षण के काम ही में देने की बातें होती थीं। अब उनकी जगह प्राकृतिक शोषण की बातें होती हैं। हमारी पूरी शिक्षा में प्राकृतिक संसाधनों के भोग हेतु शोषण, प्रदूषण, अतिक्रमण करना ही सिखाया जा रहा है। युवा सीखने के बाद उसी कार्य में लग जाते हैं। मुझे विश्व जलशांति यात्रा में अभी तक यूरोप, अमेरिका, एशिया, अफ्रीका व ऑस्ट्रेलिया के देशों में मूलतः यही देखने को मिला है। यहाँ मिलकर शांति यात्रा के लिए बहुत प्रत्यक्ष निमंत्रण मिले हैं। मैं सभी जगह जाने का प्रयास करूँगा।

अमेरिका, यूरोप जैसे अपने को विकसित कहने वाले देशों में भी अब विकास से विस्थापन, बेरोजगारी, बेकारी, बीमारी की विकृति और विनाश के ही दर्शन हो रहे हैं। इससे बचने के उपायों की चिंता भी यहीं से प्रारंभ हुई है। इसमें 7 प्रतिशत + 3 प्रतिशत = 10 प्रतिशत लोग हैं, जो विस्थापन, विकृति, और विनाश से चिंतित और तटस्थ हैं। 90 प्रतिशत लोग जलवायु परिवर्तन के

शिकार बने हैं। 4 प्रतिशत शिकार करने में मदद करने वाले हैं। इस प्रकार कुल 5 प्रतिशत लोग अभिजात वर्ग बनकर 94 प्रतिशत को दुखी करने में जुटे हैं। 1 प्रतिशत भी जो दुखी और शोषण के शिकार लोगों की चेतना बढ़ाने की कोशिश में जुटा है; इसकी आवाज भी दबी रहती है। यह पूरा दर्शन ही निराशा पैदा कर रहा है। हमारा साझा भविष्य सुरक्षित कैसे बनेगा? छोटी-छोटी कोशिशों में आशा की किरणें हैं। वह भी जलवायु परिवर्तन के कोहरे में दबी दिखाई दे रही हैं। दुनिया भर के समुदाय अपना अस्तित्व बचाने में जुटे हैं। अमेरिकन लोगों ने अपने ही नेटिव अमेरिकनों को मार भगाया था। कुछ बचे हैं; इन्हें रिजर्व काऊंटी कहते हैं। अमेरिका में सैकड़ों काऊंटी हैं। मैंने अपनी कैलीफोर्निया यात्रा में ऑस नदी घाटी की सभ्यता की परिस्थिति को देखा और समझा था। यहाँ अब रेगिस्तान है। यहाँ के पहाड़ नंगे हैं। वर्षा जल बह जाता है। जल नहीं होने के कारण यहाँ अब 12 वर्षों से केवल अकाल ही है। यहाँ के जल को बहाने वाली नदी को पाइप में बन्द करके लॉस एन्जिल्स शहर को दे दिया है। यहाँ की नदी और झील सूख गये हैं। इनमें अब हवा के साथ धूल उड़ती है। इसे दबाने हेतु कई मिलियन डॉलर खर्च कर रहे हैं। यहाँ बनाने, मिटाने और फिर बनाने का विकास ड्रामा चालू है। इस पर जनता के मेहनत की कमाई कुछ ही ठेकेदारों की जेब में जा रही है। इसे रोकने के बुनियादी रास्ते नहीं अपनाये जा रहे हैं। हमें अपने बुनियादी रास्तों पर फिर से आना होगा। बुनियादी रास्ता है—प्रकृति का सम्मान, पंचमहाभूतों का संवर्द्धन और इनके साथ प्रेमपूर्वक जीना। इसी रास्ते पर चलकर जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभावों से बचा जा सकता है। मेरे इस भाषण का बहुत प्रभाव हुआ। अंततः इसी हॉल में, इसी विषय पर चर्चा के बाद सर्वसम्मति से सरकारी जोन में इस विषय को ठीक से प्रस्तुत करने और आन्दोलनकारियों को सबल बनाने की रणनीति पर भी बातचीत हुई।

दोपहर बाद ब्राजील से लोग वहीं मिलने आये। ये कोरिडोर विकसित करना चाहते थे। मैं उन्हें अपने राजस्थान के अलवर, सवाईमाधोपुर, करौली, दौसा व जयपुर जिले के भू-जल भंडारों को विकसित करने पर ही जोर दे रहा था।

मैंने उन्हें वहाँ के लिए भी काम करने हेतु आमंत्रित किया। इसके बाद ऑर्गेनिक कृषि और पेरिस मार्च के लोगों से मिला, देर रात तक वार्ता चली। फिर मैं इनके सजीव बाजार में गया और सजीव भोजन किया।

3 तारीख की सुबह 9 बजे ही मीडिया के लोग मिलने आ गए। उन्होंने कोप-21 में जलवायु परिवर्तन के मसले को ठीक से उठाने के विषय में तैयारी जानी। मैंने उन्हें ये सब बातें करने के लिए पेरिस फोरम पर भेज दिया। वहाँ केवल अपने राजस्थान (भारत), अफ्रीका और पश्चिमी मध्य एशिया के अनुभव बताये। इसके बाद यूनेस्को पंडाल में गया। वहाँ मिखाल तथा अन्य साथियों के साथ अपने भारत के अनुभव बताये। इस बड़े फोरम में मैंने तरुण भारत संघ के कामों से जलवायु परिवर्तन अनुकूलन और उन्मूलन कैसे संभव हुआ, यह सब बताया। यहाँ मेरा डेढ़ घंटे का लम्बा भाषण था। लोगों ने बहुत सवाल व जबाव किए। 4 दिसम्बर को फ्रांस के ही पत्रकार केमिल और मलिसा मिलने आये। इनके साथ भी जलवायु परिवर्तन अनुकूलन व उन्मूलन के कामों का अपना अनुभव बाँटा।

मौलिक सिसोदिया ने ये सारे अनुभव लैपटॉप के माध्यम से दिखाये और समझाये। शाम को लाबुर्जे पेरिस सम्मिट में पहुँचा। वहाँ कई संस्थाओं के कार्यकर्ताओं और प्रबंधकों से मिला। 5 दिसम्बर को सुबह 5 बजे जगकर रात एक बजे तक पेरिस सम्मिट के घोषणा पत्र से संबंधित कार्यों में व्यस्त रहा। वहाँ के वैकल्पिक बाजार कोपरा के फोरम में भी व्यस्तता रही। आज मैंने और मौलिक ने अलग-अलग 4 जगहों पर तरुण भारत संघ के अनुभवों को बाँटा। वहाँ हमें जयपुर का एक कलाकार आकर मिला। यह कलाकार यहाँ फ्रांस में क्या करता है मालूम नहीं। लेकिन वह मेरे साथ बहुत सारे फोटो खिंचवाकर चला गया।

मैं, यहाँ खुले मन से घुल मिलकर काम कर रहा था। इसलिए बहुत आनंदित हो रहा था। दिसम्बर 2015 को जलवायु परिवर्तन के विषय पर लाबुर्जे जाकर सिविल सोसाइटी जोन में मौलिक ने भी मुझसे बहुत सारे सवाल पूछे। यहाँ

के इंडिजनिश अमेरिकन्स और यूनेस्को के पंडाल में भी मैंने छोटी-छोटी बैठकें कीं और हम पेरिस संग्रहालय देखने गये। संग्रहालय में इजिप्ट सबसे पहले देखा। इजिप्टीयन संग्रहालय की खास वस्तुएँ यहाँ मौजूद हैं। बारीक कशीदाकारी को संस्कृति के साथ जोड़कर देखने का मन हुआ। मैं भारतीय संस्कृति को बेजोड़ मानता हूँ; लेकिन यहाँ देखकर लगा कि दुनिया भी हम से कम नहीं है; वे हमसे ज्यादा हैं। मौलिक ने मुझसे बहुत सारे सवाल पूछे कि, आप अपने देश को ही दुनिया का गुरु क्यों कहते हैं? मैंने कहा कि यहाँ संविधान के सम्मान, समानता और समग्रता की बड़ी व्यापकता है। भारत ने प्रकृति को सम्मान और प्यार दिया है। इस सम्मेलन के अंत में हम तब तक बने रहे, जब तक कि इनके घोषणा पत्र में Water is Climate & Climate is Water को सम्मिलित करने की सहमति नहीं बनी। सहमति बनने के तुरंत बाद हमने वहाँ से निकलने की तैयारी की।

फ्रांस आज भी लोकतांत्रिक दिखाई देता है। यहाँ की सरकार अपने लोक की बात सुनकर उनके द्वारा बताये गए सत्य का सम्मान करके मान जाती है। फ्रांस की लोयर नदी की बांधों द्वारा होने वाली हत्या रुक गई है। केवल इतना ही नहीं, इस नदी के कुछ हिस्सों को संरक्षित और सुरक्षित करके बचा लिया गया है।

यही देश है, जहाँ जल का निजीकरण दुनिया में सबसे पहले आरंभ हुआ था। अब ये पेरिस में जल का सामुदायिकरण कर रहे हैं। यहाँ के मेरे मित्र विश्व जल मंच के वैश्विक जल के निजीकरण को रुकवाने के षड्यंत्र को खत्म कराने हेतु आगे आ रहे हैं। यह होगा तभी दुनिया भर की नदियाँ बचेंगी।

अंत में, मैं कहूँगा कि, फ्रांस की नदियाँ हमारी नदियों से बहुत अच्छी हैं। इस देश की नदी से हम पुनर्जनन, अविरलता-निर्मलता की सीख ले सकते हैं। मेरा आंखों देखा सफल अनुभव मुझे ऊर्जा और प्रेरणा देता है। इस देश ने चार बहुत बड़े बांध रद्द किये हैं। लोयर नदी को अविरल-निर्मल बना लिया

है। हमने भी भागीरथी पर तीन बांधों को रद्द कराया है, पर पूरी गंगा को अविरल—निर्मल नहीं बनाया है। इसीलिए हमारे यहाँ गंगा सत्याग्रह जारी है।

यहाँ बहुत लोगों से मुलाकात हुई तथा विश्व जल समिति, विश्व जल मंच आदि का कुचक्र व वियोलिया कम्पनी द्वारा रचे गये खेल पर लम्बी वार्ता हुई। अगले दिन फ्रांस के विपक्षी नेता से कहा कि जिस प्रकार आपने काम किया है, वैसे ही भारत को भी काम की जरूरत है। भारत में काम तो हो रहा है, लेकिन परिणाम ठीक नहीं आ रहा। इसलिए गंगा व भारत की दूसरी नदियों को भारतीय ज्ञान तंत्र के साथ यूरोप और अमेरिका के अनुभवों को जोड़ने की जरूरत है। इस दिशा में अभी देखने में आ रहा है कि, भारत भी पानी के विषय में उसका निजीकरण करने के लिए फ्रांस की नकल कर रहा है, जो कि भारत के लिए उचित नहीं है। इसलिए इन सबको मिलकर, इस विषय में सोचने और काम करने की जरूरत है।

अगले दिन विपक्ष के नेता वियोलिया अमाड के साथ जल नैतिकता, न्याय और विश्वशांति यात्रा के विषय में बातचीत हुई और जल का निजीकरण कर लूट करने वाली कम्पनियों की भी विस्तार से जानकारी दी। इन्होंने फ्रांसीसी जल व्यापार करने वाली कम्पनियों के विरुद्ध अपने विचार रखे और हमारा साथ देने का विश्वास भी दिलाया।

यूरोपियन यूनियन के हेडक्वार्टर ब्रसेल्स में यहाँ के डायरेक्टर के साथ बड़ी कम्पनियों की जल लूट के बारे में विस्तार से बातचीत की। वहाँ भी जल नैतिकता, न्याय और विश्वशांति यात्रा के विषय में वार्ता हुई। उन्होंने कहा यह सब कार्य यूरोप से ही आरंभ हुआ था। इसे यहीं से रोकना शुरू करना होगा। हम आपके साथ हैं, आप ही शुरू करें। उन्होंने जल नैतिकता और न्याय के लिए काम करने हेतु अपनी प्रतिक्रिया रखी। सी. आर. आर. डी. के ब्यूरो के साथ भी लम्बी बातचीत हुई, जिसमें विश्व जल मंच – 2021 हेतु विश्व जल समिति के लूट के तरीकों को रोकने पर उनके मेम्बरो के साथ अच्छी वार्ता हुई।

इन सभी की सेनेगल में आयोजित विश्व जल मंच—2021 की लूट को रोकने के लिए रुचि नजर आयी। इस बैठक में हमारे भारत के कई साथी मौजूद थे, खासकर पृथ्वीराज सिंह, कनुप्रिया, रमेश शर्मा आदि।

यहाँ गुस्स मसहियहा के साथ बैठक हुई। ये फ्रांस के बहुत ही प्रभावशाली और अनुभवी सामाजिक कार्यकर्ता हैं। इन्होंने नैतिकता, न्याय और विश्वशांति यात्रा में सभी तरह से सहयोग करने का आश्वासन दिया। दोपहर बाद आलिवा के साथ उनके संगठन के साथियों की मौजूदगी की वजह से अच्छी बातचीत हुई। शाम को बड़ी पब्लिक मीटिंग व रात्रिभोज आयोजित हुआ।

आयोजकों ने तरुण भारत संघ के अनुभवों को सुनाने के लिए आग्रह किया। इस रचनात्मक काम से बड़ी कम्पनियों की लूट कैसे रुक सकती है, इस विषय पर विस्तार से जानना चाहा। मैंने ढाई घंटे के भाषण में अपने राजस्थान के अनुभव, सेनेगल, सीरिया, फिलिस्तीन, जॉर्डन, साउथ अफ्रीका, इथोपिया और सोमालिया के प्रत्यक्ष अनुभव सुनाए। लोगों ने गहरी रुचि लेकर यह सब सुना। साथ देने वाली तालियाँ भी बजाईं।

विश्व जल मंच पर EMMAUS इन्टरनेशनल के साथ मोनटेरियल में बैठक हुई। सभी से कम्पनियों के जल षडयंत्रों को रोकने के बारे में बातचीत हुई। इसके बाद शाम को सिटी हॉल में विश्व जल दिवस का कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें वहाँ के मेयर तथा अन्य सदस्य व सिविल सोसायटी के लोग बड़ी संख्या में आये थे। इस कार्यक्रम में पी. वी. राजगोपाल, जिल, पृथ्वीराज सिंह, कनुप्रिया आदि भारतीय भी मेरे साथ मौजूद रहे थे।

23 मार्च को पेरिस की ईडिट, ओलिवर आदि के साथ गंगा के विषय पर बातचीत हुई। उन्हें समझाया कि गंगा नदी पर बाँध बनाकर, बहते पानी को रोक देने से गंगा के बायोफॉज नष्ट हो जाते हैं; जिससे कभी भी न सड़ने वाला पानी (गंगा जल) भी सड़ने लगता है। इस हेतु फ्रांस में वातावरण तैयार करने

की जिम्मेदारी ओलिवर और ईडिट ने ली। ये मुझे हवाई अड्डे तक छोड़ने आये, तब भी मुझे पुनः विश्वास दिलाया। जैसे हमें गंगा जी से जुड़ाव है, वैसे ही इन्हें भी लोयर नदी से जुड़ाव है।



## स्पेन की एब्रो नदी नदी जैसा रूप दिखाती है

एब्रो स्पेन में इबेरियन प्रायद्वीप के उत्तर और उत्तर पूर्व की एक नदी है। यह कैंटब्रिया में जन्मती है और लगभग पूरी तरह से पूर्व-दक्षिण-पूर्व दिशा में 930 किलोमीटर (580 मील) बहती है। यह दक्षिणी कैटेलोनिया में तारागोना प्रांत में एक डेल्टा बनाते हुए भूमध्यसागर में मिल जाती है। इबेरियन प्रायद्वीप में, यह टैगस के बाद लंबाई में दूसरा, डिस्चार्ज वॉल्यूम में दूसरे, और ड्रेनेज बेसिन में डोरो के बाद दूसरे स्थान पर है। यह पूरी तरह से स्पेन के भीतर बहने वाली सबसे लंबी नदी है। एब्रो 20 शहरों से होकर बहती है।

ऊपरी एब्रो बर्गोस प्रांत में चट्टानी घाटियों से होकर गुजरती है। मोटे तौर पर पूर्व की ओर बहती हुई यह लास कॉंचस डी हारो से गुजरती है और ला रियोजा और नवरे तक पहुँचने पर चूना पत्थर चट्टानों के बीच एक व्यापक नदी घाटी बनने लगती है। दक्षिणी सहायक नदियाँ पास के वाटरशेड, सिस्तेमा इबेरिको, स्पेन के केंद्र के बीच एक पर्वत-शृंखला पर पैदा होती हैं। हेडवाटर्स के उत्तर में कैंटब्रियन पर्वत-शृंखला (बिलबाओ और सैंटेंडर के दक्षिण) में है। एब्रो की कुल जल मात्रा का अधिकांश भाग इसकी उत्तरी सहायक नदियों से आता है, जो पाइरेनीस पहाड़ों की दक्षिणी ढलानों के लगभग 2/3 भाग को बहाती है, और फ्रांस के साथ सीमा पर चलती है।

घाटी के बाढ़ के मैदानों में 300 से 600 मिमी (12-24 इंच) के बीच वर्षा होती है, जिसमें अधिकतम गिरावट वसंत ऋतु में होती है। यह अक्सर चापराल



वनस्पति से आच्छादित होता है। गर्मियाँ गर्म होती हैं और सर्दी ठंडी होती है। शुष्क गर्मी के मौसम में तापमान 35 डिग्री सेल्सियस (95 डिग्री फारेनहाइट) से अधिक होता है, कभी-कभी 40 डिग्री सेल्सियस (104 डिग्री फारेनहाइट) तक भी पहुँच जाता है। सर्दियों में तापमान अक्सर 0 डिग्री सेल्सियस (32 डिग्री फारेनहाइट) से भी नीचे चला जाता है। कुछ क्षेत्रों में वनस्पति घनीभूत कोहरे से उत्पन्न नमी पर बहुत अधिक निर्भर करती है। यह एक महाद्वीपीय भूमध्यसागरीय जलवायु है, जिसमें अत्यधिक तापमान होता है। साफ रातों में कई ग्राउंड फ्रॉस्ट होते हैं, और छिटपुट बर्फबारी होती है।

भीतरी इलाकों की जलवायु उत्तरोत्तर अधिक महाद्वीपीय और शुष्क होती जा रही है, और इसलिए धीमी गति से बढ़ने वाली बौनी जुनिपर प्रजातियों के साथ अत्यधिक तापमान से "ललानोस डी बेलकाइट" या "कैलांडा रेगिस्तान" के रूप में बिना वनस्पति वाले रेगिस्तानी मैदानों का अंत हो गया है। पर्वतीय वनस्पति ज्यादातर शंकुधारी वन हैं, जो सूखे के अनुकूल होते हैं, और ओक जीनस (क्वार्कस) में कठोर पेड़, आमतौर पर कम सहिष्णु, गीले हाइलैंड्स में होते हैं। हेलोफाइल्स (नमक के रूप में एक्स्ट्रीमोफाइल) एंडोरेइक लैगून और उनके फीडर क्रीक के क्षेत्रों में प्रचुर मात्रा में हैं। इमली से आच्छादित, इनमें ब्रायोफाइट्स, चैनोपोडियासीस, प्लंबेगिनैसिया, रुपियासी, केरेक्स, लिथ्रेसीस, एस्टरसिया और अन्य कई स्थानिक प्रजातियाँ शामिल हैं। उनकी उपस्थिति घाटी के समुद्री मूल और व्यापक समुद्री जमाव से संबंधित है।

यह नदी जैसे ही कैंटेलोनिया में प्रवेश करती है, घाटी संकरी हो जाती है, और नदी पर्वत शृंखलाओं से घिर जाती है, जिससे व्यापक मोड़ बन जाते हैं। इस क्षेत्र में 3 बड़े बांध बनाए गए हैं: मेक्विनेज़ा बांध (ज़रागोज़ा प्रांत, 1955), रीबा-रोजा बांध (1955), और फिलक्स बांध (1948), तारागोना प्रांत में बाद के दो। अपने प्रवाह के अंतिम भाग में नदी दक्षिण की ओर झुकती है और शानदार घाटियों से होकर बहती है। सेरा डी कार्डो की चट्टानों और ऊँची चट्टानी पहाड़ियाँ भूमध्यसागरीय तटीय पट्टी को अलग करने वाली नदी को लगभग बंद

कर देती हैं। घाटियों को पार करने के बाद, एब्रो तारागोना प्रांत में अम्पोस्टा के करीब भूमध्यसागर पर एक डेल्टा में निर्वहन करने से पहले टोर्टोसा के पास पूर्व की ओर झुकती है।

लंबाई, 928 किमी (577 मील), और जल निकासी बेसिन के क्षेत्र, 85,550 वर्गकिमी (33,030 वर्ग मील) को देखते हुए एब्रो स्पेन की सबसे महत्वपूर्ण नदी है। हालांकि, नदी घाटियों के जलाशयों में 20वीं शताब्दी के दौरान कई कारणों से औसत वार्षिक प्रवाह में लगभग 29 प्रतिशत की कमी आई, जैसे: बांधों का निर्माण, सिंचाई की बढ़ती मांग और वाष्पीकरण (वर्षा से अधिक, कम वर्षा, एवं उच्च धूप के कारण)। इस स्थिति का नदी के मुहाने पर डेल्टा प्रणाली पर सीधा प्रभाव पड़ता है, क्योंकि इसकी हाइड्रोलॉजिकल गतिशीलता मुख्य रूप से नदी के निर्वहन द्वारा नियंत्रित होती है।

अफ्रीका के सेनेगल, डकार जाते समय मैंने अपनी यात्रा को स्पेन में रोका था। यह बहुत सुन्दर और समृद्ध देश है। अपनी विविधताओं से यहाँ का पारिस्थितिक तंत्र अभी भी संपन्न बना हुआ है। पिरिनीज पर्वत स्पेन और फ्रांस के बीच की दीवार है। वैसे तो इस देश में सौ सेंटीमीटर तक वार्षिक वर्षा होती है, जिससे जैव विविधता समृद्ध बनी रहती है। इस देश के चारों तरफ समुद्र हैं, 6 पर्वतमालाएँ हैं। यहाँ की पाँच मुख्य नदियाँ— एब्रो, दुएरो, तागूस, दुआदिआना तथा गुआदलकीवीर जब समुद्र में मिलती हैं, तो स्पेन का समुद्रीतट चट्टानों की तरह दिखता है।

विविध जलवायु तंत्रों का देश होने के कारण यहाँ विस्थापितों की संख्या बहुत अधिक है। विस्थापितों की जनसंख्या बढ़ाने में यहाँ की तानाशाही सरकारों की भूमिका मुख्य रही है। इसलिए अफ्रीका के देशों से बड़ी संख्या में विस्थापित होकर आये लोग स्पेन में दिखाई देते हैं। स्पेन की खेती और उद्योग में अभी भी रोजगार की संभावनाएँ हैं। इसलिए यह अफ्रीकन विस्थापितों के लिए शरण स्थली बन गया है। मेरा उद्देश्य विस्थापन के विषय में अधिक गहराई से

जानना था। तभी मैंने ऐब्रो नदी को जाना और उसकी यात्रा की थी।

स्पेन यूरोपीय संघ का सदस्य राष्ट्र है। इसकी राजधानी माद्रीद है। यह देश यूरोप के दक्षिण पश्चिम में इबेरियन प्रायद्वीप पर स्थित है इसके दक्षिण और पूर्व में भूमध्यसागर सिवाय ब्रिटिश प्रवासी क्षेत्र, जिब्राल्टर की एक छोटी सी सीमा के उत्तर में फ्रांस, अण्डोरा और बिस्के की खाड़ी तथा पश्चिम में क्रमशः अटलांटिका महासागर और पुर्तगाल स्थित हैं। 674 किमी लंबे पिरिनीज पर्वत स्पेन को फ्रांस से अलग करते हैं। स्पेन का कुल क्षेत्रफल 504030 वर्ग किलोमीटर है। स्पेन संवैधानिक राजशाही के तहत एक संसदीय सरकार के रूप में गठित एक विकसित लोकतांत्रिक देश है।

पाँच बड़ी नदियों तथा छोटी-छोटी बहुत सी शुद्ध-सदानेरा नदियों के देश स्पेन की जलवायु बदलती रहती है। यहाँ के उत्तरी तटवर्ती क्षेत्रों की जलवायु ठंडी आर्द्र है। केन्द्रीय पठार जाड़ों में ठंडा तथा गर्मियों में गरम रहता है। उत्तरी, तटवर्ती क्षेत्र तथा दक्षिण तटवर्ती कटिबंधों में वार्षिक औसत वर्षा क्रमशः 100 सेमी तथा 75 सेमी है। विभिन्न किस्म की जलवायु होने के कारण प्राकृतिक वनस्पतियों में भी विभिन्नता पाई जाती है।

स्पेन में 20वीं शताब्दी में हुआ गृहयुद्ध निर्णायक क्षणों में से एक था। इसको समय, विचारधाराओं और हथियारों की लड़ाई के रूप में जाना जाता है। इस युद्ध ने स्पेन की कमर तोड़कर रख दी। हालांकि यह लड़ाई जुलाई 1936 में प्रारंभ हुई थी, लेकिन इसके बीज दशकों पहले बोये गये थे। जिस जनरल ने स्पेन के प्रजातांत्रिक रूप से चयनित सरकार के विरुद्ध विद्रोह किया था, उसका उद्देश्य वहाँ पुराने सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनैतिक समय को वापस लाना था, छोटी-मोटी लड़ाइयों ने एक भ्रातृहत्या संग्राम का रूप ले लिया जो तीन वर्षों तक चला। कई विवेचनों के अनुसार इस संग्राम के अंतर्राष्ट्रीयकरण ने इसे संपूर्ण यूरोप में फासीवाद और लोकतंत्र के बीच की लड़ाई बना दी। इसके कारण बहुत शरणार्थियों का जन्म हुआ।

यहाँ अन्य साधनों की तुलना में खेती का विकास नहीं हुआ है, फिर भी यहाँ की आय का प्रमुख साधन कृषि ही है। स्पेन संसार का सबसे बड़ा जैतून उत्पादक देश है तथा यहाँ आलू, रूई, तंबाकू तथा केला आदि का भी उत्पादन होता है। स्पेन में भेड़ें सर्वाधिक संख्या में पाली जाती हैं। खनन यहाँ की आय का मुख्य साधन है। स्पेन का समुद्री तट चट्टानी है। अप्रैल 1931 में जनरल मिगेल प्रीमो द रिबेरा की सात वर्ष लंबी तानाशाही और किंग अल्फोन्सो आठ की लड़ाई समाप्त होने के बाद स्पेन के पहले वास्तविक संविधान की उद्घोषणा हुई। उसी के बाद एब्रो नदी पर बाँध बने। अच्छी बात है कि इस नदी का जल प्रवाह अब भी बना हुआ है। कह सकते हैं यह यूरोप-अफ्रीका की दूसरी नदियों से ज्यादा स्वस्थ है।

तलछट भार के संबंध में, कई लेखकों ने निष्कर्ष निकाला है कि, पिछली शताब्दी के दौरान तलछट भार 99 प्रतिशत से अधिक कम हो गया था। तलछट परिवहन में भारी कमी का तात्पर्य डेल्टा में तलछट की कमी है, जो समुद्र तट के क्षरण और तलछट की पुनःपूर्ति की कमी का कारण बन रही है। अस्थिर सतह, मौसम परिवर्तन और ज्वारीय उछाल के कारण होती है। नदी में समय-समय पर बाढ़ आती रहती है, हालांकि जलग्रहण क्षेत्र में निगरानी के चलते अब अग्रिम चेतावनी दी जा सकती है।

इस नदी की बाढ़ ही इसकी अविरलता-निर्मलता बनाने में मदद करती है। जल प्रवाह को नियंत्रित किया गया है। अब भी इसके प्रवाह को पर्यावरण की दृष्टि से कम, लेकिन कामचलाऊ मान सकते हैं। मैंने एशिया, अफ्रीका, यूरोप, अमेरिका महाद्वीपों तथा न्यूजीलैंड, आस्ट्रेलिया आदि उपद्वीपों की सैकड़ों नदियों की यात्रा की है। यह अभी नदी कही जा सकती है, जो आंशिक रूप में बची हुई है। इसे देखकर लगता है कि हम नदी किनारे खड़े हैं। पहाड़ों की सुरम्य घाटियों में इसे दौड़ते देखकर मैं बहुत आनंदित हुआ।



## हान नदी का दक्षिण कोरिया में जल प्रवाह मौजूद है

हान नदी दक्षिण कोरिया की एक प्रमुख नदी है और अम्नोक (यालू), तुमन (ट्यूमेन) के बाद कोरियाई प्रायद्वीप की चौथी सबसे लंबी नदी है। नदी कोरियाई प्रायद्वीप के पूर्वी पहाड़ों में दो छोटी नदियों के रूप में शुरू होकर देश की राजधानी सियोल के पास मिलती है। हान नदी की कुल लंबाई लगभग 494 किलोमीटर (307 मील) है।

हान नदी और उसके आसपास के क्षेत्र ने कोरियाई इतिहास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। कोरिया के तीन राज्यों ने इस भूमि पर नियंत्रण करने का प्रयास किया, जहाँ नदी का उपयोग चीन के लिए एक व्यापार मार्ग के रूप में (पीले सागर के माध्यम से) किया जाता था। हालांकि, नदी अब नेविगेशन के लिए सक्रिय रूप से उपयोग नहीं की जाती है, क्योंकि इसका मुहाना कोरिया की दो सीमाओं पर स्थित है, जो किसी भी नागरिक द्वारा प्रवेश के लिए वर्जित है। नदी 12 मिलियन से अधिक दक्षिण कोरियाई लोगों के लिए जलस्रोत के रूप में कार्य करती है। जुलाई 2000 में, संयुक्त राज्य अमेरिका की सेना ने नदी में जहरीले रसायनों को फेंकने की बात स्वीकार की, जिसके कारण विरोध हुआ।

वर्तमान में, हान नदी के निचले हिस्सों में पैदल चलने वाले रास्ते, साइकिल पथ, सार्वजनिक पार्क और रेस्तरां हैं, खासकर सियोल में। 800 निवासियों और 103 शहरी नियोजन और वास्तु विशेषज्ञों के सियोल विकास संस्थान द्वारा किए

गए 2011 के सर्वेक्षण में, 51.3 प्रतिशत निवासियों और 68.9 प्रतिशत विशेषज्ञों ने शीर्ष स्थान पर माउंट नमसन के बाद नदी को शहर में दूसरा सबसे सुंदर स्थान माना।

हान का निर्माण नम्हान नदी (दक्षिण हान नदी) के संगम से होता है, जो माउंट डेदेओक और बुखान नदी (उत्तरी हान नदी) से निकलती है, और उत्तरी कोरिया में कुमगांग पर्वत की ढलानों पर निकलती है। नदी सियोल से होकर बहती है और फिर पीले सागर में बहने से कुछ समय पहले रिमजिन नदी में मिल जाती है। नदी की दो प्रमुख शाखाएं, नम्हान नदी और बुखान नदी, यांगप्योंग, ग्योंगगी प्रांत में एक साथ आती हैं, जहाँ इसे हान नदी कहा जाता है। यह फिर सियोल से होकर गुजरती है और पीले सागर तक जाती है। व्यापक ज्वारीय प्लैट हान नदी के मुहाने पर पाए जा सकते हैं, जहाँ यह दक्षिण और उत्तर कोरिया को विभाजित करने वाले कोरियाई विसैन्यीकृत क्षेत्र के साथ समुद्र से मिलती है।

हालांकि यह एक लंबी नदी नहीं है, निचली हान ऐसी अपेक्षाकृत छोटी नदी के लिए उल्लेखनीय रूप से चौड़ी है। सियोल शहर की सीमा के भीतर, नदी 1 किलोमीटर (0.62 मील) से अधिक चौड़ी है। कई प्रमुख बांधों के निर्माण से पहले नदी, नदी व्यवस्था के अपने विशाल गुणांक (अधिकतम और न्यूनतम प्रवाह की मात्रा के बीच अनुपात) 1:390 के लिए जानी जाती है। हान नदी ने प्राचीनकाल से कोरियाई इतिहास में एक केंद्रीय भूमिका निभाई है। बाकेजे का राज्य हान नदी पर दावा करने वाला पहला राज्य था, जो प्रायद्वीप के मध्य पश्चिमी क्षेत्र को पीले सागर से जोड़ने वाले प्राथमिक जलमार्ग के रूप में अपने रणनीतिक महत्त्व को पहचानता था।

हान नदी अब बड़े पैमाने पर कोरिया गणराज्य या दक्षिण कोरिया के अंतर्गत आती है, जो उत्तर कोरिया से कुछ समुद्री मील (हालांकि नदी की कुछ सहायक नदियाँ उत्तर कोरिया में हैं) की दूरी पर पीले सागर में मिलती हैं। दक्षिण

कोरिया के अस्तित्व के पहले कुछ दशकों के दौरान हान नदी प्रदूषण के कारण एक अपशब्द बन गई, क्योंकि बढ़ते उद्योग और एक गरीब आबादी ने इसे औद्योगिक और शहरी कचरे के लिए एक सुविधाजनक स्पिल वे के रूप में इस्तेमाल किया। हालांकि यह अब वाणिज्य या परिवहन में केंद्रीय भूमिका नहीं निभाती है। दक्षिण कोरियाई राजधानी के जीवन में एक प्रमुख स्थिरता है और पिछले दशक में इसे साफ करने और इसे एक पारिस्थितिक खजाने में बदलने के लिए सरकार द्वारा प्रायोजित पर्यावरणीय प्रयासों का यह केंद्र बन गया है। सियोल में 1988 के ग्रीष्मकालीन ओलंपिक के दौरान, हान नदी ओलंपिक रोइंग रेगाटा की साइट थी।

2009 से ली मायुंग बाक प्रशासन ने इंचियोन में हान नदी को पीले सागर से जोड़ने वाली एक नहर खोदने के लिए एक परियोजना को पुनर्जीवित किया। यह अठारह किलोमीटर की आरा नहर 2012 में पूरी हुई थी और अब सियोल में गिंपो के पास हान नदी को इंचियोन से जोड़ती है। यह बड़े कंटेनर और यात्री जहाजों दोनों को समायोजित कर सकता है।

मैं देख रहा हूँ कि, पानी का व्यापार करने वाली प्राइवेट कम्पनियाँ दुनिया को किस प्रकार धोखा दे रही हैं। इस सम्मेलन को आयोजित करने वाला विश्व जलमंच प्राइवेट कम्पनियों का ही मंच है; लेकिन यह अपने आपको संयुक्त राष्ट्रसंघ का अंग बताता है। इस सम्मेलन में अभी तक विश्वबैंक, संयुक्त राष्ट्र से संबंधित यूनेस्को, यू. एन. वाटर आदि संस्थाएँ भी भागीदार होती हैं। इसलिए ज्यादातर लोगों को यह समझ आता है कि यह संयुक्त राष्ट्र का अंग है। जिस देश में यह सम्मेलन आयोजित होता है, उसका खर्चा वही देश उठाता है। अब यह भी आर्थिक प्रतियोगिता बन गया है। जैसे— गरीब देश सैनेगल।

इस प्रकार, यह प्राइवेट कम्पनियों का मंच, दुनिया भर से पैसे इकट्ठा करके अपने पानी के व्यापार को ही बढ़ाने का षड्यंत्र करता है। मैंने यह बात विश्व जल समिति के आयोजन मंच पर जाकर स्पष्टता से रखी। यहीं इस सम्मेलन

की आयोजक है। मैंने इस मंच पर उन्हें यह भी स्मरण कराया कि विश्व जल मंच का जो उद्देश्य है, वह "दुनिया में जल सुरक्षा" सुनिश्चित करना है; लेकिन ऐसा कोई भी काम 1997 से लेकर आज तक इस मंच ने नहीं किया।

यह जलमंच उन्हीं देशों में आयोजित होता है, जो जल का निजीकरण करने के लिए सैद्धांतिक तौर पर तैयार होते हैं और इनके साथ अपने देश के पानी के व्यापार का समझौता करते हैं। इसलिए आज यह केवल जल के व्यापारिक समझौते वाला मंच बन गया है।

इस जलमंच सम्मेलन से मैं 1997 से मुरक्को से ही जुड़ा था। यह हर तीन वर्ष में आयोजित होता है। अभी तक यह जल मंच मुरक्को-1997, हेंग-2000, क्वोटो-2003, टर्की-2006, मैक्सिको-2009, मासे-2012, ज्ञानजू-2015, ब्राजील-2018 में हुआ है। मैं इन सभी सम्मेलनों में पहुँचा हूँ।

विश्व जलमंच की कार्यसमिति के पंडाल में अपने वक्तव्य में सामुदायिक विकेन्द्रित जल प्रबंधन के प्रयोगों का अपना अनुभव रखा। कहा कि सामुदायिक ज्ञान, स्थानीय पारिस्थितिकी विविधता के सम्मान से भू-संस्कृति की विविधताओं की उपयोगिता को समझ कर ही काम करता है। इससे जलवायु के विरुद्ध काम कम होते हैं। वैश्विक ज्ञान से जब भी कोई काम होता है, वह विश्वहित में होता है। इस मंच में साउथ अफ्रीका, अमेरिका, यूरोप, पूरी दुनिया के लोग मौजूद रहे हैं।

इसमें दुनिया भर के 145 देशों ने अपनी भागीदारी निभाई। इन सभी देशों ने जल संकट के समाधान के लिए अपने-अपने देश में किये जा रहे प्रयासों को पूरी दुनिया के सामने प्रस्तुत किया। 21वीं सदी जलसंकट की सदी है। इसके समाधान के लिए वैश्विक स्तर पर साझी पहल इसमें दिखाई दे रही है। जल संकट का मुद्दा वैश्विक मुद्दा है। इसके समाधान के लिए वैश्विक प्रयासों की जरूरत को देखते हुए, कई राष्ट्रों की संवेदनशीलता अधिक दिखाई दे रही



है। जल की समस्या से दुनिया के कई देश जूझ रहे हैं, जिनमें भारत भी एक है। सन् 2030 वैश्विक स्तर पर जलसंकट के लिए हम सबके ऊपर चुनौती है। जब माँग और आपूर्ति के बीच बड़ा अंतर होगा तो जल के कारण आपसी मतभेदों को समाप्त करने के लिए राष्ट्रीय और वैश्विक स्तर पर साझे प्रयास की जरूरत है। विश्व जल सम्मेलन कोरिया में उत्तर-दक्षिण, पूर्व-पश्चिम के बीच वैचारिक दूरी दिखाई दी है। खाद्य सुरक्षा और कृषि की आवश्यकता के लिए पानी जरूरी है। इसके लिए कई देशों ने नवाचार प्रारम्भ किये हैं। ब्राजील, जापान, चीन, इजराइल, मैक्सिको व फ्रांस जैसे देशों ने पूरी दुनिया के सामने अद्भुत उदाहरण प्रस्तुत किये, लेकिन जल-बाजार इन्हें ऊपर नहीं आने देता है।

जलवायु परिवर्तन, पानी और खाद्य सुरक्षा वर्तमान समय की सबसे बड़ी चुनौती है। ग्रीन एनर्जी के लिए भी जल की माँग को कम करना जरूरी है। लगातार बाढ़ और सूखे की बढ़ती प्रवृत्ति पूरी दुनिया के लिए चुनौती है; वहीं बढ़ती आबादी के बोझ के कारण नदियों और जल संरचनाओं का अस्तित्व संकट में है। कई देश अपनी नदियाँ ठीक कर चुके हैं या करने का प्रयास कर रहे हैं। पूरी दुनिया में पवित्र नदी गंगा की स्वच्छता की चिंता है। वहीं नवाचार के नाम पर पूरी दुनिया में पानी का बाजार खड़ा करने के लिए निजी क्षेत्र की कंपनियों की सक्रियता और साजिश भी लगातार बढ़ रही है। नवाचार के नाम पर कम्पनियाँ अपनी तकनीक बेचकर अधिक लाभ कमाना चाहती हैं। दक्षिण कोरिया तकनीकी और औद्योगिक विकास के लिए उभरती अर्थव्यवस्था है, जहाँ इलेक्ट्रॉनिक और ऑटोमोबाइल का बड़ा बाजार है। देगू जैसे शहर में 99 प्रतिशत पानी की सप्लाई निजी क्षेत्र में है। इसी तरह के मॉडल को बढ़ावा दिया जाये, इस बात की वकालत कोरिया वाटर नाम की संस्था लगातार कर रही है।

कोरिया वाटर ने मुझे तीन दिन तक, विविध स्थानों पर ले जाकर, अपने बड़े बाँध व जलापूर्ति के काम दिखाये। ये भारत से बहुत पीछे हैं। यहाँ जल का

सारा काम कम्पनियाँ ही करती हैं। मैंने भी इन कंपनियों का षड्यंत्र देखा है। उनके समापन भाषण में मैंने बोल भी दिया कि जल किसी एक व्यक्ति या कम्पनी का नहीं होता; जल तो सभी का साझा होता है। इस पर पूरे जीव-जगत् का अधिकार है।

कोरिया के राष्ट्रपति पार्क गियूनहे, तुर्कमेनिस्तान के राष्ट्रपति गुरवन जुउली, ताजकिस्तान के राष्ट्रपति ईमोमाली रहमान, मोनाको के प्रिंस अलवर्टली, हंगरी के राष्ट्रपति, जानोसधर, मोरक्को के प्रधानमंत्री अब्देलिला बेनकिराने आदि ने प्रमुख रूप से इसमें सहभागिता की।

अगले दिन नदी घाटी प्रबंधन में मेकोंग तथा अन्य कई नदियों के अनुभव सुने। ज्ञानजू में यात्रा दल ने तरुण भारत संघ की तरफ से शांति मार्च निकाला और बच्चों के साथ एक रैली निकाली। देगू में गंगा मेकोंग डायलॉग में भाग लिया। इसमें गंगा की समस्या व समाधान पर विस्तार से चर्चा हुई। इस संवाद के बाद तरुण भारत संघ ने “जल शांति यात्रा” आयोजित की। यह यात्रा इस सम्मेलन में भी निकाली तथा शहर के कई विद्यालयों एवं सार्वजनिक स्थानों पर भी आयोजित हुई।

अगले दिन ज्ञानजू में सिटिजन फोरम आयोजित हुआ, जिसमें मैंने अपने कामों का अनुभव रखा और शांति मार्च आयोजित किया। इस शांति मार्च को ‘कोरियन एक्सप्रेस’ न्यूज ने पहले पृष्ठ पर जगह दी। इस दिन बांग्लादेश, पाकिस्तान, चीन, नेपाल, दक्षिण अफ्रीका, व ब्राजील के लोग साथ रहे। इन यात्राओं के दौरान कामोन चोगू नदी, अन्डोम डेम तथा एन्डोगफोक म्यूजियम, नेकोडेन्ना नदी आदि स्थान भी देखे।

कोरिया के बाद यात्रा भारत में विविध स्थानों पर गई, जहाँ जल के भावी संकट के समाधान हेतु बातचीत हुई। साउथ कोरिया में दुनिया के बहुत से वैज्ञानिकों ने संवाद में माना कि अब जलसंकट का समाधान केवल तकनीक और

विज्ञान से ही संभव नहीं है। इसके लिए चेतना से जलसंरक्षण संवर्द्धन करने की आवश्यकता है। इस हेतु माँग की पूर्ति के साथ सामंजस्य बढ़ाना होगा। इसलिए अब सामुदायिक, राज्य और राष्ट्रीय सभी स्तरों पर जल साक्षरता की आवश्यकता है। इसके लिए जलसंरक्षण एवं उपयोग दक्षता में सामुदायिक नेतृत्व करने हेतु अब लोगों को आगे आना ही होगा। इस पर बहुत जोर था।

दुनिया भर के लोगों ने मुझसे निवेदन किया और मैंने इनकी बातें सुनकर सहज स्वीकृति दे दी। कोरिया की जल कम्पनी इसको अच्छा नहीं मान रही थी। लेकिन दुनिया भर के लोगों ने जब मुझसे कहा, तभी मैंने सभी से पूछा कि कौन कैसे-कैसे और क्या-क्या जिम्मेदारी लेगा? सभी ने अपनी-अपनी जिम्मेदारी लेकर मुझे 20 देशों- एशिया-20, अफ्रीका-20 और यूरोप में ले जाने का निर्णय किया। मैंने इस कार्य को अपनी जिम्मेदारी मानकर बिना धन जुटाये ही इन देशों की यात्रा की। यह यात्राएँ जल नैतिकता न्याय के लिए, जल संरक्षण, उपयोग दक्षता बढ़ाने हेतु जल साक्षरता एवं पारिस्थितिकी अध्ययन हेतु है।

इस कार्य हेतु किसी से न कोई धन इकट्ठा किया और न ही किसी से माँगा। केवल दुनिया के मुझे जानने वाले लोगों ने मेरी यात्रा, भोजन तथा आवास की व्यवस्था की थी। मैंने इस हेतु ज्ञान, समय, शक्ति, साधनों का समर्पण किया और यात्रा उद्देश्य की पूर्ति में मेरे विदेशी मित्रों ने सम्पूर्ण रूप से सहयोग दिया।

मेरी यात्रा एक तरफ जल नैतिकता और न्याय तथा शांति के लिए थी। दूसरी तरफ साथ ही साथ नदियों से सभ्यता और सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनैतिक संबंधों को जानने का प्रयास कर रहा हूँ। मैंने नदियों के पारिस्थितिकी तंत्र को जानकर लिखने का प्रयास किया। ज्यादातर जानकारी नदी यात्रा करते समय वहाँ के लोगों से उनकी भाषा में मिली, फिर उसका अनुवाद किया, कठिनाई हुई, लेकिन मेरा काम (नदी यात्रा) सभी महाद्वीपों में सम्पन्न हुआ।



## सुखाड़-बाढ़ से ग्रस्त ऑरेंज नदी

ऑरेंज नदी के विषय में मैंने 11 दिन दक्षिण अफ्रीका के जोहन्सबर्ग आदि बहुत से स्थानों पर रुककर समझा था। मैंने इस नदी बेसिन के बहुत से क्षेत्रों का भ्रमण किया था। केपटाउन में भी शिविर किया। इसकी विधायी राजधानी केपटाउन है। इस देश का कुल क्षेत्रफल 1221037 वर्ग किलोमीटर है। आधुनिक मानव की बसाहट दक्षिण अफ्रीका में एक लाख साल पुरानी है। 1961 में दक्षिण अफ्रीका को गणराज्य का दर्जा मिला। इसके बाद 1994 में भेदभाव वाली नीति के खत्म होने और लोकतांत्रिक चुनाव से इसकी शुरुआत हुई। फिर यह देश राष्ट्रकुल देशों में शामिल हो गया। ऑरेंज नदी दक्षिण अफ्रीका की सबसे लम्बी और मुख्य नदी है।

नदी पुनर्जीवन भारत में कैसे किया गया है, आरेंज नदी की किसी भी एक छोटी धारा को पुनर्जीवित कैसे करें? इस कार्यशाला में दुनिया के बहुत देशों के नदी पुनर्जीवन कार्यकर्ता यह सिखाने यहाँ आये थे। यहाँ पर तंजानिया, मंगोलिया व बांग्लादेश, इथोपिया, सैनेगल, रवांडा, फिलिस्तीन, जॉर्डन आदि देशों के जलयोद्धा और जल कार्यकर्ता बैठक में आये थे। सभी को तरुण भारत संघ का अनुभव प्रस्तुत किया और फिर उनके अनुभव सुने। बहुत व्यावहारिक संवाद रहा। उन्होंने तरुण भारत संघ के जलवायु परिवर्तन, अनुकूलन और उन्मूलन की दिशा में हुए सतत् 32 वर्षों के कार्यों को देख समझकर, अपने देशों में भी ऐसे काम करने का आग्रह किया और कहा कि इसी प्रकार के काम हमारे देश में भी करने की जरूरत है। तब मैंने इन्हीं से पूछा कि आपके यहाँ यह काम कैसे किया जा सकता है? इन सभी की राय थी कि (राजस्थान) भारत

के अनुभव में वहाँ के समाज के पास जल संरक्षण का ज्ञान बचा था; इसलिए ऐसे कार्य करने के लिए जल साक्षरता की जरूरत है। समुदायों को संसाधन चित्रण करना सिखाना होगा।

ऑरेंज नदी दक्षिणी अफ्रीका की नदी है। इसकी कुल लंबाई 2,200 किमी (1,400 मील) है। यह दक्षिण अफ्रीका की सीमाओं के भीतर सबसे लंबी नदी है और ऑरेंज नदी बेसिन लेसोथो से दक्षिण अफ्रीका और नामीबिया के उत्तर में बड़े पैमाने पर फैली हुई है। लेसोथो में ड्रेकेन्सबर्ग पहाड़ों में इसका उद्गम हुआ, और यह दक्षिण अफ्रीका से होकर अटलांटिक महासागर तक पश्चिम की ओर बहती है।

यह नदी दक्षिण अफ्रीका और लेसोथो के बीच और दक्षिण अफ्रीका और नामीबिया के साथ-साथ दक्षिण अफ्रीका के भीतर कई प्रांतीय सीमाओं के बीच अंतरराष्ट्रीय सीमाओं का हिस्सा है। ऑरेंज नदी सिंचाई और जलविद्युत शक्ति के लिए पानी उपलब्ध कराकर, दक्षिण अफ्रीकी अर्थव्यवस्था में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। डच खोजकर्ता रॉबर्ट जैकब गॉर्डन द्वारा डच शासक परिवार, हाउस ऑफ ऑरेंज के सम्मान में नदी का नाम ऑरेंज नदी रखा गया था।

ऑरेंज नदी दक्षिण अफ्रीका और लेसोथो के बीच की सीमा के साथ ड्रेकेंसबर्ग के पहाड़ों में, हिंद महासागर के पश्चिम में लगभग 193 किमी (120 मील) और 3,000 मीटर से अधिक की ऊँचाई पर निकलती है। लेसोथो के अंदर ऑरेंज नदी के छोर को सेनकू के नाम से जाना जाता है। सेनकू नदी के कुछ हिस्से सर्दियों में अधिक ऊंचाई के कारण जम जाते हैं। इससे नीचे की ओर सूखा पड़ता है, जो मुख्य रूप से बकरी और पशु उत्पादन को प्रभावित करता है। ऑरेंज नदी तब दक्षिण अफ्रीका के माध्यम से पश्चिम की ओर चलती है, जिससे फ्री स्टेट प्रांत की दक्षिण-पश्चिमी सीमा बनती है। इस खंड में, नदी पहले गैरीप बांध (देश में सबसे बड़ा) और बाद में वेंडरक्लोफ बांध में बहती है।

लेसोथो की सीमा से लेकर वेंडरक्लोफ बांध के नीचे तक, नदी का तल गहराई से कटा हुआ है। आगे नीचे की ओर, भूमि समतल है, और नदी का उपयोग सिंचाई के लिए बड़े पैमाने पर किया जाता है।

फ्री स्टेट के पश्चिमी बिंदु पर, किम्बरली के दक्षिण-पश्चिम में, ऑरेंज अपनी मुख्य सहायक वाल नदी से मिलती है, जो स्वयं प्रांत की उत्तरी सीमा का अधिकांश भाग बनाती है। यहाँ से, नदी दक्षिणी कालाहारी क्षेत्र के शुष्क जंगल और उत्तरी केप प्रांत में नामाक्वालैंड के माध्यम से 20 डिग्री पूर्वी देशांतर पर नामीबिया के साथ मिलने के लिए पश्चिम की ओर बहती है। यहां से, यह नदी 550 किमी के लिए पश्चिम की ओर बहती है, आठ प्रांतों और नामीबिया के करास क्षेत्र के बीच अंतरराष्ट्रीय सीमा बनाती है। सीमा पर, नदी दक्षिण अफ्रीका और नामीबिया के बीच मुख्य सीमा चौकी वियोल्सड्रिफ शहर से गुजरती है।

यह छवि केवल अंतिम 100 किमी या उससे अधिक ऑरेंज नदी को दिखाती है, जिसमें नदी के किनारे और किनारे पर जमा बजरी हीरे से समृद्ध हैं, और कई हीरे की खदानें इस खंड के साथ मौजूद हैं।

ऑरेंज दक्षिण अफ्रीका में नामीबिया और अलेक्जेंडर बे में ओरानजेमुंड (जिसका अर्थ है "ऑरेंज माउथ") के छोटे शहरों के बीच अटलांटिक महासागर में खाली हो जाती है, जो वॉल्विस बे और केपटाउन के बीच समान दूरी पर है। इसके मुंह से लगभग 33 किमी (21 मील), यह रैपिड्स और रेत सलाखों से पूरी तरह से बाधित है और आमतौर पर लंबे समय तक चलने योग्य नहीं है।

शुष्क सर्दियों में, तेजी से बहने और वाष्पीकरण के कारण नदी में पानी की मात्रा काफी कम हो जाती है। ऑरेंज के स्रोत पर, वर्षा लगभग 2,000 मिमी प्रतिवर्ष होती है, लेकिन नदी के पश्चिम की ओर बहने पर वर्षा कम हो जाती है; इसके मुहाने पर, वर्षा प्रतिवर्ष 50 मिमी से कम होती है। हालांकि, वाष्पीकरण का समर्थन करने वाले कारक पश्चिमी दिशा में बढ़ते हैं। गीले मौसम (गर्मियों)

में, ऑरेंज नदी एक तेज, भूरे रंग की धारा बन जाती है। बड़ी मात्रा में तलछट ले जाने से नदी पर सभी इंजीनियरिंग परियोजनाओं के लिए एक दीर्घकालिक खतरा है।

ऑरेंज नदी (वाल सहित) का कुल जलग्रहण क्षेत्र 973,000 वर्ग किमी से अधिक दूरी तक फैला हुआ है, यानी दक्षिण अफ्रीका के भूमि क्षेत्र के लगभग 77% (1,268,5358 वर्ग किमी) के बराबर। हालांकि, लगभग 366,000 वर्गकिमी (38%), लेसोथो, बोत्सवाना और नामीबिया में देश के बाहर स्थित हैं।

दुनिया भर के जलयोद्धाओं को विश्वास नहीं हो रहा था। वे बोले कि वर्षाजल का संरक्षण करके समुदाय स्वावलंबी बन सकता है, नदी पुनर्जीवित कैसे करें? यह विश्वास पैदा करना मुश्किल काम है, लेकिन भारत का अनुभव हममें विश्वास पैदा करता है कि, ऐसे काम किए जा सकते हैं। इसलिए हम यह काम अपनी नदियों में करने के लिए तैयार हैं। केपटाउन में 5 दिन की सफल कार्यशाला के बाद सूखाग्रस्त क्षेत्रों को भी देखा। जोहान्सबर्ग से पैलेकवैन जाकर मेंडेविन म्युनिसिपैलटी के प्रतिनिधियों व अधिकारियों के साथ उनकी चल रही तोसांग परियोजना के कार्यकर्ताओं, कृषि, पर्यावरण इंजीनियरों के साथ वहाँ के गाँव में जाकर प्रत्यक्ष कार्यविधि समझायी और तोसांग परियोजना में कमियों पर भी चर्चा हुई। उसमें आगे कैसे काम किया जाये, इस विषय पर विस्तार से विचार-विमर्श हुआ। उन्होंने मेरे सुझावों को क्रियान्वित करने पर अपनी टिप्पणी की और अंत में, मेरे साथ चर्चा करने पर क्रियान्वित करने की सहमति भी बनी।

यह तोसांग परियोजना केवल भू-जल को निकालने की परियोजना है। मैंने कहा कि भू-जल तो जल्दी खाली हो जायेगा और वर्षा का जल बह कर चला जायेगा। भू-जल से पीने व पशुओं के लिए पेयजल की व्यवस्था करना है, क्योंकि यहाँ 600 मिमी वार्षिक वर्षा है। जन घनत्व उस क्षेत्र में केवल 132 व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी. है। इतने कम घनत्व के लिए यह वर्षाजल पर्याप्त है।

इसी से हमारी पूर्ति एवं नदी की पूर्ति होती है। हमारे राजस्थान के अलवर जिले में जन घनत्व दो गुना अधिक है, वार्षिक वर्षा कम है, फिर भी हम वहाँ के लोग पानीदार बन गए हैं। इसलिए हमें यह देखना होगा कि यहाँ के जल संरक्षण में जल का वाष्पीकरण कैसे कम करें? इस हेतु मैंने वहाँ की धरती के फ्रैक्चर और भूजल भंडार प्रत्यक्ष रूप से दिखाये और समझाये। जमीन के अंदर जो सीधी और गहरी बड़ी-बड़ी दरारें होती हैं, वे वर्षा-जल को भू-जल के भंडारों के साथ जोड़ती हैं। यह सब मैंने मौके पर ले जाकर कई जगह दिखाया और समझाया। फील्ड की यह दो दिन की कार्यशाला यहाँ सम्पन्न होने के बाद भी यहाँ पानी की कमी, चारे की कमी, बेरोजगारी व पलायन की समस्या बार-बार ध्यान आकर्षित कर रही थी। बहुत सारे गाँव बेपानी होकर उजड़ चुके हैं।

वहाँ के जितने भी सरकारी काम देखे थे, उनमें अधिकतर पानी की पूर्ति करने वाली निजी कम्पनियों के द्वारा सरकारी पैसे से किये हुए काम थे। इन सभी कामों में ठेकेदारी ही प्रबल रूप से प्रत्यक्ष दिखाई दे रही थी। इसलिए वहाँ के कामों की कमियों की प्रत्यक्ष जिम्मेदारी लेने वाला कोई उपस्थित नहीं था। वहाँ की सरकार मुझे बुलाकर केवल अपने काम की प्रशंसा ही सुनना चाहती थी। मेरे द्वारा प्रत्यक्ष मौके पर दी गई टिप्पणी के कारण फिर मुझसे कोई प्रस्तुति व संस्तुति नहीं माँगी।

मैंने जो बोला उन्होंने कैसे प्रस्तुत किया होगा, मुझे कभी नहीं बताया और मैंने आग्रह भी नहीं किया। इस फील्ड की कार्यशाला के बाद वापस पिक्टोरिया पहुँचकर वहाँ के विश्वविद्यालय में यहाँ के सरकारी इंजीनियरों व संबंधित विभागों और तीसरी पार्टी मूल्यांकन करने वाले समूहों को एक साथ बुलाया, उस पर मेरी राय सुनकर दक्षिण अफ्रीका की इस पूरी यात्रा का समापन हुआ। यह यात्रा दक्षिण अफ्रीका में जल साक्षरता का अभियान चलाने की रूपरेखा तैयार करने में सफल रही। लेकिन यहाँ की सरकार कितनी गंभीरता से काम करेगी, आगे पता चलेगा। यहाँ के लोगों ने मुझे सदैव सम्पर्क में रखा। अपने किये कार्यों की जानकारी मुझे देते रहे हैं। तीन गाँवों में काम भी हुआ। यह



यात्रा सफल परिणामदायी रही ।

इस मात्र छोटे से काम से बड़ी नदी कैसे पुनर्जीवित होगी? पूरी नदी में ऐसा ही काम करना होगा, तभी ऑरेंज नदी शुद्ध सदानीरा बनेगी। अभी तो इसमें कुछ जल के प्राण हैं। यह पुनर्जीवित हो सकती है इस बात पर केपटाउन कार्यशाला में मेरा बहुत जोर था। दानदाताओं और सरकारों के गठजोड़ की प्राथमिकता को हम समझ नहीं पाते हैं। इसलिए पुनर्जीवन का बताया ठीक रास्ता और सत्ता के अपने सत्य के सामने हमारा बताया सत्य बौना रह जाता है। हमारे बताये सत्य में सत्ता (सरकारों) को अनुकूलता नहीं मिलती। प्रकृति सत्ता की अनुकूलता को नहीं मानती है, इसलिए सत्ता (सरकार) द्वारा अरबों खर्च करके भी नदी पुनर्जीवित नहीं हो रही है।



## अमेरिका के विकास ने किया ओवेन्स नदी का विनाश



ओवेन्स नदी संयुक्त राज्य अमेरिका के पूर्वी कैलिफोर्निया की लगभग 183 मील (295 किमी) लंबी एक नदी है। यह ओवेन्स घाटी में और उसके माध्यम से बहती है। सिएरा नेवादा के पूर्वी ढलान और इन्यो और व्हाइट पर्वत के पश्चिमी चेहरों के

बीच इसका एक शुष्क बेसिन है। ओवेन्स नदी 2,600 वर्ग मील (6,700 वर्ग किमी) वाटरशेड के तल पर, लोन पाइन के दक्षिण में एंडोरेइक ओवेन्स झील पर समाप्त होती है। इस नदी को अमेरिका के लॉस एन्जलिस को पानी पिलाने हेतु सम्पूर्ण रूप से पाइप में बंद करके मार दिया गया। इसके द्वारा बनाई गई प्राकृतिक झीलें जिनमें हजारों पक्षियों की जातियों का आवास था, लाखों जीवों का सहारा था, हजारों रेड इंडियन आदिवासियों का घर था, उन सबको अमेरिकन विकास ने विनाश करके उजाड़ दिया। यहाँ के उच्चतम न्यायालय की दखल से इसका पुनः विकास के नाम पर भी पुनर्जनन नहीं हो सका। मुझे चार साल तक इसके पुनर्जनन की प्रक्रिया चलाने हेतु मेरे अमेरिकन मित्रों ने बुलाया। मैंने जाकर अपने सुझाव दिये, लेकिन अमेरिका सरकार के विश्वविद्यालयी प्रयास मेरे साथ जुड़कर काम करने पर भी इस नदी को पुनर्जीवित नहीं करा सके। मैं इसे अपनी ही असफलता स्वीकार करता हूँ।

इसकी सहायक नदियाँ—स्प्रिंगवैली वॉश, सिल्वर कैन्थन क्रीक, कोल्डवाटर

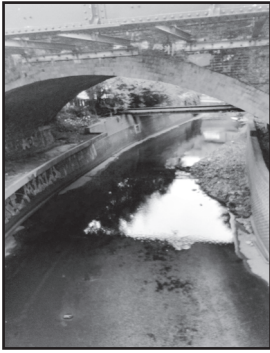
कैन्यन क्रीक, हॉट क्रीक, रॉक क्रीक, बिशप क्रीक, बिग पाइन क्रीक, बिर्च क्रीक, इंडिपेंडेंस क्रीक, लोन पाइन क्रीक आदि हैं। मैंने स्वयं इन सारी क्रीक की पदयात्रा करके दिन-रात बिताये हैं। इस नदी की सभी काऊंटी में रातें गुजारी हैं। यहाँ का आदिवासी शाकाहारी भोजन प्राप्त करके मैंने अपनी बहुत समझदारी बढ़ाई है।

1900 के दशक की शुरुआत में ओवेन्स नदी कैलिफ़ोर्निया जल युद्धों का केंद्र थी, लॉस एंजिल्स शहर और ओवेन्स घाटी के निवासियों के बीच लॉस एंजिल्स एक्वाडक्ट के निर्माण पर लड़ाई लड़ी गई थी। 1913 से, ओवेन्स नदी को लॉस एंजिल्स की ओर मोड़ दिया गया है, जिससे घाटी की अर्थव्यवस्था बर्बाद हो गई और ओवेन्स झील सूख गई। यहाँ की जैव विविधता नष्ट हुई। जलवायु परिवर्तन का दुष्प्रभाव बढ़ा है।

हजारों वर्षों से ओवेन्स नदी घाटी में सेमिनोमेडिक ओवेन्स वैली, उत्तरी पाइयूट और मूल अमेरिकियों की शोशोन जनजातियों का निवास था। नदी का स्वदेशी नाम वाकोपी था, जबकि वे ओवेन्स लेक पचेता कहलाते थे। ऊपरी ओवेन्स घाटी में कैलिफ़ोर्निया की पहली सिंचाई प्रणालियों के कुछ निशान हैं, जो पाइयूट समूहों द्वारा फसलों के छोटे पैच को पानी देने के लिए बनाई गई हैं।

ऐसा माना जाता है कि घाटी के ऊपरी हिस्से में मूल लोगों ने एक बार ओवेन्स नदी (और संभवतः इसकी प्रमुख सहायक नदियों में से एक, बिशप क्रीक) में बांधों का निर्माण स्थानीय नहरों में पानी को मोड़ने के लिए किया था। एक शिकारी-संग्रहकर्ता से एक बसे हुए, कृषि जीवनशैली में परिवर्तन संभवतः लगभग 1,000 साल पहले ओवेन्स घाटी की जलवायु के शुष्क होने का परिणाम है। ऐसा यहाँ के अभिलेख और लोग बोलते हैं।

आमतौर पर, मूल अमेरिकियों ने बोल्डर, गंदगी, नरकट, घास या अन्य तत्वों सहित सामग्री से वसंत में नदी या अन्य सहायक नदियों के पार बांध बनाए



थे। तब बांध के नीचे का जलमार्ग सूख जाता है, और नहर के द्वारा सिंचित भूमि की ओर ले जाने वाला पानी, आमतौर पर कुछ वर्ग मील से अधिक नहीं होता है। बाँध के बंद होने और नदी के सूखने के तुरंत बाद, सूखी नदी के तल पर फँसी मछलियों को इकट्ठा करके खाया जाता था। इससे पहले कि सर्दियों के तूफान बाढ़ का कारण बनते, बाँध टूट जाता, जिससे नदी फिर से प्राकृतिक रूप से प्रवाहित हो जाती, जबकि मछलियों को सूखे नदी चैनल में एकत्र किया जाता। तब तक, सर्दियों के लिए पर्याप्त भोजन जमा हो जाएगा, जिसमें फसल भूमि परती रहेगी। परती भूमि में अच्छी फसल होती है। यह ज्ञान यहाँ के आदिवासियों में भी पुराना था। जंगलों, फसलों, नदियों से ही इनकी खाद्य पूर्ति का साझा तंत्र विकसित हुआ था।

उन्नीसवीं शताब्दी में, ओवेन्स नदी को पहली बार अमेरिकी खोजकर्ताओं ने देखा था। पहले खोजकर्ताओं में से एक जॉन सी फ्रेमोंट थे, जिन्होंने 1845 में ओवेन्स घाटी में एक कार्टोग्राफिक अभियान का नेतृत्व किया था। उनकी पार्टी में किट कार्सन, एडवर्ड केर्न और रिचर्ड ओवेन्स शामिल थे, जिनके लिए नदी, झील और घाटी का नाम रखा गया था। अन्य प्रसिद्ध साहसी लोगों में जेडेदिया स्मिथ और जोसेफ आर. वाकर शामिल थे, जो 1800 के दशक में भी इस क्षेत्र में आए थे।

धीरे-धीरे, नदी के परिवेश को किसानों और पशुपालकों ने बसाया। घाटी में कभी भी बहुत बड़ी आबादी जमा नहीं हुई, लेकिन खनन गतिविधियों ने क्षेत्र के नए निवासियों के लिए महत्वपूर्ण आय अर्जित की। अयस्क को उत्तर से ओवेन्स नदी के नीचे भेज दिया गया था, और डेथ वैली से पूर्व में बोरेक्स और चांदी भी। 1924 तक, ओवेन्स झील अभी भी इतनी बड़ी थी कि एक स्टीमबोट नौका इसके पूर्व और पश्चिम की ओर से चलती थी, जो तीन घंटे में माल और

यात्रियों को पार कराती थी, जो झील के अर्ध-परिक्रमण के लिए आवश्यक तीन दिनों से भी कम थी। 1872 में, लोन पाइन भूकंप ने ओवेन्स घाटी में 27 लोगों को मार डाला था।

पहले यहाँ भूकम्प के अतिरिक्त प्राकृतिक आपदा नहीं थी। अब तो यह क्षेत्र जलवायु परिवर्तन के कारण विकास के विनाश की मानव निर्मित आपदाओं का बड़ा केन्द्र बन रहा है। डेडवैली जो इसी वैली का हिस्सा है; उसका तापक्रम 55 डिग्री तक पहुँचता है। पूरी वैली नंगी होने से सूरज की लालगर्मी का प्रभाव बहुत अधिक बढ़ जाता है। इस सब मानव के लालची विकास की प्रक्रिया के परिणामस्वरूप ही कोरोना जैसा तूफान पैदा हो रहा है।

2006 की सर्दियों में, लॉस एंजिल्स डिपार्टमेंट ऑफ वॉटर एंड पावर ने कोर्ट के आदेश से नदी में प्री-एक्वाडक्ट प्रवाह को बहाल करने के नाम पर झील में रोड बनवाये, जिससे सेन्ड को दबाने हेतु बड़े टैंकर से जल का छिड़काव करते हैं। इससे ओवेन्स रिवर गॉर्ज, घाटी में नदी के तल और ओवेन्स लेक को एक छोटी पानी की राशि शामिल करने की अनुमति तो मिली।

नदी दक्षिण-पश्चिमी मोनो काउंटी में सिएरा नेवादा में उद्गम होकर, मोनो झील के दक्षिण में लगभग 15 मील (24.1 किमी) और योसेमाइट घाटी से 35 मील (56.3 किमी) पूर्व में बहती है। यह झील क्रॉली जलाशय के माध्यम से लांग वैली काल्डेरा में दक्षिण पूर्व में बहती है, फिर 20 मील लंबी (32 किमी) ओवेन्स नदी के माध्यम से उतरती है। यहाँ आसपास के कृषि क्षेत्र को सिंचित करने के लिए इसे कई खाइयों के माध्यम से मोड़ दिया जाता है।

मैंने मोनोलेक यानी इस नदी के उद्गम से ही पदयात्रा शुरू की थी। इसकी कई जलधाराओं के मोड़ खेती के लिए मैंने देखे हैं। ये सारे मोड़ कार्य लॉस एंजिल्स से आये बड़े-शहरी नए जमीन्दारों ने आदिवासियों की जमीन खरीदकर, छीनकर, आदिवासियों को उनकी जमीनों से भगाकर किये हैं। यह

दक्षिण—दक्षिण पूर्व में ओवेन्स घाटी के माध्यम से पश्चिम में सिएरा नेवादा और पूर्व में व्हाइट और इन्यो पर्वतों के बीच, बिग पाइन के पीछे से बहती है। बिग पाइन के दक्षिण, दक्षिण—पूर्व में लगभग 14 मील (22.5 किमी), को छोड़ नदी का शेष अधिकांश भाग लॉस एंजिल्स एक्वाडक्ट में बदल दिया गया है, जो 1913 में लॉस एंजिल्स की नगरपालिका, मनोरंजन और कृषि जल की आपूर्ति के लिए तैयार किया गया था। शेष नदी दक्षिणी घाटी से होकर बहती है, जो लोन पाइन के सामने लॉस एंजिल्स एक्वाडक्ट से घिरी हुई है।

ओवेन्स घाटी के दक्षिणी छोर पर मुख्य रूप से शुष्क ओवेन्स झील के तल में नदी प्रवेश करती है। इसी झील में हमने पाँच दिन का शिविर किया था। चारों कोनों पर तथा एक दिन इसके बीच में भी रहे हैं। इस झील की बहुत बारीक गाद हवा में उड़कर फेफड़ों को खराब करती है। इसीलिए यहाँ के आदिवासियों ने मिलकर जनहित में उच्चतम न्यायालय में याचिका की थी, जिसमें उनकी जीत हुई।

ओवेन्स नदी उत्तरी अमेरिका के ग्रेट बेसिन के बेसिन और रेंज प्रांत के हिस्से से होकर बहती है। ओवेन्स घाटी एक हड़पने वाली या दरार घाटी है, भूमि का एक खंड जो दो समानांतर के बीच है, नीचे गिरा है, जबकि दोनों ओर की भूमि बढ़ी है। इसके परिणामस्वरूप वर्तमान घाटी की सपाट मंजिल और खड़ी, ऊँची दीवारें बन गई हैं। पश्चिम की ओर सिएरा नेवादा और पूर्व में इन्यो पर्वत और सफेद पर्वत के साथ, किसी भी श्रेणी की सबसे ऊँची चोटियों के साथ 14,000 फीट (4,300 मीटर) से अधिक और घाटी की मंजिल पर तुलनात्मक रूप से कम 3,000 से 4,000 फीट (910 से 1,220 मीटर) पर ओवेन्स नदी संयुक्त राज्य अमेरिका की सबसे गहरी घाटियों में से एक में बहती है।

उत्तर में आगे, ओवेन्स नदी बेसिन में मुख्य रूप से आग्नेय चट्टानों और पिछली ज्वालामुखी गतिविधियों के विशाल अवशेष शामिल हैं। नदी का ऊपरी 30 मील (48 किमी) लॉन्ग वैली काल्डेरा से होकर गुजरता है, जो लगभग 760,000



साल पहले ज्वालामुखी विस्फोट से बना एक विशाल 20-मील (32 किमी) चौड़ा गड्ढा है। विस्फोट के परिणामस्वरूप राख के बादल ने दक्षिण-पश्चिमी संयुक्त राज्य के अधिकांश हिस्से को लील लिया, जिसमें दस अमेरिकी राज्यों के हिस्से भी शामिल

थे। मैमथ माउंटेन, दक्षिण-पश्चिम (अधिक लोकप्रिय रूप से एक प्रमुख स्की क्षेत्र के रूप में जाना जाता है) भी लॉन्ग वैली काल्डेरा से संबंधित विस्फोटों से बना है। काल्डेरा के उत्तर में, मोनो झील क्षेत्र तक फैले हुए, मोनो-इन्यो क्रैटर्स की शृंखला है।

पिछले हिमनदों की अवधि के अंत में प्लीस्टोसिन के दौरान, सिएरा नेवादा और इन्यो/व्हाइट पर्वत में पिघलने वाले ग्लेशियरों ने ओवेन्स नदी में बड़ी मात्रा में अपवाह को खिलाया, जिससे इसका वर्तमान आकार कई गुना बढ़ गया। नदी की बढ़ी हुई मात्रा के कारण ओवेन्स झील भी बढ़ गई, अंततः घाटी के दक्षिण की ओर मोजावे रेगिस्तान में फैल गई। प्राचीन परित्यक्त नदी चैनलों से पता चलता है कि, विस्तारित ओवेन्स नदी दक्षिण में चीन झील तक, फिर पूर्व में सियरल्लस झील में, उत्तर में पनामिंट घाटी (जहाँ इस पैनामिंट झील का निर्माण किया गया) और अंत में पूर्व में डेथ वैली और प्राचीन झील मैन्ली में चली गई। इस महान अंतर्देशीय समुद्र को दक्षिण से मोजावे नदी, पूर्व से अमरगोसा नदी और उत्तर से डेथ वैली वाश द्वारा भी पोषित किया गया था।

अपेक्षाकृत कम समय के दौरान, ओवेन्स नदी एक विशाल आंतरिक जल निकासी व्यवस्था का हिस्सा बन गई, जो पूर्व से पश्चिम तक 8,000 वर्ग मील (21,000 वर्ग किमी) से अधिक फैली हुई थी। अपवाह के चरम के दौरान, इस विशाल बेसिन का पानी दक्षिण-पूर्व की ओर जाने वाली घाटी के माध्यम से कोलोराडो नदी तक भी निकल सकता था।



1948 में बेकर क्रीक में कैलिफोर्निया डिपार्टमेंट ऑफ फिश एंड गेम द्वारा बीवर को ओवेन्स घाटी में फिर से प्रविष्ट किया गया और तब से यह ओवेन्स घाटी में फैल गया है। हालांकि यह विवादास्पद है, क्योंकि क्या बीवर कभी ओवेन्स घाटी के

मूल निवासी थे, इस बात के प्रमाण बढ़ रहे हैं कि वे सिएरा नेवादा के पूर्वी ढलान के मूल निवासी थे। विशेष रूप से, वाकर झील के उत्तरी पाइयूट, हनी लेक और पिरामिड झील में ऊदबिलाव सु-आई-तू-ति-कुट-तेह के लिए एक शब्द है।

इसके अलावा, फर ट्रैपर स्टीफन हॉल मीक ने 1833 में ट्रॉकी नदी पर अपना जाल बिछाया, जो दृढ़ता से बताता है कि उसने बीवर या बीवर साइन देखा था। सबूतों की इस शृंखला का समर्थन करते हुए, टप्पे ने 1941 में एक चश्मदीद गवाह के तौर पर इसे दर्ज किया, जिसने कहा था कि 1892 तक एल्पाइन काउंटी में कार्सन नदी और उसकी सहायक नदियों के ऊपरी हिस्से में बीवर बहुतायत में थे, जब वे भारी जाल में फँस गए। यह क्षेत्र जंगली जानवरों व जल जानवरों से समृद्ध था। विकास ने यहाँ की जैवविविधता को नष्ट कर दिया। मेरी चार वर्ष की 15 से 20 दिन की यात्राओं में मुझे इस नदी क्षेत्र में गीदड़, बिलाव बहुत कम दिखाई दिये, अन्य कुछ कभी नहीं दिखाई दिया।

2011 में, लॉस एंजिल्स डिपार्टमेंट ऑफ वॉटर एंड पावर (LADWP) ने ओवेन्स वैली से बीवर (कैस्टर कैनाडेन्सिस) को फँसाने का फैसला किया, यह दावा करते हुए कि, बीवर लॉस एंजिल्स में पानी के अपने डायवर्सन में प्रवाह को बाधित कर रहे हैं। यह निर्णय 1997 में एलएडीडब्ल्यूपी और इन्वो काउंटी जल विभाग द्वारा कमीशन किए गए एक स्वतंत्र मूल्यांकन के विपरीत है, जहाँ यह सिफारिश की गई थी कि बीवर को उचित आबादी में बनाए रखा जाए और उनके बांधों को छोड़ दिया जाए, क्योंकि "बीवर गतिविधि के परिणामस्वरूप



बहुत अधिक विलो को हटा दिया गया है, और अन्य झाड़ी और जंगली वनस्पतियाँ और बाँध अनुकूल ट्यूब परिस्थितियों का निर्माण करते हैं और मछली के प्रजनन के आवास को कम करते हैं। वे महत्वपूर्ण मछली पालन आवास, मेसिक घास के मैदान भी प्रदान करते हैं, और अन्य रिपेरियन प्रजातियों के विकास को बढ़ावा देते हैं। यह सबसे अधिक संभावना है कि, बीवर बांधों के भौतिक निष्कासन के परिणामस्वरूप पर्यावरणीय लाभों की तुलना में प्रतिकूल पर्यावरणीय प्रभाव अधिक होंगे।”

मैं 28 सितंबर 2015 को पहली बार लॉस एन्जिल्स गया था। वहीं से ट्रीमेन के साथ ओन्स नदी के उद्गम स्थल मोनोलेक गया था। इस नदी के आधार पर बसे औसवैली में पहले 25 हजार रेड इंडियन सैंकड़ों काउंटियों में रहते थे। अभी इनकी संख्या घटने से, काउंटी भी घट गये और लगभग 5 हजार ही रेड इंडियन्स बचे हैं। अमेरिका ने इन्हें अब यहाँ आजादी से रहने का काऊँटी को अधिकार दिया है। अब इन्हें अपनी सांस्कृतिक आजादी से रहने दिया जाता है। अब इनकी जमीन भी बहुत कम बची है।

मैंने यहाँ कई ऐसी जगह काऊँटी देखी जहाँ इनकी राजधानी थी, इनके कम्पून के अपने ही राजा होते थे। ये प्रकृति के साथ, प्रकृति का सम्मान करके, आनंद से रहते और जीते थे। यह नदी घाटी बहुत ही सुन्दर है। यहाँ के मूल आदिवासी आज भी बहुत सरल, सहज और स्वतंत्रता से जीने वाले लोग हैं। मैं यहाँ के लोगों के हालात जानने के लिए रात-दिन इनके साथ रहा और उन्हें समझा। उनके साथ रहकर ज्ञानवर्धन हुआ। इनसे मैंने अपने आदिवासियों के साथ तुलनात्मक जानकारी भी बढ़ाई थी। उनकी समानता का एहसास मुझे हुआ था। भारतीय आदिवासी और अमेरिकन आदिवासियों का नदी और प्राकृतिक व्यवहार एक जैसा ही है।

इस नदी के किनारे बसे लोग लॉस एन्जलिस, कैलिफोर्निया को विकसित करते हैं। यहाँ की पानीदार नदियों को इन्होंने कैसे मार दिया, यह देखना और

समझना मेरे लिए बहुत जरूरी था। फिर पलायन कैसे शुरू होता है? अमेरिका की ओन्सवैली में जाकर देखा तो मुझे स्पष्ट दिखाई देने लगा कि विकास कैसे विनाश का कारण बन जाता है। मैंने इस नदी घाटी को समझने हेतु पूरे चार साल लगाये। हर वर्ष 20 दिन इस घाटी में पदयात्रा करके देखा और जाना है। एक तरफ प्रत्यक्ष देखा, दूसरी तरफ इनके अभिलेख पढ़े। आदिवासियों के साथ रात-दिन उनके काऊंटी और जंगलों में रहकर ही इस घाटी को जाना और समझा है।

जिस तरह से हमारे भारत के आदिवासी प्रकृति और पंचमहाभूतों की पूजा करते हैं, ठीक वैसे ही यहाँ के आदिवासी भी करते हैं। इस दौरान मुझे अमेरिका के आधुनिक विकास की अंधता भी समझ में आ गई। इन्होंने प्रकृति व नदी की हत्या करके उसे ठीक करने के नाम पर पूरी नदी को पाइपलाइन में बंद करके लॉस एन्जिल्स को पानी पिलाने का काम किया है। रास्ते की सारी झीलें सूख कर मर गई। इन्होंने नदी को पाइप में डालने के लिए नए बाँध बनाये और पानी को नियंत्रित करके पाइपलाइन में डालकर शहरों को पानी पिलाना शुरू किया।

यहाँ नदियों व झीलों को जलाधिकार नहीं है। यहाँ ओन्स झील में बड़ी-बड़ी सड़कें बनाई गई हैं, जिनमें धूल को जमाने के लिए पानी के बड़े-बड़े टैंकर चलते हैं। इनको चलाने हेतु ऊँची सड़क बनाई जा रही थी। यहाँ की सरकार कम्पनियों व ठेकेदारों के बलबूते पर ही चल रही है। यहाँ के लोग नियम मानकर काम करने की तैयारी में तो हैं, पर उनमें लोक सम्मान का भाव नहीं है। यहाँ के ट्राईबल पर बहुत अत्याचार हुआ है। आदिवासी कानून से डरते हैं। यहाँ कानूनों द्वारा ही अन्याय होता है। यहाँ के कानून प्रकृति और मानवता के विरोधी हैं।

ओंसवैली पर सरकार ने जो काम किये हैं, उनमें नदी को जगह-जगह से बाँध कर मार दिया गया है। कैलिफोर्निया के मरुस्थल और भारत के मरुस्थल में कितना अंतर है, यह सभी कुछ समझना आरंभ किया। हमारे मरुस्थल के लोगों

का जीवन और उनका जीवन, हमारा पलायन और उनका पलायन, यहाँ से उजड़े आदिवासी कहाँ गए, आदिवासी और धनिक अमेरिकन के युद्ध की बहुत सी सच्ची कहानियाँ सुनीं। कई काऊंटी में रात को रहकर इनके उजाड़ की कहानियों से युद्ध को जाना। आज भी काऊंटी में युद्ध की यादें हैं। जहाँ युद्ध के विषय में लिखा था कि यह युद्ध नहीं, लोगों को मार-मार कर निकालना था। लॉस एन्जिल्स शहर के एक कोने से, जहाँ यह नदी समुद्र में मिलती है, वहाँ तक जाकर मैंने देखा है।



यह नदी बहुत समृद्ध संस्कृति की नदी थी। विकास ने इसे नष्ट कर दिया। विकास के विनाश की लीला का जीता जागता उदाहरण अब नदियों में देखना हो तो हम अमेरिका की ओवेंस नदी को देख सकते हैं। इस नदी को पुनर्जीवित करने की चेतना जगाने वाली वाकिंग वाटर यात्रा

और मेरा वहाँ बार-बार जाना भी क्यों सफल नहीं हुआ? जब इसका विचार करता हूँ तब रावणीय सत्ता अमेरिका की सरकार और अमेरिका का वाटर एवं पावर बोर्ड ध्यान में आता है, जिस पर हमारे सत्याग्रह का और हमारी चेतना यात्रा का प्रभाव नहीं पड़ा। उस सत्ता के सत्य के सामने हमारा सत्य प्रभावी नहीं बना। अमेरिका के सत्य को और अपने सत्य को जब समता से देखता हूँ, तब समझ आता है कि, सत्ता का सत्य ज्यादा प्रभावी है। आज का लोक या प्राकृतिक सत्य कमजोर मानकर छोड़ दिया जाता है। उस पर अब सत्ता और सरकार ध्यान नहीं दे रही है।

अगस्त 2015 से अक्टूबर 2018 तक प्रत्येक वर्ष 20-20 दिन अमेरिका में जाकर इस नदी को पुनर्जीवित कराने हेतु हमने पर्यावरणीय प्रवाह ओवेन्स नदी को देने की माँग की। इस हेतु चेतना जगाने, संगठन निर्माण करके सत्याग्रह करने से पूर्व यहाँ के मेयर व अन्य नेताओं, अधिकारियों, सामाजिक नेताओं,

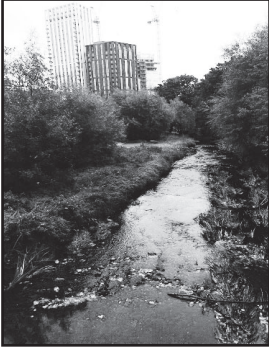
विश्वविद्यालयों के अध्यक्षों, प्राध्यापकों, सीनेटरों से स्वयं मिला हूँ। सत्याग्रह की सभी तैयारी के बाद भी ओवेन्स नदी पुनर्जीवन का सत्याग्रह सफल नहीं हुआ।

अमेरिका की न्यायपालिका ने इस नदी को पर्यावरणीय प्रवाह का जलाधिकार दिया। कार्यपालिका जैसे भारत में करती है, वैसा ही इस नदी के साथ अमेरिका की नौकरशाही और इंजीनियरिंग ने किया। नदी के नाम पर खर्च खूब किया, लेकिन नदी को पुनर्जीवन नहीं मिला।

मैंने कैलिफ़ोर्निया के सरकारी राज्य विश्वविद्यालयों में यहाँ के अध्यक्ष, मेयर, नगरपालिका नेताओं, सिनेटरों को बहुत ही खरी बोली में कहा “अमेरिका आने से पहले मैं अमेरिका को विकसित देश मानता था। ओवेन्स नदी के साथ किए गए जघन्य अपराध देखकर, लगा यह देश विकास के नाम पर विनाश करने में दुनिया का सबसे बड़ा उदाहरण है।” यह बात कहना बहुत कठिन था, पर मैंने कहा और मेरी बात सभी ने सुनी। मुझसे बहुत नेताओं ने, मेयर ने, अधिकारियों ने मेरे भाषण के बाद बात भी की। लेकिन ओवेन्स आज भी पाइप में बंद है। यह लॉस एन्जिल्स को पानी पिलाती है। हमारी गंगा जी के साथ भी दिल्ली को पानी पिलाने के लिए ऐसा ही हो सकता है? मैं डरा नहीं हूँ। यहाँ प्रो. जी. डी. अग्रवाल, शिवानंद सरस्वती जैसे व्यक्ति माँ को बचाने हेतु बलिदान के लिए तैयार हैं। ओवेन्स में किसी ने ओवेन्स नदी के लिए बलिदान नहीं किया था, इसलिए मर वह गई थी। माँ गंगा नहीं मरेगी।



## फिलीपींस की पासिग नदी और प्रदूषण मुक्ति के तीन दशक



पासिग नदी फिलीपींस की नदी है, जो लगुना डे बे को मनीला खाड़ी से जोड़ती है। 25.2 किलोमीटर (15.7 मील) तक फैली यह नदी, फिलीपींस की राजधानी मनीला और इसके आसपास के शहरी क्षेत्र को उत्तरी और दक्षिणी हिस्सों में विभाजित करती है। इसकी प्रमुख सहायक नदियाँ मारीकिना नदी और सैन जुआन नदी हैं। पासिग नदी का कुल जल निकासी बेसिन, जिसमें लगुना डे बे का बेसिन भी शामिल है, 4,678 वर्ग किलोमीटर (1,806 वर्ग मील) में फैला हुआ है।

पासिग नदी तकनीकी रूप से एक ज्वारीय मुहाना है, क्योंकि प्रवाह की दिशा मनीला खाड़ी और लगुना डे बे के बीच जलस्तर के अंतर पर निर्भर करती है। शुष्क मौसम के दौरान, नदी के प्रवाह की दिशा ज्वार पर निर्भर होने के कारण लगुना डे बे में जलस्तर कम होता है। गीले मौसम के दौरान, जब लगुना डे बे का जलस्तर अधिक होता है, तो प्रवाह मनीला खाड़ी की ओर उलट जाता है।

पासिग नदी स्पेनिश मनीला के लिए एक महत्वपूर्ण परिवहन मार्ग और पानी का स्रोत हुआ करती थी। लापरवाही और औद्योगिक विकास के कारण, नदी बहुत प्रदूषित हो गई है और पारिस्थितिकीविदों द्वारा इसे जैविक रूप से मृत (यानी, जीवन को बनाए रखने में असमर्थ) माना जाता है। पासिग नदी पुनर्वास आयोग

(पीआरआरसी), जिसे पुनर्वास प्रयासों की निगरानी के लिए स्थापित किया गया था, नदी, क्लीन एंड ग्रीन फाउंडेशन, इंक. जैसे निजी क्षेत्र के संगठनों द्वारा समर्थित है, जिसने 1990 के दशक में पिसो पैरा सा पासिग (फिलिपिनो: "ए पेसो फॉर पासिग") अभियान शुरू किया था।

पासिग नदी आमतौर पर उत्तर-पश्चिम की ओर लगभग 25 किलोमीटर (15.5 मील) के लिए फिलीपींस की सबसे बड़ी झील, लुज़ोन द्वीप के दक्षिणी भाग में मनीला खाड़ी तक, लगुना डे बे से बहती है। झील से, नदी पासिग में प्रवेश करने से पहले, टैगुइग और टायटे, रिज़ल के बीच चलती है। पासिग नदी का यह हिस्सा, मारीकिना नदी की सहायक नदी के साथ संगम तक, नर्पिदन नदी या नर्पिदन चैनल के रूप में जाना जाता है।

वहाँ से, पासिग के माध्यम से टैगुइग नदी के साथ यह संगम तक बहती है। यहां से, यह उत्तर में मांडलुयोंग और दक्षिण में मकाती के बीच की सीमा बनाती है। मांडलुयोंग और मनीला में फिर से पश्चिम की ओर मुड़ने से पहले, अपनी अन्य प्रमुख सहायक नदी, सैन जुआन नदी में शामिल हो जाती है, और फिर खाड़ी में खाली होने से पहले मनीला के केंद्र के माध्यम से बहती है।

नदी और उसकी सहायक नदियों का अधिकांश भाग पूरी तरह से राजधानी के महानगरीय क्षेत्र मेट्रो मनीला के भीतर स्थित है। पासिग नदी को विभाजित करने वाला एकमात्र द्वीप इस्ला डी कॉन्वालेसेनिया मनीला में पाया जा सकता है।

इसकी प्रमुख सहायक नदी दिलिमन क्रीक है। मनीला शहर के भीतर, विभिन्न एस्ट्रोस (नहरें) शहर के माध्यम से क्रॉस-क्रॉस करते हैं और उत्तर में तुल्लाहन नदी और पश्चिम में परानाक नदी से जुड़ते हैं।

एक प्रमुख नदी जो लागुना डे बे को बहाती है, वह है तागुइग नदी, जो पेटरोस

नदी बनने से पहले तागुइंग में प्रवेश करती है। यह पेटरोस और मकाती की नगर पालिकाओं के बीच की सीमा है। पेटरोस नदी फिर संगम में प्रवेश करती है, जहां नपिंदन चैनल और मारीकिना नदी मिलती है। मारीकिना नदी पासिग नदी की दो प्रमुख सहायक नदियों में से बड़ी है, और यह रिज़ल के पहाड़ों से दक्षिण की ओर बहती है और मारीकिना घाटी से होकर कटती है। सैन जुआन नदी उस पठार से होकर बहती है, जिस पर क्वेज़ोन सिटी खड़ा है। इसकी प्रमुख सहायक नदी दिलिमन क्रीक है।

मनीला शहर के भीतर, पासिग नदी परिवहन के एक महत्वपूर्ण साधन के रूप में कार्य करती थी। यह मनीला की जीवनरेखा और आर्थिक गतिविधि का केंद्र थी। प्रारंभिक फिलीपींस के इतिहास में कुछ सबसे प्रमुख राज्य, जिनमें नामायन, मेनीला और टोंडो के राज्य शामिल हैं, नदी के किनारे बड़े हुए, जिससे उनको जीवन और धन का स्रोत प्राप्त हुआ। जब स्पैनिश ने मनीला को सुदूर पूर्व में अपनी औपनिवेशिक संपत्तियों की राजधानी के रूप में स्थापित किया, तो उन्होंने इसके मुहाने के पास पासिग नदी के दक्षिणी तट पर दीवारों वाले शहर इंद्रामुरोस का निर्माण किया।

फिलीपीन्स दक्षिण-पूर्व एशिया में स्थित एक देश है। इसका आधिकारिक नाम 'फिलीपीन्स गणतंत्र' है। उसकी राजधानी मनीला है। पश्चिमी प्रशांत महासागर में स्थित 7107 द्वीपों से मिलकर यह देश बना है। फिलीपीन द्वीप-समूह पूर्व में फिलीपीन्स महासागर से, पश्चिम में दक्षिण चीन सागर से और दक्षिण में सेलेबस सागर से घिरा हुआ है। इस द्वीप-समूह से दक्षिण पश्चिम में देश बोर्नियो द्वीप के करीबन सौ किलोमीटर की दूरी पर बोर्नियो द्वीप और सीधे उत्तर की ओर ताइवान है।

इसका इतिहास देखें तो, 8वीं शताब्दी में चीनी व्यापारियों के आगमन से लेकर 1914 में फिलिपींस-अमेरिका लड़ाई के बाद युद्ध के हालात ठीक हुए और 1935 में फिलीपीन्स को अमेरिका राष्ट्रमंडल का दर्जा दे दिया गया, जिससे

अधिक स्वायत्तता मिल गयी। 4 जुलाई 1946 में द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद इसे पूर्ण स्वतंत्रता मिल गयी।

6 करोड़ से अधिक की आबादी वाला यह देश विश्व की 12वीं सबसे अधिक जनसंख्या वाला देश है। इस देश का क्षेत्रफल 299764 वर्ग किलो मीटर है। इसके द्वीप समूहों में से अधिकतर पहाड़ी द्वीप ज्वालामुखी मूल के हैं और उष्णकटिबंधीय वर्षा वनों से ढंके हुए हैं। यहाँ की सबसे बड़ी नदी कैंगयान है। इस देश में ज्वालामुखीय प्रकृति के कारण यहाँ खनिज भंडार बहुतायत में हैं। भू-तापीय ऊर्जा, जो ज्वालामुखी गतिविधियों का एक अन्य उत्पाद है, यहाँ अच्छी तरह से उपयोग किया जाता है। यहाँ की अर्थव्यवस्था खेती पर आधारित अर्थव्यवस्था से सेवा और विनिर्माण पर आधारित अर्थव्यवस्था में परिवर्तित हो रही है। यहाँ के 65 प्रतिशत लोग खेती, 20 प्रतिशत लोग औद्योगिक व अन्य श्रम एवं सेवा क्षेत्र में लगे हुए हैं।

जनसंख्या, शहरीकरण और औद्योगीकरण में तेजी से वृद्धि के साथ, फिलीपींस में जल की गुणवत्ता विशेष रूप से घनी आबादी वाले क्षेत्रों, औद्योगिक और कृषि गतिविधियों के क्षेत्रों में कम हो जाती है। यहाँ पानी आपूर्ति स्थापित पंप और पाइपलाइनों के माध्यम से प्रदान की जाती है। यहां की सरकारी एजेंसी, स्थानीय संस्थान, गैर-सरकारी संगठन और अन्य निगम मुख्य रूप से देश में जल आपूर्ति और स्वच्छता के संचालन व प्रशासन में प्रभारी हैं। यहाँ पानी की गुणवत्ता एक महत्वपूर्ण समस्या बन कर उभर रही है। यहां के जल की गुणवत्ता निर्धारित मानकों को पूरा नहीं करती है। नतीजतन, देश में पानी की बीमारियाँ गंभीर सार्वजनिक स्वास्थ्य के लिए चिंता का विषय बनी हुई हैं। दूषित पेयजल के कारण हर साल लगभग 4200 लोग मर जाते हैं।

द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद, बड़े पैमाने पर जनसंख्या वृद्धि, बुनियादी ढांचे के निर्माण, और मनीला के उपनगरों में आर्थिक गतिविधियों के फैलाव ने नदी को उपेक्षित छोड़ दिया। नदी के किनारे अनौपचारिक बसने वालों को आकर्षित



करते थे और शेष कारखानों ने अपने कचरे को नदी में फेंक दिया, जिससे यह प्रभावी रूप से एक विशाल सीवर सिस्टम बन गया। औद्योगीकरण ने पहले ही नदी को प्रदूषित कर दिया था।

1930 के दशक में, पर्यवेक्षकों ने नदी के बढ़ते प्रदूषण पर ध्यान दिया, क्योंकि लगुना डे बे से मछली का प्रवास कम हो गया था। 1960 के दशक में लोगों ने नदी के पानी का इस्तेमाल लॉन्ड्रिंग के लिए करना बंद कर दिया, और नौका परिवहन में गिरावट आई। 1970 के दशक तक, नदी से आक्रामक गंध आने लगी थी और 1980 के दशक में नदी में मछली पकड़ने पर प्रतिबंध लगा दिया गया था। 1990 के दशक तक, पासिग नदी को जैविक रूप से मृत मान लिया गया।

ऐसा अनुमान है कि पासिग नदी में लगभग 60–65 प्रतिशत प्रदूषण घरेलू कचरे से आता है, जो नदी की सहायक नदियों में बहा दिया जाता है। फिलीपींस में ग्रामीण क्षेत्रों में बढ़ती गरीबी ने बेहतर अवसरों की तलाश में मेट्रो मनीला की ओर पलायन को प्रेरित किया है। इसके परिणामस्वरूप तेजी से शहरी विकास, भीड़भाड़ और भूमि व नदी के किनारे भीड़भाड़ हुई, जिससे यह नदी और इसकी सहायक नदियाँ वहाँ रहने वाले अनौपचारिक बसने वालों के लिए डंपिंग ग्राउंड बन गईं। नदी के करीब स्थित उद्योगों (जैसे चर्मशोधन कारखाने, कपड़ा मिल, खाद्य प्रसंस्करण संयंत्र, आसवनी, रासायनिक और धातु संयंत्र) से लगभग 30–35 प्रतिशत नदी प्रदूषण उत्पन्न होता है, जिनमें से कुछ में जल उपचार की सुविधा नहीं है। भारी धातु प्रदूषकों को दूर करने में सक्षम है। बाकी प्रदूषक नदियों में फेंके गए ठोस कचरे से बने होते हैं। मेट्रो मनीला में प्रतिदिन 7,000 टन कचरा उत्पन्न होने की सूचना मिली है। फिलीपींस के पॉलिटेक्निक विश्वविद्यालय के शोधकर्ताओं द्वारा किए गए एक अध्ययन में, नदी माइक्रोप्लास्टिक से भी दूषित है।

नदी को पुनर्जीवित करने के प्रयास दिसंबर 1989 में डेनिश अधिकारियों

की मदद से शुरू हुए। पासिग नदी पुनर्वास कार्यक्रम (PRRP) की स्थापना पर्यावरण और प्राकृतिक संसाधन विभाग के साथ डेनिश अंतर्राष्ट्रीय विकास सहायता (DANIDA) के समन्वय के साथ मुख्य एजेंसी के रूप में की गई थी। 1999 में, राष्ट्रपति जोसेफ एस्ट्राडा ने पुराने PRRP को अतिरिक्त विस्तारित शक्तियों जैसे कचरे के प्रबंधन और अवैध निवासियों के पुनर्वास के साथ PRRC की स्थापना के लिए कार्यकारी आदेश संख्या 54 पर हस्ताक्षर किए।

फिलीपीन्स की मेरी सबसे पहली यात्रा अगस्त 2001 में, जब मैं मैग्सेसे पुरस्कार लेने गया, तब हुई थी। उसके बाद वहाँ मुझे कई बार बुलाया गया। जब मैं पहली बार फिलीपीन्स गया था, तब वहाँ की राष्ट्रपति ग्लोरिया मैकापगल अरोयो ने मुझसे बहुत निजी तौर पर और वही भारत पुरस्कार समारोह के भाषण में मुझे संबोधित करते हुए कहा कि, आपने भारत में मरी हुई नदियों को पुनर्जीवित किया है। हमारी राजधानी मनीला शहर के बीचों-बीच पासिग नदी बहती है, वह बहुत ही प्रदूषित हो गयी है। उसके किनारे खड़ा होना भी संभव नहीं है। यह नदी हमारी राजधानी को दो भागों में बाँटती है। मेरे बचपन में यह नदी बड़ी स्वर्णिम थी, लेकिन अब गंदे नाले के रूप में बहती है। आप हमारी इस नदी को निर्मल बनाने में मदद करिए। मैंने उनका यह प्रस्ताव स्वीकार किया। उन्होंने इस काम के लिए वहाँ कई बार बुलाया। कुछ बहुत अच्छे काम इस नदी में शुरू हुए।

इस नदी को अतिक्रमण मुक्त करना सबसे कठिन काम था। यह कार्य अच्छे से राष्ट्रपति की देखल से सरकार द्वारा हुआ और नदी को पुनर्जीवित करने के लिए प्राकृतिक तौर पर कई तरह की वनस्पतियाँ काम में ली गयीं। फिर धीरे-धीरे नदी में मिलने वाले गंदे जल के नालों को भी इस नदी में पड़ने से रोका। मुझे यहाँ के समुदाय के साथ संवाद करने में कठिनाई हुई, लेकिन मैं उन्हें सरकारी कर्मचारियों की मदद से नदी का सांस्कृतिक पहलू समझाने में अंततः सफल हुआ।

फिलीपीन्स में धान आदि के कई अंतरराष्ट्रीय संस्थान हैं, जिनमें अच्छी पढ़ाई होती है। लेकिन यह पढ़ाई प्रकृति के पोषण की नहीं है। प्रकृति का शोषण ही यहाँ पढ़ाया व लिखाया जाता है। इसलिए यहाँ की अंतरराष्ट्रीय व राष्ट्रीय संस्थानों के शिक्षण में सामलात देह (सार्वजनिक सम्पदा) पर अतिक्रमण और उनके प्रदूषण मुक्ति के कोई स्थायी उपाय यहाँ पढ़ाये व सिखाये नहीं जाते। इस कारण 20 सालों के बाद भी इस नदी के समग्र जल का शोधन नहीं कर पाये।

हाँ आंशिक तौर पर वर्ष 2001 की अपेक्षा 2017 में बहुत सुधार हुआ है। अभी इस नदी के जल सुधार हेतु राष्ट्रपति ग्लोरिया मैकापगल अरोयो के काम जैसी तीव्रता नजर नहीं आती।

इस देश की राजधानी मनीला को सतही जल व भू-जल के प्रदूषण के लिए दुनिया में जाना जाता है। लेकिन यहाँ जल का निजीकरण ही प्रदूषण को बढ़ावा दे रहा है। यहाँ का जल प्रदूषित होने के कारण लोगों को खरीदकर ही पानी पीना पड़ता है। इसलिए कम्पनियाँ जलशोधन के विरुद्ध खेल खेलती रहती हैं। इसलिए यह शहर प्रदूषित होता जा रहा है।

यहाँ की जल कम्पनियों का सरकारों पर बड़ा असर है। इसलिए यहाँ के जल अधिकार को कानून से कम्पनियों ने खरीद लिया है। इस देश की एक भी नदी शुद्ध-सदानीरा नहीं है। पेयजल का भयंकर संकट है। पेयजल संकट से उबरने के सरकारी साधन, जल बाजार को ही बढ़ावा दे रहे हैं। फिलीपींस में बहुत अच्छी वर्षा होती है। मेरा यहाँ के कई आइलैंड में जाना हुआ। यहाँ जब तक प्राकृतिक खेती थी, तब तक वे सब क्षेत्र समृद्ध थे। यहाँ की आधुनिक खेती ने यहाँ के जीवन में कई तरह के कष्ट पैदा कर दिए हैं।

मैंने यहाँ की सरकार को सामुदायिक जल प्रबंधन सिखाने के जितने प्रयास किये हैं, उतनी सफलता नहीं मिली है। लेकिन मुझे विश्वास है कि, आगे

चलकर यहाँ के जल का निजीकरण रोककर सामुदायिकरण होगा। इस देश की सभी सरकारें नया करने की इच्छुक रहती हैं। इसीलिए निजीकरण करके देखा है। यह देश विकास के लालच में परिवर्तनशील प्रगति का पक्षधर है। विकास के लिए वैचारिक क्रांति से परिवर्तन करने वाला देश है।

2010 में, एबीएस-सीबीएन फाउंडेशन-cars कालिकासन निदेशक जीना लोपेज़ की अध्यक्षता में टीवी नेटवर्क एबीएस-सीबीएन और पासिग नदी पुनर्वास आयोग – वर्तमान में पीआरआरसी के अध्यक्ष के रूप में कार्यरत- ने "पासिग नदी के लिए रन" नामक एक मजेदार रन फंड-स्थापना गतिविधि शुरू की है जो "अक्टूबर के हर महीने आयोजित की जाती है। फन रन से होने वाली आय पासिग नदी की पुनर्वास परियोजना "कपिट-बिसिग पारा सा इलोग पासिग" (पासिग नदी के लिए सहयोग) के लिए एक कोष के रूप में काम करेगी।

20 अप्रैल, 2021 को, सैन मिगुएल कॉर्पोरेशन ने घोषणा की कि नदी की सफाई मई 2021 से शुरू होगी। एसएमसी इस नदी की सफाई में पर्यावरण और प्राकृतिक संसाधन विभाग और लोक निर्माण और राजमार्ग विभाग के साथ भी काम करेगी। नदी की सफाई सैन मिगुएल कॉरपोरेशन के 95 बिलियन पासिग रिवर एक्सप्रेसवे परियोजना का हिस्सा है।



## गंगा से अधिक प्रदूषित ब्रिस्बेन नदी का दिखावटी प्रचार अधिक है

ब्रिस्बेन नदी दक्षिण-पूर्व क्वींसलैंड, ऑस्ट्रेलिया में सबसे लंबी नदी है, और कोरल सागर पर मोरटन बे में जाने से पहले ब्रिस्बेन शहर से होकर बहती है। नदी का पता लगाने वाले पहले यूरोपीय जॉन ऑक्सले ने 1823 में न्यू साउथ वेल्स के गवर्नर सर थॉमस ब्रिस्बेन के नाम पर इसका नाम रखा। मोरटन बे की दंड कॉलोनी ने बाद में उसी नाम को अपनाया, जो अंततः ब्रिस्बेन का वर्तमान शहर बन गया। नदी एक ज्वारीय मुहाना है और ब्रिस्बेन महानगरीय क्षेत्र के पश्चिम की ओर माउंट क्रॉस्बी वियर तक पानी उसके मुहाने से खारा है। ब्रिस्बेन महानगरीय क्षेत्र में नदी चौड़ी और नौगम्य है।

नदी माउंट स्टेनली से 344 किमी (214 मील) लम्बी है। नदी को विवेनहो बांध से बांध दिया गया है, जिससे ब्रिस्बेन के लिए मुख्य जल आपूर्ति झील विवेनहो का निर्माण होता है। जलमार्ग दुर्लभ क्वींसलैंड लंगफिश, ब्रिस्बेन रिवर कॉड (विलुप्त), और बुल शार्क का आवास है।

जलमार्ग के शुरुआती यात्रियों ने इसके किनारों पर प्राकृतिक सुंदरता, प्रचुर मात्रा में मछली और समृद्ध वनस्पति की प्रशंसा की है। 1862 से ब्रिस्बेन नदी को नौवहन उद्देश्यों के लिए खोद दिया गया है। 1875 में कस्बों को जोड़ने वाले रेलवे के निर्माण से पहले नदी ब्रिस्बेन और इप्सविच के बीच एक महत्वपूर्ण कैरिजवे के रूप में कार्य करती थी। 1920 के दशक के अंत तक, नदी में पानी की गुणवत्ता काफी बिगड़ गई थी।

1893 में कई बड़ी बाढ़ आईं। 1974 में, रिकॉर्ड स्तर पर सबसे विनाशकारी बाढ़ आई, जिसके कारण 66000 टन के जहाज रॉबर्ट मिलर (नदी पर अब तक का सबसे बड़ा जहाज) अपने घाट से मुक्त हो गया। जनवरी 2011 में एक और बड़ी बाढ़ आई।

मछुआरे द्वीपों पर व्यापक बंदरगाह सुविधाओं का निर्माण किया गया है, जिसे अब मोरटन बे पर नदी के मुहाने पर स्थित ब्रिस्बेन बंदरगाह के रूप में जाना जाता है। नदी को पार करने वाले 16 बड़े पुल हैं। 2010 में खोला गया क्लेम जोन्स टनल, सड़क परिवहन के लिए नदी का पहला भूमिगत क्रॉसिंग है।

ब्रिस्बेन नदी की पूर्व और पश्चिम शाखाएं परंपरागत रूप से किंगारॉय के पूर्व की श्रेणियों में स्थित हैं। दो शाखाएं माउंट स्टेनली के दक्षिण में एक ही जलकुंड में विलीन हो जाती हैं। इसका स्रोत बुनिया पर्वत के शीर्ष पर स्थित है, जहाँ नदी की सबसे लंबी सहायक नदी क्यूयार क्रीक के मुख्यालय हैं। समुद्र तल से 992 मीटर ऊपर बुनिया पर्वत पर जलग्रहण क्षेत्र के उच्चतम बिंदु से पानी नीचे गया है।

क्यूयार क्रीक और ब्रिस्बेन नदी का जंक्शन एवोका वेले के दक्षिण में है, और नदी फिर समरसेट बांध के दक्षिण में स्टेनली नदी से जुड़ने से पहले लिनविल, मूर और टोगूलावा सहित दक्षिण पूर्व टाउनशिप बनाती है।

नदी वहां से विवेनहो बांध द्वारा बनाई गई विवेनहो झील में जाती है। बांध से परे, नदी पूर्व की ओर बहती है, इप्सविच के पास ब्रेमर नदी से मिलती है, फिर ब्रिस्बेन के पश्चिमी उपनगरों के माध्यम से अपना रास्ता बना रही है, जिसमें जिंदली, इंडोरोपिली और टूवॉन्ना शामिल हैं।

ब्रिस्बेन नदी फिर पिकेंबा घाट और पोर्टसाइड घाट, पिछले बुल्वर द्वीप और समान बिंदु सहित पिछले घाटों पर ब्रिस्बेन के बंदरगाह के माध्यम से और

दक्षिणी ब्रम्बल बे में मोरटन बे के एक तटबंध में बहती है। जो प्रमुख सहायक नदियाँ उत्तर से ब्रिस्बेन नदी में बहती हैं; वे हैं— ब्रेकफास्ट क्रीक, मोगिल क्रीक और स्टेनली नदी।

पिछले कुछ वर्षों में जहाजों को ब्रिस्बेन से और नदी से माल परिवहन करने की अनुमति देने के लिए बहुत अधिक ड्रेजिंग और चौड़ा करने का काम किया गया है, नदी अब ड्रेजिंग नहीं है।

नदी की गहराई में उत्तरोत्तर वृद्धि हुई और बड़े जहाजों को नदी में और आगे की ओर बढ़ने की अनुमति देने के लिए संकीर्ण बिंदुओं को चौड़ा किया गया। अतीत में कई आंशिक रूप से सफल प्रयासों के बाद नेविगेशन और सुरक्षा कारणों से 1965 में सेवेंटीन माइल रॉक्स को पूरी तरह से हटा दिया गया था। नदी के मुहाने पर स्थित उत्तरी नदी के तट पर पिछले कुछ वर्षों में, विशेष रूप से हैमिल्टन और पिकेंबा के उपनगरों में, सुधार परियोजनाओं से गुजरना पड़ा है। हाल ही में, ब्रिस्बेन बंदरगाह के लिए मछुआरों के द्वीप पर व्यापक सुविधाओं का निर्माण किया गया है, जिसने खाड़ी में महत्वपूर्ण भूमि सुधार भी देखा है। 19वीं सदी और 20वीं सदी की शुरुआत के दौरान, नदी की सतह समय-समय पर जलकुंभी के रूप में जाने जाने वाले हानिकारक खरपतवार के बड़े झुंडों से दब गई थी। यह संयंत्र मूल रूप से दक्षिण अमेरिका से आयात किया गया था।

## हावर्ड स्मिथ व्हावर्स से ब्रिस्बेन नदी

पर्यावरण की दृष्टि से, नदी खराब स्थिति में है और कई वर्षों से ऐसा ही है। 2000 में, ब्रिस्बेन नदी का मुहाना पर्यावरण मानकों के लिए राष्ट्रीय दिशानिर्देशों को पूरा नहीं करता था। 2008 की स्वस्थ जलमार्ग रिपोर्ट, नदी के पानी की गुणवत्ता के वार्षिक मूल्यांकन में निचली पहुँच को बहुत खराब रेटिंग मिली। प्रदूषण के प्रमुख कारण अतिरिक्त पोषक तत्व, हाइड्रोकार्बन, कीटनाशक और बैक्टीरिया हैं, जो आसपास की भूमि से बहने के बाद नदी और उसके तलछट

में केंद्रित हो जाते हैं। नदी को भी बहुत गन्दा माना जाता है और इसके पानी में तैरने की अनुशांसा नहीं की जाती है।

1950 के दशक की शुरुआत में, रेत और बजरी निकालने के उद्देश्य से नदी को गहरा किया गया था। उस गतिविधि के महत्त्वपूर्ण प्रभावों में बढ़ा हुआ मैलापन और बैंक क्षरण शामिल हैं। मोरटन बे में कृत्रिम तलछट भार का प्रभाव पर्यावरणविदों को चिंतित करने के स्तर तक बढ़ गया। तलछट समुद्री घास के पैडॉक को घुला रहा था, वे डगोंग के लिए चराई क्षेत्र थे। सार्वजनिक आक्रोश के कारण 1998 तक सभी वाणिज्यिक ड्रेजिंग को रोक दिया गया। अपनी नौगम्यता बनाए रखने के लिए ब्रिस्बेन नदी में गैर-निष्कर्षण ड्रेजिंग जारी है।

2018 में, ब्रिस्बेन नदी में पानी की गुणवत्ता क्वींसलैंड सरकार के कई मानकों को पूरा करने में विफल रही। मध्य ब्रिस्बेन नदी के जलग्रहण क्षेत्र में किए गए सभी परीक्षणों में नाइट्रोजन और फास्फोरस अधिकतम स्तर से अधिक थे। निचले और ऊपरी जलग्रहण क्षेत्रों में परिणाम नाइट्रोजन के अधिकांश परीक्षणों और फॉस्फोरस के लगभग सभी परीक्षणों के लिए अधिकतम स्तर से अधिक पाए गए। नाइट्रोजन और फास्फोरस मुख्य रूप से नदी में प्रवेश करते हैं, जो कृषि क्षेत्रों से नदी के ऊपर की ओर धोए जाते हैं। 2019 में, क्वींसलैंड विश्वविद्यालय के शोध ने संकेत दिया कि नदी का मैलापन चक्र (और धुंधला भूरा रंग) मुख्य रूप से चैनल और मडबैंक के बीच कीचड़ के आदान-प्रदान से प्रेरित है। हालांकि, चैनल के समानांतर और औसत जलस्तर के नीचे क्रिनम पेडुनकुलटम लगाने से, मैलापन इस हद तक कम हो जाएगा कि नदी स्पष्ट और नीली दिखाई देगी, लेकिन ब्रिस्बेन सिटी काउंसिल द्वारा इसके लिये कोई प्रयास नहीं किया गया है।

आस्ट्रेलिया की यात्रा लम्बी और सुखद रही है। ब्रिस्बेन नदी को मैंने प्रो. जी. डी. अग्रवाल जी के साथ देखा और समझा था। हमारी अरवरी नदी को नदी पुनर्जीवन हेतु थैम्स नदी पुरस्कार मिला था। उसे लेने अध्यक्ष और उपाध्यक्ष



हम दोनों गये। ब्रिस्बेन शहर में हम तीन दिन नदी किनारे ही रोके गये थे। दिन में ब्रिस्बेन के किनारे सुबह तथा शाम को नाव से दूर-दूर तक जाते थे। मुझे आश्चर्य हुआ जब प्रो. जी.डी. अग्रवाल ने मुझसे कहा “यह नदी तो गंगा जी से भी ज्यादा बीमार है” जबकि इसका जल देखने में गंदा नहीं था।

वे नदी के जल की गंध, रंग व बहाव आदि को देख-सूँघकर जल की बीमारियाँ बता देते थे। उसके प्रदूषण में क्या-क्या है, उन्होंने मुझे बताया।

मैंने कहा ये दुनियाभर के लोगों को बुलाकर नदियों पर सम्मेलन कर रहे हैं। पुरस्कार दे रहे हैं। अपनी नदी इन्होंने ठीक नहीं की है। फिर हम इनका पुरस्कार क्यों लें? बाद में प्रो. साहब ने कहा राजेन्द्र तुम जानते हो! ये सब अपना प्रचार करने हेतु करते हैं।

मैंने फिर प्रो. साहब को पूरी नदी दिखाने हेतु तैयार किया। उन्होंने मुझे ब्रिस्बेन नदी दिखाई। यह नदी देखने में बहुत सुन्दर है। इसका उद्गम पहाड़ियों में बोल्टरों से होकर दर्जनों मील चलता है। इसमें ढोह-देह भी है। हमने कई जगह जल को घूम-घूम कर चलते देखा था। इसके बीच का क्षेत्र शांत चौड़ाई में बहने वाला है। प्रपात भी है। हम दोनों ने ही इस नदी के मानचित्र देखे। सब जानकारियाँ इकट्ठी कीं। उन्होंने मुझसे कई बार पूछा था, ब्रिस्बेन नदी पर कुछ लिखा है? मुझे संकोच होता था। मैं कहता हूँ लिखूँगा। उनके जीते जी नहीं लिख पाया, लेकिन 20 जुलाई 2021 को उनके जन्मदिन पर ब्रिस्बेन नदी पर लिख रहा हूँ।



## स्विट्जरलैंड और नीदरलैंड को बनाती-संवारती राइन नदी

राइन प्रमुख यूरोपीय नदियों में से एक है। इसका स्रोत स्विट्जरलैंड में है और जर्मनी और नीदरलैंड के माध्यम से अधिकतर उत्तर दिशा में बहती है, जहाँ से यह उत्तरी सागर में मिल जाती है। नदी दक्षिण-पूर्वी स्विस आल्प्स में ग्रुबंडेन के स्विस कैंटन में शुरू होती है, तथा स्विस-लिकटेंस्टीन, स्विस-ऑस्ट्रियन, स्विस-जर्मन और फिर फ्रेंको-जर्मन सीमा का हिस्सा बनती है।

10 सितम्बर से 24 सितम्बर 2018 तक राइन नदी को मैंने देखा और समझा था। मेरी यह यात्रा जेनेवा से आरम्भ हुई। संयुक्त राष्ट्रसंघ में मानवाधिकार आयोग ने बड़ी परियोजनाओं के दुष्प्रभाव पर बोलने हेतु मुझे बुलाया था। तभी मैंने राइन यात्रा भी अपने इस काल में ही करना तय किया था।

यह नदी ऐल्फ पहाड़ों से निकल कर नीदरलैंड का मैदान बना देती है। इस नदी के दोनों तरफ सुन्दर शहर, गाँव, जंगल व जंगली जीवों का भी घर है, जबकि इसका जल बहुत ठण्डा होता है। नीचे आकर समताप कम बनता है। नीदरलैंड इसको समुद्र से मिलता है। यह देश समुद्र से गहरा है, क्योंकि इसे नदियों के मिलन पर बसने-बनने का अवसर मिल गया है। मैंने इस देश में आकर मिलने वाली कई नदियों की यात्रा की है। इनमें एक है सैल्ड, जो कि बेल्जियम से चलकर फ्रांस होते हुए नीदरलैंड में मिलती है। दूसरी राइन, जो कि स्विट्जरलैंड से आरम्भ होकर जर्मनी होते हुए नीदरलैंड को बनाते हुए समुद्र में मिल जाती है।

यह मध्य और पश्चिमी यूरोप में (डेन्यूब के बाद) दूसरी सबसे लंबी नदी है, लगभग 1230 किमी (760 मील), (लगभग 2900 घन मीटर प्रति/सेकेंड (1,00,000 घन फीट) इसका जल प्रवाह है।

राइन और डेन्यूब ने रोमन साम्राज्य के अधिकांश उत्तरी अंतर्देशीय सीमांत का निर्माण किया और उन्हीं दिनों से, राइन व्यापार और माल को गहरे अंतर्देशीय ले जाने वाला एक महत्वपूर्ण नौगम्य जलमार्ग रहा है। यात्रा जलमार्ग के रूप में इसका महत्व इसके साथ बने कई महल और किलेबंदी, पवित्र रोमन साम्राज्य के कारण भी है। इस नदी को यातायात परिवहन से ही बड़ा नाम मिला था। राइन पर सबसे बड़े और सबसे महत्वपूर्ण शहरों में कोलोन, डसेलडोर्फ, रॉटरडैम, स्ट्रासबर्ग और बेसल हैं। ये सभी शहर इस नदी की शोभा तो बढ़ाते ही हैं, गन्दगी भी इन्हीं की इसमें पहले आती है।

राइन की लंबाई पारंपरिक रूप से ओल्ड राइन ब्रिज से हुक ऑफ हॉलैंड तक (1036.20 किमी) है।

19वीं और 20वीं शताब्दी में कई नहरीकरण परियोजनाओं के पूरा होने के कारण नदी अपने प्राकृतिक मार्ग से काफी सिकुड़ गई है। लेक कॉन्स्टेंस और अल्पाइन राइन को शामिल करने के कारण "राइन की कुल लंबाई" जानना अधिक कठिन है। निष्पक्ष रूप से मापने के बाद; इसे 2010 में डच रिजक्सवाटरस्टाट द्वारा 1,232 किलोमीटर (766 मील) के रूप में उद्धृत किया गया था।

राइन का वाटरशेड आज आल्प्स में पहुंचता है, लेकिन यह उस तरह से शुरू नहीं हुआ। मिओसीन काल में, राइन का वाटरशेड आल्प्स के उत्तर में लगभग 450 किमी (280 मील) उत्तर में, तथा ईफेल और वेस्टरवाल्ड पहाड़ियों तक, दक्षिण में पहुंच गया। राइन के पास एक सहायक नदी के रूप में सीग था, लेकिन अभी तक मोसेले नहीं था। उत्तरी आल्प्स को तब डेन्यूब द्वारा सुखा दिया गया था।

धारा पर कब्जा करके, राइन ने अपने वाटरशेड को दक्षिण की ओर बढ़ाया। प्लियोसीन काल तक, राइन ने मुख्य और नेकर सहित वोसगेस पर्वत तक धाराओं पर कब्जा कर लिया था। उत्तरी आल्प्स को तब रोम द्वारा सुखा दिया गया था। प्रारंभिक प्लेइस्टोसिन काल तक, राइन ने आरे सहित रोम से अपने अधिकांश वर्तमान अल्पाइन वाटरशेड पर कब्जा कर लिया था। उस समय से, राइन ने लेक कॉन्स्टेंस के ऊपर वाटरशेड को जोड़ा है (वॉर्डरहेन, हिंटररहाइन, एल्पेनरहिन; रोम से कब्जा किया हुआ)। मेन की ऊपरी पहुंच, श्वेनफर्ट से परे और वोसगेस पर्वत में मोसेले, साले आइस-एज के दौरान मीयूज से उसके वाटरशेड तक कब्जा कर लिया गया था।

लगभग 2.5 मिलियन वर्ष पूर्व (11,600 वर्ष पूर्व समाप्त) हिमयुग शुरू हुआ। लगभग 6,00,000 साल पहले, छह प्रमुख हिमनद काल हुए हैं, जिसमें समुद्र का स्तर 120 मीटर (390 फीट) तक गिर गया और महाद्वीपीय मार्जिन का अधिकांश हिस्सा उजागर हो गया। प्रारंभिक प्लीस्टोसिन में, राइन ने वर्तमान उत्तरी सागर के माध्यम से उत्तर-पश्चिम की ओर एक मार्ग का अनुसरण किया था।

तथाकथित एंग्लियन हिमनद ( 450,000 वर्ष बीपी, समुद्री ऑक्सीजन समस्थानिक चरण 12) के दौरान, वर्तमान उत्तरी सागर का उत्तरी भाग बर्फ से अवरुद्ध हो गया था और एक बड़ी झील विकसित हुई थी, जो अंग्रेजी चैनल के माध्यम से बहती थी। इसने राइन के प्रवाहमार्ग को इंग्लिश चैनल के माध्यम से मोड़ने का कारण बना दिया। तब से, हिमनद काल के दौरान, नदी का मुहाना ब्रेस्ट, फ्रांस के अपतटीय भाग में स्थित था और टेम्स और सीन जैसी नदियाँ, राइन की सहायक नदियाँ बन गईं। इंटरग्लेशियल के दौरान, जब समुद्र का स्तर लगभग वर्तमान स्तर तक बढ़ गया, तो राइन ने डेल्टास का निर्माण किया, जो अब नीदरलैंड है।

आल्प्स से उत्तरी सागर तक अपने प्रवाह के दौरान, राइन चार देशों से होकर

गुजरती है और छह अलग-अलग देशों की सीमाओं का गठन करती है।

पूर्वकाल से राइन पूरी तरह से स्विट्जरलैंड के भीतर स्थित है, जबकि पोस्टीरियर राइन की कम से कम एक सहायक नदी, रेनो डि लेई इटली में निकलती है, लेकिन इसे राइन का एक उचित हिस्सा नहीं माना जाता है।

अल्पाइन राइन स्विट्जरलैंड के भीतर सरगन्स तक बहती है, जहाँ से यह स्विट्जरलैंड (पश्चिम में) और लिकटेंस्टीन (पूर्व में) के बीच ओबेरिएट तक की सीमा बन जाती है, और नदी लिकटेंस्टीन के भीतर कभी नहीं बहती है। यह तब स्विट्जरलैंड (पश्चिम में) और ऑस्ट्रिया (पूर्व में) के बीच की सीमा बन जाती है, जब तक कि डाइपोल्ड्सौ में, जहाँ आधुनिक और सीधा मार्ग स्विट्जरलैंड में प्रवेश करता है, जबकि मूल ऑल्टर राइन पूर्व की ओर झुकता है और स्विस-ऑस्ट्रियाई सीमा के रूप में idnau में संगम तक जारी रहता है।

आधुनिक और सीधा मार्ग ऑस्ट्रिया में प्रवेश करता है (नदी का एकमात्र हिस्सा जो ऑस्ट्रिया के भीतर बहता है), जबकि मूल नदी तंत्र पश्चिम में एक मोड़ बनाता है और सीमा के रूप में जारी रहता है, जब तक दोनों नदीतंत्र लेक कॉन्स्टेंस में प्रवेश करते हैं।

लेक कॉन्स्टेंस के ऊपरी और निचले हिस्से के बीच सेरहिन का पहला भाग जर्मनी (और कॉन्स्तान्ज़ शहर) के भीतर बहता है, जबकि दूसरा जर्मन (उत्तर में) – स्विस (दक्षिण में) सीमांत है।

हाई राइन के पहले भाग, लेक कॉन्स्टेंस से अल्थोलज़ तक, नदी बारी-बारी से स्विट्जरलैंड के भीतर बहती है। जर्मन-स्विस सीमांत (प्रत्येक में तीन बार) होती है। अल्थोलज़ से नदी बेसल तक यह जर्मन-स्विस सीमा है, जहाँ यह आखिरी बार स्विट्जरलैंड में प्रवेश करती है।

अपर राइन फ्रांस (पश्चिम में) और स्विट्जरलैंड (पूर्व में) के बीच की सीमा है, जो थोड़ी दूरी के लिए बेसल से हुनिंग्यू तक है। यहाँ यह फ्रेंको (पश्चिम में) बन जाता है – जर्मन (पूर्व में) एयू एम रिन तक। इसलिए, राइन का मुख्यमार्ग फ्रांस के भीतर कभी नहीं पड़ता है, हालांकि कुछ नदी नहरें ऐसा करती हैं। और एम रिन से होकर नदी जर्मनी के भीतर बहती है। मध्य राइन पूरी तरह से जर्मनी के भीतर ही बहती है।

लोअर राइन जर्मनी के भीतर एमेरिच एम रिन तक बहती है, जहाँ यह नीदरलैंड (उत्तर में) और जर्मनी (दक्षिण में) के बीच की सीमा बन जाती है। मिलिंगन आन डी रिजन में नदी नीदरलैंड में प्रवेश करती है।

डेल्टा रीन के सभी हिस्से नीदरलैंड के भीतर तब तक बहते हैं, जब तक वे डच तट पर उत्तरी सागर, आईजेस्सेलमीर (आईजेएसएल) या हारिंगव्लियेट (वाल) में प्रवेश नहीं करते।



## मैं जल हूँ।

ज-जीवन हूँ। ल-पंचमहाभूतों का विलय हूँ। अर्थात् भगवान हूँ। भ-भूमि, ग-गगन, व-वायु, अ-अग्नि, न-नीर (जल) हूँ। इस ब्रह्माण्ड को बनाने वाला भी मैं ही हूँ। मैं तीनों द्रव, गैस व ठोस अवस्थाओं में मानवीय एवं प्राकृतिक उपयोग में आता हूँ। मैं ही प्रकृति और मानवता का रिश्ता हूँ। सम्पूर्ण प्राकृतिक अंग मानव को अनुशासित व्यवहार करना सिखाता है। मैं मानवीय जीवन, जीविका और ज़मीर हूँ। मैं तीनों द्रव, ठोस, गैस रूप में दिखता हूँ। मुझे द्रव रूप में पीते हैं। ठोस रूप में खाते हैं। गैस रूप वाष्प H<sub>2</sub>O रूप में पीते-खाते हैं। मैं सभी के काम आता हूँ। सभी का जीवन बनाता और बिगाड़ता हूँ।

जेठ की धूप में जब इंसान मुझे स्पर्श करता है, मैं उसकी प्यास बुझाना आरम्भ कर देता हूँ। प्यास बुझने पर भी गले और होठों में मेरा अहसास बना रहता है। यह मानव जीवन में मेरी उपयोगिता का आभास करा देता है। सूखी मिट्टी निष्प्राण होती है। मैं जब उसमें मिलता हूँ, नया जीवन उसमें भर देता हूँ। इसके अंदर के बीज को अंकुरित कर नई जीवन लीला रचता हूँ। मुझे प्रकृति और मानवता हेतु उपयोगी बनाने का कार्य करने वाला सूरज की लाल गर्मी समुद्र के ऊपर पड़कर खारे जल का वाष्पीकरण करके मिट्टी बना देती है। यही मिट्टी जल (बादल) बनकर पूरी धरती को नम बनाता है। सूरज की लाल गर्मी से बने बादलों को मैं हरियाली की तरफ ले जाता हूँ। वहाँ मैं नीली गर्मी से जंगलों की संश्लेषण प्रक्रिया द्वारा निर्मित हरी गर्मी हूँ। हरी गर्मी द्वारा बादलों को बनाकर अपने वर्षा रूप में मिट्टी में मिल जाता हूँ। मैं ही बिन जीव वाली मिट्टी को जीवनदायी बनाकर हरा-भरा बनाता रहता हूँ। मैं ही मिट्टी में पीली गर्मी

बनकर नये-नये जीवन की रचनाएँ करता रहता हूँ। सूरज से निकलने वाली लाल गर्मी निष्प्राण बिना जीव वाली लाल गर्मी को नीली गर्मी अर्थात् समुद्र में रहकर बदला करता हूँ। इसी लाल गर्मी को जंगलों की पत्तियों, तनों, जड़ों में रहकर हरी गर्मी बनाता हूँ। नीली, हरी मिलाकर नयी उत्पादक वर्षा बनाता हूँ। फिर धरती पर दौड़कर सरक और बहकर चलता हूँ। अपने साथ मिट्टी को भी बहाता रहता हूँ। जहां ठहरने की जगह मिलती है, वही फिर नई हरियाली लेकर आता हूँ। यह नई हरियाली मेरे अंदर पीली गर्मी से ही जन्म लेती है। मैं चार तरह की गर्मी हूँ। लाल-नीली-हरी-पीली इन्हीं रूपों में मैं जीवन का सम्पूर्ण चक्र हूँ। मेरे इसी चक्र को लोग वर्षा चक्र भी कहते हैं।

मैं दुनिया में समाया हूँ। मेरे अंदर दुनिया समाई है। मैं समुद्र बनाता और सूरज की लाल गर्मी (तपन) को कम करके इंसान और जीवों के काम योग्य बनता हूँ। धरती और इंसान का बुखार भी ठीक करता हूँ। हरियाली के रूप में नदियों-नालों से बहकर धरती के कण-कण की पैदावार बढ़ाता हूँ। तब मैं ही पीली गर्मी में बदल जाता हूँ। सूरज की निर्जीव लाल गर्मी समुद्र में मुझसे मिलकर सजीव नीली, गर्मी में बदल कर हरी गर्मी के ऊपर पहुंच कर वर्षा, पीली गर्मी में पैदा करने लगता हूँ। धरती भी मेरे बिना माँ नहीं बन सकती है। धरती को माँ बनाने वाला जलचक्र मैं ही जल हूँ। मेरा चक्र ही मानवता और प्रकृति का चक्र बनाता है। धोने, सानने, गूँथने, गलाने, घोलने, ठण्डा करने, यातायात, व्यवसाय, रंगने, खेती, पशुपालन, कुम्हारी, धोबी, चर्मकारी, लुहारी-सुनारी ज्वैलरी, चीनी कागज, लोहा, कपड़ा तेल शोधन के उद्योगों को मैं ही चलाता हूँ।

मैं ही प्रकृति चक्रों का चालक हूँ। पृथ्वी को स्वरूप देता हूँ। सजीवों को जीवन देता हूँ। ऊर्जा भी मैं ही देता हूँ। गुरुत्वाकर्षण से- धरती से और सूरज से ऊर्जा लेकर सभी को मैं ही देता हूँ। मैं ही विकास, विस्थापन, विकृति और विनाश भी करता हूँ। आग में जलकर, मिट्टी में सड़कर सभी वस्तुओं को उन्हीं के मूलरूप में बांट देता हूँ। मैं दबाव, बहाव, प्रदूषण से तबाही मचाता हूँ। मैं



जब सगुण होता हूँ, तो जीवन देता हूँ। दुर्गुण होता हूँ तो जीवन लेता हूँ। जब भी मुझमें धातु, लवण, गैसों तथा जीवाणुओं की कमी और अधिकता होती है तो मेरा दुष्प्रभाव बढ़ता है और विनाश की तरफ दुनिया बढ़ती है।

वाष्पन और संघनन मेरा गुण है। सूरज से और मिट्टी से मिलकर मैं अपनी अशुद्धि दूर करने की समझ और शक्ति अपने में रखता हूँ। वायु का लेन-देन और जैविक प्रक्रियाएँ चलाने में सक्षम हूँ। मेरी स्लाईम मोल्ड (चिकनाई) रोगाणुओं को नष्ट करने में सक्षम है। मैं 0 से 100 डिग्री सेल्सियस तक के तापमान में द्रव बना रहता हूँ। मैं ताप को सहने, सोखने की अथाह शक्ति अपने अंदर रखता हूँ। इसका चक्र मैं ही चलाता हूँ। मैं लाल, नीले, बैंगनी, हरे, सफेद और कितने तरह के रंगों का अच्छा विलायक हूँ। मैं कमी से अधिकता की तरफ जाता हूँ। मुझे साँद्रता द्वारा अलग-अलग किया जा सकता है। मेरी सतह पर तनाव भी रहता है। फिर भी मैं साथी के साथ हाथ बढ़ाकर आगे जाता हूँ। तब मुझे — मेरा कैपलैरी एक्सन कहते हैं। मैं बर्तन के रूप में बदलता, रहता हूँ। मैं स्वतंत्रता में ओस कण के रूप में बनता हूँ। मैं बुलबुला भी हूँ। संगीत भी हूँ। गंध और सुगंध बनकर दुनिया को महकाता रहता हूँ। मैं पत्तियों में ऊपर तक स्वयं अपनी ऊर्जा से पहुँचता हूँ। फिर भी सदैव नीचे की तरफ ही ढलान पर बहता रहता हूँ। मेरी छुअन अंधेरे में भी मेरी कहानियाँ सुनाती है। मेरा औषधीय उपयोग सुबह उठते ही प्रातः पीने की याद दिलाता है। मुझमें उत्प्लावन है। मेरा यह गुण जीवों और पौधों को जीने में मदद करता है। मैं जैसे जीने में सबकी मदद करता हूँ, वैसे इंसान और जीव भी सभी की मदद करेंगे तो सबका बहुत अच्छा भला हो जायेगा।

मैं तो सभी का साझा हूँ। इसलिए अब मेरी चिंता कोई नहीं करता है। मैं उसी का हूँ, जो मुझे बचाता है। मेरे साथ करुणा का व्यवहार करता है। मैं सबका बराबर हूँ। इंसान का साथी और चींटी पेड़-पौधे, नदी, ताल, तलैया, समुद्र सबका, सबके लिए। जो मेरा सम्मान, अनुशासित उपयोग, शुद्धि, परिशुद्धि पुनः उपयोग, प्रकृति पुनर्जीवन के लिए सुरक्षा और संरक्षण करते हैं, मैं उन्हीं के

लिए हूँ, लेकिन मुझ पर आज अतिक्रमण, प्रदूषण और मेरा शोषण करने वालों की संख्या बहुत बढ़ गई है। इसीलिए मेरी प्रकृति और मानवता के भविष्य को खतरा है। इस खतरे से मैं बचा सकता हूँ। मेरा सम्मान करके जल संरक्षण संरचनाओं, ताल, पाल, झाल, तालाब, जोहड़, झर तथा हरियाली बढ़ाकर जल को धीमे चलाना धरती के पेट में बैठाना, सूरज की टेढ़ी नजर से मुझे बचाना ही प्रकृति और मेरे क्रोध को कम करने का मूल सिद्धांत है। “मेरे प्रवाह को धीमा करना” मैं हरियाली से धीमा बनता हूँ। बरसात में दौड़कर चलता हूँ। हरियाली और ढलान, रुकावटें बनाने से मैं रेंगता हूँ। फिर धरती का खुला पेट देखकर उसमें बैठाना है। फिर मैं उड़ूँगा नहीं। बहूँगा नहीं। सभी की जरूरत पूरी करने में सफल रहूँगा। मैं किसी एक का भी लालच पूरा नहीं कर सकता हूँ, लेकिन जरूरत भर पूरे ब्रह्माण्ड के सभी जीव-जंतुओं, वनस्पतियों के लिए पर्याप्त हूँ। आधुनिक दुनिया मेरे ऊपर अतिक्रमण करके मुझे प्रदूषित कर रही है। सभी स्तरों पर मेरा शोषण किया जा रहा है। इसीलिए अब दुनिया मेरे बिना अपने घर से उजड़ रही है। जहाँ मुझे बचा कर रखा है, उन्हीं स्थानों (एशिया, अफ्रीका) पर जा रहे हैं। वहाँ जनसंख्या पर दबाव और भू-संरचना का बिगाड़ बढ़ने से युद्ध के आसार बन रहे हैं। मैं लड़ाता नहीं हूँ। जोड़ता हूँ, लेकिन मेरे ऊपर आये दबाव ने मुझे निष्प्रावी बना दिया है। इसीलिए मेरे नाम पर दुनिया में टूटन शुरू हो गई है। इससे बचाने का काम केवल मुझे समझ कर सहेजने और सहेज कर दूसरों के अंदर मेरे उपयोग की दक्षता बढ़ाने से होगा। तभी मैं पूरी दुनिया की जरूरत पूरी कर सकूँगा।

दुनिया की जब मुझसे जरूरत पूरी नहीं होगी तो मेरे लिए लड़ाई शुरू होगी। यह लड़ाई भाई-भाई से लेकर गाँव और शहरों, सिंचित और असिंचित क्षेत्रों के गरीबों और अमीरों के बीच होगी। खेतिहर और औद्योगिक लोगों में होगी। मेरे लिए तीसरा विश्वयुद्ध शुरू हो चुका है। इससे बचाने वाली विश्वशक्ति जल साक्षरता की जरूरत है। पूरी दुनिया में जलवायु परिवर्तन के कारण मजबूरी का पलायन बढ़ा है। यही पलायन युद्ध का आधार बन रहा है। इससे बचने हेतु मुझसे सीख लें।

मैं जीवन बनाने—चलाने वाला होकर भी हमेशा नीचे की तरफ बहता हूँ। दूसरों को जीवन देने के लिए गहरी जमीन में गई पेड़ों की जड़ों से अपने को उठाकर अन्तिम ऊँचाई पत्तों तक पहुँचता हूँ। मुझसे पहला पाठ विनम्रता का सीखा जा सकता है। दूसरा मैं सभी का जीवन हूँ। बनाता—चलाता हूँ। अपनी उष्णता दूसरों को देता हूँ। ऊर्जा भी और उष्णता देने से मैं ही स्वयं का अस्तित्व नष्ट करके दूसरों का अस्तित्व और जीवन बनाता हूँ। मुझ बिन बेकार हुए जीवों और इंसानों का उपचारक और चिकित्सक हूँ। दुनिया की विविधताओं में रहकर भी मैं एक ही हूँ। 'जल', प्रकृति, ब्रह्माण्ड को एक ही बनाता हूँ। मेरा रंग—रूप दुनिया के लिए बदलता ही रहता है। जीवन, जीविका, जमीर बनकर जीवन को रंगीन बनाता रहता हूँ। जिसकी आँखों और हृदय में मैं रहता हूँ, वे दूसरों के लिए करुणादायी बनकर सभी कुछ देने, सेवा करने को तैयार रहते हैं। गरीबों की आँखों में जब मैं रहता हूँ तो अमीरों के हृदय में मैं पसीज कर काम करता रहता हूँ। अब गरीबों की आँखों में तो मैं रह रहा हूँ, लेकिन अमीरों के हृदय से गायब हो रहा हूँ। मेरे बिना अमीर भी जी नहीं सकता है। मैं ही तो हूँ, जो सभी को समता सिखाता हूँ। मेरी जब भी जरूरत होती है तो सभी को एक जैसी ही होती है। मैं तो ऊँच—नीच मुक्त दुनिया बनाने वाला हूँ। लेकिन आज के बाजार ने मेरी उस नैतिक शक्ति को मिटा दिया है। आज मुझे बाजार ने अपने अधीन बना लिया है। बाजार ही दुनिया में मेरे लिए फूट डालकर लूट रहा है। मेरा सभी कुछ सरे बाजार लूट रहा है। मुझे जल की निजी कम्पनियों ने लूटा है। यह लूट भयानक है। मेरी लूट का इतिहास बिल्कुल नया है। दो सौ साल पहले तक मैं वसुधैव कुटुम्बकम् का संदेश देता रहा हूँ। उत्तर—पश्चिम के देशों के औद्योगीकरण ने मेरे ऊपर कब्जा करने की शुरुआत कर दी है। पहले उन्हीं की नदियाँ प्रदूषित हुईं। बीमारी बढ़ी, इनकी लाचारी बढ़ी तो इन्होंने मेरा अपनी नदियों में इलाज आरम्भ कर दिया। इन्होंने अपनी नदियों को तो स्वस्थ बना लिया, लेकिन गरीब देशों की नदियों ने मुझे दूषित कर दिया। गरीबों को मुझे स्वस्थ बनाने की विधि और तकनीक नहीं आती थी। इसलिए मैं अब सबसे ज्यादा अफ्रिकन और एशियन देशों में ही बीमार हूँ। मेरे इलाज हेतु वियोलिया नामक कम्पनी का बड़ा व्यापार खड़ा हुआ है। यही कम्पनी है जो

अब मुझे प्रदूषण मुक्त बनाने के नाम पर सबसे बड़ा व्यापार खड़ा कर रही है। इसका व्यापार खड़ा करने में विश्व जल समिति का उपयोग किया जा रहा है। दुनिया की जल कम्पनियों का इस पर कब्जा है। इसने मिलकर सामुदायिक शक्तियों को पछाड़ दिया है। निजी कम्पनियों को ही आगे बढ़ाने का काम कर रही है। ऐसा लगता है यह विश्वजल मंच अब जल के निजीकरण का मंच बन गया है। सामुदायिक शक्तियों ने संगठित होकर मुझे बचाने हेतु फ्रांस की अदालत में मुकदमा दर्ज किया है। मेरा निजीकरण नहीं सामुदायीकरण चाहिए। सामुदायीकरण चाहने वाले साझे भविष्य व वर्तमान सभी के लिए मेरी सुनिश्चितता चाहते हैं। निजीकरण करने वाले मुझसे केवल लाभ कमाना चाहते हैं। मैं लाभ के लिए नहीं हूँ। सभी के शुभ हेतु हूँ। इसलिए अब दुनिया में मेरे निजीकरण के विरुद्ध भी वजनदार आवाज बन रही है। ये वही आवाज है, जो मुझसे सीखती है, प्रेरणा लेकर सभी के भले हेतु कार्य करती रहती है। मुझे अतिक्रमण, प्रदूषण, शोषण से बचाती है। इस 21वीं सदी में मुझे लूटने और बचाने वालों के बीच युद्ध जारी है। यही युद्ध, विश्वयुद्ध न बने, इस दिशा में काम चालू है। 'विश्वजल शान्ति यात्रा' 2014 से चालू है। अभी तक यह यात्रा 90 देशों में जा चुकी है। इस यात्रा ने मुझ पर आज के मेरे संकट को सभी के सामने उजागर किया है। इस पर एक पुस्तक भी प्रकाशित हो चुकी है। मेरा सामाजिक, सांस्कृतिक व आध्यात्मिक सभी प्रकार का रूप पारदर्शी बनकर स्पष्ट नजर आता है। जो मेरी पारदर्शिता से सीखते हैं, वे मेरी ओर से उनका बने रहते हैं। हम दोनों का स्वास्थ्य एक जैसा ही रहता है। मैं स्वस्थ हूँ तो जिनको मैं जीवन देता हूँ उन सभी को स्वस्थ रखता हूँ। मेरा स्वास्थ्य पूरे जीव जगत के स्वास्थ्य से संबंध रखता है। अब मेरे इस स्वास्थ्य संबंध को भी लोग भूल रहे हैं।

मैं भगवान का अंतिम अक्षर न से नीर हूँ। सभी पंचमहाभूतों को जोड़ने वाली कड़ी हूँ। भूमि के कणों में मैं नहीं तो मिट्टी नहीं बनती है। गगन में मैं नहीं तो वर्षा नहीं होती है। अग्नि की ऊर्जा को मैं अपने में सहनकर, समाकर उससे प्राण बनाता और उन्हें चलाता हूँ। हवा में बैठकर उसे श्वसन कराके जीवित

रखता हूँ। तभी तो मैं ही जलवायु बनाता हूँ। जलवायु को संतुलित रखता हूँ। मैं ही धरती का बुखार ठीक करके हरी-भरी बनाकर मौसम का मिजाज सुधारता हूँ। मैं ही समय से बरसाता-सुखाता हूँ। सभी को पानीदार बनाता हूँ। पानीदार का अर्थ है प्राणवान। पंचमहाभूतों को जोड़कर धरती, प्रकृति, मानवता को प्राणवान बनाने वाला मैं ही हूँ।

मैं जीवन हूँ। नीर, जननी, नारी को बनाता हूँ। वही सभी को जन्म देने वाली बनती है। जन्म मिलने पर चलाने वाला, प्रवाह देने वाला भी मैं ही हूँ। मैं नदी बनाता हूँ, जो सभ्यताओं और संस्कृतियों का निर्माण करने का काम करता हूँ। इसलिए मैं ही जीवन, जननी को जीवित रखकर प्रवाह देने वाला प्राण हूँ। ज्ञानवान लोग मुझे नीर-नारी-नदी कहकर भी पुकारते हैं। तीनों रूपों में प्राण, प्रतिष्ठा और प्रवाह हूँ। मैं प्राणों की मरहम भी हूँ। मैं जैसा हूँ वैसा ही मन बनाता हूँ।



“सभ्यता की सूखती सरिता” दुनिया की नदियों की अनवरत यात्राओं से मिले जीवंत अनुभवों और अनुभूतियों पर आधारित मेरी दूसरी अत्यंत महत्वपूर्ण पुस्तक है, जो “जलपुरुष की जलयात्रा” के बाद प्रकाशित हो रही है, और यह पुस्तक भी दुनिया में लगातार बढ़ रहे जलसंकट की चुनौती का सामना करने के लिये किये जा रहे मेरे व्यावहारिक प्रयासों और क्रियाकलापों का यथातथ्य विवरण उपलब्ध कराती है। दुनिया भर की नदियों के साहचर्य में रहते-चलते हुए उनके अतीत और वर्तमान की स्थितियों को जैसा मैंने देखा और समझा है, उसे इस पुस्तक के माध्यम से आपलोगों के समक्ष रखने का यह एक विनम्र प्रयास है। मेरी नदी यात्राओं के दौरान जिन साथियों के उपयोगी अनुभवों ने मुझे समृद्ध किया, मैंने उन्हें भी अपने शब्दों में इस पुस्तक में रख लिया है, क्योंकि वे भी मेरी अनुभूतियों का हिस्सा बन चुके हैं। कुल मिलाकर यह मेरी ही नदी अनुभूति की पुस्तक है, जो दुनिया के आसन्न जलसंकट को समझने-समझाने और उसके समाधान की दिशा में मिलकर काम करने की प्रेरणा देने के उद्देश्य से लिखी गयी है।

-इसी पुस्तक से



## नालन्दा प्रकाशन

206, द्वितीय तल, विराट भवन कमर्शियल कॉम्प्लेक्स,  
डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009, भारत

दूरभाष : 011-47027661, 9693778229

ई-मेल : [nalandaprakashan2023@gmail.com](mailto:nalandaprakashan2023@gmail.com)

वेब : [www.nalandaprakashan.com](http://www.nalandaprakashan.com)

₹ 300

